अथश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधप्रारंभः

व्यास
कृष्ण
उद्धव
चतुर्दास
ऋषि
श्रीसुक
परिक्षित
राजे

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगोपालकृष्णायनमः ॥ ॥अथश्रीएकादशस्कंधभाषालिख्यते ॥ दोहा ॥ ह
रिगुरुभक्तप्रसादतैंश्रीधरमिलतविवेक ॥ एकादशइकतीसमैंअधिकएकतैंएक ॥ १ ॥ वेदव्यासकृत
मूलपैंचतुर्दासकृतसार ॥ सुगमजानसबनगरहैंलहैंसुतत्वविचार ॥२॥ श्रीधरपहलेंध्यायमैंचतुर्दासकहिमा
न ॥ विप्रसापकेव्याजतैंमुसलकौआख्यान ॥ ३॥ ॥ चौपाई ॥ संतदाससतगुरुकेचरना ॥ तिनकौं
गहौंसुदृढकरिसरना ॥ जातैंउपजैज्ञानबिचारा ॥ छूटैभरमकर्मव्यवहारा ॥१॥ बहूरोजगतजनमनही
आवुं ॥ तिनकौंनिजानंदपदपावूं ॥ तिनकीआग्याहिरदैधरौं ॥ लोकहितारथभापाकरौं ॥२॥ श्रीभग
वानविरंचहिंभाष्यो ॥ सोविरंचिनारदसौंआष्यो ॥ सोनारदव्यासहींसमुझायौ ॥ व्यासभाषकरिशुकहि
पढायौ ॥३॥ सोशुकह्यौपरिक्षतआगें ॥ छूग्यौदैतसुपनज्यौंजागे ॥ सोइसूतअजहुंविस्तरे ॥ सहअञ्चा
सीऋषीमनधरें ॥ ४ ॥ श्रीभगवानआपयहभाष्यौ ॥ तातैंनामभागवतराग्यौ ॥ आपामिलनकौंपंथवतायै
यामारगबहुतनिहरिपायौ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्यासदेवजोभागवत ॥ भाष्योद्वादशस्कंध ॥ ति
नमैंएकादशकह्यौ ॥ नैनलहैंज्योंअंध ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकादशइकतिसअध्याय ॥ ति
नकौबहुरौंकहूंसुनाय ॥ जदुकुलनासप्रेममगयौ ॥ बहुतभांतिवैरागउपायौ ॥ ७ ॥ हरिरिपुपंथकह्योपुन
चारी ॥ जनकहिंजोगेश्वरनिबिचारी ॥ सोनारदवसुदेवहिकह्यौ ॥ पायौज्ञानपरमपदलह्यौं ॥ ८ ॥ छठे
कृष्णउधवप्रस्ताव ॥ तेइसकरनिजज्ञानसुनाव ॥ दूजाधवविनासविस्तार ॥ एइकतीसज्ञाननिजसार ॥ ९ ॥

श्रीशुकदेवकरतआरंभ ॥ श्रोतानृपतिअडिगतजअंभं ॥ तबशुकजीयहकीयोविचार ॥ ज्ञानबिनानाहींउ
धार ॥ १० ॥ तातैब्रह्मज्ञानसमझाऊं ॥ प्रथमहिदृढवैरागउपाऊं ॥ पंषीऊडेपषंल्हैजैसे ॥ ज्ञानवैराग्यमि
लेहरिऐसें ॥ ११ ॥ राजासुनोजगतसुखजैसें ॥ जिनसौंगीलागीभ्रमतनरऐसें ॥ भएकोटिछपनकुल
जादव ॥ ज्यौंघनघमंडिचिहुंदिसिभादव ॥ १२ ॥ तिनकौंबहुतभांतिविस्तारा ॥ गनतीकरतरहेकोपा
रा ॥ भवनआपनोकमलाकीयौ ॥ नवनिधजहांबसेरालीयौ ॥ १३ ॥ बहुरिसुधरमासभामगाई ॥ बैठें
जहांनऽयापेकाई ॥ तिनकीसमताकौनबताऊं ॥ तिनलोकमेंकहीनउपाऊं ॥ १४ ॥ तिनकीबातकहतअ
बऐसी ॥ पलकमांहिसुपनेकीजैसी ॥ च्यारघरीमेंसबसंघारे ॥ ज्यौंबुदबुदापवनकेंमारें ॥ १५ ॥ राम
कृष्णातिहांकौतिकहारा ॥ आपुहिआपसकलसंहारा ॥ विप्रश्रापकोकीनौंव्याजा ॥ एसबकृष्णदेवकेका
जा ॥ १६ ॥ कोकनिकौंवैराग्यजनायौ ॥ उद्धवयाद्वारासमझायौ ॥ प्रथमभीमअर्जुनदैत्र्प्रनी ॥ दुष्टनृप
तिअरुसेनाहनी ॥ १७ ॥ याविधिभूकौंभारउतार्‍यौ ॥ नामरूपजलकौविस्तार्‍यों ॥ जाकौंगहिपहुंचैभव
पारा ॥ आगेंजनजेहोहिअपारा ॥ १८ ॥ बहुतभांतिकरिअदभूतकर्म्म ॥ थाप्योजगतभागवतधर्म ॥
याविधिसबकेकाजसंहारें ॥ तबहरजीवैकुंठपधारें ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसीसुनिअदभूतक
था ॥ जदुकुलकौंद्विजश्राप ॥ कृष्णकरीराजातहां ॥ लषवैतिनकौंपाप ॥ २० ॥ ॥ राज्ञोवाच ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ तेतोविप्रभक्ततेसारे ॥ परमदानअरुसेवकभारें ॥ विप्रकोपकीनौंक्योंपूर्ण ॥ जातेंनासभए

सबतूर्ण ॥ २१ ॥ कोननिमितआपसौंकोन ॥ कहोकृपाकरीकरुणाभौन ॥ एकमनाजादवतेंसारें ॥ आ
पुहीआपकौंनविधिमारें ॥ २२ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूकौंभारहरनकेकाजा
भूअवतारलियोवृजराजा ॥ बहुविधभूकौंभारउतार्यौ ॥ तबमनमेंगोपालविचार्यौ ॥ २३ ॥ ज्यौंलागि
हजादवकुलसारौं ॥ त्यौंलगिनहीभूभारउतार्यौं ॥ ममआधीनरहैंएसारें ॥ तातेंनिजकरवनेनमारें ॥
२४ ॥ दूजोकोईसकेनहीमारी ॥ तातेंकीजेजतनविचारी ॥ ज्यौंबहुवांसबढेवनमांही ॥ पवननिमितपाई
घरसाईं ॥ २५ ॥ आपआपुमेंअग्निउपावें ॥ तासौंलागसकलजलजावें ॥ हैंत्यौंइहांपवनद्विजआप ॥
क्रोधअग्नितहांआपहिआप ॥ २६ ॥ कविविस्तारहोइसंघार ॥ यहठरयोकृष्णविचार ॥ आएसकल
ऋषिसरभौंन ॥ निकटक्षेत्रकरवायोंगोन ॥ २७ ॥ कणवअंगिराविश्वामित्र ॥ दुरवासाभृगुआत्रेअग
स्त ॥ कस्यपवामदेवअरुनारद ॥ औरबहुतऋषीबहुविसारद ॥ २८ ॥ तहांसबेमुनिसुखसौंबेठे ॥ ज
दुकुमारतहांछलकरिपेंठे ॥ सांबहींबनिताभेषबनायो ॥ वस्त्रादिकनिउदरआधिकायो ॥ २९ ॥ अति
बीनतीसौंचरणनिलागे ॥ पुछेकृष्णखरेतिनआगें ॥ यहबनितारपूछेद्विजराजा ॥ सनमुपहोतलगेंअति
लाजा ॥ ३० ॥ निकटप्रसवआयोहैंयाकौं ॥ करोबिचारआपमेंताकौं ॥ तुमत्रिकालदरसीसनजानौ॥
कहाजनहिसोहमहिबषानौं ॥ ३१ ॥ तबकरीक्रोधवचनतेभनै ॥ कुलनासनमुसलएजनै ॥ जातेंतुमबहु
मदसौंमातें ॥ दुष्टबुद्धिहोवोसबजातें ॥ ३२ ॥ वैनसुनतअतिभयमनआयौ ॥ तबहीतहांउदरछोटिकायो

देप्योतहांलोहकीमुसल ॥ तबतिनजान्योनाहींकुसल ॥ ३३ ॥ तेसबबहुभांतिपिछताये ॥ लेमुसलराजा पेंआये ॥ उग्रसेनसोंबोलेबेन ॥ अतिमलीननाहिंजोरेंनेन ॥ ३४ ॥ सुन्योआपअरुमूसलदेप्यौ ॥ जीबन सबनिगयोकारिलेप्यौ ॥ मूसलरेतचूरनकरवायो ॥ कृष्णनपुछोसमुंदबहायो ॥ ३५ ॥ तातेंरेतरह्योअति तुच्छ ॥ ताकोंनिगलगयोएकमछ ॥ तेचूरणलहरनिकेमारे ॥ आएतीरभअतृनसारे ॥३६॥ झीवरए कजालबिस्तर्यौ ॥ औरनिसंगमछसोपर्यौ ॥ ताकेउदरलोहसोपायो ॥ व्याधएकसोबानबनायो ॥३७ ॥ हरजीबातसकलसोजांनी ॥ बहुतभलीहिरदेमेमानी ॥ जद्यपिजोगअन्यथाकरनें ॥ परीमनमाहींस कलसंहरनें ॥ ३८ ॥ यहिविधिसकलआपमनमांई ॥ ताकौंफेरिसकेंक्युंकाई ॥ निश्चैऐसीथापूव्यापू ॥ यदुकुलषोऊंद्विजकेसरापू ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥यहबैरागनिरूपयो ॥ ज्ञानकाजशुकदेव ॥ ज्ञानकहोंअबज्योंलह्यौ ॥ नारदसोंवशुदेव ॥ ४० ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुरानेएकादशस्कंधेअ ष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांजदुकुलआपनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥१॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दुजैश्रीवसुदेवजी ॥ पूछोनारदपास ॥ नवयोगेश्वरजनकप्रति ॥ कीनौज्ञानप्रकास ॥ १ ॥ श्रीशुकउ वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ द्वारावतीआपतहांपालक ॥ ताहांनहींदक्षआपकौंतालक ॥ नारदातिहांनिरंत रआवें ॥ कृष्नदेवकेदर्सनपावें ॥ १ ॥ जीवनमुक्तभजेनितजाकौं॥वंध्यौजीवतजेक्यौंताकौं ॥ जाकौंसक ललोकमेंकाल ॥ जाहांतहांनिसिदिनाबिहाल ॥ २ ॥ मानवतनइंद्रियनिसौंराजा ॥ इतनिहरिसेवाकेसा

जा ॥ वंछेजांहींब्रह्मसुरराजा ॥ कृष्णदेनसेवाकेकाजा ॥ ३ ॥ ऐसीदेहभागतेंपावें ॥ हरिकीसेवाक्योंछ
टिकावें ॥ पलमेंकाटेंकालकेपास हरिकौंपावेंहरिकौदास ॥ ४ ॥ एकवारवशुदेवकेभवन ॥ नारदकी
योकृपाकरिगवन ॥ तिनबहुविधपूजाबिस्तरी ॥ तापीछेंअस्तुतीकरी ॥५॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ हेप्र
भुजीतुमारौआगमना ॥ सबदेहीनकौंसुषकौंभवना ॥ उपमातुमहीकोनकीदीजे ॥ जिनकेदरससकलभय
छीजें ॥ ६ ॥ औरदेवदेवैंसुषदुषकौं ॥ तुमसेंसाधप्रगटपरसुषकौं ॥ जिनकेह्रदेविराजेराम ॥ तिनतेंहो
इकोननहींकाम ॥ ७ ॥ ऐसेफलदाइकसबदेवा ॥ तेतोलहेंजेनीकरेंसेवा ॥ ज्यौंकरलेंदरपनकौंकोई ॥
आपकरैंआभासेसाई ॥ ८ ॥ तुमसेंसाधसदासुपदाई ॥ जिनकीमहिमाकहीनजाई ॥ जद्यपिदरसेंमेंभ
योकृतारथ ॥ पूछौंदेवतथापिहितारथ ॥ ९ ॥ जोभागवतधर्मसुनीजीव ॥ जनममरणतजिपावेंपीव ॥ तिन
आचर्यानितुमकौंदेव ॥ हरिप्रणसोभाष्योभेव ॥ १० ॥ पूर्वजनमसेवामेंकरी ॥ मायामोह्योसमुझउनपरी
॥ तबमेंहरिपुत्रकरीव्यौ ॥ तांहिंहुतेंनहींउधर्यौ ॥ ११ ॥ तातैंअबमेंतुमरीसरना ॥ सोकहूकर्योमी
टेज्यौंमरना ॥ काहांलोंकहौंजगतकेदुष ॥ जामेंसुपनेहुंनहींसुष ॥ १२ ॥ जहांजहांजाइतहांतहांका
ल ॥ हरिबिनजीवसदाबिहाल ॥ ऐसेंबचनसुनेजबनारद॥ तबतेंबोलेपरमविशारद ॥१३ ॥ ॥ दोहा
परमबचनवसुदेवकेसुनिकैंभयोअनंद ॥ भगवतधर्मप्रकाशियोबोलिपूरनकंद ॥ १४ ॥ नारदउवाच ॥
चौपाई ॥ ॥ धनबसुदेवधन्यतुमबानी ॥ जाकरिपूछेसारंगपानी ॥ कोइहोइसकलजगवातक ॥ वि

ष्णुधरमतेंरहेनपातक ॥१५ ॥ श्रवणकीरतनआदरध्यान ॥ अनुमोदनउकरेंसयान ॥ सोपुनितहोवेंतत
काल ॥ बहुरीपरेंनहिजमकेजाल ॥ १६ ॥ तुमयहकीयोबडोउपकार ॥ मोहिसुमारयोसिरजनहार ॥
जाकोश्रवनकीरतनऐसौ ॥ अंधकारकौंसूरजसैसौं ॥ १७ ॥ तुमसोंकहोंकथाइतिहास ॥ जातेंछूटेंभव
केपास ॥ ऋषभदेवसूनतनवजोगेश ॥ तिनकेंसुनियोजनकनरेस ॥ १८ ॥ सुनिकेब्रह्मपराइनभयो ॥ ज
नममरनसंसारसबमयो ॥ अबउतपतीकहतहौंतिनकी ॥ पूरणप्रीतरामसोंजिनकी ॥ १९ ॥ स्वायंभुवम
नुनृपतीसिरताजा ॥ ताकौंतनयप्रीयव्रतराजा ॥ ताकौंआग्नीध्रसुतभयौं ॥ नाभिजनमताहिंतेंलयों ॥ २० ॥
ताकेऋषभदेवअवतारा ॥ जिनप्रगटायोब्रह्मनिचारा ॥ ताकेपुत्रएकसतभएं ॥ सकलवेदकेपारहिगए ॥
२१ ॥ तिनमेंबडेभरतसेंनाम ॥ जाकेरहदेबसेनितराम ॥ जातेंभरतखंडयहकह्यौ ॥ तातेंअजनाभनाम
तेंलह्यो॥ २२॥ प्रथमब्रोतहीभोएभोग॥ समझत्यागपुनिलीयोजोग॥ मनक्रमबचनकरिंहरिभक्ति॥ तीजज
नमलहीतिनमुक्ति॥२३॥तिनमेंनवनवषंडनरेस॥एकअस्असीकरमउपदेस॥नवतेमहाभोगअधिकारी॥
सबतजीसेवेंचरणमुरारी ॥ २४ ॥ तजिअनर्थअर्थविस्तारें ॥ याविधिजीवबहुतानिस्तारें ॥ देहअतीतदि
गंबरबेष ॥ सदाहृदयमेंएकअलेष ॥ २५ ॥ कविहरीअंतरिक्षपिप्पलायन ॥ आविर्होत्रपरबुधपरा
यन ॥ द्रुमिलचमसकरभाजननाम ॥ इननवनिकौब्रह्ममेधाम ॥ २६ ॥ आपहिंआदिसंसारपसारा ॥
सबकोजोनेंसिनजनहारा ॥ द्वैतभावकौंभिनोषंड ॥ याविधिविचरेंसकलब्रह्मंड ॥ २७ ॥ सुरअरुसाध

सिद्धगंधर्व ॥ किंनरजक्षनागनगसर्व ॥ सकललोकमेंइछाचारी ॥आडरहितसबमेंअधिकारी॥२८॥
निमिसनामजनककेसत्रा ॥ एकवारतितकीनीयत्रा ॥ रविसिसोभितजिनकीदेहा ॥ आवतदेषेंनृपतिविदे
हा ॥ २९॥ राजाअग्निविप्रउठिध्याए ॥ आगेंव्हेलेवकोंआए ॥ क्रमक्रमआनिधरेंसिंवासन ॥ क्रम
हिंक्रमतेंबेठेआसन ॥ ३० ॥ तबहीताहिक्रमपूजाकीनी ॥ करिदंडोतप्रदक्षिणदीनी ॥ थकआभरण
वस्त्रबहुरंगा ॥ तेसबसोभेतिनकेअंगा ॥ ३१ ॥ ज्ञानविचारब्रह्ममयऐसें ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकजेसें ॥
तबकरजोरिमयोनृपठाढौ ॥ बाल्योवचनप्रेमअतिबाढौ ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ तबनृपकोंआनंदव
ढेएकछुनरहिसंमाल ॥ प्रेममगनव्हैबोलियोबानीपरमरसाल ॥ ३३ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥चौपाई
॥ तुमपारषतपरमहरिजीकें ॥ मैजानेसबईनमेनीकें ॥ जीवनिकेंउधरषेकारज ॥ सकललोकमेंविचरोआ
रज ॥ ३४ ॥ धनमेघनमेरोअवतारा ॥ जातिंपायोदरसतुमारा ॥ नानायोनिजीवयहपावें ॥ मानुषतन
सोंकबहुकआपावें ॥३५॥ याविधिनरदेहनहुगेहें ॥ दुरलभसाधसंगनवलेहें ॥ जिनकेंसंगमिटेंभवबंधा
॥ नैनअनंतलहेंज्यौंअंधा ॥३६॥ प्राणनाथहरिहिरदेविराजें ॥ छूटेकर्मभरमभयभाजें ॥ आधोक्षणहो
वेंसतसंगा ॥ सोइकरेजगतभयभंगा ॥ ३७ ॥ तातेंममसंदेहमिटावो ॥ परमपेमसोमोहिसुनावो ॥ भ
गवतधर्मकहोविस्तारी ॥ जोमेहोंसुननेअधिकारी ॥ ३८ ॥ जिनतेंमिटेंजगतमयभारी ॥ वहुरिआप
कौंदेतमुरारी ॥ एसुनिबचनसबनिसुषपाए ॥ तबहींमानदेबेनसुनाए ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

नृपकेमनआनंदभयोभाग्योभरमअंदेस ॥ तबराजाप्रश्णकरिबोल्योकविजोगेस ॥ ४० ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजाप्रश्णकरीतुमएसी ॥ बडभागापुछतहेंजेसी ॥ निरभयपदएकहेंदेवा ॥
हरिकेचरनकमलकीसेवा ॥ ४१ ॥ ताकौंछोडिकरेंनरजोई ॥ दुपकोमूलहोतहेंसोई ॥ जहांजहांजाई
तहांदुपभारी ॥ कालपासकहुंटरेंनटारी ॥४२ ॥ तातेंकहेंभागवतधर्मा ॥ मिलेंरामछूटेंभवभर्मा ॥ श्री
मुपश्रीभगवानसुनायो ॥ आपमिलनकोपंथबतायो ॥ ४३ ॥ मूरखउजेहोवेंकोई ॥ इनपंथहरिपावेसोई
॥ भ्रमनहिहोहिविलंबनलागें ॥ भर्मनिसासुतोज्यौंजागै ॥ ४४ ॥ आंषिंषिमुदिउध्यावेंकोई ॥ याहरिपं
थनकछुभयहोई ॥ हरिमिलनकोमारगएहा ॥ हरिभजीमुगतहोईयहदेहा ॥ ४५ ॥ हरिकीभक्तिसबने
तेन्यारी ॥ कौटिविघनतैटरैनटारी ॥ अजरनामहैभक्तिपियारी ॥ तातेंपारहोइनरनारी॥ ४६ ॥ हरि
मिलनेंकोमारगकहौं ॥तेरेउरकौसंसादहौं ॥ मनक्रमबचनबुद्धिअरुचित ॥ होईसुभावहूतेंजोनित ॥ ४७
॥ सोसबहरीहीसमर्पनकरैं ॥ योभगवतधर्मनिविस्तरै ॥ जबयहजीवहरीहिविसरवै ॥ तबहरिकीमाया
आवरवौ ॥ ४८॥ तबआपनोस्वरूपभुलायो ॥ आपमानितनमेमनलायौ ॥ द्वैतभावतबउपजेमनमें ॥ ताहि
तेंयहमरेजिनमें ॥ ४९ ॥ तातेंबुधिसेंवेहरिचरना ॥ जातेंमिटेंजनमअरुमरना ॥ सोधिलेइउतमगुरुदेवा॥
हरिकौंजानिकरेंनितसेवा॥ ५०॥सोज्यौंज्यौंआचणंबतावें ॥ त्यौंत्यौंहरिसौंहेतलगावे ॥ कपटनभजेतजेंस
बकाम ॥ छूटेंजगतामिलेंतबराम ॥ ५१ ॥ द्वैतकछुहैयेनाहिराजा ॥ आभास्यौसोमनकौकाजा ॥ जेसेंमृ

षामनोरथसुपना ॥ मनहींकारितदोनौंउपना ॥ ५२ ॥ हरिकेजनमकर्मगुणनामा ॥ सुनैंकहैंसुमरैंसबजा
मा ॥ तजैंलाजहोवेंनिहसंगा ॥ मगनरहैंनितहरिकेरंगा ॥ ५३ ॥ हेकछुनाहींपारिहैंसोहैं ॥ ताकेसंग
लागिसबमोहैं ॥ तोसंकल्पविकल्पनकीजैं ॥ मनदृढराषिरामरसपीजैं ॥ ५४ ॥ ऐसेंभजतप्रेमअधिका
वें ॥ सबतनरोमांचितव्हेंआवें ॥ गदगदशब्दअटपटेबैंना ॥ द्रवेंचितजलबरषेंनैंना ॥ ५५ ॥ रोवेंह
सैंउचैंसुरगावें ॥ कबहुंमोनमहिरहोजावें ॥ लोकबेदकुललाजनज्यानै ॥ ज्यौंउनमतांविवसयोंठानै ॥
५६ ॥ दसदिसिसरीतासिंधूनगनागा ॥ रविशशितारांहंसरुकागा ॥ षितिजलपावकपवनआकासा ॥
जोकछूदेषैंहरिकेदासा ॥ ५७ ॥ हरिकौरूपसकलकौंजांनै ॥ जहांतहांपरनामहींठांनै ॥ कबहूंभूलनभा
सैंआना ॥ भयेअनन्यभजैंभगवांनां ॥५८॥ ज्यौंज्यौंबढैंकृषणअनुरागा ॥ त्यौंत्यौंओरसकलकोत्यागा
ज्यौंज्यौंअनुभोजनप्रतिग्रासा ॥ तोषतोषअरुभुषविनासा ॥ ५९ ॥ याविधिकरतेसाधनभक्ति ॥ हरि
जीसुंबाढेंअनुरक्ति ॥ तबकछुओरभुलिनहींभासैं ॥ तबहिरदेमेंज्ञानप्रकासैं ॥ ६० ॥ ब्रह्मएकदसहूंदि
शिदेषें ॥ द्वैतभावकरकदेंनलेषें ॥ एसेअंगभागवतमाहीं ॥ सोहरिमेंहेंजगमेंनाहीं ॥ ६१ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ एसुनिकाविजीकेवचन ॥ कीनोंप्रष्णविदेह ॥ अबभाषोभागवतके॥ लछनकरुनागेह ॥
६२ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुजीकहोभागवतलछन ॥ जिनबसहोवेंरामविचछ
न ॥कोनधर्महिरदेदृढराषें ॥ क्यौंआचरेंकोनबिधिभाषें ॥६३ ॥ कोनसुभावनिरंतरतिनकें।।द्वैतभावनाहीं

उराजिनकें ॥ वोलेहरिजोगेश्वरदूजें ॥ नृपकेवचननहुतातिनपूजें ॥ ६४ ॥ हरिरुवाच ॥ ॥ चौपाई स्थावरजंगमसूषमथूला ॥ एकप्रकृतिसकलकोमूला ॥ सोएकआतमकेआधारा ॥ सोआतमाअंसनिरकारा ॥ ६५ ॥ हरिजीतेंउपजेंएदोई ॥ अंतलनिहरिमेंहहोई॥तातेंअबहूंहरिकोंजाने ॥ द्वैतभावकबहूं नहीआनें ॥ ६६ ॥ ज्योंसागरबुदबुदातरंगा ॥ यौंसबजगतजगतपतिसंगा ॥ याबिधजांनिभयोजोथीरा ॥ सोहरिजनउत्तमहेंबीरा ॥ ६७ ॥ जाकौंहरिसौंनिहचलप्रेमा ॥ अरुहरिजनसंगतिनितनेमा ॥ सबजीवनिपरिकरुणाआनें ॥ सबउधरेत्द्वदेयोंजानें ॥ ६८ ॥ जोंकोउतापरिदोषहींठानें ॥ तहांतजेकेजौं योंछानें ॥ निसदिनरहेंरामरंगराता ॥ सोहरिजनमध्यमहीताता ॥ ६९ ॥ जोमुरतिमेंहरिकोंजानें ॥ मनक्रमबचनआनमाहिआनें ॥ ताकौंपूजेहितचितलाई ॥ कछुनमागेंसहजशुभाई॥७०॥तेंहरिजननभजे हरिजानी ॥ सतगुरुबिनानाहींपहिचानी ॥ सबआतमाहरिकोंनहिजाने ॥ सोप्राकृतजनसाधुबपानें ॥ ७१ ॥ बहुरिकहुंउत्तमहरिभक्त ॥ ताहीपुरुषहुजेंआसक्त ॥ दरसपरसतेंकारजसारें ॥ तेहरिजनभवसागरतारें ॥७२॥ कृष्णबसेजाकेमनमाहीं ॥ औरकछुसतजानेंनाहीं ॥ जोकछुकहेंसुनेंअरुदेषें ॥ इंद्रियकृतमायासबलेषें ॥ ७३ ॥ सोहरिजनउत्तमनरदेवा ॥ तातेंमिलेंनिरंजनभेवा ॥ जोजनब्रह्मविचारहिपायौ ॥ आपसमजीसुषमाहिसमायौ ॥ ७४॥ जनममरणनदेहकौंजानें ॥ क्षुधातृषाकोंप्राणहिमानें ॥ तृष्णाबुधिरुमयसोमनकों ॥ यहलछनउत्तमहरिजनकों ॥ ७५ ॥ कर्मवासनाअरुसबकामा ॥ तिनकौ

भूलिनजानेनामा ॥ वासुदेवमेंकीनौवासा ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ ७६ ॥ जिनकेजातिवरनकुल कर्मा ॥ लोकनबेदनहिंआसरमा ॥ भूलिदेहअभिमाननआवें ॥ सोउत्तमहरिदासकहावें ॥ ७७ ॥ कि सिवस्तुपरिममतानाहीं ॥ अरुतनकोअभिमाननमाहीं ॥ सबभूतनिपरिसमताआनें ॥ सोउत्तमहरिदासब खांनें ॥ ७८ ॥ अष्टसिध्यित्रिभुवनसुषआवें ॥ परिसोकबहूमननडूलावें ॥ लवनिमिषार्द्धतजेंनाहिंचरणां ॥ गुणातीतनिरभयपदसरणां ॥ ७९ ॥ नाकौंशिवविरंचिअरुदेवा ॥ तनमनलाइकरेंनितसेवा ॥ तेऊजाकें चरणनपावें ॥ ताकौंजनक्यौंकरिछाटिकावें ॥ ८० ॥ हरिकेचरणचंद्रचितजाकौं ॥ इहातापउठैक्यौताकौं ॥ एसौउत्तमहरिजनकहिए ॥ ताकेंसंगपरमपदलहिए ॥ ८१ ॥ याकौंहरिजीनिमषनत्यागें ॥ प्रेमदोरिबाधेक्यौंभागें ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ करेंनतजीएताकोपासा ॥ ८२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्रिविधभक्तलछनकहेंनृपसौंहरिजोगेस ॥ तबमायाकेजानबेकीनीप्रश्ननरेस ॥ ८३ ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभाषाटीकायांनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कवीहरीके बचनसुनिपूछतहैंनृपराय ॥ अंतरिक्षप्रबुधमनपिप्पलायनऋषिराय ॥ १ ॥ आविहोंत्रविचारतेंकह्योतत्वनिबसार ॥ श्रीधरतीजैध्यायमेंहैयोगेश्वरचाय ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबकरीक्रिपाकहोहरिमाया ॥ जिनयहसकललोकभरमाया ॥तुमरेमुषसरोजकीबानी हरिकीकथाअमृतमयजांनी ॥ १ ॥ ताकेपिवततृतिनहींमानौ ॥ सदापिऊंऐसीमनजांनौ ॥ भवकेतापतपनजोदेही ॥ ताकौंपरम

ओपदीएही ॥ २ ॥ ऐसेंसुनीनृपतीकेवेना ॥ वकताकौंउपजावतचैना ॥ तववोलेवानीअभिरामा ॥ ती
जेअंतरिक्षसेनामा ॥ ३ ॥ ॥ अंतरिक्षउवाच ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ प्रथमहीदूजोहुतोननामा ॥
आपुहिआपविराजेरामा ॥ दयासिंधुमनमांहिविचारा॥तवयहकर्योसकलसंसारा ॥ ४ ॥ पंचभूतकरि
रचियादेह ॥ बांध्योतहांआतमाएह ॥ जातेंपहिलेंभोगवेंभोगा ॥वहुर्योदूषितहोईभवरोगा ॥ ५ ॥ ताते
मोसोंचितलगावें ॥ मेरोनिजानंदपदपावें ॥ मगनरहेमेरेआनंदा ॥ वहुरिनहिंपावेंदुषदंदा ॥ ६ ॥ याही
तेंयहभवविस्तार्यौ ॥ भितरअंसआपनोडार्यौ ॥ इंद्रियदसअरुमनविस्तारें ॥ वहुभांतिकेंविषैसवारें
७॥सोयहअंसइंद्रियनिमनसौं॥भोगभोगवेंसवयातनसौं ॥आपभूलिभोगनमनदीनौ ॥ तवअभिमानदेहकौ
कीनौ ॥ ८ ॥ भोगानिमितकर्मविस्तारें ॥ तिनकेफलसुषदुषभएभारें ॥ तिनकर्मनितेंजोनिअनंता ॥ जन
ममरणकौंलेंहनअंता ॥ ९ ॥ प्रलयअवधिलौंभ्रमेंनिरंतर ॥ लीनहोइपुनिमायाअंतर ॥ श्रष्टिसमैंवहुर्यो
तनपावें ॥ भवसागरकौंअंतनआवें ॥ १० ॥ भ्रमतभ्रमतप्रलैंअवधिआवें ॥तवसवनासकालमनभावें ॥
तवसतवरषनवरषेंजलधर ॥ तेजतपेंतहांद्वादसादिनकर ॥ ११ ॥ वहुर्यौअग्निशोषमुषानेसरें॥प्रलयप
वनामिलिजहांतहांपसरें ॥ सारोलोकभस्मतवकरें ॥ वहुरोंप्रलयमेघसंचरैं ॥ १२ ॥ हातींसुंढधारुजल
वरषें॥ यौंअखंडवीतेसरवरषें॥तवहोवेंविराटकौनासा॥आतमकरेप्रकृतिमेंवासा॥१३॥जोअभक्तहोवेंब्रह्मा
हु॥तोइूंब्रह्ममाहिनहिजाहूं ॥जेहरिभक्तसुहरिकौपावें॥ ओरप्रकृतिमेंसकलसमावें ॥ १४ ॥पवनकरेंजव

गंधहीक्षीनां ॥ भूमिहोइतबजलमेलीना ॥ त्यौंहींरसकौंहरेंसमीर ॥ तातैंमिलैंतेजमेनीर ॥ १५ ॥ अंध
कारजबरूपहिहरें ॥ तेजतबैपवनसंचरें ॥ बहूरिस्परसहरेंआकासा ॥ पवनकरेंतबनभमेवासा ॥१६॥
कालकीयोजबशब्दहिक्षीनां ॥ तामसअहंकारनभलीना ॥ तामसअहंकारमनामिलैं ॥ राजसअहंकार
दोउगलैं ॥ १७ ॥ इंद्रियअरुराजसअहंकारही ॥ सत्वअहंकीनौंअहारहीं ॥ बुधिदेवसात्विकअहं
कारा ॥ महतत्वकीनौंसंहारा ॥ १८ ॥ महतत्वसौंप्रकृतिहिमिलैं ॥ याविधिकालसकलकौंगिलैं ॥ऐसी
हिविधिवारंवारा ॥ उतपतिप्रलयनअंतनपारा॥ १९ ॥ यहसबहरिकीमायाकरें ॥ उपजावैंप्रतिपालैंहरें॥
मैंतुमकोंसंक्षेपसुनाई ॥ बहुरिप्रश्णकरोमनभाई ॥२०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसीसुनीमायाप्रबलउपज्यो
नृपकेभीत ॥ तबपूछीआधीनव्हैतातरवेकीरीत ॥ २१ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई॥
ऐसीप्रबलईसकीमाया ॥जिनयहसकललोकभरमाया ॥ ताकौंतुमसैंग्यानितरें ॥ हमसेंदेहीक्यौंनिस्तरें ॥
२२ ॥ ताकौंसुषेंतरीएदेवा ॥ सोकरिकृपापावतावोभेवा ॥ एसुनिवचननृपतिकेसुधा ॥ तबबोलेचौथेंप्र
बुधा ॥ २३॥प्रभुधउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सकलमनुष्यसुषनिकेकाजा ॥ करेंकर्मआरंभाहि
राजा ॥ तिनतेंकेवलदुषअधिकारा ॥ अबहूंअरुआगेंविस्तारा ॥ २४ ॥ पाएहूंधनदुपअपारा ॥ निरा
दिनचिंताकौंअधिकारा ॥ सोउअतिदुर्लभनहींआवें ॥ जोआयेतोथीरनरहावें ॥ २५ ॥ त्यौंहीग्रहकुटंब
सुतदारा॥पलकमांहिढईजाईपसारा ॥ ज्यौंपंथमांहिमिलनाहोई ॥ घरींमांहीविछरेंसबकोई ॥२६॥ जो

कछूइहांकमेकमावें ॥ तिनतेंज्योनिज्योनिदुषपावें ॥ इनमेंकोईनहीछोडावें ॥ आपआपकौसबकोइजावें ॥ २७ ॥ याहिविधिनस्वरपरलोका ॥ स्थिरनरहेंबिधिहुंकोओका ॥ छोटेबडेनीचबहुभांती ॥ तिनकेमतकीमिटेनकांती ॥ २८ ॥ मदमत्सरअरुचाहेमांना ॥ कामक्रोधअरुलोभसमाना ॥ तृष्णाबंधेकछूनहीजाने ॥ आपआपुमेंजुधहिंठाने ॥ २९ ॥ कालपाईउहांतेंपरें ॥ बहुरिआईइहांअवतरें ॥ योंविचारीवैरागउपावें ॥ तबहिसोधिगुरुसरणेंआवें ॥ ३० ॥ ब्रह्मजानितासेवाठांनें ॥ आलसकपटकामनाभांनै ॥ तातेंसीपेंभक्तिकेअंगा ॥ जिनतेंहरिजीतजेनसंगा ॥ ३१ ॥ शब्दब्रह्मसकलजोभाषें ॥ परब्रह्मनितत्वदेयेरापें ॥ ऐसेंगुरुबिनज्ञाननपावें ॥ तातेंसोधिगुरुपेंआवें ॥ ३२ ॥ सबतेंमनकोसंगमिटावें ॥ उलटिसाधसंगतिसोंलावें ॥ समभित्रउत्तमबहुमानें ॥ ब्रह्मज्ञानीसबपूजाठांने ॥ ३३ ॥ सौचपाठतपमौनतितिक्षा ॥ बहुविधिलेवेंगुरुसौंशिक्षा ॥ ब्रह्मचर्यअरुकोमलरहना ॥ हिंसात्यागिद्वंधसबसहना ॥ ३४ ॥ एकाकीआश्रमनहींबांधें ॥ वस्त्रटुककेबलकलसाधें ॥ जहांतहांआतमचेतनदेषें ॥ परमातमानियंतालेषें ॥ ३५ ॥ ग्रंथभक्तिकीश्रधाकरैं ॥ निंदारागद्वेषपरिहरैं ॥ देहवचनअरुमनकौंदंडें ॥ समदमसतसंतोषनषंडें ॥ ३६ ॥ जनमकर्मअरुगुणहरिजीकें ॥ सदासुनेंउधारणजीकें ॥ त्यौंहीकहेंनिरंतरध्यावें ॥ सोइकरेंहरिहीजोभावें ॥ ३७ ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदांनां ॥ तनमनधनदारासुतप्रांनां ॥ जोकछुसोसवहीरोंहीनवदें ॥ याविधिसकलकर्मकौंछेदें ॥ ३८ ॥ थावरजंगमहरिमयजानें ॥ परिसेवासंतनकीठामे ॥

मिलिपरसपरहरिगुणगावैं ॥ निसदिनकहतसुनतसुषपावैं ॥ ३९ ॥ पलपलप्रीतिनिरंटहीएहूलैं ॥ गुणानि
संभालततनकौंभूलैं ॥ दूजाभावनकबहूंउपनैं ॥ प्रेममगनजागतअरुसुपनै ॥ ४० ॥ ऐसेंप्रेमभक्तिकौपावैं
॥ पलपलतनपुलकितव्हैंआवैं ॥ कबहुंहरिचितवनतेंरोवैं ॥ कबहुंहसेंआनंदितहोवैं ॥ ४१ ॥ कबहुना
चैंकबहुंगावैं ॥ लजारहितज्यौंज्यौंमनभावैं ॥ कबहुंसुमरिसुमरिमिलिजावैं ॥ स्वासशब्दवाहरनहींआवैं
॥ ४२ ॥ याविधिलेवेंगुरुसौंशिष्या ॥ गुरुशिष्यनकौहपारिष्या ॥ ब्रह्मपराइनताजानकेरें ॥ मायाभूलि
नआवेंनेरें ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥एसुनीवचनविदेहकेत्हदयवढ्योआनंद ॥ प्रश्नकरीतनब्रह्म
कौज्यौंछूटेंभवफंद ॥ ४४ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मचेतनमेंतुमअधिकारी ॥
तुमहौंहयमेंत्हदेविचारी ॥ तातेंकहौंब्रह्मकोरूपा ॥ जांनेजाहिमिटेग्रहकूपा ॥ ४५ ॥ परमातमाब्रह्मभग
वाना ॥ एसबएककिधोहैंनाना ॥ सबजीवनकौंअतिकरुनायन ॥ तबबोलेपंचमेंपिप्पलायन ॥ ४६ ॥
पिप्पलायनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुखमथूलसकलसंसारा ॥ जाकोशक्तीसकलपसारा ॥
उत्पत्तिप्रलयकरेंवायांकौं॥काहुंतेंजनमनहींताकौं॥४७॥जाग्रतसुपनसुषोपतितूरिया॥चहुंमेसदाएकरसपुरी
या॥इंद्रियदेहत्हदयअरुप्राना॥जातेंचेतनहैवरतांना ॥ ४८ ॥ जेसेंयहजडलोहावरतें॥ चंबकसंगबहुत
विधिनिरतें॥सोभगवानब्रह्मपुनिसोई॥सोपरमातमजानेकोई ॥४९ ॥मनअरुबुद्धिचितअरुप्राना॥इंद्रियदे
हशब्दअभिमाना ॥ कोईतांहीपहुचिनहिसकै ॥ जातजातवेषरीथकै ॥५० ॥ जेसेंपावकलोहतपायो

॥ पावकसमांनतेजातिनपायौ॥सबप्रकासैंसबकौंजालैं॥परींपावकपरजोरनचालैं ॥५१॥यौंसबइंद्रियत्व्हदय अचेतन॥ताकेसंगहुतेसबचेतन॥औरसकलअर्थनिकौंजानै॥कौंनशकातिजोताहिपछानै॥५२॥लेलेअर्थ बखांनैंबेदा॥पारिप्रत्यक्षनजानैंभेदा ॥ यहनहीयहनहीयहनहींहोई ॥ यातैंपरैंसत्यहैसोई ॥५३ ॥ सूषमयू लनजावेंबरनी ॥ गगनपवनपावकजलधरनी ॥नहींमनबुधिचितअहंकारा॥ चिदानंदमयसबकेपारा ॥५४ नासोबालवृधनहीजुवा ॥ नासौंबिनसैंनांसोहुवा ॥ त्रियापुरुषक्लीवरनहोई ॥ सुरनरनागअसुरनहींसोई ॥ ५५ ॥ रक्तपितअसेतनहरिता ॥जातिबरनआश्रमनहिधरिता ॥ सीतउष्णचंदनहीसूरा ॥ दिवसन रातनिकटनहींदूरा ॥ ५६ ॥सुषदुषरहितबसैंसबमांहीं ॥आपुहिआपलिपैंकहुंनाहीं ॥बंध्योभावसौंआतम अंसा ॥ सून्यसरोवरविलसेहंसा ॥ ५७ ॥ गगनपवनपावकअरुनीरा ॥धरनिबंधएकोएशरीरा ॥ पंच वस्तएपंचोबंधा ॥ शब्दसपरसरूपरसगंधा ॥ ५८ ॥ इंद्रियदशअरुतिनकेदेवा ॥ सातिकराजसताम सभेवा ॥ मनबुधिचितमहतत्वअहंकारा ॥ एकप्रकृतिकौंसकलपसारा ॥ ५९ ॥ एकब्रह्महैताकोकार ण ॥ विनइच्छासबकौविस्तारण ॥ ज्यौंभुवमैंबहुघटउपजावैं ॥ भुवमेरहिभुवमाहिसमावैं ॥ ६० ॥ तेस बघटदीसैविधिनाना ॥ परिभुवछोडकछूनहिंअना ॥ त्यौंसबजक्तआदिमधअंता॥ औरनकछूएकभगवं ता ॥ ६१ ॥ सोनहिंउपजैंबिनसैंनाहिं ॥ बालजुवादिकपरैंनछांहीं ॥ बढैनघटैंचलैंनहिंडोलै ॥ रोषनतो षमौननहींबोलैं ॥ ६२ ॥ जहांतहांपूरएपरमअनूपा ॥ चिदानंदबिज्ञानसरूपा ॥ देहभेदबहुधासोसोहैं ॥

ज्ञानबिनासारोजगमोंहैं ॥ ६३ ॥ जैसेंपवनएकहींप्राना ॥ दसइंद्रिसंगदीसेंनाना ॥ उद्भिजस्वेदजरायुज
अंडा ॥ चारिषानपूरनब्रह्मंडा ॥ ६४ ॥ लिंगदेहजादेहहिजावैं॥प्राणवायुतहांआनिमिलावै ॥ शब्दसु
परसरूपरसगंधा ॥ मनअहंकारबुधिचितबंधा ॥ ६५ ॥ लिंगदेहइनहीनवकौंहैं ॥ इनकेमिटैनिरंतरसो
हैं ॥ निंद्राबससुषपावैजबआवैं ॥ तबयहलिंगदेहछुटिकावैं॥ ६६ ॥ अहंकारममताकहुंनाहीं॥मनअरु
बुधिचितसबजांहीं ॥ तबअद्वैतएकहैसोई ॥ द्वैतभावकौनामनकोई ॥ ६७॥मनचितबुधिअहंकारनर
हैं ॥ जागेंप्रथमबातजोकहैं ॥ जोकरनोतोजोतोकीयो ॥ आगेंपिछैलीनोदीयो ॥ ६८ ॥जातेंसोहरिजान
नहारा ॥ याबिधिकीजेंज्ञानविचारा ॥ परिवासनासहिताहिरहैं ॥ तातेंदहेफेरकरीगहैं ॥ ६९ ॥ लिंगस
रिरसहीतवासन्ना ॥ तांहिमिटेनवसासना ॥ तातेंहरीचरणनचितलावैं॥ औरसकलबंधनछुटिकावैं ॥७०
याविधिसकलचितमलनासैं ॥ रविसमानतनब्रह्मप्रकासैं ॥ जोनरप्रथमभक्तिनहींजानें ॥ तौवहकर्मजोग
कौंठांनें ॥ ७१ ॥ कर्मजोगतेंउपजेंभक्ति ॥ तबहरीचरणबढेआसक्ति ॥ तातेंहोइंब्रह्मप्रकासा ॥ छू
टैंकालनालभवपासा ॥ ७२ ॥ ॥ दोहा॥ ॥ एपिप्पलायनबेनसूनिकौनिप्राष्णामिथलेस॥कर्मजोग
अबकरीकृपाकहोपरमजोगेस ॥ ७३ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कर्मजोगअब
होगुसाईं ॥ मैंआयोतुमरीसरनाईं ॥ जाकेकीएकटैंसबकर्मा ॥उपजेंज्ञानहोइनिहभर्मा ॥७४ ॥ दुजो
मणकहोतुमरहा ॥ याकौंमेरेंअतिसंदेहा ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ब्रह्मपराइनब्रह्मविचारी ॥ ७५

एकवारकृपाकरिआए ॥ पितासमीपदरसमेंपाए ॥ यहप्रश्नमेंतनसोंकीनी॥उत्तरनादियौहृदैधरिलीनी ॥ ७६ ॥ नहीनोलेसोकहोंनेकारन ॥ यहमाषोभवसागरतारन ॥ ऐसेंबचननृपतिजबभाषें ॥ आविरहोत छठतबआपें ॥ ७७ ॥ ॥ आविरहोत्रउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजासुनहुंकर्मगतिगहना ॥ तातेंजहांतहांबनेंनकहना ॥ यहज्यौंहेत्यौंबेदबषानें ॥ तातेंयाहिनकोईजानें ॥ ७८ ॥वेदप्रगटकरताहरि देवा ॥ ऋपिअरुपुरुपलहेक्यौंभेवा ॥ भेवलहेंबिनुमिटेनमरनां ॥ लहेभेवपावेंहरिचरनां ॥ ७९ ॥ तातेंतु महुंतंतवनाला ॥ जातेंकरवोनकर्मबिसाला ॥ अबहींकहोंसुनोचितलाई ॥ जानेंजाहिज्ञानअधिकाई ॥ ८० ॥ कर्मजोगहेंतीनप्रकारा ॥ कर्मअकर्मविकर्मपसारा ॥ हरिनिमितसोकहिएकर्मा ॥ हरिबिहीनसो सकलविकर्मा ॥ ८१ ॥ सोअकर्मजोदोउत्यागें ॥ ज्ञानबिनासुषइहांनआगें ॥ कर्मकरतछूटेंसबकर्मा ॥ उपजेंज्ञानमिटेंभवभरमा ॥ ८२ ॥ कर्मतजनकौंकर्मग्रहावें ॥ तातेंबेदनसमझ्यौआवें ॥ पहिलेस्वर्गादि कफलभाषें ॥ आगेंसकलदुरिकरीनाषें ॥ ८३ ॥ ज्यौंकोइबालकरोगीहोवे ॥ ओषदकटुकनामसुनी रोवे ॥ ताकौंलाडूपितादिषांवे ॥ ओषदकाजलोभउपजावें ॥ ८४ ॥ ओषदकोफललाडूनाहीं ॥ ओष दपीयेरोगसबजांही ॥ त्यौंस्वर्गादिकलेभदिखावें॥ कर्मनासकौंकर्मकरावें ॥ ८५॥ स्वर्गादिकफलपहुपित वांनीं ॥ तोरेपहुपहोतफलहानी ॥ तातेंकरेंबेदकेकर्मा ॥ हरिकेहेतबडोयहधर्मा ॥८६ ॥ औरकछुफलभूल नजानै॥ हरिकेहेतकर्मसबठांने ॥ मेंकरतायोंकदेनभाषें ॥ जोकछुसोहरिकौकरीराषें ॥ ८७ ॥ याविधिप्रेम

भक्तिउपजावें ॥ तबसबकर्मआपुहिजावें ॥ तबहींप्रगटेज्ञानप्रकासा ॥ मिलैंरामछुटैभवपासा ॥८८॥ बेदकपं
तथकह्योमतोसौं॥अन्नसुनितांत्रिपंथपुनमोसौं॥त्द्दैदेगांटकांटिजोचहैं॥सोविधिसोयोंपूजागहैं॥८९॥ बेदमि
लितभाषतहींपूजा॥जातेंमिटैंसकलभ्रमदूजा॥श्रीगुरुसौंपरसादहींपावें॥सोज्यौज्यैासबोवेधींहवतोवें॥९०॥
जामुरतिपरिइछाहोई॥हरिजानिकरिपूजेंसोई ॥अतिपवित्रहोइकरेअस्नांनां॥ मनकीतजेंवासनानाना ॥
॥ ९१ ॥ वायुअपानछीकजंभाई ॥ औरपवनगुएाउठेनकाई॥सनमुषवेठिकरैंतनरिछा ॥ अंगन्या
समंत्रपाठिइछा ॥ ९२ ॥ आसनसुधसाजसेवाकी ॥ सबलेवेठेंतजेंनवाकी ॥ विष्णुरूपप्रतिमामेंआनें ॥
अर्घपादअरुविष्टरठांनें॥ ९३ ॥ मूलमंत्रकरीसेवाकरे ॥ औरनकछूवचनउचरे ॥ सकलअंगहरिनि
कैध्यावें ॥ शंषचक्रगदापदमनिलपावें ॥ ९४ ॥ भूषनबसनपारषदसहीतां ॥ हस्तबदनदेषतदुषदहिता
विविधभांतिअसनानकरावें ॥ कारितिलकादिकवस्त्रपहिरावें ॥ ९५ ॥ बहुसुगंधमालापहिरावें ॥ बहुभां
तिकरिभोगलगावें ॥ गंधधूपआरतीउतारें ॥ घंटाआदिशब्दविसतारें ॥९६॥ याविधिमंत्रनिसोंसबकरैं
स्यांपीछैअस्तुतिविस्तरें ॥ बहुरिकरेदंडौतप्रनामा ॥ पढेंमंत्रलेवेंहारिनामा ॥ ९७॥ बाहिरवस्तुमिलैंतेआने
॥ औरनिमनसौंपूजाटांने॥तनमनभयेनिरंतरसेवें ॥वहप्रसादमाथेंकरीलेवें ॥९८ ॥ बहुरिदेवकौंहिरदेध
री ॥ मुरतिसयनपोटारिकरी ॥ याविधिहरिकेंआतमजानें ॥ यथाशक्तिसबपूजाठानें ॥ ९९ ॥ ज्ञान
ज्ञानकाजएसाधनभक्ति॥ ज्ञानपावेंतबहोवेंमुक्ति॥ उभेप्रतिमाहरिकीसेवा ॥ साधूप्रगटसोहरिदेवा १००

एसेंसवेंउपजेज्ञाना॥वेगिआंनमिलेंभगवाना ॥ भवसागरतऱ्यौजोचहैं ॥ सेवासहितप्रीतमनगेहें ॥ १०१
दोहा ॥ ॥ एसुनीबचनाबिदेहके ॥ बाढ्योंमनमेंप्यार ॥ तबगुणअरुकर्मसाहित ॥ पूछेंहरिअवतार
 ॥ १०२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेविदेहप्रश्नेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ ॥ दोहा
॥ नारायणअवतारसबलीलाआदिअनाद ॥श्रीधरचौथेंध्यायमैंद्रुमिलजनकसंवाद ॥ १ ॥ ॥ जनक
उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबअवतारकथाविस्तारो ॥ गुणअरुकर्मसहीतउचारो ॥ जेजेलिएले
हीजेआगें ॥ अबहेंसबभाषोअनुरागें ॥ १ ॥ एसुनीनृपतिजनकेबेंनां ॥ कृपासिंधुकरुणाकेएनां ॥ तब
सातमेंद्रुमिलसेनामा ॥ बोलेवचनपरमदमअभिरामा ॥२ ॥॥द्रुमिलउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जे
अनंतकेगुणअवतारा ॥ तीनकौंनृपतिलहेंकोपारा॥भुमिरेनुकणीकाकोईगनें॥सोउकहासकलगुणभनें॥३॥
हरिकेगुणअवतारअनंता॥बालबुधिजोचाहेअंता॥तातेंकछूएकमेंभाषौ॥ तेरेहदेसंसेनहिंराषौ ॥ ४॥पंचभू
तनिर्मितब्रह्मंडा॥राष्योनीरमांहिज्यौंअंडा॥ तामेंअंसआपनोधारा ॥ सोहेंआदिपुरुषअवतारा ॥ ५॥ ति
नकीदेहहुंतेसबदेहा ॥ दहमाहिंवरतेसबएहा॥तिनकेअंगनितेंसबअंगा ॥ इंद्रियअहंबुधीबहुरंगा॥ ६ ॥
सतरजतमतेंसकलपसारा ॥ उतपतिअरुपालनसंहारा ॥ प्रथमहींरजतेंब्रह्माकीयौं ॥ सात्विकीजन्मविष्णु
कोंदीयौ ॥ ७ ॥ तामसकरीसंकरउपजाए ॥ तिनसौंसकललोकनिपजाए ॥ ब्रह्मारचेंविष्णुप्रतिपालें ॥
हरेरुद्रयौंभवपंथचालें ॥ ८ ॥ बहुरिसुनोहरिकेअवतारा ॥ भवसागरकेतारनाहारा ॥ धर्मपितारुअसुर

तिमाता॥तहांनरनारायणविख्याता॥९॥आतमज्ञानभक्तिविस्तारैं॥यासौंलागिजीवनिस्तारैं ॥ अबकहौंप्रग
टकरेआचरना॥नारदआदिनितसेवैंचरना ॥१०॥ एकवारसुरपतीमनआन्यो ॥ ममलोकलेवैंयोंजान्यो
॥ तबातिनआग्याकांमहिदीनी ॥ कामसंगसेनासबलीनी ॥ ११ ॥ रंभादिकअपछराअपारा ॥ त्रिविध
पवनबसंतपसारा ॥ बदरीषंडसबैचलीआए ॥ नरनारायणबेठेपाए ॥ १२ ॥ भरिभरिबांननिहनैंशरि
रा ॥ निहफलभएअग्नीज्यौंनीरा ॥ तबतैंमनमथबहुतहेरांनैं ॥ आपअग्निजीवनिगतिमांनैं ॥ १३ ॥ ह
रिअपराधइंद्रकृतजांन्यों ॥ हसिबोलैंतिनकोभयभांन्यो ॥ मतिभयोकरोपंचसरवीरा॥ देवनारभवप्राणश
मीरा ॥ १४ ॥ बैठौइहांअतिथकरवावौ ॥ हमआश्रमसुफलकरिजावौ ॥ एसुनीअभेदांनकेबेनां ॥ ते
सबजोनीसकैंनहींनेना॥१५॥लजाभारनवाएसीसा॥बोलैंवचनजांनिजगदीसा ॥हेप्रभुयहकछुनांहिंअचंभा
॥ तुमहौंप्रकृतिपुरुषकेथंभा ॥ १६ ॥ निरबिकारनिरगुननिरभेदा ॥ जिनकौंजानिसकेनहिंवेदा ॥ निजा
नंदपूरणमुनिसारे ॥ तेसेवतहैंचर्णतुमारे ॥ १७ ॥ तुमरेचर्णसरणजोआवे ॥ तिनकौंसूरबहुविघनउप
वैं ॥ तिनकौंलोकदाविपगनोचैं ॥ एचहेतुमरेपदऊंचे ॥ १८ ॥ तातेंविघनकरेंसबदेवा ॥ मिटतीजांने
आपनीसेवा ॥ औरकिसिकौविघ्ननकराहि ॥ यातेंतिनहिंदंडसबभरहीं ॥ १९ ॥ परितवजननहिंविघ
नसंतावैं ॥ विघ्ननिसीसचर्णदेजावैं ॥ जोत्रिभुवनपतितुमरषवारैं ॥ कहांकरैंतबविघ्नविचारैं ॥ २० ॥ ता
तेंतुमरोकहांअचंभा ॥ जातेंमोहिसकीनाहिरंभां ॥ क्षुधातृषाअरुआलसनिंद्रा ॥ सीतउष्णवर्षारितुतंद्रा॥

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गौपदकोबूडितेमरे ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥ तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याबिधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥अतिअद्भुतछबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादेपाई॥मांनोंरंभासखियनिसौंआई॥तीनकेंगंधरूपसबमोहें ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौंसोहें ॥ २५ ॥ तिनसौंहरिजीबोलेंबेंना ॥ इनमेंएकलेहोतुममेनां ॥ स्वर्गलोककोभूषणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकोंकीयोप्रनांमा ॥ लीनीएकउरबसीनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुंचेसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहींइंद्रप्रसंगमुनायौ ॥ बिस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारिभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥ दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपबिस्तारा ॥ हयग्रीवमधुमारिनिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधारें ॥२९ ॥ सतवृतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ बिनहिप्रलयप्रलयदिषरायौ ॥ माछरूपहिंज्ञानहिंसमुझायौं ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्‍यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टअतिमार्‍यो ॥ बहुरिमहीहुतिजलमांही ॥ सोउपरस्थापीपलमांहि ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदरागिरधार्‍यौ ॥ अमृतकाढिसुरकारजसार्‍यौं ॥ ग्राहग्रह्योगजराजपुकार्‍यौं ॥ तबहरिजीततकालउबार्‍यौं ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजोरिषिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजेंएकवारा ॥ समधिनिकेतेबनहींसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसौंभरिया ॥ तिनमैंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरैंइंद्रतहांखरौ॥ तबतिन
त्हदेहरिसंभरौ ॥३४॥ जबआतमकोकोईनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनौंसुनोहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभार्‍यौ ॥
तबहिंहरिजीप्रगटउधार्‍यौ ॥ सुरवनिताजबअसुरनिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७ ॥ तबहारि
जीतेसकलउधारी ॥ असुरमारसबविपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधार्‍यौ ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमार्‍यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादहिलीनौराषि ॥ जाकीप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबजबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहरिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा ॥ भिक्षाछलछल्यौ
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकाबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमैंकहुंनराष्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहैंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैलजिनतारें ॥ रावनआदिदुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगेंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौंप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकर्मतेंकरिहें ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहें ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञनिकैंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहरिजतिबध

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गौपदक्रो बूडितेमरे ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥ तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याविधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥अतिअद्भुत छबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादिषाई॥मांनोंरंभासखियनिसौंआई॥ती नकेंगंधरूपसबमोहें ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौंसोहें ॥ २५ ॥ तिनसोंहरिजीबोलेंबैना ॥ इनमेंएकलेहोतुम मेनां ॥ स्वर्गलोककोभूषणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकौंकीयोप्रनांमा ॥ लीनी एकउरबसीनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुँचेसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहिंइंद्रप्रसंगसुना यो ॥ विस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारीभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥ दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपविस्तारा ॥ हयग्रीवमधुप्राणनिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधा रें ॥२९॥ सतवृतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ तिनहिप्रलयप्रलयदिषरायौ ॥ मा छरूपहिंज्ञानहिंसमुझायौ ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्‍यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टअतिमार्‍यो ॥ बहुरिमही हुतिजलमांही ॥ सोउपरस्थापीपलमांहे ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदिरगिरधार्‍यौ ॥ अमृतकाढिसुरकारं जसार्‍यौं ॥ ग्राहग्रह्योग्रजराजपुकार्‍यौं ॥ तबहरिजीततकालउबार्‍यौं ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजो रिषिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजेंएकवारा ॥ समधिनिकेतेंबनहींसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसौंभरिया ॥ तिनमैंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरैंइंद्रतहांखरो॥ तबतिन
त्हदेहारिसंभरौ ॥३४॥ जबआतमकोकोईनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकेरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनींसुनीहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगेहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभाऱ्यौ ॥
तबहिंहरिजीप्रगटउधाऱ्यौ ॥ सुरवनिताजबअसुरनिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७॥ तबहरि
जीतेसकलउधारी ॥ असुरमारसबविपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधाऱ्यौ ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमाऱ्यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादाहिलीनौराषि ॥ जाकोप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबलबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहरिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा ॥ भिक्षाछलछल्यो
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमेंकहुंनराख्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहैंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैलजिनतारें ॥ रावनआदिदुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगेंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकमेंतेंकरिहें ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहें ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञानिकेंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहारिजातबध

रिहैं ॥ यज्ञनिंदगाखंडविस्तारिहैं ॥ ४५ ॥ बहुधरेंगेकलंकीरूपा ॥ अतिअपराभकरेंगभूपा ॥ कलीके अंतसकलसंहारिहैं ॥ बहुरिप्रवृतसतजुगकारिहैं ॥ ४६ ॥ ऐसैंविष्णुकर्मअवतारा॥ कोईकहतनपावेंपारा ॥ कछुएकमेंतुमसोंकहें ॥ औरहिकोटिअनंतनिरहें ॥ ४७॥ इनकौंकहेंसुनेंजोगावें ॥ प्रेमसहित निसवासुरध्यावें ॥ सोभवसागरमेंनहींरहें ॥ पावेंज्ञानपरमपदलहें ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ अबेंना सुनिद्रुमिलके ॥ कीनीप्रश्णनरेंद्र ॥ प्रभुजीतिनकीकोनगति ॥ जेनभजेगोविंद ॥ ४९ ॥ ॥इतिश्री भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेविदेहप्रश्णेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥कर्मशुभाशुभभजनाविधिसाधनज्ञानदृढांहि ॥ करभाजनअरुचमसमुनिकहीपांचमेंमांहि ॥ १ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥जेनहिकरहीहारिकीसेवा ॥ तिनकीकहोकोनगतिदेवा ॥ तिनकेतृपतिनसुपनेंआवें ॥ निसदिनतृष्णाअग्निजलावें ॥ १ ॥ परिजोबहुविधिधर्मउपावें ॥ तोमोहिकहोकछूसुषपावें ॥ एकहीवचन जनकजबरहें ॥ अष्ठमेंचमसनामतबकहें ॥ २ ॥ चमसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥हरिजीविप्रबदनतेंकरे ॥ बाहुनितेंक्षत्रीविस्तरें ॥ जंघनिव्हैवैश्यउपजाए ॥ सुद्रतिमिचर्णनितेंआए ॥ ३ ॥ याहीभांतिकीएआश्रमां ॥ तातेंभजनसबनिकोधर्मा ॥ तातेंआपुहिंकरेप्रतिपाला ॥ आपुहींपोषेंदीनदयाला ॥४॥ ऐसेंप्रभुकौंजोविसरे ॥ तेअपराधअपारानिकरें ॥ तेगुरुद्रोहीअरुमित्रद्रोही ॥ स्वामीद्रोहीकृतघनिओही ॥ ५ ॥ तिनअपराधनअधमगतिजावें ॥ कवहंभूलिनहिंसुषपावें ॥ सुद्रजोपिताअंतजआदि ॥ तिनकों

दूरिकथाश्रवनादि ॥६॥ तेंमनमेंअभिमाननधरैं ॥ तातेंतुमसौंक्रिपाहिकरैं ॥ यातेंइनकौंहेंउधारा ॥ परिउंच
नकोवारनपारा ॥७॥ विप्रअरुक्षत्रीवैश्यात्रिवरनां॥ याकौंयज्ञविहितविधिकरनां॥ इनसबहिनकेतेंअधिकारी
तातेंबहुतभएविकारी ॥८॥ तातपर्यकौंजांनेंनाहीं॥ पशुपतिवांनीमेंभरमाहीं॥ विष्णुंभजनउत्तमअधिकारा॥ पायो
ताहिनलषैंगवारा॥९॥ कर्मअकर्मविकर्मनजांनें॥ अतिकठोरआपहिंबहुमांनें॥ हमपंडितयज्ञनिकेकारक॥ औ
रबहुतकर्मनिविस्तारक॥१०॥ आगुभ्रमेंऔरनिभ्रमावें॥ प्रियबांनीबहुभांतिसुनावें॥ कामअरुअर्थअर्थकरिमांनें
पढिपढिबेदसाखिबहुआंनें ॥ ११ ॥ बहुसंकलपकरेंमनमांहि ॥ बहुतबडूरिआरंभकराही ॥ त्योंहित्यों
राजसअधिकारा ॥ कामक्रोधरुलोभअहंकारा ॥ १२ ॥ दंभकपटचतुराइआनैं ॥ हरिभक्तिनिकी
हांसीठांनैं ॥ आपुआपुमिलिबैठेंजबहीं ॥ ग्रहकेसुषानिसराहेंतबहीं ॥ १३ ॥ जिनमेंआनंदक्षणहैनाहीं
॥ दंभमानसौंजज्ञकराहीं ॥ बहुतपसुनिमारेंअज्ञानि ॥ तीनअपराधसकेंनहींजांनी ॥ १४ ॥ इतनोधन
आयौयहयेहैं॥ एतेंमिलेंएतोतबव्हैहैं ॥ कुलसंपतिविद्याठकुराई ॥ त्यागरूपबलकर्मबढाई ॥ १५ ॥ इ
नकौंबलबाढौअधिकाई ॥ तातेंहृदयसमुझनुहींआई ॥ हरिभक्तनसौंठांनेहांसी ॥ मगहदमैंछांडिपल
कासी ॥ १६ ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ हरिपूरणषालीकहुंनाहीं ॥ ज्योंआकासालिप्तनहींहोई ॥
त्यौंहरिबेदकहतहेंसोई ॥ १७ ॥ परिवेमूढनकबहुंजांने ॥ जातेंहरिभक्तनिनाहिंमानें ॥ बहुतमनोरथनिस
दिनकरें ॥ तृष्णातापजरतनहींटरें ॥ १८ ॥ मद्यपानअरुमांसअहारा ॥ नारीनेहसहितजगसारा ॥ तास

कलहित्यागेवेनिमित्ता ॥ विधिमेंवेदलगायोचित्ता ॥ १९ ॥ संगकमेतोंनारिबिवाही ॥ तांहुंरेंबहुतैथितिना
हीं ॥ वनीताकौदेवेंरितुदांनां ॥ प्रजानिमिताचितनाहिंआंनां ॥ २० ॥ याविधिकर्मसकलछोडावें ॥ बहुरि
वेदसबत्यागकरावें ॥ ऐसेंहिआमिषअसेंमदपानां ॥ यज्ञमांहिनहींकहुंआना ॥ २१ ॥ बहुरिऊहांहुंतें
छाडावें ॥ एसोतातपर्यकौंपावें ॥ हरिकीसरनेंआवेंकोई ॥सारिविधिएकसमझसोई ॥२२॥ केजोतिनकी
सरनेंआवें ॥ अभिप्रायसारोसोपावें ॥ वेहरिजनअरुहरिहिनजांनें ॥ आपुहिकौंपंडितकरिमानें ॥ २३
तातेंतातपर्यनहींजानें ॥ पढीपढीवेदअनर्थनिठानें ॥ धनएसोजोकरेउधारा ॥ सोधनषोवेवृथागवांरा ॥ २४
जोधनहरिकेकाजलगावें ॥ सोतबप्रेमभक्तिकौंपावें ॥ तातेंहोईज्ञानप्रकासा ॥ तबहरिमिलेंमिटेंभवपासा ॥
२५ ॥ एसेंधनतेंमूढअजाना ॥ देहकाजषोवेंभरमांना ॥ कालनिरंतरहरतनदेषें ॥ बहुमंदमतिदूरकरि
लेषें ॥ २६ ॥ मद्यमांसमषमआनीजें ॥ औरभूलिकहुंनामनलीजे ॥ तहांउआपुलेइघांनां ॥ षानपानते
अधगतिजांना ॥ २७ ॥ त्यौंवनीतारितुदांनहींदेवे ॥ औरभुलिकहुंनामनलेवें ॥ सोजबलागीएकसुतहो
ई ॥ सुतकेभयत्यागिएसोई ॥ २८ ॥ एसोसकलवर्णनिकोधर्मा ॥ ताकौंभूलिनपावेममर्मा ॥ मरमहीन
श्रुतिसुमृतिवषानें ॥ मूरषआपुहींपंडितमांने ॥ २९ ॥ तातेंवहुतकर्मआरंभे ॥ इंद्रीमनकदेनहींथंभे ॥ द्रो
हकरेंवहुजीवनिमारें ॥ तेवहुजन्मतिनहींसंघारें ॥ ३० ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ एकैहरिदूजाकोना
हीं ॥ तिनकौंद्रोहकरेंतनपोषें ॥ दारासुतनिआनसंतोषें ॥ ३१ ॥ नहींमूरषनहींतत्वगनानि ॥ पढीपढीग्रं

यहुहौंअभिमांनी ॥ तेअसाधसेगौसिबजानी ॥ तिनसौंज्ञाननमांडैंज्ञानी ॥३२॥ तेसबकरैंआपनोघाता॥
सपनेंहूंनलहैंकुसलाता॥कर्मपंथमैंसुषकौंचौहै ॥ अमृतदेकरिविषाहीबिर्यांहैं॥ ३३॥नानातापतपतजोंरहैं॥
करैंमनोरथफलहिनलहैं॥बहुतभांतिश्रमकरिउपजाए ॥ सुतवितदारासबमनभाए ॥ ३४ ॥ तिनसबनि
कौंछोडईहांहीं ॥ बंधेंआपजमद्वारोंजांही ॥ जमकेंदूतनरकभोगावैं ॥ तहांकेदुखकहैंनहींजावैं ॥ ३५
तिनकौंकोनाहिराषनहारा ॥ हरिरक्षकसोनहीसंभारा ॥ कहाकहौंकछूकहैंनजांही ॥ हरिबिनकहूंपलक
सुखनाहीं ॥ ३६ ॥ ॥दोहा॥ ॥ चमसबचनसुनिभूपकें ॥ बाढोएत्रासअरुप्यार ॥ तबजुगजु
गकोंपूछीयौ ॥ हरिकोभजनप्रकार ॥ ३७ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कौनसमैंके
सौंअवतारा ॥ केसोवर्णनामआकारा ॥ केहिविधिभजेंवर्णआश्रमा ॥ कहोज्ञानकेसाधनधर्मा ॥ ३८
॥ जिनतेंज्ञानलहैंसबत्यागैं ॥ नितहरिचरणकमलअनुरागैं ॥ सुनिनृपबैंनभक्तिकेसाजन ॥ तबबोलेंनव
मेंकरभाजन ॥ ३९ ॥ ॥ करभाजनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सतत्रेताद्वापरकलिकाला ॥
बहुतभांतिभजेंएगोपाला ॥ बहुविधिबरनबहुतआकारा ॥ बहुतनामबहुभजनप्रकारा ॥ ४० ॥ सतजु
गसुकलबरनभुजचारी ॥ सीसजटातनवलकलधारी ॥ कंठजनेउकरजपमाला ॥ दंडकमंडलअसमृग
छाला ॥ ४१ ॥ तबमनुषहोंवैंसबसुधा ॥ समनिरवैरसुह्रदपरिबुधा ॥ आस्थिरकरिइंद्रियमनप्राना ॥
करैंसबैंतिनहरिकोंध्यानां ॥ ४२ ॥ हंससुपरमधर्मजोगेश्वर ॥ निरमलपरमात्मअरुईश्वर ॥ पुरुषोत्तवै

कुंठअव्यक्ता ॥ ताकेनामहोइ यहव्यक्ता ॥ ४३ ॥ रक्तवरणत्रेताजुगमांही ॥ त्रिगुणमेषलागळेपहरा
ही ॥ पीतकेससर्वादिकहाथा ॥ ऋगयजुसामत्रयमैनाथा ॥ ४४ ॥ तवतिनहेतयज्ञादिककरें ॥ बेदवि
हितकर्मनिविस्तरें ॥ सर्वदेवमयहरिकौंजांनें ॥ तबसबयौंहरिपूजाठानें॥४५॥प्रष्णीगर्भउरुगाकहींईजें ॥
विष्णुवृषाकपिजज्ञभनिजें॥ सर्ववेदउरुकृमविजयंत ॥ऐंसेंनामकेंहसबसंत ॥ ४६ ॥ द्वापरपीतबसनघन
स्यामा ॥ शंपादिकआयुधआभिरामा ॥ चारिबाहुभृगुलाताधरना ॥ लक्ष्मीचिन्हबहुतआभरना ॥ ४७
॥ चामरछत्रआदिबहुसेनां ॥ महाराजलछनसुषदेनां ॥ बेदतंत्राविधिसेवाकरें ॥ सबअरपनपूजाविस्तरें
॥ ४८ ॥ वासुदेवसंकरषणदेवा ॥ प्रद्युमनअनिरुधअभेवा ॥ नाराइनभगवानअनंता ॥ जिनकौंकोईल
हैंनहीअंता ॥ ४९ ॥ विस्वरूपविस्वेस्वरस्वामी ॥ सर्वातमासर्वअंतरजांमी ॥ बहुतभांतिअस्तुतिविस्तरें॥
विधिसौंद्वापरपजांकरें ॥५०॥ कलिजुगपीतपीतांबरधारी ॥ कृष्णदेवघनस्याममुरारी ॥ सहतपारषदबहु
आभरनां ॥ श्रवनकीरतनपूजाकरनां ॥ ५१ ॥ इंद्रियमनबहुभरेंविकारा ॥ तिनतेंराषेंचणतुमारा ॥ स
बविधिसर्वतीर्थकौवासा ॥ सुमरताहिंपुरेंसबआसा ॥ ५२ ॥ शिवविरंचिसुरनरमुनिध्यावें ॥ जाकौंभेद
वेदनहींपावें ॥ राषीलेतशरणेजेआवें ॥ जनममरणसबदुषनिमिटावें ॥ ५३ ॥ केवलहोतदीनउधारें ॥
भवसागरकेपारउतारें ॥ असेचरणतुमारेंगायो ॥ ताकीसरणदीनमेंआयो ॥ ५४ ॥ अतिसुषतबीसु
रवंछेनाकौं ॥ असोराजछोडीकरीताकौं ॥ दशरथभगतवचनशतकरनां ॥ बनकोगवनकीयोजिनचर

नां॥५५॥हेममृगदयितामनभायो॥जोताकेपीछेउठिधायो ॥ जोभगवतनकेयोंआधीनां॥ऐसेचरणशरणमें
लीना॥५६॥ऐसीविधिकलिअरुक्तातिकरें ॥बहुविधिहरिनामनिउचरें ॥ सुनेंकहेंसुमरेंअरुध्यावें॥तेतत
कालतत्वकोंपावें॥५७॥याविधिजेजुगजुगहरिसेवें॥तिनतिनकोंहरिज्ञानहोदेवें ॥ज्ञानपाइनिजतत्वसमावें ॥
जहांजाइवहुरोनहींआवें ॥ ५८ ॥ जेकलजुगकेगुणकोंजानत ॥ तेवहुविधिअरुक्तिकोंठानत ॥ जेसो
परमसारकालिमांही ॥ तैसोऔरजुगनिमेंनाहीं ॥ ५९ ॥ सतजुगध्यांनयज्ञत्रेतामही ॥ द्वापरप्रतिमापूजे
रामही॥कलीकेवलनामादिकगावें॥ सोसोफलततकालहिंपावें ॥ ६० ॥ याभवसागरमांहोनिरंतर॥ दुषित
जीवपरेंनाहिअंतर ॥ तामेंहरिगुननामउचारन ॥ एकजिहाजसकलकोंतारन ॥ ६१ ॥ पापअघोरअपा
रकलमांहीं ॥ जामेंपुण्यलेसकहूंनाहीं ॥ यामेंहुहरिगुणनिउचारें ॥ तेतारेंआपऔनिकोतारें ॥ ६२ ॥
तेकृतकृत्यतेहीबडभागी ॥ जेकलिहरकीरतअनुरागी ॥ आपुसमरेंऔरनसुमरावें ॥ तेजगजनमबहुरि
नहींआवें ॥ ६३ ॥ सतत्रेताद्वापुरअवतारहीं ॥ तेकलजुगकीवांछाकरहीं ॥ कलीकछुसाधनश्रमनाहीं
॥ हरिगुणगावतहरिहिसमाहीं ॥ ६४ ॥ अरुकहुंकोइदेसविसुधा ॥ द्रावडादिमानवतहांवुधा ॥ जेउपजें
तेभक्तिकरें ॥ तातेंतहांवहुतउधरें ॥ ६५ ॥ अरुजहांताम्रपरणीकृतमाला॥कावेरिपयसुनीविसाला ॥
अरुसरस्वतीपहलमवाहनी ॥ गंगाआदिद्धरितदाहनी ॥ ६६ ॥ जेमानवजलपीवेंइनकों ॥ दूरिहोयत्वदें
मलतिनकों ॥ तेसर्वथाहोइहरिभक्ता ॥ साधनसंगहोवेंआसक्ता ॥ ६७ ॥ भूतकुटंबपितरऋषिदेवा ॥ इ

नकेरीतिकरैंसचसेवा ॥ सोईनरनहींसेदाकरैं ॥ सोसबतजिहरिकौंअनुसरैं ॥६८॥ जेविधतजीहरिचरणें
आवें॥तिनकेमलहरिदुरिवहावें॥ बहुर्यौमलउपजैंनहींकोई ॥ उपजेंकदेंहरेहरिसोई ॥ ६९ ॥ तातेंस
बविधिकोफलएका ॥ गहियेंहरिपदछांडिअनेका ॥ सबकैंप्रभुसबहींसुषदाता ॥ सरनागतपालकविख्या
ता ॥ ७० ॥जबजबजोजोसरनहीआयौ ॥ तबहींतबतिनहींहरिपायौ ॥ तातेंऔरसकलपरिहरीयें ॥
श्रीभगवानचर्णचितधरीयें ॥ ७१ ॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेंसुनिसबहूंकेंबे
नां ॥ जनकहृदेउपज्यौंअतिचैनां॥संसामिट्यौसकलभ्रमभाग्यौ ॥ ब्रह्मज्ञानसूतोसाजाग्यौ ॥ ७२ ॥ त
बतिनकीबहूपूजाकीनी ॥ विप्रनिसहितप्रदक्षिणादीनी ॥ याविधिदरसनपायेसबहीं ॥ अंतरध्यानभयेतेतब
हीं ॥ ७३ ॥ जनकविदेहऔरसबत्याग्यो ॥ हरिकेचर्णकमलअनुराग्यो ॥ याविधिब्रह्मपरायनभयो ॥
तरिभवसिंधुब्रह्ममेंगयो ॥ ७४ ॥ याहिविधितुमहींबडभागी ॥ भेंहोहरिचरणाअनुरागी ॥ औरसकल
कौंतजिहोसंगा ॥ तबपावोगेब्रह्मप्रसंगा ॥ ७५ ॥ अरुतुमतोदेवकीवसुदेवा ॥ भयेकृतारथकरिहरिसेवा
तुमरेजशपूर्योजगसारा ॥जिनकेहरिलीनौअवतारा ॥ ७६ ॥ दरसनआलिंगनआलापा ॥ आसनभो
जनसयनमिलापा॥हरिसोंपुत्रजांनिचितदीनौं॥तातेंसकलभजनतुमकीनौ॥७७॥कपटवासुदेवशिशुपाला॥
दंतवक्रशल्यादिकराला॥वैरभावकृष्णहिचितधार्यौ॥तिनिहुंकौंहरिदेवउधार्यो॥७८॥तोजेप्रेमप्रीतसोसेवें
तिनकौंक्योंनपरमपददेवें॥अबतुमपुत्रबुद्धिमतिआंनौं॥कृष्णदेवकौब्रह्महिंजानौं ॥ ७९॥ मायाकरिधारीन

रदेही ॥ पारब्रह्मतुमजांनोएहो॥ बाढ्यौदोषिभूमअतिभारा ॥ मेटनकाजधर्योअवतारा ॥ ८० ॥ परम
पुनीतजसहींविस्तरहीं ॥ नासौंलागिजीवानिस्तरहीं ॥ जेजेइनसौंहितलगावैं ॥ तेतेसकलपरमपदपावैं ॥ ८१
॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसीसुनिनारदकीबांनी ॥ वसूदेवदेवकीअद्भुतमांनी ॥ आप
हेंदुहूंमुक्तकरिजान्यौ ॥ हरिमेंभावब्रह्मकौआंन्यौ ॥ ८२ ॥ यहइतिहासकथाजोभाषै ॥ सावधानसुनि
हिरदेराषैं॥ सोसबभवबंधनछिटकावैं ॥ उपजैंज्ञानपरमपदपावैं ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एभाख्यो
संक्षेपसौं ॥ हरिमिलनैंकोद्वार ॥ हरिउधवसंवादअब ॥ बरनौंकरिविस्तार ॥८४ ॥ ॥ इतिश्रीभाग
वतेमहापुराणेएकादशस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेपंचमोऽध्यायः॥ ५॥ ॥ ॥ दोहा ॥ छठैवरणौंद्वारि
काश्रीधरसुखश्रीकृष्ण ॥ ब्रह्मादिस्तुतिकरचलेउद्धवकीयोप्रश्ण ॥ १ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ बहुरिसुनोनृपआतमविद्या॥ जाकिंजानेंमिटैंअविद्या ॥ मिटैंअविद्याब्रह्महिपावैं ॥ ब्रह्मपाई
फेरनहींआवै ॥ १ ॥ तबब्रह्मासनकादिकसंगा॥ नारदादिरंगेहरिरंगा ॥सकलप्रजापतिभृगुमरीच्यादिक
अरुमहादेवलीनैंभूतादिक ॥ २ ॥ सुरसमुहसंगलेसुरपाते ॥ पवनअस्वानिसूतग्रहपाते ॥वसुअंगिरा
रुद्रगनदेवा ॥ साध्यादिकअरुविश्वेदेवा ॥ ३ ॥ ऋषिगांधर्वपितरअरुनागा ॥ च्यारनासिद्धभयेअनुरा
गा ॥ अप्परअरुगुह्यकविद्याधर ॥ किंनरजक्षादिकमायाधर ॥ ४ ॥ कृष्णदेषिवेकारजसारे ॥ आ
येतद्वारिकापद्धारे ॥ केइनांचेकेइगावें ॥ केइबाजेंबहुतबजावें ॥ ५ ॥ केइजयजयशब्दउचारैं ॥

केईंकृष्णजसहिंविस्तारें ॥ याविधिकरेबहुतउछाहा ॥ मगनभयेंहारेप्रेमप्रवाहा ॥ ६ ॥ श्रीभगवानमनुष
तनधारी ॥ दरसनसबमनहरनमुरारी ॥ लोकनिमांहिजसहींविस्तारें ॥ श्रवनादिकनिसकलउबारें ॥ ७
निधिरिधिपूरणद्वारावती ॥ जाकेसमनहींअमरावती ॥ तामैंब्रह्मादिकचलिआयें ॥ कृष्णदेवकोदरसनपा
ये ॥ ८ ॥ स्वर्गवृक्षफूलनकमाला ॥छांदितकीन्हेंदीनदयाला ॥ पावतदरसत्रिपतिनहींहोवें ॥ चित्रलिषें
सेसनमुषजोवें ॥ ९ ॥ चित्रवतबंदनआस्तुतिकरें ॥ उत्तमअर्थनिजसबिसतरें ॥ सहितवीनतीअरुपरना
मा ॥ दरसभयेसबपूरनकामा ॥ १० ॥ ॥ ब्रह्माउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुचर्णसरोज
तुमारा ॥ मनक्रमबचनचित्तआहंकारा ॥ इंद्रियबुधिप्रांनअरुदेहा ॥ वंदतहेहमप्रगटेएहा ॥ ११ ॥
जाकोंप्राणाबचनमनसाधें ॥ सावधाननिसदिनआराधें ॥ भावसहितआभिअंतरध्यावें ॥ तेउयाविधिप्र
गटेनपावें ॥१२ ॥ धनधनहमधनभागहमारा ॥ प्रगटहिंदेषेंचर्णतुमारा ॥जिनकेंध्यानकीरतनश्रवना ॥
बहुरिनहोवेंआवागवनां ॥१३ ॥ तुमअद्वैतद्वैतयहकर्‍यौ ॥ अपनिमायासबविस्तर्‍यौ ॥तुमहीतेंउपजें
संसारा ॥ सदारहेंतुमरेंआधारा ॥ १४ ॥ तुमहींमांहिंलीनसबहोई ॥ तुमसोंपरससकेनहींकोई ॥ रा
गरहितआनंदस्वरूपा ॥ अजितअमिताचिद्रूपअनूपा ॥ १५ ॥ विद्याअध्ययनश्रवनअरुदाना ॥ क्रि
याउपासनतपअसनाना ॥ त्यागजोगयज्ञादिकजैतें ॥ आतमसुधकरेंनहिंएतें ॥ १६ ॥ तवगुनश्रवनपर
तअघनासें ॥ ज्यौंतममांहींसूर्यप्रकासें ॥ तातैंजन्मकर्मगुणधारौ ॥ दीनबंधुदीननउधारौ ॥ १७ ॥ जो

तवचरणकमलमुनिध्यावें ॥ भवभयभीतनपलछिटकावें ॥ आरुनिजभगतनिरंतरसेवें ॥ भयनहींसमुझैनहीं कछूलेवें ॥ १८ ॥ अरुएकेंवैकुंठनिमिता ॥ हृदयधरतांचर्णानिचिंता ॥ बहुरिएकसेवेंसहकामा ॥ एकभयेंचाहेंनिहकामा ॥ १९ ॥ जीवनमुगतभएएकसेवें ॥ प्रेमभावसौंअतिसुषलेवें ॥ एकेजज्ञादिकसों भजें ॥सर्वदेवमयतुमकौंयजें ॥ २० ॥ एकेवर्णआदिआश्रमा ॥ तुमरेहेतकरैसबधर्मा ॥ एकएकरूपकरिध्यावें ॥ द्वैतभावकबहुंनहींल्यावें ॥ २१ ॥ एकेतुमप्रतिमाकौंसेवै ॥ एकैनामनिरंतरलेवै ॥ एकेश्रवनकीरतनध्यानां ॥ कहांलगिकहियेंजेविधिनाना ॥ २२ ॥ज्योंजेजेतवचर्णानिसेवें ॥ तेतेसबवंछीतफललेवें ॥ सोतवचणप्रगटहमपायौ ॥ तातैंअबदीजैमनभायौ ॥ २३ ॥ यहहमवंछापूरनकरो ॥ अपनेचरणकमलचितधरौ ॥ भस्मकरोदूरगींवासना ॥ जिनतेंउपजेंभवसासना ॥ २४ ॥ परमदयालपरमहितकारी ॥ इछापूरकदेवमुरारी ॥ इछापूरणकरोहमारी ॥ निहचलउपजेंभक्तितुमारी ॥ २५ ॥ जोतवजन वनमालाकरें।।प्रेमसहिततवआगेंधरें।।कमलादेषिसपर्धाआनें।।ताकौंआपसहपतनीजांने।।२६ ।।परितुमए सेंदीनदयाल।।भगतीआधनिकरतप्रतिपाल।।तबइंदिरानिरादरकरौ ॥ वनमालाताउपरधरौ ॥ २७ ॥ जोतवचरणभगतीस्त्ररकारन ॥ दुष्टअसुरसेनासंहारन ॥ असुरानिकौंअधगतिकेदाता ॥ सुरनस्वर्गदीनेंविष्याता २८ ॥ अभयदानअघनासनवांनौ ॥ लोकवेदयहप्रगटबषानौ ॥ बांधीधजागंगतांहुलोका ॥ जाकेंदर्शमिटैंभवसोका २९ ॥ ब्रह्मादिकसुरनरअधिकारी ॥ तुमरेंचरणकमलबसचारी ॥ जोअतिब

लिवेलसलीना ॥ नाईनामधनीआधीना ॥ ३० ॥ जनजबआसुरनतेंदुषपावें ॥तबतबसरनचरनकोआ
वें ॥ तबहींसुषउपजेंदुषभाजें ॥ अपनेंअपनेंठौराविराजें ॥ ३१ ॥ प्रकृतिपुरुषमहातत्वानेयंसा ॥ तुमइन
केकारनभगवंता ॥ तुमतेंगुरुशक्तिजोंपावे ॥ प्रकृतिमिलिमहतत्वउपावें ॥ ३२ ॥ तातेंउपजैंईंटब्रह्मंडा ॥
जलअधरतरेज्योंअंडा ॥ थावरजंगमविधिप्रकारा ॥ तातेंहोईंसकलविस्तारा ॥ ३३ तातेंतुमयासबके
करता ॥ उपजावनप्रतिपालनहरता ॥ तुमआधारसकलकेस्वामी ॥ तुमफलदाताअंतरजामी ॥ ३४ ॥
जोकछुहोईंसकलजगमांही ॥ तुमकरतादूजोकोऊनाहीं ॥ परीकहूंलिप्तहोहूंनहींदेवा ॥ कोउलषनिसके
तवभेवा ॥ ३५ ॥ सोलहसएकसतआठा ॥ जिनकेह्रदयप्रेमअतिकाठा ॥ हावभावसोंप्रीतिबढावें ॥ म
दनबांनबहुभांतिचलावें ३६ ॥ तुमतोहूनसहोवोनाहिं ॥ निश्चलनिजानंदपदमांहीं ॥ औरछोडिजेबैठोको
ई ॥ करतबासनाबंधेसोई ३७॥ एईनदीप्रगटतुमकीनी ॥ जिनकीमहिमापरेंनचीन्हीं ॥ एकगंगचर
णानिकोंनीरा ॥ परसतानिरमलकरेंशरीरा ॥ ३८ ॥ दूजीतवकीरतिकीसारिता ॥ त्रिभुवनजहांतहांवि
स्तरता ॥ श्रवनकरतअंतरमलनासैं ॥ निरमलह्रदयब्रह्मप्रकासैं ॥ ३९ ॥ ब्रह्मप्रकाशभयेभवनाहीं ॥
पेलेएकमेकमिलिमांहीं ॥ईनदेनदीनभजेजेपंडित ॥ तिनकौंकालकरतनहिषंडित ॥ ४० ॥ तातेंनाथक्रिपा
अनकौजें ॥ साधसंगहमकोंनितदीजें ॥ जिनमेंकथानदीहमपावें ॥ तातेंतवचर्णांनिचितल्यावें ॥ ४१ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यौंलेशीवशक्रादिकसंगा ॥ अस्तुतिकारेबहूतप्रसंगा॥ बहुर्यो

विधिएवचनसुनायें।।जाकेकाजसकलहमआयें ।। ४२ ।। ।। ब्रह्माउवाच ।। ।। चौपाई।।हेप्रभुहम
तुमविनतीकीनी ।। धरनीभारभईजबचीनी ।। तातेंतुमलीनौअवतारा ।। सकलउताऱ्योभूवकोभारा।।४३।।मि
टिअधर्मधर्मविसताऱ्यौ।।सबसंतनिकौकारजसाऱ्यौ ।। औरकीरतीबहुविधिविस्तारि ।। भवसागरतरवेकौक
री४४।।लेअवतारभूपजदुवंसा।।सकलजननकौंमिट्यौसंसा।। बहुविधिकीनैंकर्मअपारा।।जिनसौंलागिजेहै
भवपारा ।। ४५ ।।अरुजदुकुलद्विजश्रापविनास्यौ।। नाहिरहिहैदिनद्वैहभास्यौ ।। तातेंदेवकाजसबकऱ्यौ ।।
करवैकुंकछुनाहींउवऱ्यौ ।। ४६ ।। गईवरषसतआवपचीसा ।। तातेंहमविनवैजगदीसा ।। अबकरिकृ
पाचलोनिजलोका ।। करतपुनितहमारेओका ।। ४७ ।। हमहैंदासतुमारेदेवा ।। निसदिनकरेंतुमारीसेवा
।। ऐसीसुनीब्रह्माकीबांनी ।। तबहसीबोलेसारंगपानी ।। ४८ ।। ।। श्रीभगवानउवाच ।। ।। चौपाई
मैसबसुनीतुमारीबांनी ।। तुमरौकाजभयोमैजांनी।।परियदुकुलयौंहींपरिहरौ ।। तोनाससकलभुकोमैकरौं।।
४९ ।। ऐसबजादवबहुमदमता ।। एनरहेसोमेरीसता ।। मोहितजेंसबप्रबलईटांनें ।। ज्योंसायरमजादा
भानैं ।। ५० ।। तातेंनासहेतउपजायौ ।। श्रापसबनिविप्रनतेंपायौ ।। अबईनसबईनकौविनसाउं ।। पीछे
तुमलोकनिमैंआंउ ।। ५१ ।। ऐसेंसुनिहारिजीकेबेना ।। ह्रदयबढ्यौसबनिकौचैंना ।। करिप्रणिपतिविन
तीसारैं ।। अपनैंअपनैंलोकपधारें ।।५२।। ।। श्रीशुकउवाच ।। ।। चौपाई ।। ।।तवनरपतीकोस
भामझारे ।। बैठेयदुकुलसहितमुरारी ।। द्वारावतीउठेउतपाता ।। तिनकौंदेषिकहिहरिवाता ।। ५३ ।।

श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐंउतपातउठेंदहुंओरा ॥ अतिभयदाईकदीसेंघोरा ॥ अ
रुद्विजश्रापभयोकुलमांही ॥ तातेंभलीदेखियतनाही ॥ ५४ ॥तातेंअबइहांनहींरहीयें ॥ तजीएेंबेगिजायो
जोचहीयें ॥ अतिपुनितक्षेत्रप्रभासा ॥ तहांबेगिचलीकीजेंवासा ॥ ५५ ॥ एेकबारदक्षश्रापहींदयौ ॥
तातेंअ
सशीकौंक्षेरोगतबभयौ ॥ जबसोसशीप्रभासहींन्हांयौ ॥ छूटरौंश्रापपरमसुखपायो ॥ ५६ ॥ तातेंअ
बप्रभासचलीजे ॥ तहांजाईअसनानाहिकीजें ॥ नृपतिदेवपितरनकौंकरीयें ॥ विप्रभोजनबहुविधिविस्तरीयें
॥ ५७ ॥ तिनकौंदानबहुताविधिदीजें ॥श्रद्धासहितप्रनामहीकीजें॥।तिनप्रसादहुपारिपहरियें ॥ ज्योंनावनसौं
सागरतरीयें ॥ ५८ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबांनि ॥ तबजादवनिभलीकरीमानीं ॥ तवचलवेंकौंसकलवि
चारें ॥ अपनेंअपनेंरथनिसंवारें ॥ ५९ ॥ तबउद्धवहरिकौंनिजदासा ॥ दोषसकलबिधिभयौउदासा ॥
चलिएकांतहरिजीपेंआयौं ॥ चर्णनिपरिकेंवचनसुनायौं ॥ ६० ॥ ॥ उद्धवउवाच॥ ॥चौपाई ॥दे
वदेवईश्वरजोगेस॥श्रवनकीरतनहरनकलेस॥यदकुलकौंसंघाराहिंकरिहों ॥ अबतुममृत्युलोकपरीहारिहों
॥६१॥विप्रश्रापमेंटनसामर्था॥नाहिमिटोसोयहहैंअर्था॥मेरेंजीवनचर्णतुमारा॥जैसेंमीनउदकआधारा॥६२
प्राणनाथअबएसीकीजें ॥ संगआपनेंमौकौलीजें ॥ तुह्मरेंसबआचर्णअनूपा ॥ सबकौअतिकल्याणस्व
रूपा ॥ ६३ ॥ जिनकौपाईऔरसबत्यागें ॥ त्रिभुवनकौंसुषदुषसेईलागें ॥ आसनगवनअसनअसनाना
॥ जागतअरुसोवतविधिनिना ॥ ६४ ॥ सदानिरंतरकौंमेंदासा ॥ क्योंपलतज्योंतुमारीपासा ॥ माया

भयनहिंमेरैंकहूं ॥ तुमबिनअर्धनिमिषनरहूं ॥६५॥ गंधबसनमालाआमरना ॥ तुमउतीरणकौमेंधरना ॥ महाप्रसादनिरंतरपोष्यो ॥ दरसपरसबहुविधिसंतोष्यो ॥ ६६ ॥ एसौमेंनिजदासतुमारौ ॥ मायाक रिहैकहाहमारौ॥ मायाभयअरुतुमरेहेता ॥ होइंदिगंबरउरधेरता ॥ ६७ ॥ इंद्रियदेहप्राणमयसाधैं ॥ सावधानतुमकौंआराधैं ॥ ब्रह्मबिचरिसदामनल्यावें ॥ तेनिजरूपतुमारौपावें ॥ ६८ ॥ हमकछुकमंत्रक मेंनजानें ॥ त्हृदयज्ञानवैंरागआनैं ॥ तुमरेभगतनकोमिलिसंगा ॥ भवतरियेंमुनितवप्रसंगा ॥ ६९ ॥ तुम रैकर्मवचनपरिहासा ॥ आवनगवनरूपप्रकासा ॥ कहतसुनतसुमरतसुषमांहि ॥ भवसागरहमरहियैनाहीं ॥ ७० ॥ तातेंमायाभवनहींआनौ ॥ आपहींसदामुक्तकरिमांनौं ॥ पारितुमबिनांप्राणतजेंजांहि ॥ तातेंमो हिछोडीयेंनाहीं ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभगतकें ॥सुनेंवचनगोपाल ॥तबकरुणामयक रीक्रिपा ॥ बोलेवचनरसाल ॥ ७२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभगवतउद्धवसंवादे भाषाटीकायांषष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धवप्रतिश्रीकृष्णजीकह्यौसातमैंज्ञान ॥ दत्तयदुसंवादमैंशिक्षाआटबषान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥महाभागउ द्धवयहयोंहीं ॥ ज्योंतुमकहीबातहैंयौंहीं ॥ शिवविरंचिसक्रादिदेवेसा ॥ वंछेममवैकुंठप्रबेसा ॥ १ ॥ भूमेंभारवढरौजबभारी ॥तबब्रह्मापासपुकारी ॥ ब्रह्मादिकमिलबिनतिकरी ॥ तातेंमनुष्यदेहमेंधरी ॥ २ ॥ अबभूकौसबभारउतार्यौ ॥ सकलसुरनिकौकारजसार्यौ ॥ अरुजसकोंकीनौंविसतारा ॥ जातेंजीवजां

हींभवपारा ॥ ३ ॥ जदुकुलआपलह्यौदिजपासा ॥ आपुआपुमैव्हैहैनासा ॥ आजहूंतेंसप्तादिनमांहीं ॥
सिंधुदारिकारापैनांहीं ॥ ४ ॥ जबहींमैंतजिहौंयहलोका ॥ तबपावेगोदुषभयसोका ॥ कलिजुगआनि
अधिष्टतहोई ॥ तातेंअधकारहैसबकोई ॥ ५ ॥ तातेंउद्धवसुतिनडभागा ॥ अबतूंकरसबहींकौत्यागा
॥ मोमेसदाचितथिरकरौ ॥ समदरसीव्हैभूवविचरौ ॥ ६ ॥ जोकछूकहतसुननमआवैं ॥ मनअरुबुधि
जहांलगीजावै ॥ सोयहसबमनकौकृतजांनौ ॥ छिनभंगुरमायाकरिमानौ ॥ ७ ॥ जिनयहसकलसतक
रिजाना ॥ तिनकेभेदभयोहैनाना ॥ ताभेदहिंब्रह्मकरिनहींजांनै ॥ विधिनिषेधतांहितैमानै ॥ ८ ॥ विधिनि
षेधजोभाषैवेदा॥सोताकौजाकोहैभेदा॥भेदामिटेत्रिनकरेनत्यागा॥तातेंएद्वैकोयेंविभागा॥९॥ज्योंज्योंतजेसुषा
त्योंहोई॥तातेंवेदबतावेदोई॥आगेंजाइंछुडावैसारैं॥जैआपुहींहूंतेंविसतारैं ॥ १० ॥तातेंएसबामिथ्याजानौ
॥ऊंचनीचगुणदोषनमांनौ॥इंद्रियअरुमननिहचलकरौ॥अहंकारममतापरिहरौ ॥ ११ ॥ सुषमथूलस
कलविस्तारा ॥ अेकहींआतमकेआधारा ॥ सोआधारब्रह्मकोमांनौ ॥ एसोविधभवकेभयभांनौ ॥१२
याविधिभेदअर्थकौजांनौ ॥ बहुरिदृढदेनिश्चलकारिमांनौ ॥ दुहूंलोककीआसाछांडौ ॥ याविधिअंतराय
सबपांडौ ॥ १३ ॥ जितनीयाकेआसाहोई ॥ तेतौविधनकरैसबकाई ॥ ज्योंज्यौतजतेजावैआसा ॥ त्यौ
त्योंमिटेविधनकोपासा ॥ १४ ॥ जबयहहोईआतमरामां ॥ तबतहांनहींआसाकौधामा ॥ तबविधननिके
करतादेवा ॥ तेहीउलटीकरैतासेवा ॥ १५ ॥ तातेंविधिनिषेधसबनगाषौ ॥ आसाछांडिदृढदेहरिराषौ ॥

दूजोकबहूंभूलिनलेषौ ॥ १६ ॥ अरुनिजपायौब्रह्मग्याना ॥ तिनकोंविधिनिषेधनहींनाना ॥ परितिनकैंनि
तांहिविधिहोई ॥ कदेनिषेधनपरसैंसोई ॥ १७॥ वेसुषदुषगुणदोपनजांनैं ॥ बालकसमआचर्णनिटानैं ॥
परिविधिसारीसेवाकरैं ॥ अरुनिषेधआपुहिपरिहरैं ॥१८॥ सबपरिसुल्हदसदांअतिसांत ॥ ज्ञानविज्ञा
नसहीतनीतदांत ॥ सबजगब्रह्मजांनिथिरहोई ॥ बहुरौजनमनपावैसोई ॥ १९ ॥ ऐसैंसुनीहारिजीकेबें
नां ॥ अतिदुष्करअरुअतिसुषदेनां ॥ तत्वसुननकीबाटीप्यासा ॥ तबबोलैंउद्धवनिजदासा ॥ २० ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोगस्वरूपजोगउपजावन ॥ जोगदांनजोगेस्वरभावन ॥ तुम
त्यागकत्थौसौमेरेहेत ॥ सोदुष्करआवैंनहीचेत ॥२१॥ क्यौंहोवैविषयनिकोत्यागा॥पुत्रकलत्रादिकअनुरा
गा ॥ यहतनयहधनएसुतमेरैं ॥ यहबनितायहग्रहयहचेरैं ॥ २२ ॥ याविधिमनअहंकारसमुद्रा ॥ बु
डिरत्यौमेमतिकौक्षुद्रा ॥ तुमरीमायाअतिभ्रमायौ ॥ तातैंज्ञानत्त्वदेनहींअयौ ॥ २३ ॥ अबतुममोहिंशि
ष्यहिंउपदेसो ॥ मेरेउरकछूज्ञानप्रवेसो ॥ तातैंअबबहुविधिसमझ्यावौ ॥ ममउरपूरनज्ञानबढावौ ॥२४॥
जातेंसबतजितुमकौंपावों ॥ बहुरौजगतजन्मनहींआवौ ॥ अरुदूजोएसोनहीकोई ॥ जातेंलाभज्ञानकोहो
ई ॥ २५ ॥ ब्रह्मादिकतनधारीजेते ॥ तवमायाबसकीनैंतेते ॥ तातेंमायाहीकौंदेषैं ॥ कर्मअरुभोगभलें
करीलेषैं ॥ २६ ॥ तातेंमैजनुतुमरीसरना ॥ सोकीजैंपावुंतुमरचना ॥ तुह्मरोआदिअंतनपारा ॥ ज्ञानरू
पसबहींतेंन्यारा ॥ २७॥ सोईतरेंगहोकरजाकौ ॥ मायाकछूनसकेकरीताकौ ॥ तुमहींतेंउपजेंयहजी

वा ॥ जैसेंआगिनहूंतेंबहूदीवा ॥ २८ ॥ सदांरहेंतुमरैआधारा ॥ नित्यउठीपोषैसिरजनहारा ॥ ऐसैंप्रभु कोंसेवेंनहीं ॥ तातेंपरेपरमदुषमांहीं ॥ २९ ॥ याभवकेदुषकहेनजांहीं ॥ पर्यौनिरंतरमेंतिनमांहीं ॥ अब मोकोंसरनांगतिजांनौ ॥ देकरिज्ञानसकलभयभांनौ ॥ ३० ॥ मेरेतनमनधनुतुमचरनां ॥मनवचकर्मआ यौमेसरनां ॥ ऐसेंसुनिउद्धवकेबैनां ॥ हरिहसिबोलेंअंबुजनैनां ॥३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई॥ ॥ उद्धवमैकहदेवोंज्ञांनां ॥ सतकहतहोंनांहींआंनां ॥ याजगसाधभयेहैजेतें ॥ आपुहिंआप उधरेतेतें ॥ ३२ ॥ आपुहिंभलेबुरोपहिचांनैं ॥ छोडिबुरौभलाकोंठांनै ॥ गुरुआपुनौआपुहींहोई ॥ प शुपंपीभावेजोकोई ॥ ३३ ॥ परिनरनतएसोहैंनीको ॥ ब्रह्माआदिसबनिकोटीको ॥ जातेंब्रह्मविचारहीं पावें ॥ बहुरोजगतजनमनहींआवें ॥ ३४ ॥ एकपदद्वैपदात्रिपदएका ॥ चोपदादिबहुपादअनेका ॥मेब हुभांतिसृष्टिविसतारी ॥ तिनमेंप्रियनरदेहसमारी ३५ ॥ मोहिपावेंसोयाकरिपावें ॥ औरसबनिसुषदुषभो गवें ॥ यामेंमेरोकरेंविचारा ॥ सावधानव्हैबहुतप्रकारा ॥ ३६ ॥ भाईयहतौजडहैदेहा ॥ इंद्रियादिक अरुसकलसनेहा ॥ अपनेंअपनेंअरथनिगहें ॥ सोएशकातिकोंनकोरहै ॥ ३७ ॥ अरुसौवतजबसूप नांपावे ॥ तबतोंइंद्रियतनाछिटकावें ॥ सुपनमांहिसुषदुपकौंलहै ॥ जागेवातसकलकोंकहै ॥ ३८ ॥ ता तेंमेतोयहतननाहीं ॥ मेतोवासकियौयामांहि ॥ तौवनितासुतवितपरिवारा ॥ मेरोतोनहींसकलपसारा ३९ ॥ एतौसकलदेहसंगजांहीं ॥ सोयहदेहकदेमेंनाहीं ॥ तातेंसुपनमांहींनहिकोई ॥ उहांसकलऔराहिहोई ४०

अरुभाईमैंतौंवहनाहीं ॥ जोतनदीसैंसुपनांमांहीं ॥ जातैंउहहुथीरनरहावैं॥ताकौंतजीयामैंफिरिआवैं ॥४१॥ वातैंयहयातैंवहझूठि ॥ यहानिजज्ञानगह्योमैंमूठी ॥ जोईनदोहूंदेहकौंलहैं ॥ जोइंद्रियनिव्हैंसबअर्थनिगहैं ॥४२॥ इंद्रियबुध्यादिकअरुबानीं॥याकौंकोईसकेनाहिंजानीं॥सोमैंनिपनिरंतरएका॥उपजेबिनसेदेहअनेका ॥ ४३ ॥ भाईसोमैंकहातैंआयौं ॥ किनतनादेनौंकिनउपजायौं॥अबतौंमैंद्वैदेहआधारा ॥ पलकोरहन सकौंनिरधारा ॥ ४४ ॥ एदोउतजिकहांमैंरहौं ॥ जोहैंसततांहिदृढगहौं ॥ ऐसैंबहुविधिकरैंविचारा ॥ त्यागेदेहादिकपरिवारा ॥ ४५ ॥ सोजहांतहांतैंलेवैंज्ञाना ॥ कबहूंकछूनज्ञानैंआंना ॥ याविधिआपआपकौंतारैं ॥ लहैंब्रह्मभवदुषानिवारैं ॥ ४६ ॥ यहविचारमानवतनहोई॥दूजाभूलिनजांनेकोई ॥ तातैंतुममानवतनपायौ ॥ अरुकछूएकमैंतौंहीलषायौ ॥ ४७ ॥ तातैंतजोसकलकोसंगा ॥ मनवचक्रमहोईनिहसंगा ॥ सबतैंपरैंआपकौंजानौं ॥ सौआधारब्रह्मकेमानौ ॥ ४८ ॥ जहांतहांदेषोयहउपदेसा ॥ याविधि करौब्रह्मप्रवेसा ॥ ऐसैंजहांतहांलेवैंज्ञाना ॥ बहुतकभयेब्रह्मपरवाना ॥ ४९ ॥ तिनमैंकहूंएककीबाता ॥ जोइतिहासकथाविष्याता॥दत्तादिगंबरअरुयदुभूपा ॥ तिनकौहेसंवादअनूपा ॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिउद्धवइतिहासअब ॥ भाषोपरमअनूप ॥ वक्तादत्तात्रेयजहां ॥ अरुपूछकजदुभूप ॥ ५१ ॥

॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकसमैंभूपातियदुनामां ॥ गएसिकारछोडीनिजधामां ॥ तबतानगरनिकटहैंसूता ॥ देष्यौएकपरमअवधूता ॥ ५२॥ निरभयनिश्चलइच्छाचारी॥तेजनिधांनतरुणतनधारी॥ कारिप्र

णामबहुतप्रकारा ॥ यदुभूपतितववचनउचारा ॥ ५३ ॥ ॥ यदुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभूपूरणपरमदयाला ॥ कहोंक्रिपाकरिहोहुक्रपाला ॥ एसिबुधिकहांतुमपाई ॥ जातेंबिचरौसहजसुभाई ॥५४

भयेअकर्त्ताईच्छाचारी ॥बालकसमसबचिंताटारी ॥ सबजगनिशदिनयहविचारें ॥ धर्मअर्थकामविस्तारें ॥ ५५ ॥ सोनहींउपजैंनहिंदुषपावे ॥ तिनसौंलागिसबआयुगमावें ॥ तुमसमस्थसबहींविधिजांनौ ॥ क्रियानिपुनप्रियबैनबषांनौ ॥ ५६ ॥ सबविधिसरसतरुणतनसुंदर ॥ तुष्टपुष्टिकौंलिपैंनदुर्दर ॥ नाकछूवंछौनाकछूकरौ ॥ जडउनमतिगतिजिमिविचरौ ॥ ५७ ॥ तृष्णांकामलोभदैलागी ॥ सकललोकदाझैतिनआगी ॥तूमअनंदमयदाझोंनाहिं ॥ ज्यौगयंदगंगोदकमांहीं ॥ ५८ ॥ देहअर्थसबहींतुमत्यागें ॥ रहौआनंदितशोकनहींलागें ॥ संगनकोइरापेदेवा ॥ कोईलहिनसकैतवभेवा ॥५९॥ तातेंकहौंक्रिपाकरिनाथा॥भवजलबूडतपकरौहाथा॥यौंजदुभूपबिनतीकरी॥तबअवधूतागिराउचरी॥६०॥ अवधूतउवाच॥ चौपाई ॥ ॥ सुनजदुभूपपरमबडभागी॥ जाकीमतिहारिसौंअनुरागी ॥ बहुतहेंमेरेगुरुदेवा ॥ जिनतैंमैंज्ञान्यौंसबभेवा ॥ ६१ ॥ परिमैंमतौआपतेंलीनों ॥ तिनमेंमोसोंकिनहूंनदीनौ ॥ तेगुरुसकलसूनौतुममोसों ॥ हरिजनजांनकहतहोंतोसौं ॥ ६२ ॥ धरनीगगनपवनअरूपांनी ॥ अनलचंद्ररविकपोतहीजांनी ॥ अजगरसिंधुपतगअभृंगा ॥ कुंजरमधुहरतारकुरंगा ॥ ६३ ॥ मीनपिंगलाकुररअरुबाला ॥ कन्यासरकरतअरुव्याला ॥ मकरिभृंगीएचोवीसा ॥ इनतेंशिष्यौसुनोमहीसा ॥६४॥प्रथमेंधरनीमेंगुन

देष्यौ ॥ सोमैंपरमतत्वकरीलेष्यौ ॥ सबैरहैंधरनीआधारा ॥ तापरिमूढकरैंअपकारा ॥६५॥ ठौरठौ
रअतिउत्तमअंगा ॥ ताकौंकरैंबहुतविधिभंगा ॥ ताकैपरवतवृक्षअनंता ॥परउपगारसबैंबरतंता॥६६॥
परअपराधकछूनाहिंजांनें ॥ उलटीआपअपकाराहिंठानैं ॥ ऐसीशिषधरनीकीलेवैं ॥ जोजनहारिचर्णानि
कौंसेवे ॥ ६७ ॥ ॥ प्रथमगुरु ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्राणवाईज्यौंलेहीअहारा ॥ स्वाद
कुस्वादनकोईप्यारा ॥ ज्यौंहरीजनआहारहीलेवैं ॥ स्वादकुस्वादनहिंचितदेवें ॥ ६८ ॥ त्रिनाअहारवि
चारनआवैं ॥ स्वादकुस्वादनमनठहरावैं ॥ तातैंएतोलेईआहारा ॥ जेतोहोवैंप्राणआधारा ॥ ६९ ॥
अरुज्यौंपवनफिरेजुगमांही ॥ शुदअशुद्धालेपैंकछूनाहीं ॥ नानाभेदनिमेसंचरैं ॥ प्रियअप्रियगुणदोषनध
रे ॥ ७० ॥ यौंविषयनिग्रहतेंजोगी ॥ मनवचनकर्मनहोवैभोगी ॥ भेदअनेकनिमेंअनुसरैं ॥ परीकछू
भेदत्हदेनहींधरैं ॥ ७१ ॥ अरुज्यौंपवनगंधसंजोगा॥लिप्तभयोजानैंसबलोगा॥परिसोपवनसदाएकरूपा॥
लिपैंनकबहुंईसोअनूपा ॥७२॥ पंचभूतनिर्मितत्यौंदेहा ॥ सकलविकारनिकोएग्रेहा॥तामेंजोगीलितनहोई॥
औरलिप्तसबजानेंकोई ॥ ७३ ॥ ॥ द्वितीयगुरु ॥ २ ॥ ॥चौपाई ॥ ज्यौंसबहिंनमेंएकआका
शा ॥ अरुसबहिनकौंतामेंवासा ॥ सबउपजेंबिनसेंबरतांही ॥ गगननालेपैंकालतिहूंमाहीं ॥ ७४ ॥ त्यौं
बहुविधिसबजगतपसारा ॥ मुनिदेषैंआतमआधारा ॥ जोकछुदेषैंजडहैसोई ॥ ताकेंसंगतेंचेतनहोई
॥ ७५ ॥ ज्यौंआतमदेहानिमेंदेषें ॥ त्यौंपरमातमजहांतहांलेषें ॥ एकअनंतनकहूंआवरनां ॥ लिपैंनछि

पैजन्मनहींमरना ॥ ७६ ॥ सोपरमातमआतमएक ॥ कदैनदेषैंभुलिआनेका ॥ ज्यौंघटगगनघटानिमैं
होई ॥ बाहरहुंपुनिजहांतहांसोई ॥ ७७ ॥ कहिवेकोद्वैनांतरएका ॥ यौंआनमअरुब्रह्मविवेका ॥ ज्यौं
वहुमेहपवनदांमनी ॥ वरपैबहुंबासरजांमनी ॥ ७८ ॥ पारिनभालेतकदेनहींहोई ॥ ओरालिप्तजांनेसबको
ई ॥ त्यौंआतममेंदेहअनंता ॥ उपजैंवरतेपावैंअंता ॥ ७९ ॥ परिआतमांलिमकहूंनाहीं ॥ साधाविचारेंयौं
मनमांहीं ॥ यहअंबरगुनतोहिसुनायौ ॥ अवभाषौंजेजलतेपायो ॥ ८० ॥ ॥ तृतीयगुरु ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ नितनिरमलऔरानिर्मलहरै ॥ तापमेटीसीतलताकरैं ॥ सबसुषदाईकहितरसवंत ॥ एगुनज
लकेसषिसेंत ॥ ८१ ॥ ॥ चतुर्थगुरु ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेजवंतअरुदीपतजुक्ता ॥ क्षोभरहित
जहांतहांनिरमुक्ता ॥ स्वादरहितसबभक्षनकरैं ॥ अग्निनलिपैंसंचनहींधरैं ॥ ८२ ॥ त्यौंहिज्ञानतेजमयहो
ई ॥ इंद्रियादिकृतदीपतसोई ॥ जदपिबहुविधिभोजनकरैं ॥ स्वादरहितगुनदोषनधरैं ॥ ८३ ॥ काहु
हुंतेक्षोभनहींहोई ॥ काहूंकेगुणमिलेनसोई ॥ उदरप्रमांनलेहिअहारा ॥ कछनजानैंसंचैसारा ॥ ८४ ॥
गुप्तरहैंनहिभूलजनावै ॥ कन्हिंप्रगटप्रगटव्हैंआवैं ॥ परिइछातैंआहुतकोलेई ॥ तिनतेंपापरहैंनाहिदेई ॥
८५ ॥ यौंमुनिगुप्तआपतेंरहैं ॥ पोजिलेहिताकौंभ्रमदेहैं ॥ उत्तमभोजनआदिहोई ॥ परइछातेंलेवेसो
ई ॥ ८६ ॥ वहुज्यौंअग्निएकरसएका॥बहुविधिदिसैंकाष्टअनेका ॥ यौंआतमाएकसबमांहीं ॥ भेद
देहकृतसंचेनाहीं ॥ ८७ ॥ दिवामसालप्रगटज्यौंहोई ॥ ज्वालाजातलषेसबकोई ॥ परितैंदीसैंयौंकेसोहीं

प्रतिदिनदेहजातहैयोंहीं ॥ ८८ ॥ ॥ पंचमोगुरु ॥ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
जेसेंशसीकोबढेकला ॥ त्योंत्योंदिनदिनदसिभला ॥ पूर्णव्हैकरिदिनदिननासैं॥सकलमिटैंतवनहींप्रकासैं ॥
८९ ॥ त्योंबालादिअवस्थाआवैं ॥ व्हैकरितरुनक्रमहीक्रमजावैं ॥ तबआतमदेषीयतनाहीं ॥ परिहै स
दाकालतिहूंमांहीं ॥ ९० ॥ ॥ गुरुछठो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्योंरविकिरणनिसौंजलछेवैं
समयपाईबहुज्योंसबदेवैं ॥ परिकबहुंअभिमाननआनैं ॥ लीयोदीयोआपुंनहींजांनैं ॥ ९१ ॥ त्योंमुनिसुनैं
कहैंअरुदेषैं ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतलेषैं ॥ नितआतमांअकरताजांनैं ॥ सबतजीब्रह्मविचारहिंठांनैं ॥
९२ ॥ ज्योंघटजलप्रतिबिंबतसूरा ॥ लिप्तदेखियेंपरिहैंदूरा ॥ त्योंआतमांदेहसनबंधा ॥ थूलदृष्टिजांनतहैं
अंधा ॥ ९३ ॥ ॥ सतमगुरु ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबकपोतकीकथासुनाऊं ॥ तेरेमन
कोभ्रमहींमिटाउं ॥ एककपोतकपोतीसंगा ॥ बनमेंकीनोग्रेहप्रसंगा ॥ ९४ ॥ आपुआपुमेंअतिअश
क्ता ॥ आठपहरमेंपलनविरक्ता ॥ मनसोंमनअंगनिसोंअंगा ॥ नैंनत्रीनैंनबुहूरोबहुरंगा॥९५ ॥अवनगव
नअसनअस्थाना ॥ सैनबैनसारीविधिनाना ॥ मिलिसकलकर्मनिकोंकरैं ॥ निरभयरहेनकाहूंतेंडरैं ॥
॥ ९६ ॥ सोकपोतबनिताबसकीऔ ॥हावभावतनमनहरिलिऔ ॥ बनिताजोवंछेसोल्यावे ॥ कष्टसहित
नोहिविधिपावें ॥ ९७ ॥ सोअस्त्रीजीतज्योंतुमराजा ॥ अपनोलषेनकानअकाजा ॥ तनमयभयौंनिरंतर
चहैं ॥ प्राणनिहूंतैंताहिप्रियकहैं ॥ ९८ ॥ ताकीत्रीयाअंडउपजायें ॥ तिनमैमनदूनोमिलिलाये ॥ तवह

रिमायाशिशुनिरमये ॥ कोमलअंगरोमतवभये ॥ ९९ ॥ तवहुंमिलीकरीतिनकोंपोषें ॥ बहुतभांतिताकोंसंतोषें ॥ कोमलवचनसुनेंमुषदरसें ॥ अपनेंअंगअंगसोंपरसें॥१००॥हरिकीमायाबहुतभुलाये ॥ आपुआपुमेंसकलबंधाये ॥ पुत्रसनेहरहेंअनुरागें ॥ सिरपरकालनलषैअभागें ॥ १ ॥ एकवारबालककेकारन ॥ चारोंलेंनगएतेआरन ॥ तांहिसमेंव्याधिएकआयौ ॥ बालकदेषिजालबिछरायौ ॥ २ ॥ देष्योकनिकनदेष्योजाला ॥ बंधेआनिसकलषगबाला ॥ तबदोउचाराकोंल्याये ॥ जिनिग्रहमांहिनबालकपायें ॥ ३ ॥ तबदेषेंमातातेबाला ॥ बंधेजालमांहिंबिहाला ॥ तबसोतहांपुकारतधाई ॥ जालमांहिसुतहेतबधाई ॥ ४ ॥ तबकपोतदेषेंसबबंधे ॥ हरिमायाकीनेंअतिअंधे ॥ तबबहुभांतिकरैविलापा ॥ लेषेंबहुतआपनेंपापा ॥ ५ ॥ हाहापापकोंनमेंकीनें ॥ ऐसेंदुषदैवमोहिदीनें ॥ जाकोयहपतिव्रतानारी ॥ पुत्रनिलेसुरलोकसिधारी ॥ ६ ॥ मोहिछोडसूनेंग्रहमांहीं ॥ सबमिलिआपुइंद्रपुरजांहीं ॥ नामेंसुषभोगएयहलोका ॥ नहिंसाधनपायोपरलोका ॥ ७ ॥ धर्मअर्थकामसबजामें ॥ कछुवैनहींरह्योग्रहतामें ॥ अबप्राननिराष्यौकछुनाहीं ॥घरीघरीमेंदुषअधिकाही ॥ ८ ॥ याविधिभयोबहुताबिहाला ॥ बंधदेषेबनीताअरुबाला ॥ व्याकुलबुधिविचारनकर्‍यौ ॥ आपहूंआईजालेमेपर्‍यौ ॥ ९ ॥ सहितकुटुंबकपोतहींपायौ ॥ तबहींभयौव्याधिमनभायौ ॥ ऐसीमेंकपोतकीदेषी ॥ तबहींत्दैआपुनेंयहलेषी ॥ ११० ॥ यौंहींकुटंबहौवेंजाकें ॥ तृष्णारागबढैअतिताकें ॥जीवानिअतिआरंभनिकरैं॥सहितकुटंबकालमुषपरैं॥११

॥याविधिजोमानवतनपावैं ॥ सोतोद्वारब्रह्मकेआवैं ताहुंपारिजोंग्रहाहितकरैं ॥सोनरब्रह्मद्वारचढीपरैं ॥१२॥
तातैंभोगकुटंबअरुगेहा ॥तिनकरिजीवलहैंप्रतिदेहा॥एसौमानवतननगवैयैं॥ज़ाकरिदेवानिरंजनपैयैं॥१३॥
दोहा॥ यहभाषीगुरुआठकी ॥ शिष्यामैंतुमपास ॥ अबऔरनकीकहतहौं ॥ज्यौंछूटभवपास ॥१४॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेअवधूतेतिहासोपाख्यानेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
दोहा ॥ ॥ शिक्षानवमिआदिलेकहिआठमैंमांहि ॥ ज्यौंज्यौभाषतदत्तजीत्यौंयदुमनहर्षाहि ॥ १ ॥
॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जैंइंद्रियसुषकछुकहावैं ॥ तैंतौंस्वर्गनर्कहूंआवैं ॥ जौंसुकरकू
करसुषमांहीं ॥ त्यौंहिदेवऔरकछूनांहीं ॥ १ ॥ अरुजोसुषआपुहींतैंआवैं ॥ कर्मलिष्योसोकोईनामि
टावैं ॥ अरुज्यौंकोईदुषकौंनहींचहैं ॥ परिदुषआपुआपुहींरहैं ॥ २ ॥ त्यौंहीसुषआपुहींतैंआवैं ॥ वि
तजांनैंनरबहुदुषपावैं ॥ तातैंधनसुषनामनलेवैं ॥ होईअकरताहारिपदसेवैं ॥ ३ ॥ स्वादकुंस्वादबहुतके
थोरा ॥ जोहरिजीपठवेंतिसबोरा ॥ ताकौंभक्षैंरहैंउदासा ॥ अजगरव्रतिगहैंयहदासा ॥ ४ ॥ जोक
बहुंअहारनआवैं ॥ तौंथिररहैनकछुमनलावैं ॥ कर्मआधीनदेहकौंजानै ॥मनकृमवचनउद्यमठांनैं ॥५॥
अतिसांमर्थइंद्रियमनदेहा ॥ परिकछुउद्यमकरैंनएहा ॥ निश्चलब्रह्मनिरंतरसेवैं ॥ यहाशिष्याअजगर
तेंलेवैं ॥ ६ ॥ ॥ गुरुनवमो ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥दर्शनपरसनपरमगंभीरा॥ अधिकअगाधज्ञान
सोनीरा ॥ वारपारकोईथाहनलहै ॥ एगुनमुनिसायरकैगहै ॥ ७ ॥ ज्यौंबरषाबहुनीरभवेरा ॥ सायर

कछुनटेनलेसा ॥ ग्रीपममेंकछूहीननहोई ॥ सदासमर्थआपतेंसोई ॥ ८ ॥ त्यौंकोईबहुविधिअरचावें ॥ भोजनवस्त्रादिकपहीरावें ॥ अस्तुतिमानवडाईदेवें ॥ बहुतभांतिबहुतेंमिलिसेवें ॥ ९ ॥ अरुएकोलै जाहींउतारी ॥ निंदादिकएकठानैभारी ॥ परिनारायणमयमुनिमांहि ॥रागद्वैषकछूउपजेंनाहीं ॥ १० ॥ गुरुदशमो ॥१०॥ चौपाई ॥ ॥ बनितावस्त्रकनकआभरनां ॥ बहूविधिमायाकेउपकरना॥इनमेंआई परेंजोकोई ॥ अग्निपतंगसमानसोहोई ॥११॥ ॥ गुरुईग्यारमो ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्योंलगीमुनिसमझैनिजदेहा ॥ ज्याचाअहारलेईबहूग्रेहा ॥ यातेंबहूअनुरागनबढैं ॥ यहशिष्यामधूकरतेंपढैं ॥ १२ ॥ छोटेंबढेंबहूताविधिग्रंथा ॥ तिनतेंसारगहैंहरिपंथा ॥ ज्यौंमधूकरबहूफूलनिमांहिं ॥ वासगहैंफूलनिकौंनांहीं ॥ १३ ॥ सोमधूकरद्वैविधकौंकेहीयैं ॥ दहूपासतेंशिष्यालहीये ॥ बहूतग्रहनीतेलेईअहारा ॥ उदरंप्रमानएकहींवारा ॥ १४ ॥ ॥ गुरुबारमों ॥ ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ दूजेकोकछूसंचनधरैं ॥ निर्भयब्रह्मविचारहींकरैं ॥ संग्रहभूलिकरेजोकबहीं ॥ मधुमाषीज्यौंविनसेंतबहीं ॥ १५ ॥ जोकोईधनसंग्रहकरैं ॥ सोकोईऔरहींपरिहरैं ॥ ज्यौंमधूमाषीमधसंग्रहैं ॥ मधूआसोउदमविनलहैं ॥ १६ ॥ ॥ गुरुतेरमो ॥ १३ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ पुतलाकाष्टहूंकौजोहोई ॥ पगइूंबुधिपरसैंमतिकोई ॥ परसकरतहावेंदृढबंधा ॥ ज्यौंकरिदकरिनिसंबंधा॥१७॥मृत्युजांनिबनिताकौंतजैं ॥ पंडितकबहूंभूलिनभजैं ॥ भजतेंहोवेंकरीसमाना ॥ एकहिंमिलिमारेगजनांना ॥ १८ ॥ ॥ गुरु

च उद्गमो॥१४॥चौपाई॥ ॥ हरिविनगीतसुनैंनहीं और॥गयोचाहैजैहरिकेठौरा॥औरसुनगतातिहोवेऐसी
॥व्याधगीतहरिनांकीजैसी१९॥सुनोहारिनगतिसुनिबहुरंगा॥सृंगीरिषिज्यौंगनिकासंगा॥अबलाधनिमुक्त
नहींहोई॥तिनकैशब्दसुनैंनहींकोई॥२० ॥गुरूपनरमो ॥१५॥ ॥चौपाई॥ ॥ मुनिजिव्हाअ
सक्तनकरैं॥ स्वादकुस्वादशकलपरहरें॥ जिव्हारसतेंहोवेंकाला ॥ जैसैंमीनमरैंततकाला ॥ २१॥
जेमुनिसबअर्थनिपारिहरैं ॥ जाईएकांतबासकौकरैं ॥ सहजइंद्रियसबहोवेंक्षीना ॥ परिरसनानहींहोई
अधीनां ॥ २२ ॥ रसनासबकौंफिरिजिवावें ॥ जबहिंरससंजोगहींपावें ॥ यौंसबइंद्रियजीतैंकोई ॥
परिरसनांकरमैंनहींहोई ॥ २३ ॥ यौंलगिसकलब्रथाकरिजांनो ॥ रसनाजीतजीतकरिमांनो ॥ तातैंमु
निरसनांवसकरैं ॥ औरसकलसाधनपरिहरैं ॥ २४ ॥ यौंजेएकएकवसभयै॥तेसबजमकैंद्वारैंगयैं ॥
परिजोएकपंचबसहोई ॥ ताकैंदुषजांनैंगोसोई ॥ २५ ॥ ॥ गुरूसोलमो ॥ १६ ॥ ॥चौपाई॥
बहुरिएकगनिकापिंगला ॥ तातेंमैंशिष्योगुनभला ॥ सोतुमसौंभाषतहौंराजा ॥ जातैंसरैंतुमारैंकाजा ॥
॥ २६ ॥ जनकविदेहपुरीमैंवासा ॥ नामापिंगलारूपनिवासा ॥ एकवारशृंगारवनायौ ॥ धनिकपुरूषम
नमैंठहरायौ ॥ २७॥ बेठिनिकासिभवनकैद्वारा ॥ आगेचल्यौजाईबाजारा ॥ कोईभलोआवंतोदेषैं ॥
यहआवैंगोयोंकरिलेषैं ॥ २८ जबवेआगेंकोचलिजावैं ॥ तबापिंगलाऔरकौंध्यावैं ॥ औरौआइआ
ईचलिजांहिं ॥ यौंयहदुषपावैंमनमांहीं ॥ २९ ॥ तबहूंउठिभीतरकौंजावें ॥ कबहूंव्याकुलबाहिरआवैं ॥

अर्द्धरातिएसीविधिभयौ ॥ लोकबजारचलतरहगयौ ॥ ३० ॥ तबवहभग्नमनोरथभई ॥ चिंतादुषअतुलअनुभई ॥ अपनोतिरस्कारकरिमांन्यौं ॥ सबतैंहीनआपकौंजांन्यौं ॥ ३१ ॥ तबताकौंकोईबडभागा ॥ जातेंउपज्यौंदृढवैरागा ॥ ज्यौंलगिनहिंउपजैंनिरवेदा ॥ त्यौंलगिनहिमिटैंभवषेदा ॥ ३२ ॥ याभवनपाशिपदुपअनेका ॥ तामैंपरमरत्नसुषएका ॥ बंधनबंध्योजीवअपारा ॥ तिनकौहारिजिरच्यौकुठारा ॥ ३३ ॥ ताकीमाहिमाकहीनजावैं ॥ जाकेभागबडेसोपावैं ॥ जाकौंनामकहैवैरागा ॥ सोतोहारिकोदीयोसुहागा ॥ ३४ ॥ जांहिदेईसोईपैपावैं ॥ भवभयछोडिब्रह्ममैंजावैं ॥ तातैंमानवसबाछिटकावै ॥ ज्जौंत्योंकरिवैंरागउपावें ॥ ३५ ॥ तवपिंगलावचनउचारैं ॥ बहुतभांतिआपुहींधीकारैं ॥ गएदिननकौंअतिपछितावैं ॥ सबतैंदृढवैरागबढावैं ॥ ३६ ॥ ॥ पिंगलाउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अहोएकमेरोअज्ञानां ॥ जाकैंत्त्वदैबदूरीभ्रमनानां ॥ जलबुदबुदासमजोनरदेहा ॥ तासोंशुषहितकीयोसनेहा ॥ ३७ ॥ पुरनसरततताजिजलपासा ॥ मृगजलधाईकरीजलआसा ॥ चारपदारथदाईकदेवा ॥ सदानिकटकौंलद्यौनभेवा ॥ ॥ ३८ ॥ सत्यसदासुषदाइकस्वामी ॥ सोछांड्योनिजपतिधननांमी ॥ जुठोसदाकालमुषमांहीं ॥ जातेंदुपसोकअधिकाहि ॥ ३९ ॥ एसोपुरुषताहीमैंभज्यो ॥ आपहींदुषआपकौंसज्यौं ॥ देहवेचमैंदेहहींपोष्यौ ॥ यांहिभांतिमनहींसंतोष्यौ ॥ ४० ॥ अखिलंपटतृष्णादात्यौ ॥ दुषितनरनसौंमैंसुषचात्यौ ॥ हाडेमदमंजाअरुअंता ॥ मांसरुधिरत्वकरोमअनंता ॥ ४१ ॥ विष्टामुत्रस्वेदक्रामिएहा ॥

झरैंद्वारनपवऐसीदेहा ॥तामैंकहोरमितक्योंहोई ॥ मोसीमूढऔरनहींकोई ॥ ४२ ॥ यापुरमांहिंजनकनृपएसैं ॥ सूरअधिकारसुरेखरजैसैं ॥ तोहूंपारिसबसुषकौतजैं ॥ व्हैविदेहहरिचर्णनिभजैं ॥ ४३ ॥ अरुसबप्रजाभजेहरिचरनां ॥ जातैंमिटैंजन्मअरुमरनां ॥ जाकौंभजैंब्रह्मशिवसेषा ॥ परिसोतिनहूंकदैनदेषा ॥ ४४ ॥ एसैंप्रभूकौंजेनरसेवैं ॥ तिनकौंरिझिआपकौंदेवैं ॥ ऐसौंप्रभूमैंनहींआराध्यौ ॥ कीऔअनर्थअर्थनहींसाध्यौ ॥ ४५ ॥ अबमैंआपनिवेदनकरौं ॥ औरसकलउरतैंपरिहरौं ॥ अपनेपतिहरजीकेसंगा ॥ सदारमौंज्यौंश्रीअरधंगा ॥ ४६ ॥ कहाऔरसुरनराप्रियकरीहैं ॥ जेवापुरैंआपुहीमरीहैं ॥ अरुतेसुषकोईथिरनाहीं ॥ देषतसकलपलकमैंजांहीं ॥ ४७ ॥ मेरीदृष्टीदुषिसबआवैं ॥ कालाधीनकहांसुषपावैं ॥ तातैंमैंयहनिश्चैजांनी ॥ कृपाकरीहैंसारंगपानी ॥ ४८ ॥ जिनमेरेवैरागउपायौ ॥ अपनैंचर्णकमलचितलायौं ॥ यहहरिकृपाविनानहींहोई ॥ जोवैरागलहैंनरकोई ॥ ४९ ॥ जातैंसबबंधनभवनासैं ॥ ह्रदयरमापतिआपप्रकासैं ॥ मैंतोमंदभागनीऐसी ॥ त्रिभुवनमांहिंनहींकोजेसी ॥ ५० ॥ ताकौंकिसौंहरिकौभजनौं ॥ केसोकालजालकौंतजनौं ॥ परितैंदीनबंधुगोपाला ॥ पतितउधारनपरमदयाला ॥ ५१ ॥ तिनहींअपकृपायहकरी ॥ जिनमेरैंउरऐसीधरी ॥ आवलेयापरसादहिंसीसा ॥ निसादिनभज्यौंचरनजगदीसा ॥ ५२ ॥ जितनैंयादेहिनिरवाहौं ॥ सोईनहिआरंभसबाहौ ॥ सहजमांहिंजोहरिजील्यावैं ॥ ताकरियादेहविरतावैं ॥ ५३ ॥ याभवकूपपर्यौनितप्रांनी ॥ विषेअ

वरनदृष्टिछिपांनी ॥ तापरिअजगरकालगिरास्यो ॥ यौंनरबहूतपाससौंपास्यो ॥ ५४॥ ताकौंहरिविनकौं नछोडावें ॥ आपहीकोंनहींछूटनपावेंअरुआपहीआपकौंराषें ॥ जबसबतरस्कत्वदेमेंनाषें ॥ ५५ ॥ जबहीहरिकोसरनहींआवें ॥ तबहींआपहींअपुछोडावें ॥ वेप्रभूनिजानंदमयदेवा ॥ कहांकरेंकोतिनकी सेवा ॥ ५६ ॥ परिसवजगतकालछिटकावें ॥ हरिकोंसरनआपुसुषपावें ॥ तातेंऔरसकलकौंतजौं ॥ प्रेमभावहरिचर्णनिभजौं ॥ ५७ ॥ याविधिआपुहींआपउधारौं ॥ आपनहींभवसागरडारौं ॥ ॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ यौंपिंगलापरमगतिपाई ॥ दुहूंलोककीआसामिटाई ॥ ५८ ॥ सीतलव्हेंसेजामेंगई ॥ परमानंदाहिप्रापतभई ॥ यहशिष्यामैंयातेंलीनी ॥ भलीजानीउरस्थिरकीनि ॥ ५९ ॥ ज्यौंलगीआसकरेंनरकोई ॥ त्यौंलगिसुषीकदेनहींहोई ॥ जबहींसकलआसाछिटकावें ॥ तबततकाल परमपदपावें ॥ ६० ॥ ॥ गुरूसतरमो ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहगुरूसत्रहकीकही ॥ शिष्यामैंसमुझाई ॥ अबऔरनकीकहतहौं ॥ सुनियौंहितचितलाई ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादअवधूतेतिहासोपाख्यानेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरनवमेंध्यायमेंशिक्षाकहींअनूप ॥ गुणचौवीसौंसुनतहींभयोकृतारथभूप ॥ १ ॥ ॥ अवधूतउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ जोजोहितकरिसंग्रहकरें ॥ सोईसोअतिदुषविस्तरें ॥ जवहिंहितसंग्रहछिटकावें ॥ तनअपारसुपसागरपावें ॥ १ ॥ कुररपंपीकहूंआमिषपायौ॥सोलेउड्यौबहुतहितलायौ॥ तबबहूतेंकुर

रनिदुपदयौ ।। आमिषतज्यौंसुषीतनभयौ ।। २ ।। यहमैंशिष्याकुररतेंपाई।।तातेंसंग्रहकरौनकाई ।। ।।
गुरुअठारमो ।। १८ ।। ।। बहुरिशिष्यबालकतेंपाई ।। मेरेउरजातेंमातिआई ।। ३ ।। नमेमानअ
पमानहींजानौ ।। चिंताकछूचिंतनहींआनौ ।। निशदिनरहोआतमारामा ।। कबहूंकछूनउपजैंकामा ।।
४ ।। याभवमांहिद्वैकौंसुषहैं ।। औरसकलजीवनिकौंदुषहैं ।। उद्यमरहितबालकमतिहींनां ।। अरुजोगु
णातीतपदलीना ।। ५ ।। ।। गुरुउगणीसमो ।। १९ ।। चौपाई ।। ।। एकविप्रकेहुतिकुमारी ।।
ताविवाहकीविप्रविचारी ।। ताकेमातपिताएकवारा ।। औरगांमकौंहूकांमासिधारा ।। ६ ।। समाचारए
कविप्रनिपाई ।। व्याहकाजतिनकैंघरआऐं ।। कन्यावचनाकिसासौंभाषैं ।। तिनतेंद्विजआदरकरीराषैं ।।
७ ।। तबतिनकैंभोजनकीधारी ।। चावरषोटनलगीकुमारी ।। तबताकैकरज्यौंज्यौंदोलैं ।। त्यौंहींत्यौंकर
कंकनबोलैं ।। ८ ।। तिनलजितव्हैंसकलउतारैं ।। द्वैद्वैदहुंहाथनिमेंधारैं ।। बहुरिलगिजबचावरछरनैं ।।
तोहूलगिशब्दतेंकरनैं ।। ९ ।। तबतिनएकएकहींराष्यौं ।। चुपकरिरहैंबहुरिनहींभाष्यो ।। मैंविचरतहो
इछाचारी ।। तातेंदेषित्हृदयमेंधारी ।। १० ।। बहुतनिसंगबढैंबकवादा ।। दूजैंहूतैंहोईअनुवादा ।। तातें
रहैंअकेलाजोगी ।। सदाविचारब्रह्मरसभोगी ।। ११ ।। ।। गुरुवीसमो ।। २० ।। चौपाई ।। आस
नप्रांनदेहमनबंधैं ।। दृढवैरागत्हृदेमेंसंधे ।। निहचलव्हेंनितब्रह्मविचारैं ।। यौंक्रमक्रमरजतमकौंजारैं।।१२
।। त्यौंत्यौंनिहचलव्हैंसमाधी ।। तजतेजावेसकलउपाधी ।। तबज्योंपावकईंधनहींना ।। त्यौंहोवेनिजपदमें

लीना ॥ १३ ॥ तवकबहूंकछूदैतनजानै ॥ सिलासमानदेहगुएभानें ॥ ज्योंआगेंव्हैनृपतिगयौ ॥ सेना
शब्दबहुतविधिभयौ ॥ १४ ॥ परिसरकरभेदनहींपायौ ॥ याविधिसरमैंचित्तलगायौ ॥ एशिष्यलईमें
यातें ॥ निहचलबुद्धिभईममतातैं ॥ १५ ॥ ॥ गुरुएकवीसमो ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्यो
लोकनितेंडरैभुजंगा ॥ बसेंगुहामेंरहेअसंगा ॥ सावधानआतिथोरोबोले ॥ गत्यादिकअंतरनहींखोलें ॥
१६ ॥ यहआरंभदुषकौमूला ॥ तेआरंभेजेनरभूला॥सरपपराऐग्रहमेंरहें॥ याविधिमुनीअहीशिष्यागहें
॥ १७ ॥ ॥ गुरुबावीसमो ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकेआपनिरंजनदेवा ॥ जाकौंकोइलहेंनहीं
भेवा ॥ आपहींतेंमायाविस्तारें ॥ सतरजतमबहुभेदपसारें ॥ १८ ॥ बहुरिंआपहींसबसंग्रहें ॥ निजानं
दमयएकैरहें ॥ तातेंएसबमिथ्याजांनौ ॥ याकौंकरतासोंसतमांनौ ॥ १९ ॥ यहशिष्यामकरितेंलेवें ॥
सबतेंदरेंब्रह्मकौंसेवें ॥ ॥ गुरुत्रेवीसमो ॥ २३ ॥ ॥ जहांजहांयहमनकौंधारें ॥ निसवासरकबहु
नहींटारै ॥ २० ॥ रागद्वेषभयैक्यौंहिहोई ॥ होतरूपतांहींकोसोई ॥ भृंगिकीटहुंतेयहलीनों ॥ तोमनहरि
चर्णैथिरकीनों ॥ २१ ॥ ॥ गुरुचोवीसमो ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यहचौवीसगुरुनकीशि
ष्या ॥ तोंसोंमेंभाषीदृढदिष्या ॥ अबतनतेंसीष्यौंसोंकहौं ॥ तेरेंसबअज्ञानहींदहौं ॥ २२ ॥ मे
रीदेहमोहीसमझावें ॥ हृदयज्ञानवैरागउपावें ॥ ज्यौंबालापनगयोबिलाई ॥ त्यौंअबयहजोबनबी
जाई ॥ २३ ॥ आवेजरामरणतेआगैं ॥ बहुविधिदुषदेकौंलागें ॥ स्वानसृगालनिकौंयहभक्षा

तिनसौंप्रीतनजोरेदक्षा ॥ २४ ॥ पुत्रकलत्रअर्थपशुगेहा ॥ कुलकुटुंबअवअरुसेवकजेहा॥ तिनसौंमि
लिजादेहाहिसेवें ॥ सोईअंतमहादुषदेवें ॥ २५ ॥ आगेकुबहूंकर्मकमावें ॥ अबजमकेदरबारपठावे
॥ रसनिमितषेंचेंनितरसना ॥ प्राणसदाचाएजलअसना॥२६॥ नेनरूपअरुशब्दहिंश्रवनां ॥ इंद्रियचा
हैंनारिकौंवरना ॥ त्वचारूपरसनासिकागंधा ॥ चरनगवनकरकारिहैंधंधा ॥ २७॥ याविधिसबामिलि
लूटेताकौं ॥ बंध्यौदेहसोदेषेजाकौ ॥ तातेंनेहदेहकौंतजिये ॥ सदानिरंतरहरिकौंभजिये ॥ २८ ॥ हरि
जबमायागुणाविस्तारें ॥ तबनानाविधिदेहसंवारें ॥ तिनातिनमनसंतुष्टनभयौ ॥ बहूर्‌यौमानवतनानिरमयौ ॥
२९ ॥ ताकौंदेषिपरमसुषपायौं ॥ तामेंअपनोधामबनायो ॥ तबहूंरिजीवोलेयहबानी ॥ जोप्रगटयहबेद
बखानी ॥ ३० ॥ मोहीलहेंसोयाकरिलहे॥ याकरिसबभवबंधनदहैं ॥ जबमेरेहितकरेंउपायी ॥ तबमें
याकोंकरींसहाई ॥ ३१ ॥ तातेंयहअतिदुर्लभदेहा ॥ श्रीभगवानरच्यौंनिजगेहा ॥ अतिदुर्लभाकिहूंजत
ननपावे ॥ जोपावतोथिरनरहावें ॥ ३२ ॥ प्रतिदिनमृत्युनिरंतरग्रासें ॥ एकदिनांततकालबिनासें ॥ ज
रारोगभयसोकनिधाना ॥ जामेंपलकसुषीनहिप्राना ॥ ३३ ॥ तातेंताहीपाईकारिराजा ॥ करिलीजीमें
आपनौंकाजा ॥ जातेंयहछूटेसंसारा ॥ जाकेदुषकौंवारनपारा ॥ ३४ ॥ निशदिनदेवनिरंजनभजियें ॥
व्हेभयभीतविषैसबतजियें ॥ विषयषानपानसुतदारा ॥ एसबदेहनिवारंवारा ॥ ३५ ॥ तातेंत्यागसकल
कौंकीजे ॥ हरिकेचरणकमलचितदीजें ॥ याविधिईनतेंशिष्यापाईं ॥ तबमैंऔरसकलछिटकाई ॥

॥ ३६ ॥ भूवमेविचरौंव्हेनिहसंगा ॥ यातनहूकौंछांड्योसंगा ॥ सदारहोंहारिचर्णानिवासा ॥ बहुविधिदे
र्योसकलतमासा ॥ ३७ ॥ बहुतगुरुनितेपूरणज्ञाना ॥ जहांतहांलेवेंसाधुसुजाना ॥ छूटैअहंकारअरु
ममता ॥ र्‍हृदयआनिविराजेसमता ॥ ३८ ॥ निरगुनसगुनभेदपहिचानें ॥ सारअसारअस्थिरास्थिर
जानें ॥ जहांतहांलेलेदृष्टांता ॥ संसैद्वैतमिटावेसांता ॥ ३९ ॥ परिएपरमारथगुरुनाहीं ॥ एसबगुरुहैसत
गुरुमाही ॥ सतगुरुतेंसबज्ञानहिंपावें ॥ तबसनजगअग्यानमिटावें ॥ ४० ॥ तातेंमेरेसदाआनंदा ॥ र्‍हृ
दयविराजैपरमानंदा ॥ याविधिजेजेहरिकौंसेवें ॥ तिनकौहरिचर्णानिजदेवें ॥ ४१ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसैंजदुकौंबचनसुनाये ॥ मनकेभ्रमसंदेहगमाये ॥ राजाबहुविधिपूजाकी
नी ॥ करिप्रणामविनतीकीनी ॥ ४२ ॥ तबराजाकौंकरिसनमाना ॥ दत्तात्रयमुनिकीयोपयानां ॥ राजा
वचनधारीउरमांहीं ॥ सबकौंसगतज्योंखिनमाही ॥४३ ॥ ब्रह्मदृष्टिसबहीमेंआंनी ॥ ऐसोभयोपरमवि
ज्ञानी ॥ सोराजाजदुवडोहमारौ ॥ जिनअपनौभवसंकटटारौ ॥ ४४ ॥ तातेंउद्धवऔरनकोई ॥ गुरु
आपुनोआपुंहिहोई ॥ आपुहिवूडेंआपुहितरैं ॥ आपुहिजमेआपुहिमरैं ॥ ४५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
यहभाष्यौविज्ञानमय ॥ सबअद्वैतउपाई ॥ अबतोसौंसाधनकहौं ॥ बहुतभांतिसमुझाई ॥ ४६ ॥॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेनवमोऽध्याय ॥ ९ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हो
तदेहसंबंधतैं ॥ याकौंसंसृतिकाल ॥ श्रीधरदशमेंध्यायमैं ॥ बरणतकृष्णकृपाल ॥ १ ॥ ॥ श्रीभ

गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबसाधनकहौं ॥ तेरोसबसंदेहहीदहौं ॥ जातेंउपजतब्र
ह्मगिनाना ॥ छूटैऔरसकलभ्रमनाना ॥ १ ॥ ममभक्तनिजमारगभाषें ॥ तेसबत्हृदयबोठिमेंआपें ॥
तेकहियेंआतमकेधर्मा ॥ औरसबेंबंधनकेकर्मा ॥ २ ॥ तिनाकौंसावधानव्हेंजानें ॥ वर्णाश्रमकुलमें
थ्यामानें ॥ जेजैबहूआरंभानिकरैं ॥ सुषचाहैंनिसदिनदुषभरैं ॥ ३ ॥ आगेंकौंबंधनउपजावैं ॥ तिनकेसं
गजमदूरैंआवैं ॥ योंविचारीसबआरंभतजैं ॥ व्हैनिहकामचर्णममभजैं ॥ ४ ॥ जहांलगेंहैंनानाबूधी ॥
सोउद्धवसबजानकुबुद्धी ॥ द्वैतभावसोंभ्रमकारिजानौं ॥ सुपनमनोरथश्रमकारिमानौं ॥ ५ ॥ तातेंऔरक
र्मसबतजौ ॥ नितनैमित्तिककछुएकजौ ॥ तेउकछूसत्यनहींजानैं ॥ करेंतोकरेंनहींतोभानैं ॥ ६ ॥ भ
क्तिमाहींज्योअंतरपरैं ॥ तेतोभूलिनकबहूंकरैं ॥ जोजासमयनअंतरजानैं ॥ तोतासमयसहजमेंठानैं ॥
७ ॥ यमनिमांहींनिहचलचितधरें ॥ नियमनिकौंभावेंतोकरैं ॥ ब्रह्मविज्ञगुरूसरनहींजावैं ॥ तातेंभेदस
कलकोंपवें ॥ ८ ॥ यमअरुनियमकछुनाहीसेवें ॥ सदगुरूकहेंशिष्यसोलेवैं ॥ मानरहितमच्छरनहीजा
नैं ॥ तनमनअरापिप्रीतिकोंठानैं ॥ ९ ॥ जहांतहांतेंममतापरिहरैं ॥ सावधानआलसनहिंकरें ॥ तजे
असूयावृथानबोलें ॥ तनमनोनिहचलकदैंनडोलैं ॥ १० ॥ श्रद्धासहितआसक्तीहोई ॥ गुरुचर्णनिशि
द्यसेवेसोई ॥ दारासुतावितगेहकुटुंबा ॥ सकलभूतआतमपितुअंबा ॥ ११ ॥ तिनसबहीनकौंसमकरि
देषे ॥ मेमेरोकारिकदैनलेषैं ॥ रहेंउदासआसापरिहरैं ॥ निसिदिनब्रह्मविचाराहिकरैं ॥ १२ ॥ सूक्ष्म

स्थूलदेहद्वैजेंहैं ॥ मर्मरूपमायाकेतेहैं ॥ इनिदूनैतैंआतमदूर ॥ स्वप्रकाशचैतनभरपूर ॥ १३ ॥ स्थूल शरीरप्रगटजडएहा ॥ चैतनकरैताहीवहदेहा ॥ सोवहतनजडहैअंगा ॥ चैतनहोईआतमासंगा ॥ १४ सोआत्मादुहूतैंन्यारा ॥ दहुंप्रकासकदहुंआधारा ॥ ज्यौंएककाष्टअनलपरिजरै ॥ सोदूजेप्रकासतकरै ॥ १५ ॥ परिसोअनलदुहूतैंन्यारा ॥ स्वप्रकाशआतमआधारा ॥ बहुधासोबहुकाठनिसंगा ॥ पावैउ तपातिस्थितिअरुभंगा ॥ १६ ॥ त्यौंद्वैतनहरिमायाकीयै ॥ तेआतमाआपुकरिलीयै ॥ तिनसंगजन्मम रणदुपावैं ॥ लहैंआनंदजबहिछिटकावैं ॥ १७ ॥ तातैंबहुविधिकरैंविचारा ॥ आतमजानैंसबतैंन्या रा ॥ एकअजन्माअरुअविनासी ॥ चैतनघनपूरणसुषराशी ॥ १८ ॥ तनउपजैविनसैंबरतांहि ॥ परमअसूधशुधनकांहीं ॥ सकलविकारनिकौंसंघाता ॥ प्रगटदिसैंआवतजाता ॥ १९ ॥ मौसोंयासौं केसोसंगा ॥ मैचेतनयहजडबहुरंगा ॥ यौंविचारित्यागेंतनममता ॥ आतमदृष्टिसकलमेंसमता ॥ २० याविधिदृढयहोईथिरज्ञाना ॥ मिलैब्रह्मछूटैसबनाना ॥ प्रथमअरणीआस्थिरगुरुदेवा ॥ दूजीशिष्यकरै तिनसेवा ॥ २१ ॥ गुरुकेबचनश्रवनमंथाना ॥ याविधिउपजैंपावकज्ञाना ॥ उपजैंज्ञानतमकेगुनदहैं ॥ कर्मबीजकोईनहींरहै ॥ २२ ॥ तबज्यौंपावकतेजसमावैं ॥ इंधनविनानपलकरहावै ॥ त्यौंआतमांब्रह्ममय होई ॥ इंधनकर्मभस्मकरीसोई ॥ २३ ॥ अरुजेमूढनयहाविधिजानैं ॥ तेबहुविधिकर्मनिकौंठानैं ॥ तै कर्मनिकैफलनिभोगावैं ॥ जन्ममरणकौअंतनआवै ॥ २४ ॥ जहांजहाजायेतहांतहांकाला ॥ निशिदिन

रहैंसदांबिहाला ॥ यहजगदीसैंत्यौंकैंत्यौंहिं ॥ परिएकोपलरहेनयौंही ॥ २५ ॥ औरैंऔरहोईअकारा ॥ तिनसंगातिमनवहूतप्रकारा ॥ कवहूंज्ञानत्हदैनहिंआवैं ॥ जन्मजन्ममरिमरिदुषपावैं ॥ २६ ॥ कर्मनि जोकर्मनिआचरैं ॥ सुषआरुजोदुषभोगनिकरैं ॥ एचारौदीसेपरितंत्रा ॥ तातैंसबतजियैंयहमित्रा ॥ २७ ॥ जेपंडितश्रुतिस्मृतिजानैं ॥ तत्वलहैंविनुकर्मानेठावैं ॥ तेमूरषदेहाअभिमानी ॥ आपुहिआपकाहा वतज्ञानी ॥ २८ ॥ हरिजनसंगनकवहूकरैं ॥ तत्वनसुनैंकर्मविस्तरैं ॥ तिनतैंभलेजेकच्छूनहिंजानैं ॥ तत्ववचनसुनित्हदयैंआनैं ॥ २९ ॥ जद्यपिअंतसुपनिकौंजानैं ॥ अरुक्षणभंगुरदेहनिमानैं ॥ परिसेोतत्वनसमझेतेऊ ॥ जातैंलहैंभक्तिकोभेऊ ॥ ३० ॥ कालमृत्युजाकौंनित्यग्रासैं ॥ ताकौंकहोकहांसुखवासैं ॥ ज्यौंकोईमारनकौंलीजैं ॥ सूलीनिकटषरोलेकीजैं ॥ ३१ ॥ अरुताकौंजोभोगभोगावैं ॥ सोकिधौंकहौंकेसोसुषपावैं ॥ अरुयौंहीनस्वरपरलोका ॥ मदमत्सरनिंद्याभयशोका ॥ ३२ ॥ तिनकेहेतजतनवहूकरैं ॥ सिद्धनहोइविघनआतपरैं ॥ ज्यौंपेतिमेंविघनअनेका ॥ त्यौंस्वर्गादिकलहैंकोएका ॥ ३३ ॥ अरुजोलह्यौंतोथिरनाहीं ॥ देषतविनसीजाईपलमांही ॥ ईहांयज्ञकरैंबहुकोई ॥ अरुजाअंतराईनहिहोई ॥ ३४ ॥ तबसोस्वर्गलोककौंजावैं ॥ व्हैंकरिदेवदेवसुषपावैं ॥ अपनेंपुण्यनिकौंउपजायौं ॥ उतमजाहींविमानहीपायौं ॥ ३५ ॥ बहुगांधर्वगानकौंकरैं ॥ बहुसुंदरनारिमनहरैं ॥ इच्छाहोवैंतहांचालिजावें ॥ सहितविमानाविलंबनलावैं॥ ३६ ॥ अमृतपानातिहानितकरैं ॥ वस्त्रआभर्णदेहवहूधरैं ॥ योनितमगन

वहुतसुनगवें ॥ परवेकीकछुचितनआवैं ॥ ३७ ॥ जेतोंपुंजईहाकोहोई ॥ तेतोरहेस्वर्गमैंसोई ॥ पुन्य
क्षिणपुनिहोवेजवहीं ॥ कालतहांतेंढाहेतवहीं ॥ ३८ ॥ सोसुषकहोतज्यौंवयौंजावें ॥ तेसुषकीकच्छुकह
तनआवें ॥ रह्योचाहैंपरिक्यौंकारिरहैं ॥ कालअधीनमहादुषलहैं ॥ ३९ ॥ कोईसुषपावेंकहूंजेतौं ॥
छिनलियैहोवेंदुषतेतौं ॥ सोतजिस्वर्गभूमिमेंआवें ॥ पीछेंजोनिअनंततनिपावें ॥ ४० ॥ यहुभाषीविधिकी
गतितोसों ॥ अवनिषेधकीसुनियोमोसों ॥ जोकुसंगमैंपानीपरैं ॥ तोबहुभांतिअधर्मनिकरैं ॥ ४१ ॥
णछेकामइंद्रियआधिना ॥ अस्रीलंपटलोभीअरुदीनां ॥ बहुजीवनकीहिंसाकरैं ॥भूतप्रेतगणकौंअनुसरैं
॥ ४२ ॥ मेहिएकवसोंसबमांहीं ॥ तिनकेद्रोहनकरमेंजांहीं ॥ बहूरिआनिथावरतनलहैं ॥ जन्मजन्म
वहुसंकटसहैं ॥ ४३ ॥ तातेंविधिनिषेधजेकरैं ॥ तेसवजन्ममरनमेंपरैं ॥ कर्मकरैंतिनतेतनधरैं ॥ तनध
रिधरिबहुदुषसोंमरैं ॥ ४४ ॥ तातेंप्रवृत्तिमेंसुखनाहीं ॥ भावेंब्रह्मलोकाकिनजांहीं ॥ लोकपालसबलोक
समेता ॥ इतनौरहैंब्रह्मादिनजेता ॥ ४५ सोईब्रह्माअंतनरहैं ॥ तीतरबाजकालत्योंगहैं ॥ अग्ररहैंमेरैंभ
यमांहीं ॥ पवनवहेंनिहचलपलनाहीं ॥ ४६ ॥ सूर्यचंद्रएकरसचलैं ॥ मरजादातेंसिंधुनटलैं ॥ मृत्युनि
रंतरसवकौंग्रासै ॥ मेरैंकालरूपतेंत्रासैं ॥ ४७ ॥ तातेंकहूंनसुषप्रवृत्ती ॥ सुषचाहैंसोगहैंनिवृत्ति ॥ अ
रुइंद्रियकर्मडपावें ॥ तिनकौंरजसततमवरतावें ॥ ४८ ॥ सोआतमाइंद्रियवसहोई ॥ तातेंसुषदुपपावें
सोई ॥ परिआतमाअकरताजानौं ॥ भोगरहीतताहींतेंमानौं ॥ ४९ ॥ कर्मअरुभोगादिकहैंजेते ॥ इंद्रि

यअरुगुणकृतसबतेंतें।।ज्यौंलगीयहइंद्रियगुणबंधा।।त्यौंलगिमिटेनगुणसंमंधा ॥ ५० ॥ तनमनबंधमिटेनहीं ज्यौंल्यौं।।नानाभांतिबहुतविधितोलौं।।नानाभावरहैंजबलगैं।।पराधीनआतमातबलगैं।।५१।।पराधीनजबलगी यहरहैं ॥ तबलगीकालनिरंतरगहैं।।तातेंज्योप्रवृत्तिरतहोवैं।।जुगजुगजन्मजन्मतेंरोवैं ॥ ५२ ॥ प्रथमहूंतो मेंएकनिरंजन ॥ ताहीतेंउपज्योंयहअंजन ॥ कालआत्मालोकअरुवेद ॥ धर्मसुभावबहुतविधिभेद ॥ ५३ ॥ एसबमायासत्यनकोई ॥ तातेंबुधअनुरक्तनहोई ॥ एकनिरंजनआत्माजानें ॥ तबसबसंकट भवकैभानैं ५४ ॥ लोकअरुवेदवासनातजैं ॥ इंद्रियदेहविषैनहींभजैं ॥ मनपहुंचेसोमिथ्यालेषे ॥ मनाती तसोजहांतहांदेषे ॥ ५५ ॥ ब्रह्मअरुआतमाएकविचारैं ॥ याविधिसकलउपाधहीजारैं ॥ तबहीएकब्र ह्मकौंपावैं ॥ छूटैंद्वैतबहुरोनहीआवैं ॥ ५६ ॥यहआतमाअरुदेहविवेका ॥ याकौंजानींयेंएककौंएका ॥ ऐसेंबचनकहैंजबकृष्ण ॥ उद्धवदासकरितबप्रष्ण ॥ ५७ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभुजोयहसारौभर्मा ॥ इंद्रियदेहविषेगुणकर्मा ॥ अरुआतमाअनिहअबंधा ॥ ताकौंकियौंकोनविधिबं धा ॥ ५८ ॥ अरुजोबहुग्यानकौंलहैं ॥ छोडिउपाधिदेहमेरहैं ॥ सोबहुर्योक्यौंलिप्तनहोई ॥ अरु क्योंकरिजानींजैंसोई ५९ ॥ कैसेंबिचरैंकैसैंरहैं ॥ कैसेजीवकैसैंकहैं ॥ कैसेंपहरैंकैसेंसोवैं ॥ कैसेंसुनै कोनविधिजोवैं ॥ ६० ॥ अरुआतमएकैदूनाहीं ॥ एकमुक्तक्योंएकबंधाहीं ॥ एकेबंधेंएकक्योंमुक्ता एतोबहूतएककौंउक्ता ॥ ६१ ॥ गुणअनादिआत्माअनादि ॥ तातेंयहतोबंधनआदि ॥ नित्यमुक्त

क्योंकहीयेंदेवा ॥ याकौमोहीबतावोभेवा ॥ ६२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभक्तिकैंसुनिकारि निर्मलबैन ॥ ताकौंप्रतिउत्तरकह्योंहारेजीकरुणाअयन ॥ ६३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादेभाषाटीकायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ बंधमोक्षहरिभक्तिभक्तइनकेलक्षणसार ॥कहेग्यारमैंध्यायमेंश्रीधरनंदकुमार ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ चौपाई ॥

॥ सुनिउद्धवअबपरमगोयाना ॥ जातैंभेदामिदेतुमनाना॥बंधअरुमुक्ततोहिसमझाऊं॥ तेरोसबअज्ञानमिटाऊं ॥ १ ॥ बंधमुक्तजौंकहियेंकोई ॥ सोतोसकलगुणनितेंहोई ॥ तेसबगुणमायाकेजानौ ॥ इनतैंदूरिआतमामानौ ॥ २ ॥ सोकअरुमोहजन्मरुसुष ॥ भयमरनादिकअरुबहुदुष ॥ एसारेमायाकृतकेवल॥सदाएकआत्मानिहकेवल ॥३॥ ज्यौंसपनैसुषदुषअनेका॥ तिनमैंआतमकौंनहीएका ॥ तेसबबुधिअरुमनकोंहोवें ॥ इंद्रियदेहप्रगटतैंसोवैं ॥४ ॥पुनिबुध्यादिककच्छुनहिंरहैं॥ताकौंप्रगटसुशोपतिकहैं ॥ तवयहआतमानिरंतरहोई ॥ परिताकौसुषदुषनहींकोई ॥ ५ ॥ ज्यौसुपपतिमेंआतमरहैं ॥ त्यौंव्यवहारपीछलैंगहैं ॥ परिताकौंकोईनविकारा ॥ एसबमायाकैंव्यवहारा ॥ ६ ॥ परिआतमाआपनहिमानैं तातैंसुषदुषबहुविधिजानैं ॥ परिआतमाएकरसानित्य ॥ बंधमोक्षएसकलअनित्य ॥ ७ ॥ उद्धवजानौएकअविद्या ॥ अरुदूजीजोकहीएविद्या ॥ एहैंदोऊमेरीशक्ती ॥ इनमेंसबहिंनकीयाशक्ती ॥ ८ ॥ बंधनकर्यौचाहींमैंयाकौं ॥ मेरिअविद्यापठाऊंताकौं ॥ अरुजाकेंबंधनहींमिटाऊं ॥ ताकौंविद्याशक्तिप

टाऊं ॥ ९ ॥ एदोऊमुक्तअरुबंधा ॥ तेममशक्तनुंकैंसंबंधा ॥ आतमहैंसोमेरोरूप॥ सबतेंन्यारोपरम अनूप ॥ १० ॥ ज्यौंशशिकैप्रतिबिंबअनेका ॥ परितेबहुतनहिंसबएका ॥ अरुजाजाकोघटबिनसाई ॥ सोईसोसाशिमाहीसमाई ॥ ११ ॥ त्यौंसबआतममेरोअंसा ॥ परिघटसंगलहैंदुषसंसा ॥ घटकौंनासकरैंसोतबहीं ॥ विद्याशक्तिजांहिंयोजबहीं ॥ १२ ॥ सोईसोतबसोकौंलहैं ॥ औरसकलभवहिमेरे हैं ॥ अरुप्रतिबिंबघटनिहुंमांही ॥ सदाअलिप्तलिप्तकहुंनाहीं ॥ १३ ॥ परिघटसंगलिप्तसेहोवैं ॥ अरु त्यौंलिप्तओरऊंजोवैं ॥ त्यौंआतमासकलतैंन्यारा ॥ सदाअलिप्तनलिपैंविकारा ॥ १४ ॥ परियातनमें आपबंधाना ॥ ताकैंसंगलेहैंदुषनाना ॥ अबमैंबंधमुक्तकोकहुं ॥ तेरेंसबसंदेहहोंदहुं ॥ १५ ॥ एकदेह मैद्वैकोवासा ॥ परमात्माअत्मकैंपासा ॥ ज्यौंद्विपंषीरहैंतरुमांहीं ॥ तरुतैंभिन्नलिप्तकहुंनाहीं ॥ १६ ॥ दोऊचैतनएकसमाना ॥ सषारूपएकहिअस्थांनां ॥ आपहुंतैंतिनबासाकीयो ॥ तिनमैंएकतरुहिंचितदीयो ॥ १७ ॥ देहवृक्षकैंसुषफलपावैं ॥ तातेंदुषआपुहिंआवैं ॥ तबताकाजकर्मबहुकरैं ॥ तिनतेंजुगजुगजनम मेंमरें ॥ १८ ॥ देहमरैंमरनौंकरिजानैं ॥ देहजन्मतेंजन्महिमानैं ॥ एसेंसदाबहुतदुषपावैं ॥ द्वैमैंसोअत मांकहावैं ॥ १९ ॥ परमातमादेहतरुमाही सुषफलकबहुंपावैनाहीं ॥ तातेंकछुकर्मनहिमहैं ॥ निजानंद मयानिहचलरहैं २० ॥ यौंपरमातमआतमजानैं ॥ देहअतीतदुहूंकोंमानैं ॥ सुषफलअहारआरंभानितजैं ॥ मुक्तिहोइपरमात्माबजैं॥२१॥ज्यौंतनमांहीमुक्तिपरमात्मा॥विद्यापाईबसैंत्यौंआत्मा॥ तनमेंहैंपरितनमेंना

हीं ॥ अपुंहिंजानभयोथिरमांहीं ॥ २२ ॥ सुपनदेषिज्योंजागैकोई ॥ सोसोसुपनचितारैसोई ॥ पारि
सोसुपनदेहअरुसुपनां ॥ मिथ्याजानिभरमतेंउपनां ॥ २३ ॥ अरुजोसहितअविद्याहोई ॥ सोतिनमें
नाहिंपारिहेंसोई ॥ ज्योंसोवतसुपनांतपावें ॥ ताकौंआपजानिमनलावें ॥ २४ ॥ तनमेंबंधमुक्तजेजीवा ॥
बंधजीवमुक्तसोशिवा ॥ बहुरिकहोंमुक्तिकैलछन ॥ जिनकौंजानिहोइविचक्षन ॥ २५ ॥ देषेसुनेकहैं
कच्छुकरें ॥ सोकछुकत्त्वदैनहिधरें ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतजानैं ॥ आपुहिंएकरतासबमानें ॥२६॥
पूर्वकर्मआधीनशरीरा ॥ कर्मकरेंइंद्रियमनसीरा ॥ तनमेंवासकीयोनहिजानैं ॥ सुरपआपुहिकरतामानै
॥ २७ ॥ बहुरिमुक्तएसीविधिरहें ॥ अहंकारयातनकोदहें ॥ आसनअटनअसनअरुसघना ॥ दर
सपरसअघानरुवयनां ॥ २८ ॥ इनमेंइंद्रियकौवरतावें ॥ आपनकछुप्रीतिबहुलगावें ॥ रहेंमाहिपरिलि
तनहोई ॥ ज्योंआकाशपवनरावितोई ॥ २९ ॥ विद्यानामप्रसीइकपाई ॥ दृढवैरागरसानचदाई ॥ तासौं
काटेंसंसैसारें ॥ जागिसकलभ्रमभेदनिवारें ॥ ३० ॥ इंद्रियप्रानबुद्धिमनमांहीं ॥ कबहूंकछुवासनानाहीं
॥ सोजद्यपितनहूमेंदरसें ॥ परिसोमुक्तनहीनहींपरसें ॥ ३१ ॥ एकदुष्टतनपीडाकरें ॥ एकबहुतपूजा
विस्तरें ॥ परिनुधरोपतोपनहिंआनें ॥ सकलदेहकृतामिथ्यामानें ॥ ३२ ॥ विधिनिषेधजोकाईकरैं ॥
किंवाकहेंग्रंथविस्तरें ॥ सुनिकछुभलौवुरोनहिदेपें ॥ गुनअरुदोषरहितसमलेषें ॥ ३३ ॥ विधिनिषेधना
हीकछुकरें ॥ नाकछुकहैनत्त्वदेधरें ॥ निसिदिनरहेंब्रह्मरसमंत ॥ इच्छामेंज्योंजडउनमत ॥ ३४ ॥

ऐसेचिन्हमुक्तिमैंमानों ॥ अरुमुमुक्षकौसाधनजानौ ॥ मुक्तभयेजेचाहैंकोई ॥ एसचसावधानसाधेसोई
॥ ३५ ॥ निजसबशब्दब्रह्महेंजान्यौं ॥ परिनिजतत्त्वनहींपहचान्यों ॥ ईनसाधनमांहिरतनाहीं ॥ तिनके
श्रमसबमिथ्याजाहीं ॥ ३६ ॥ शब्दब्रह्मब्रह्मकेकाजा ॥ हरिजीअरुहरिभक्तनिसाजा ॥ तातैब्रह्मविनाश्र
मऐसें ॥ वंध्यागाईसेंईजेजैसें ॥ ३७ ॥ बंध्यागाईदुग्धबिनहोई ॥ पराधीनतनराषेकोई ॥ असतनारी
पुत्रअन्याई ॥ धर्मबिहूंनोधनअधिकाई ॥ ३८ ॥ ज्योंइनतेंदिनदिनदुषहोई ॥ कबहूंसुषपावेंनहींकोई ॥
मोहिबिनात्यौंबहुविधिवानी ॥ केवलबंधनहींकौंजानी ॥ ३९ ॥ मातेंजगतउतपतिसंघारा ॥ सबप्रतिपाल
नविविधप्रकारा ॥ किंवाजन्मकर्मबहुतेरें ॥ जावानीमैंनाहींमेरें ॥ ४० ॥ मेरेनानाविधिसंबंधा ॥ जावानी
मैंनाहिंनिबंधा॥ बंध्याबानीताहींविचारें ॥ निहफलजांनिनपंडितधारें ॥ ४१ ॥ याविधिजानिबहुतप्रकारा ॥
नहुतभांतिकरिबहुतविचारा ॥ जांहांतांहातैंमनाहिनिवारें ॥ पूरणएकब्रह्ममेंधारें ॥ ४२ ॥ जोतउद्धुजेना
नाअर्थ ॥ मनधारणकौंनहींसमर्थ ॥ सोममहेतकर्मसबकरें ॥ प्रेममगनफलजसपरिहरें ॥ ४३ ॥ औ
रेकर्मअकर्मविकर्मा ॥ बंधनजानितसैंसबभर्मा ॥ जाहितैंउपजैंममभक्ति ॥ तांहिमैंराषेंअनुरक्ति ॥४४
॥ श्रद्धासहितसनेगुनमेरें ॥ जिनतेंकर्मनआवेनेरें ॥ गावेसमरैंअस्तुतिकरैं ॥ प्रेमसहितनिशदिनविस्तरैं
॥ ४५ ॥ जेकछुकर्मकामअरुअर्थ ॥ करैसकलतैंमेरैंअर्थ ॥ ममआधीननिरंतररहें ॥ मनक्रमवचन
आननहींगहें ॥४६॥ याविधिहोवेनिश्चलभक्ति ॥ औरसकलतैंसकलविरक्ती ॥तवमेरोनिजरूपाहेंजानें॥

...नामदहीभानैं ॥ ४७ ॥ तबताहीयदमाहींसमावैं ॥ जातैंजन्मफिरिनहीआवैं ॥ परियहसतसंगततैं होई ॥ संतसंगतीबिनुलहेनकोई ॥ ४८ ॥ भक्तिनिबिनाभक्तिनहींपावैं ॥ भक्तिबिनानहीमोमैंआवैं ॥ तातैंसतसंगतकूकरैं ॥ दूजोजतनसकलपरिहरैं ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसुनिहरजीकेवचन ॥ मनमैंवाढीप्यास ॥ तबभक्तनीअरुभक्ति ॥ कैंलछनपूसेदास ॥ ५० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूपूरणपरमअनंता ॥ याजगबहूभांतीकेसंता ॥ जाकौंसंतकहौतुमदेवा ॥ ताकौमोहीबतावोभेवा ॥ ५१ ॥ अरुजोभक्तिकौंनजोठानैं ॥ तातैंतुमनिजरूपहिंजानैं ॥ तबउद्धवकोदेबहूमाना ॥ कृपासिंधुबोलेभगवांनां ॥ ५२ ॥ ॥श्रीभगवानुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमकृपालद्रोहनहींजानैं ॥ क्षमावंतअरुसत्यनपांनैं ॥ निंद्यारहितद्वंद्वसबसमता ॥ परउपकारदृढदैनहींममता ॥ ५३ ॥ आएकामबुद्धिथिररहैं ॥ इंद्रियाजितकोमलतागहैं ॥ सदाचारसंग्रहनहींजानैं ॥ लघुदीरबक्कबेहुनाहिंआनैं ॥ ५४ ॥सीतलदृढदैंबिचारहीकरैं ॥ धर्मआपनैंदृढताधरैं ॥ सावधानअरुराहितविकारा ॥ धीरजवंतदयाआधिकारा ॥ ५५ ॥ सोकमोहअरुक्षुधापिपासा ॥ जरामृत्युजीतैंषटपासा ॥ आपुमानअपमाननजानैं ॥ औरनकौंबहुमानाहिठानैं ॥ ५६ ॥ जोकोईसरणांगतआवैं ॥ ताकौंजीत्यौंज्ञानउपावैं ॥ सबकौंमित्रशुभाशुभजान ॥ दृढविश्वाससकलभ्रमभानैं ॥ ५७ ॥ ममआधीननिरंतरहैं ॥ साधनसौंबलकरैं ... मोहिकौंकरताकरिजानैं ॥ कबहूंभुलनआपुंआनैं ॥ ५८ ॥ ज...

बताए ॥ तोहूंविधिनिषेधसबतजैं ॥ दृढनिश्चलममचर्णनीभजैं ॥ ५९ ॥ ऐसौभक्तनिजभक्तकहावैं ॥
ताकैंसंगभक्तिकौंपावैं ॥ देसरुकालरहितसर्वात्मा ॥ चिदानंदमयप्रभुपरमात्मा ॥ ६० ॥ ऐसोंजानिजा
निमोहिभजैं ॥ औरसकलसंकलपहीतजैं ॥ सोमेरोकहियैनिजभक्ता ॥ तासौंनितहूंजोअनुरक्ता ॥ ६१
॥ अरुजैएसोमोहिनजानैं ॥ परिअत्यंतप्रीतिकौठानैं ॥ लेकरिमोहिसकलपरिहरैं ॥ तेजनमोहिआपवस
करैं ॥ ६२ ॥ एभक्तनकैंलक्षनकहिये ॥ मेरिकृपाहूंतेंतेलहिए ॥ तिनकौंपाइभक्तिकौंपावैं ॥ भक्तिपा
ईममचर्णनिआवैं ६३ ॥ तातैंमोहिचहैंजोकोई ॥ममसंतनकौंसेवेसोई ॥ आबमैंकहौंभक्तिकेअंगा ॥
जातेंहोवेंमेरोसंगा ॥ ६४ ॥ ममप्रतिमामेंमोकोभजै ॥ मनक्रमवचनफलादिकतजैं ॥ हितसौंदर्शपर्शपरि
चर्या ॥ अस्तुतिअरुदंडवतसपर्या ॥ ६५ ॥ मेरीकथाविषैंअतिश्रद्धा ॥ मोविनुकछुनकरैंपलअर्धा ॥
मेरेंजन्मकर्मगुनगावैं ॥ सदानिरंतरमोकोंध्यावैं ॥६६॥ तनअरुतनकैंनीहेजेतैं॥मोकोंसदांसमरपैंतैतैं ॥
जनमाष्टमीआदिजेपर्वा॥बहूतउछाहकरैंतेसर्वा॥६७॥ नृत्यगीतअरुबहूविधिवाजा ॥ मंदिरबहुतरूपविधिसा
जा॥कथाकीरतनबहूविधिचर्चा॥जागरणादिकबहूविधिअर्चा॥६८॥ ऐसेजानिबहुतउछाहा॥सबपरवणि
सबविधिनिरवाहा॥मथुरादिकहरिधामनिजावैं॥बहूतभांतिकरिप्रेमबढावै॥६९॥ औरनिकौंआचरणसिषा
वैं॥ठौरठौरप्रतिमापधरावैं॥बहुविधिकरैंबागफूलवाई॥क्रीडाथानसहितचतुराई॥७०॥ पुरमंदिरबहुभांत
करावैं ॥ ज्योंहरिअरुहरिभक्तनिभावैं ॥ आपमांहिजोशक्तिनहोई॥ताहुउद्यठानेसोई॥७१॥बहूविधिम

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ इंनसबठौरनिपूजाकरें ॥ मेरोरूपत्हदेमेंधरें ॥रूपचतुरभुजआयुधचारी ॥ स्यामसरीरपीतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधिआभरनां ॥ ऐसोरूपसबनिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हैंप्रीतिबढावें ॥ ८६ ॥ याविधिवाईकूपसरबागा ॥ जपतपदानदयाव्रतजागा ॥ मेरेहितकर्मजोकरें ॥ मोबिनऔरत्हदैंनहींधरें ॥ ८७ ॥ इनसाधननिकरेंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरेंइनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥ ८८ ॥ तिनतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥ ८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतेंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकोंनित्या ॥ कबहूंऔरनआवेंचैत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोकछुकहोंकरोंमेसोई ॥ जद्यपिमेरेंमननहिहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिपोजतऔरनपाया ॥ साधुसंगमिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनबिनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्तीबिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाई ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाई ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्यमतोहैमेरो ॥ मेरेआधीनचितहैंतेरो ॥ तातेंयौंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यअपनोमतोतोहीकह्यौसमुझाए ॥ जातेंछूटैभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥

॥ इतिश्री भागवतेमहापुराणेएकादश स्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

हिमाकहेकहावें ॥ औरनिसौंमिलकरेंकरावें ॥ मंदिरादिबहुभांतिबोहारें ॥ वहूवेधिसींचेधूठनिवारे ॥
॥ ७२ ॥ चित्रविचित्रचोकविस्तारें ॥ व्हैकरिदासआपनिस्तारें ॥ मानरहितकदंभनजानें ॥ जोकछु
करेंसोनहिंवखानें ॥ ७३ ॥ मोकोंकरेंआरतीजासौं ॥ औरकछुनहिंदेषतासौं ॥ ममप्रसादप्रीतिसौंले
वें॥प्रीतिहीनजीवनहिंदेवें॥७४॥योंहिज्योंज्योंउपजेप्रेमा॥त्यौंत्यौंअधिकबढावेंनेमा॥ममभक्तनिकेरहैआधी
न॥तनमनधनसोंनितलौलीन॥७५॥अरुएकादशठोरनिभद्रा॥ममपूजाकरैरहैंअभद्रा॥सूर्यअग्निविप्रअ
रुगाई ॥ भक्तिवेषआकाशअरुवाई ॥ ७६ ॥ जलअरुधरनीआपमेंयोंहीं ॥ सबनिमांहिममपूजायोंहीं
॥ विद्यायत्रसूर्यकीपूजा ॥ मोकोंछांडिनजानेंदूजा ॥ ७७ ॥ वरषाराजसकरिउपजावें ॥ सात्विकसीतस
वनिवरतावें ॥ तामसग्रीषमसकलविनासें ॥ सकलजगतकोंआपुप्रकासें ॥ ७८ ॥ तातेंमेरीपरमविभूति ॥
ऐसेंज्ञानीकरेंअस्तुती ॥ पावकमांहींहोमकरीज्यों ॥ विप्रनिआतिथिभावभजीजैं ॥ ७९॥ तृणजलादि
गाइकीपूजा ॥ भक्तभेषमेंऔरनदूजा॥भक्तभेषनिजबंधवजानैं ॥ अतिप्रसन्नव्हैपूजाठानैं ॥ ८० ॥ ज्यों
आपनेंबंधुसंबंधी ॥ तिनसौंप्रीतिसबनिहैबंधी॥ तिनकौंबहुतभांतिकरिसेवें ॥ तनमनधननिहचलकरीदेवें ॥
८१ ॥ सोंहिभगतआपनेभाई ॥ ऐसेंज्ञानीकरैंअधिकाई ॥ तनमनधनसोंप्रीतिबढावे ॥ जिनतेंमेरेपदहीं
पावें ॥ ८२ ॥ ह्रदयाकासध्यानसोंसेवें ॥ सबआधारपवनचितदेवें ॥ जलाकोजलअरुफूलफलादि॥
भूधरणीपूजेमंत्रादि ॥ ८३ ॥ भोगनिसूंनिजदेहाहिभजे ॥ मोविचअंतरायसबतजें ॥ सबभूतनमेंमोकोंजा

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ ईनसबठौरनिपूजाकरें ॥ मेरोरूपत्हदेमेंधरें ॥रूपचतुरभुजआ
युधचारी ॥ स्यामसरीरपींतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधि
आभरनां ॥ ऐसोरूपसबनिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हैंप्रीतिबढावैं ॥ ८६ ॥ याविधिवाईकूपसरबागा ॥
जपतपदानदया,व्रतजागा ॥ मेरेहितकमजोकरें ॥ मोविनऔरत्हदैंनहींधरें ॥ ८७ ॥ इनसाधननि
करेंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरेंईनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥८८ ॥ ति
नतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥
८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतैंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकौंनित्या ॥ कबहूऔ
रनआवें,चेत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोव छुकहोंकरोमेंसोई
॥ जदपीमेरेंमननहिहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिषोजतऔरनपाया ॥
साधुसंग,मिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनविनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्ती
बिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाई ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाई ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्य
मतोहेमेरो ॥ मेरेआधीनचितहेंतेरो ॥ तातेंयोंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यआपनोमतोतोहीकह्यौसमुझाए ॥ जातेंछूटैंभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥
॥ इतिश्री,भागवतेमहापुराणेएकादश,स्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥दोहा॥ ॥ महिमासंगतिसारतैंकर्मफलनकोत्याग॥कहीबारमैंध्यायमैंयथाव्यवस्थालाग॥१॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवगोप्यसुतोसुनमेरौ॥पावैंमोहिंमिटेभवफेरौ॥आपमिलनकोमार्गदिखाऊं॥औरसकलकुमार्गमिटाऊं ॥ १ ॥ जोगकहीजौअष्टप्रकारा ॥ सांख्यप्रवृत्तिपुरुषविचारा ॥ बहूविधिवर्णाश्रमकेधर्मा ॥ सकलत्यागिहोवेनिहकर्मा ॥ २ ॥ वेदादिकबहुविद्यापाठा॥जहांलगींहैंतपअतिकाठा ॥ होमजज्ञसरवापीकूपा ॥ इच्छादानसमयअनुरूपा ॥ ३ ॥ एकादशीआदिव्रतजेतें ॥ गुपतमंत्रमेरेहैकेतें ॥ ममप्रतिमापूजाआचरणा ॥ तीरथाटननियमयमकरनां ॥ ४ ॥ औरौसमदमआदिकजेते ॥ साधनसकलमुक्तकेतेते ॥ इनसबइनतैंमोहिनपावैं ॥ साधूजनपलमांहि ॥ ५ ॥ उनतैंमनकौसंगतछूटैं ॥ ममचरणनिमैंचित्तनहीचहूटैं ॥ तातैंमोहीनपावैंउनतैं ॥ पावैवचनसाधूकैंसुनतैं ॥ ६ ॥ साधूऐसेवचनसुनावै ॥ शत्रूमित्रसुप्तदुषजनावैं ॥ सारअसारकालनिःकाला ॥साधूदिषावैसबसतकाला ॥ ७ ॥ सबतैंमनकौसंगमिटावै ॥ मेरेचरणकमललपटावैं ॥ ऐसीविधभवसागरतारैं ॥ मेरेजनततकालउधारैं ॥ ८ ॥ जेतेतिरेतरेगेंजेतें॥अरुअबहूतरतेहैंकेते॥तेसबसाधुसंगततैंजानौ ॥दूजौऔरउपायनमानौ ॥ ९ ॥ षगमृग जातूधानअसूरादिक॥चारणसिधनागगुह्यादिक॥अपसरविद्याधरगंधर्वा॥जितजिनपायौंतेतेसरवा॥१० ॥वैस्यशूद्रअंतजअरुनारी॥बहूराजसतामसअधिकारी॥जुगजुगजेंसतसंगतिआये॥तिनहितिनमेरेपदपाए॥११॥वृत्रासूरवृषपर्वाबानां॥बलिप्रहलादविभीषणजाना॥मयसुग्रीवऋक्षहनुमंता॥गजअरुगीधव्याधअ

मवंता ॥ १२ ॥ तुलाधारकुबजावृजगोपी॥ धर्मनिकोसिमाजिनलोपी ॥ जज्ञवंतविप्रनकीवनिता ॥ पुरुष
नकोंकिनीअवमानिता ॥ १३ ॥ औरअनेककहांलोकहियैं ॥ कहतकहूतकहूंअंतनलहियैं ॥ तिनकछु
विद्यावेदनजानैं ॥ सांख्यरुजोगनहींपहिचानैं ॥ १४ ॥ जपतपजज्ञव्रतादिनकीनैं ॥ औरनधर्मनकोईचीनैं ॥ परिसोसाधुसंगतिनपाया ॥ तेसबमेरेचर्णनिआया ॥ १५ ॥ अरुतूंउद्धवयौंमतिजानौं ॥ तिनकौ
संगतिमेरीमांनौं ॥ उद्धवसंतअरुमेंदूनाहीं ॥ मेहिहोसंतनउरमाही ॥ १६ ॥ किनहूंमिलौधारिकैतन
कौं ॥ - मिलकरसोधौंतिनकेमनकौं ॥ ऐसीविधिएकनिकौंतारौं ॥ एकनिसाधूरूपउद्धारौं ॥ १७ ॥
साधूनिव्हेमनकेमलहरौ ॥ सोमनअपनेंचर्णनिधरौं ॥ ऐसिविधिएकानिउद्धारौं ॥ जहानारोताहांमोहिता
रो ॥ १८ ॥ साधूसंगसोमेरोसंगा ॥ साधूसकलहैंमेरोअंगा ॥ तातेंदोउसाधसंगब्यानौं ॥ केतोदो
उमेरोतनमानौं ॥ १९ ॥ गोपीगाईवृक्षनवनागा ॥ औरोमूढबुधिबडभागा ॥ ममसतसंगप्रेमातिनबांध्यौं
॥ भावभक्तिमोकौंआराध्यौं ॥ २० औरकहूसाधननाहिजानौं ॥ अरुनहींब्रह्मरूपकरीमान्यौं ॥ परि
तिनकोहितमोसोंभयौं ॥ तातेंसबमनकोमलगयौ ॥ २१ ॥ श्रमहींविनातिनमोंकोपायौ ॥ अतिअपारभव
दुषमिटायौ ॥ जाकौंजोगसांख्यव्रतदाना ॥ जज्ञवेदविद्याविधिनाना ॥ २२ ॥ करिसयांसबहुतदुषगहैं
॥ तेउमोकोंकदेंनलहैं ॥ ताकौंतिनसुषहीमैंपायौ ॥ जेकेवलमनमोसोंलायौ ॥ २३ ॥ रामसहितमोहिपा
यौंजबहीं ॥ चलेअक्रूरमधुपुरितबहीं ॥ तनतेंगोपीमेरेहेत ॥ पाइमुरछाभयोअचेत ॥ २४ ॥ बहुरिस

मझमहादुषपावैं ॥ निसवासरममचरणंनिध्यावैं ॥ मोहिछोडिसबदुषमयलेषैं ॥२५॥ जेनिसिमोंसंगपल
सीवीते ॥ तेइतिनकौंकल्पज्यातितैं ॥मेरेगुणनिसुनैंअरुगावैं ॥ लीलारूपत्दृदैमेंध्यावैं ॥ २६ ॥ कबहूंवि

रहमहादुषरोवैं ॥ कवहूंतपतदशोदिशजावैं ॥ कबहूंप्रानतनकीभाषैं ॥ ममदरशनआशातैंराषैं ॥२७॥
निंदभूपत्रससकलगवांई ॥ औरदेहगुनरत्योनकांई ॥ तिनकैंदुषतेईजेजानैं ॥ केमैंतीजोकहावषानैं॥२८
॥ विरहप्रचंडअनलअधिकारा ॥ सकलविकारभएजरिछारा ॥ प्रेमप्रवाहसकलमलछारैं ॥ यौमोंबि
चकेअंतरटारैं ॥ २९ ॥ तबयहउपजीपरमअनूपा ॥ भालिआपभलिममरूपा ॥ जोजोगेस्वरब्रह्माहिध्यावैं
व्हेंकरिंब्रह्मआपुविसरावैं ॥ ३० ॥ अरुज्यौंसरितासिंधुसमावैं ॥ नामरूपगुणभेदगमावैं ॥ त्यौंविभईरू
पसबमेरौं ॥ द्वैतभावकहूंरह्योननेरौ ॥ ३१ ॥ पापजोनिअबलातेसारी ॥ सुरतिकीमरजादाटारी ॥ नि
जपतिछोडाकियोविभचारा ॥ असतिनमोकौंजान्योजारा ॥ ३२॥ब्रह्मभावकछुएनहींजान्यौं॥ तिनपरपु
रुषमोहिनितमान्यौं ॥ परितोहूंभवसिंधुमिटायौं॥सतनिसहस्त्रणिममपदपायौ ॥ ३३ ॥ तातैंउद्धवसुनबडभा
गा ॥ लोकवेदसबकौंकरत्यागा ॥ जोहिंसुन्योसननकोजोई ॥ प्रवृतिनिवृतिजोकछुहोई ॥ ४४ ॥ सबत
जिएकसरणममआवो ॥ द्वैतभावमनतेंबिसरावौं ॥ जहांतहांममरूपहिदेषौ ॥ आपापरकछुऔरनलेषो
॥ ३५ ॥ एसेंव्हेकरिमोकौंपैहौ ॥ तातेंजगतजनमनहींएंहौ ॥ योंहरिजबबानीविस्तरी ॥ तबउद्धवआसं
काकरी ॥ ३६ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभूतुमत्यागवेदकौंकह्यौं ॥ सोमेरेरस

॥ तुमरीआग्यावेदकहावैं ॥ ताहिंछोडिकेसेंसुषपावैं ॥ ३७ ॥ तुमहींश्रुतिमेंकरणेंभाषे ॥ तुमहींइहादूरिकरिनांषें ॥ तातेंमनभरमतहेंमेरो ॥ थिरकीजैंअपनेंजनकेरो ॥ ३८ ॥ किधोंएसत्यकिधोंएदवा॥याकोंमोहिवतावोंभेवा॥ तवगोपालवचनउचारैं ॥ ज्योंरविउदयमध्यअंधियारे ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअवसुनपरमगियाना ॥ तातेंतवछूटैभ्रमनाना ॥ प्रथमाहिं आपानिरंजनएका ॥ औरकछूनहींहूंतोअनेका ॥ ४० ॥ बहूरिकियोमायाविस्तारा ॥ रच्योदेहबहूअंगप्रकारा ॥ तातेंआपुप्रवेसाकीयौ ॥ प्राणअरुशब्दसंगकरिलीयौ ॥ ४१ ॥ सोतांशब्दचक्रआधारा ॥ परानामकीनोआगारा ॥ मणिपूरकपरयातिनामा ॥ चक्रविशुद्धमध्यमाधामा ॥ ४२ ॥ बाहिरप्रगटवैषरीवानी ॥ जेइहलोकअरुवेदबषानी ॥ स्वरलघुमातरअक्षरजेतैं ॥ नानाभांतिविस्तरैंतेतैं ॥ ४३ ॥ लोकमांहिथोरेविस्तारैं ॥ वेदमांहितिएतहैंसारें।।परितिनकौंबहूविधिविस्तारा ॥ जाकौंकोईलहैंनाहिपारा ॥ ४४ ॥जैसेंअनलकाष्ठमाथिकाढ्यौ ॥ इंधनसंगपवनआतिवाढ्यौ ॥ यौंममवानीकौंविस्तारा ॥ जातेंप्रगट्यौं सकलपसारा ॥ ४५ ॥ यहविस्तारशब्दकौसारौ ॥ जामेंचेतनरूपहमारौ ॥ इंद्रियउपजीदशप्रकारा ॥ सूत्रमनबुधिचितअहंकारा ॥ ४६ ॥ सतरजतममायागुणजानौं ॥ सबविस्तारतिहूंकौंमानौं ॥ जोअद्वैतएकानिरधारा ॥ तिनकीनोमायाविस्तारा ॥ ४७ ॥ तिनमेंबहूतभांतिआभास्यौ ॥ उत्तममध्यमनीचप्रकास्यौ ॥ विधिनिषेधतातेंकरीलये ॥ सुषदुषद्वेतिनकेफलभये ॥ ४८ ॥ इहसंसारएकतेंऐसें ॥ एकवी

जतैंब्रह्मवनजैसैं ॥ तातैयहसबएकआधारा ॥ परिएकहिकैंसकलपसारा ॥ ४९ ॥ तैसैंवस्त्रतंतुमयहोई ॥ औतपोतदूजानहिकोई ॥ ऐसैंयहभवतरुहैंएका ॥ द्वैफलअरुसाषअनेका ॥५० ॥ यहसबममचेतनआधारा ॥ परितोहूवैतनतैंन्यारा ॥ सोचेतनहेमेरोअंसा ॥ यामैंभूलनअनैसंसा ॥ ५१॥ यहसंसारवृछहैंमैंसौं॥मैंभाषतहौंसुनियोतैसौं ॥ पापअरुपुन्यबीजद्वैयाकै ॥ मूलअपारवासनाताकै ॥ ५२ ॥ आदहिकैत्रियगुणत्रयसाषा॥तिनतैंपंचभूतपरसाषा॥उपसाषामनअरुइंद्रीयदशा॥शब्दादिकसर्वेपंचोरस ॥५३ कफअरुवातपितत्रयबलकल॥सुषअरुदुषप्रगटहैंद्वैफल॥तामैंद्वैपंषीकौवासा॥परमातमअरुआतमपासा॥ ५४॥जेमूर्षयहभेदनजानैं॥तब्रहूंभांतिवेदविधिथानै॥तिनतेहोवैंबहुलविधिबंधा॥जुगजुगदुषपावैंतेअंधा॥५५ ॥ जोयहदेहवृक्षकरिजानैं ॥ आपुहिपंषीन्यारोमानै ॥ वेदस्मृतिसबमायादेषें ॥ सकलअतीतआपुकौंलेषें ॥ ५६ ॥ तबयहविधिनिषेधछाटिकावे ॥ सुषअरुदुषकेनिकटनआवें ॥ सकलमांहिआपुहिकौंजानै॥ भेददेहकृतमायामानै॥५७॥चेतनशक्तिब्रह्मकरिदेषें ॥ औरसकलमायाकरिलेषें ॥ परियहभेदसकलतबपावें ॥ जबसतगुरकीसरनैंआवे ॥ ५८ ॥ सतगुरुविनानपावेकोई ॥ ब्रह्मादिकभावैसोहोई ॥ तातैंगुरुकीसरनैंआवें ॥ दृढउपासनभक्तिबढावें ॥ ५९ ॥ गुरुसेवाकौऐसौप्रभाव ॥ तातैंउपजैमेरोभाव ॥ गुरुसेवतैंपावैंभक्ति ॥ गुरुसेवासैंसकलविरक्ति ॥ ६० ॥ गुरुसेवातैंज्ञानहिलहैं ॥ गुरुसेवातैंकर्मनिदहैं ॥ गुरुसेवातैंपरमप्रकासा ॥ गुरुसेवाममचर्णनिवासा ॥ ६१ ॥ मोहोमिलनकौयैहिउपाई ॥ गुरु

सेवाबिनऔरनकांई ॥ तातैंगुरुकीसरनहींआवैं ॥ तनमनधनसोंहितलगावैं ॥ ६२ ॥ जातैंउपजैज्ञानकुठा
रा ॥ सबपासीनकोंकाटनहारा ॥ त्रयगुणलिंगशरीरउपाधि ॥ जोंआत्मकोंलागीव्याधी ॥ ६३ ॥ ज्ञा
नकोठारसकलकौंहरैं ॥ याविधिआतमनिर्मलकरैं ॥ पीछैंग्यानध्यानसबत्यागैं ॥ निशदिनएकब्रह्मअनु
रागैं ॥ ६४ तबसोब्रह्ममांहींसमावैं ॥ बहुर्यौजगतजन्मनहींआवैं ॥ तातैंतुमसाधनसबत्यागौ ॥ निसदि
नएकब्रह्मअनुरागौ ॥ ६५ ॥ ॥दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसौंकह्यौं॥भवमोचनममज्ञान ॥अबबहुर्यौं
साधनसहित॥भाषौंपरमनिधान॥ ६६ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवा
देद्वादशोऽध्यायः॥१२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होतसत्वगुणवृद्धिकरज्ञानउदयक्रमजान ॥ कह्योतेरमैं
ध्यायमैंहंसरूपआख्यान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबपरम
ज्ञाना ॥ जातैंपावेपरमनिधाना ॥ जातैंज्ञानहोइसोकहौं ॥ याविधितुवअज्ञानहोदहौं ॥ १ ॥ सातिकरा
जसतामसजेहैं ॥ उद्धवतेगुणमायाकेहैं॥सुषदुषसबतिनहिंकेजानौ ॥ तिनतैंपरैंआतमामानौ ॥ २ ॥ तातैंन
रसातिककौंगहैं ॥ सातिककरिरजतमकौंदहैं ॥ पीछैंब्रह्ममांहींथिरहोई ॥ सातिककौंतबत्यागैंसोई ॥ ३
ऐसीविधितीनोगुणदहैं ॥ तबव्हैब्रह्मब्रह्ममैंरहैं ॥ ज्यौंज्यौंहोईसत्वअधिकारा ॥ त्यौंत्यौंप्रेमभक्तिविस्तारा
॥ ४ ॥ सकलवस्तुसात्विकजबभजैं ॥ तबहीसात्विकगुणउपजै ॥ सात्विकज्यौंज्यौंत्यौंत्यौंभक्ति ॥
त्यौंहीत्यौंअन्यत्रविरक्ति ॥ ५ ॥ तबरजतमदोउमिटजावै ॥ तातैंतनकेगुणहींआवैं ॥ हरषअरुशोक

मानअपमाना ॥ निंद्राआलसगर्वगुमाना ॥ ६ ॥ रागद्वेषआदिकहैजेते ॥ द्वंद्वसकलरजतमकेतेतैं ॥ तातैंरजतमजबहींजाहीं ॥ तबातिनकेगुगउपजैंनाहीं ॥ ७ ॥ तातैंसात्विकसंगतीकरैं ॥ रजतमकीसंगतपरिहरैं ॥ मूलसकलकौंसंगतिकारन ॥ संगतिवोरैंसंगतीतारन ॥ ८ ॥ देशअरुकालपवित्रजलपान ॥ ग्रंथअरुकर्मजन्मअरुध्यान ॥ गर्भाधानआदिकसंसकार॥मंत्रजापएदसप्रकार ॥ ९॥ एदसजाकौंहोवैजैसें ॥ गुणविस्तारैंताकौंतैसें ॥ सातिकतोसात्विकउपजावैं ॥ राजसतौराजसअधिकावैं ॥ १० ॥ तामसतोतामसविस्तरैं ॥ जैसेंएदशतैंसैंहोंकरैं ॥ जाहिजामेंजोगुणहोई ॥ सोसोउत्तमजानेसोई ॥११ ॥ परिजोउत्तमसाधवषानैं ॥ सोवहसातिकउत्तमजानैं ॥ जोअतिनिंद्यतमोगुणसोहैं ॥ सोराजसकछुमध्यमजोहैं ॥ १२ ॥ तातैंएदशसातिकसेवैं ॥ राजसतामसनामनलेवैं ॥ राजसतामसजोहितहोई ॥ तोहुंसबछिटकावोंसोई ॥ १३ ॥ सात्विकसंगतिउपजैंसत्व ॥ त्यौंत्यौंलहैंभक्तिकोतत्व ॥ त्यौंलगिदृढउपजैंविज्ञाना ॥ देखैंएकसकलभगवाना ॥ १४॥ अरुदोनोदेहनिभ्रमजानैं ॥ सबविस्तारसुपनसममानैं ॥तबयहब्रह्ममांहिस्थिरहोई॥ सातिकहूंकोबोनरजोई ॥१५॥ ज्यौंबांसनितैंउपजेअनल ॥अरुहोवेंमारुततैंप्रबल ॥ सबकासानिकौंदाहैंसोई ॥ आपुबहूरिउपसम्यतहोई ॥ १६ ॥ त्यौंसाधनयातनतेंहोवैं ॥ होईप्रचंडयातनकौंषोवैं ॥ बहुत्यौंआपुउपसामितहोई ॥ साधनलेसरहैंनहीकोई ॥ १७ ॥ गुणातीतसोंकहिएजोगी ॥ तीनोंकालब्रह्मरसभोगी ॥ सोवहुरौभवमेंनहींआवैं ॥ मोहिमिल्यौंमोमांहिसमावैं ॥ १८ ॥ तातैंसबसाधन

छटिकावौ ॥ एकनिरंजनमोंकौंध्यावौ ॥ तवहरिकीसूनिअद्भुतबानी ॥ जबउद्धवयहप्रश्नवषानी ॥ १९ ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूयहांएसोकहीयें॥ ज्ञानादिकतजेंसुषलहीयें ॥ परिजें
विषयसुपनिकोंचाहैं ॥ तातैंबहूआरंभसबाहैं ॥ २० ॥ तेवापुरंसदादुषमैंरहैं ॥ कबहूंभूलिनसुषकौंलहैं॥
परितेतोविषयनिदुषजानैं ॥ जानबूडवयौंउद्यमठानैं ॥ २१ ॥ ज्योंबकरामारनकौंलेजें ॥ लेछेलनिमेटा
ढौंकीजें ॥ वहनिलजकछुलाजनजांनैं ॥ तिनिसौंमिलिविषयादिकठानैं ॥ २२ ॥ अरुजैसैंगरधभअरुकु
ता ॥ तिरस्कारतेंसहैंबहूता ॥ सुषकेहेतसबानिआधीना ॥ सदादुबंलत्द्दयअतिदीना ॥ २३ ॥ वेंतोंमू
ढकछूनहींजानैं ॥ तातैंविषयानिउद्यमठानै ॥ ऐतोनरजानैंसबबाता ॥ देषेजक्तचल्यौसबजाता ॥ २४ ॥
प्रथमेंतोसुपआवैंनाहीं ॥ जोआवैतोथिरनरहांहीं ॥ अरुजौदिनचाररहिजावैं ॥ कालहूतेतोषननपावैं ॥
२५ ॥ कालनिरंतरग्रसतेंजावैं ॥ एकदिनाजमद्वारपठावैं ॥ तहांनरकहैंबहुतप्रकारा ॥ जिनकेदुषकौंअं
तनपारा ॥ २६ ॥ ऐसीसबविधिमानवजांनैं ॥ तोहूंक्यौंआरंभनिठानै ॥ आपुआपजमद्वारपठावैं ॥ आ
पुआपुकौंदुषउपजावैं॥२७॥आगेचौन्यांशीभयभारैं॥विषयनिकौंबहुदुषविस्तारैं॥याभवजलकेदुषअपारा
कहोकहांलोंवारनपारा ॥ २८ ॥ सोयहसकलाक्रिपाकारिकहो ॥ मेरेउरकौंसंसादहो ॥ यौंकहिकैंउद्धव
जबरहैं॥तबहरिजीप्रत्युत्तरकहैं ॥२९॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहआतमाअ
विनाशी ॥ ज्ञानरूपपरमसुषराशी ॥ सोजबहींयातनमैंआवैं ॥ तबस्वाधीनविवैसुषपावैं ॥ ३० ॥ बहून्यौ

तिनहितउद्यमगहैं ॥ नहींपावेतोदुषकौलहैं ॥ याविधिसुषदुषजबहींजानैं ॥ तबहींदेहआपुकरीमांनैं ॥ ३१ ॥ ऐसेंबढेदेहअहंकारा ॥ तबहीराजसकौअधिकारा ॥ राजसरहितजबहींमनहोई ॥ तबइहसु पदुपजानैसोई ॥ ३२ ॥ तबसंकल्पविकल्पनिकरैं ॥ निशिदिनित्हृदयविषैंसुषधरैं ॥ तबजासुषहींसुा अरुदेषैं ॥ तबवशहैंनिजसुषकरिलेषैं ॥ ३३ ॥ तबहिंहृदेमेंबाढेकाम ॥ ज्ञानविचारनराषेनाम ॥ तातेंब नहूराजसअधिकारा ॥ राजसतेंमनगहेंविकारा ॥ ३४ ॥ तबराजसकेंविगप्रचंडा ॥ ज्ञानहीमारिकरै सतपंडा ॥ तातैंज्ञानसुनेंअरुजानैं ॥ अरुऔरनिसैंआपुवषानैं ॥ ३५ ॥ परिसोकामनहींठहिरावैं ॥ लेकरिपकरिकरमकरावैं ॥ परिजद्यपियानरकोबुधी ॥ रजतमतेंनहींपावेंसुधी ॥ ३६ ॥ तेहूंनिशदिन दोषविचारैं ॥ उरतेंसकलकामनाटारैं ॥ सावधानआलसनहींकरैं ॥ क्रमक्रमममचर्णानिचिनधरैं ॥ ३७ ॥ आसनजीतिकरैवसप्रान ॥ निषिदिनउराषेममध्यान ॥ अरुममशिष्यचारसनकादी ॥ सकलतत्वज्ञानि नुकोआदि ॥ ३८ ॥ तिनविचारकरिजोगहींभाष्यौ ॥ सोतोईहैऔरसबनाष्यौ ॥ ज्योंहोंज्योमनदूजोतजे ॥ अरुज्यौंज्यौंममचर्णनिभज्यैं ॥ ३९ ॥ याहितेंसबमिठेविकारा ॥ याहितैंछूटैंसंसारा ॥ याहितेंममच रणनिपावें ॥ नहुरिजगतनमनहींआवैं ॥ ४० ॥ तातैंपरमजोगयहराष्यौ ॥ तातेंमेरेशिष्यनिभाष्यौं ॥ जबयहबानीबोलैकृष्ण ॥ तबउद्धवजनकीनोप्रश्न ॥ ४१ ॥ ॥ उद्धववाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभु कौनसमेयारूपा ॥ तुमभाष्यौयाज्ञानअनूपा ॥ सनकादिकानिकौनविधिलह्यौ ॥ क्यूपुछौकेसंतुमकह्यौ ॥ ४२

॥ ज्ञानसहितसबमोकौकहौ ॥ मेरेउरकौसंसैदहौ ॥ जबयहउद्धवकीनीप्रश्न ॥ तबबोलेकरुणा
मयकृष्ण ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ जन्म
हीतेतिनगहीनिवर्ति ॥ मनवचक्रमसौंतजीप्रवर्ती ॥ ४४ ॥ प्रश्नकरीतिनब्रह्माआगे ॥ एसौभेदसूवतज्यों
जागें ॥ अतिसुपमज्ञानिनहिपरैं ॥ उत्तरकहोकोनविधिकरैं ॥ ४५ ॥ सनकादिकवाच ॥ चौपाई ॥
हेप्रभूब्रह्ममयदेवा ॥ याकौहमहींवतावौभेवा ॥ विषयवासनाचितहोगह्यौ ॥ चितप्रीतीकारिकैंमिलिरह्यौ ॥
४६ ॥ दोउमिलेंआपुमेरसें ॥ नीरअरुपीरपरस्परजेसैं ॥ भिन्नाभिन्नावनमुक्तनहोई ॥ क्योंकरिभिनहो
यएदोई ॥ ४७ ॥ यहबानीब्रह्मउरधारी ॥ उतरदेनकोबहुतविचारी ॥ परितौंऊँउतरनाहिआयौ ॥
जातिकर्मनीसोमनलायौ ॥ ४८ ॥ तबब्रह्मायहबुद्धिविचारी ॥ जाहिनकोईताहींमुरारी ॥ तातेंक्योंचित
वनमेरों ॥ हंसरूपमेंप्रगट्योमेरौ ॥ ४९ ॥ हंसरूपतातेंदिपरायौ ॥ जातेंयहआसयसमझायौ ॥ केज्ञोहं
सवृत्तिकोंग्रहें ॥ सोईयाकेभेदहिलहें ॥ ५० ॥ तबतिनदेषिमोहिसुषपायौ ॥ ब्रह्मामिलिउठिमाथौनायौ ॥
करिविनतीतबवचनबषानै ॥ हेप्रभूतुमकौंहमनहींजांनै ॥ ५१ ॥ तबतिनसौंजोमैंकछुकह्यौ ॥ तिनकेउर
कासंसादह्यौ ॥ तेईवचनकहौंअबतोसौं ॥ सावधानव्हैसुनियोमोसौं ॥ ५२ ॥ तुमकौंहोयुंपूछेंजबहीं ॥
कह्योंज्ञानउत्तरमैंतबहीं ॥ मनकौंसंसैसबहिंमिटायौ ॥ विद्यमानपरब्रह्मबतायौ ॥ ५३ ॥ हंसहरीजबह
सकरबोले ॥ कृपानिधानतबअंतरषोले ॥ ॥ हंसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विप्रहुंप्रश्नकरीतु

मऐसी ॥ करनेनहींसंभवेतेसी ॥ वस्तविचारेंद्वैतनकोई ॥ तोयाकौउत्तरक्यौंहोई ॥ ५४ ॥ अरुजोदेहरूपहूंकहियें ॥ तोहूंकछुद्वैतनलहीयें ॥ पंचभूतनिर्मिततनसारें ॥ जोकछुजहांलगौंविस्तारें ॥५५॥तातेंसकलएकद्वैनाहीं ॥ दूजोकौंनविचारौंमाही ॥ पुरुषदृष्टदेषेतेंएका ॥ प्रकृतिदृष्टिहूंन हींअनेका ॥ ५६ ॥ तातेंकेरीप्रष्णतुमऐसी ॥ बहुतनमांहिंकरीजैंजेसी ॥ अरुजोदीसेतत्वविचारा ॥ तोनहींप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥ ५७ ॥ जोकछुदीसेंसुनीएकहीयें ॥ मनअरुबुद्धिजहांलौंलहिये ॥ सौसबमैंहीदूजोनाहीं ॥ ऐसौज्ञानधरौंमनमांहीं ॥ ५८ ॥ नामरूपतेंसकलविकारा ॥ आद्यअंतमध्यमाटीसारा ॥ त्यौंहींआदिअंतमध्यमाही ॥ मेहोएकद्वैतकछुनाहीं ॥ ५९ ॥ द्वैतदृष्टिसोदुषकोकारण ॥ ब्रह्मदृष्टिनिजसुषविस्तारण ॥ लगैंतरंगानिसौंदुषलहैं ॥ तबसुषजबहींतीजलगहैं॥६० ॥ त्यौंहीद्वैतदृष्टिसोईदुषा ॥ एकदृष्टिसोहैनिजसुषा ॥ अरुतुमप्रष्णविरिंचिसोकारिं ॥ सोमेंत्हृदयआपुनेंधरी ॥६१ ॥ विषयनिमांहिचितामिलिरह्यौ ॥ अरुविषयनिचितहहिढगह्यौ ॥ हेपुत्रहूंयहयौहीसत्य ॥ परितेआत्मामांहिअसत्य ॥ ६२ ॥ विषयाचितएदोउमाया ॥ आत्मब्रह्मनिरंजनराया ॥ विषयनिसौंजबचितलगायौ ॥ तबहिंचिततिनमेंसुषपायौ ॥ ६३ ॥ तबविषयनिकांध्यानहींकरें ॥ तिनकैंहेत कर्मविस्तरैं ॥ तातैंएकमेकमिलिरहैं ॥ ऐसैंजन्मजन्मदुषसहैं ॥ ६४ ॥ तातैंआत्ममेरौअंसा ॥ मेरिशरणग्रहैंतजीसंसा॥ताहिरहूंतोंविषयपरिहरैं ॥अराचिततैंचितवननहींकरैं ॥ ६५ ॥ विषयचितवृथाकारि

जानैं ॥ तिनतैंपरैंआपुकौंमानैं ॥ ब्रह्मरूपएकआविनासी ॥ ज्ञानरूपचेतनसुषरासी ॥ ६६ ॥ मनअरु
बुद्धिचितअंहकारा ॥ इंद्रियविषयंदहविस्तारा ॥ एभरमरूपसकलहैंमाया ॥ भूलिआत्माआपुबंधाया
॥ ६७ ॥ ऐसैंजानसकलछटिकावैं ॥ आपुहींमोहिएककरिध्यावैं ॥ जाग्रतस्वप्नसुपुतिबषांनौं ॥ तेआ
चर्णाबुद्धिकैंजानौं ॥ ६८ ॥ तिनतैंपरैंआतमारूप ॥ सदाएकरसपरमअनूप ॥ सातिकहूंतैंजागरनहोई
राजससुपनलहैंसबकोई ॥ ६९ ॥ सुषोपतितामसगुणतेंआवैं ॥ मनअरुबुद्धितिहुंकूंपावैं ॥ एकरूप
आतमातिहुंमांहीं ॥ सापिभूतलिपैंकहूंनाहीं ॥ ७० ॥ तातैंतिहूंगुणनितैंन्यारौ ॥ निजानंदमयरूपहमारौ ॥
तातैंस्थितव्हेकरैंविचारा ॥ सहजाहिंछूटैत्रिगुणपसारा ॥ ७१ ॥ देहविषैंबंध्योअभिमाना ॥ तातैंभेदउ
ध्यौयहनाना ॥ तातैंनिजानंदविसरायौ ॥ कालअसंष्यमाहादुषपायौ ॥ ७२ ॥ ऐसैंजानितजेअभिमाना
कदैंनकरैंसुषानिकौंध्याना ॥ तिहूंगुणानितैंकरैंविरक्ति ॥ चोथैंपदबांधेआसाक्ति ॥ ७३ ॥ तबसहजेंमो
माहिसमावै ॥ बहुर्यौकदेंदेहनाहिपावैं ॥ अरुजोसकलग्रंथविस्तरैं॥वेदधर्मनानाविधिकरैं ॥ ७४ ॥ प्रवृ
त्तिमांहीबहूतविधिजागैं॥ परिजोजानिदैतनहींत्यागैं ॥ सोनितसोवतजागतजानौ ॥ ताकौंमैंदृष्टांतबषांनौ॥
७५ ॥ जैसैंसयनकरैंनरकोई ॥ सोवतसुपनलहैंपुनिसोई ॥ बहुतभांतिकरैंव्यवहारा ॥ लेनदेनजलपान
अहारा ॥ ७६ ॥ बहूरैंरैनभएतेंसोवैं ॥ दिवसभएत्यौंहीउठिजावैं ॥ ऐसींविधकेयोंदिनवीतें ॥ सोवत
जागतसकलव्यतीतैं ॥ ७७ ॥ बहूरोवहेएसीमनआनैं ॥ रातिहूंदिनकौनिद्रभानैं ॥ कदेनसोवतजागत

रहें ॥ सावधानआलशनहींगहैं ॥ ७८ ॥ ऐसैंकाजआपनौंकरैं ॥ चौरादिकधनकौनहींहरैं ॥
पारिजनयहाजागिकगेदेपैं ॥ तबवहसकलावृथाकरीलेषैं ॥ ७९ ॥ सोवतजागतसबव्यवहारा ॥
जाकेंहितजागैसोसारा ॥ आपुंहिंसबमिथ्याकरीजानैं ॥ कबहूंभूलिसत्यनहींमानैं ॥ ८० ॥

सोहिंवेदधर्मआचरना ॥ अरुतेसुषाजिनकेहितकरना ॥ तेसबस्वप्नरूपव्यवहारा ॥ पंडितछोडैंसकलप
सारा ॥ ८१ ॥ भ्रमतेंदेहधर्‍यौअभिमाना ॥ तातैंवर्णाश्रमभएनाना ॥ तातैंकरैंबहूतविधिकर्मा ॥ सुख
निमितविस्तारैंधर्मा ॥ ८२ ॥ पारितेसकलवृथाकरिजानौ ॥ सुपनजागर्णसमकरीमानौ ॥ जोदेहादिक
सकलपसारा ॥ चेतनकरीवरतानवहारा ॥ ८३ ॥ सुषदुषभोगकरैंअरुजानें ॥ आपुहींमुषिदुषिकारि
मानें ॥बहुर्‍योंजबाहिसुपनकौंपावैं ॥ बहूव्यवहारनिसौंमनलावें ॥ ८४ ॥ तबहूंजानैंसकलपसारा ॥ आ
पापरसुषदुषयवहारा ॥ बहूरिसुषोपातिमांहिसबजाई॥मनबुधिचितअहंकारनकाई ॥ ८५ ॥ तबआतमा
निरंतररहें ॥ जागैंसकलबातजोकहें ॥ लीयौदीयौअरुआयोगयों ॥ जहांलगिपीछैअनुभयो ॥ ८६ ॥
सोआतमाएकरसरहैं ॥ तिहूकालकीवातनिकहें ॥ यौंअविनासीआतमाएक ॥ दूजेमायाभेदअनेक ॥
८७ ॥ तीनअवस्थाहैयेमनके ॥ मनमेंआभासेहैंतिनकैं ॥ तिनातिनकौंतिनौगुणजेहें ॥ तीनागुणमायाकेत
हैं ॥ ८८ ॥ असैंविधनिश्चैसैंजानें ॥ निशदिनत्हदयविचारहिठानैं ॥ सकलउपाधिनकौआगारा ॥
ज्ञानपडगकाटैंअहंकारा ॥ ८९ ॥ त्हदयमाहिमैंताकौभजों ॥ सावधानव्हैंकदेंनतजों ॥ यहसारौजग

भ्रमकरीजानों ॥ मानकोकृतमिथ्याकरीमानौ ॥ ९० ॥ ज्योंएकनिकौंउपजतदेषैं ॥ अरुएकानिकौंविन
सतपेपें ॥ साईरीतसकलकोजानैं ॥ स्वप्नसमानत्हदेमेंमानें ॥ ९१ ॥ आग्निसाहितज्यौंलकरीहोई ॥
वालकलकरिफिरावेकोई ॥ औरभांतिहैदीसेऔर ॥ धीरपरीचंचललहैंनठौर ॥ ९२ ॥ त्यौंयहंजगतर
हंथिरानित्य ॥ परिअतिचंचलसकलअनित्य ॥ एकब्रह्ममेंसबआभास्यौ ॥ त्रिगुणपाईवहुभेदप्रकास्यौ ॥
९३ ॥ स्वप्नरूपगुणमेंज्येंभोगी ॥ यौंबहूभांतिविचारेंजोगी ॥ तातेंजगतेंद्दष्टिउतारें ॥ सांचजानित्हदय
नहींधारें ॥ ९४ ॥ तृष्णाछोडिनिश्चलव्हेंरहें ॥ मनवचक्रमकछुकर्मनगहैं ॥ इहाराहितब्रह्मरसभोगे ॥ नि
जानंदमयहोवेंजोगी ॥ ९५ ॥ ऐसेंवृथाजानिसबत्यागैं । । निहचलह्रदेब्रह्मअनूरागैं ॥ सोजवरहेंदेहहुंमा
हीं ॥ तोहूंफिरिभ्रमउपजैंनाहीं ॥ ९६ ॥ जोयहदेहजाईकहुंआवैं ॥ बैठेंउठेंपीवैंअरुषावें ॥ औरकछूक
रेंव्यवहारा ॥ परिसोसिधनजानैसारा ॥ ९७ ॥ निश्चलरहेंनिरंजनमांही ॥ देहादिककछूजानैंनाही ॥
ज्योंकोईतनवस्त्रनिधरैं॥बहूज्यौंसूरापानकहूंकरें ॥ ९८ ॥ सोतिनवस्त्रनिजानेंनाहीं ॥ प्रथमबंधेतातेंनहींजा
हीं ॥ कर्मरहेयातनकेजोलौं॥सहीतइंद्रियसबबरतेंतोलौं ॥ ९९ ॥ कर्मनिताकौंतनकोपोषैं ॥षानपानसौंनि
त्यसंतोषें ॥ जोगीब्रह्ममांहिथीररहैं ॥ देहादिककछूशुद्धनलहैं ॥१००॥ जैसेंस्वप्नदेषिकरीजागैं ॥ तासु
पनासुनहींअनूरागैं॥तैसैमोहानिसातेंजाग्यौं॥बहूरिनलिपैंब्रह्मअनुराग्यौ ॥१०१॥देहथकांब्रह्महिंमिलरत्यौ
॥भवकौसकलबीजातिनदत्यौ॥सोंबहूरोभवमैंनहींआवैं॥ब्रह्ममिल्यौंसोब्रह्मसमावैं॥२॥तातेंदेहआदिविस्तारा

मकरीतजोत्रिगुणमयसारा ॥ त्रिगुणातीतब्रह्मकोंसेवों ॥ विषयनिकौंकछुनामनलेवी ॥ ३॥ विषयनिचित दोउभ्रमजानौ ॥ ब्रह्ममांहिरहोदोनुभानौ ॥ सकलअतीतआपुकोंदेषों ॥ सबवटएकद्वैतनलेषौं ॥ ४ ॥ ब्रह्मअरुआपुएककरिमानौं ॥ द्वैतभावकबहूंजिनआनौ ॥ निशादिनब्रह्मविचारहिंकरौं ॥ परिबलमेरोहृ दयमेंधरौं ॥ ५ ॥ ममआधीननिरंतररहौं ॥ याविधिजक्तबीजसबदहौं ॥ यातेंबहूरिनभवमेंआवों ॥ ब्रह्मरूपव्हैंब्रह्मसमावों ॥ ६ ॥ यहमेंतोसोंकह्योविचारा ॥ सांख्यअरुजोगसकलकोंसारा ॥ मेरोगुह्यम तोअतिजानौ ॥ बहुतभांतिहृदेमेंआनौ ॥ ७ ॥ तुमरोहितमनमांहिविचार्यों ॥ मेंहोंविष्णुहंसतनुधार्यों ॥ मेंहोंब्रह्मसकलकोईस ॥ मोंबिनऔरेंसकलअनिस ॥ ८॥ सांख्यअरुसत्यतेजतपजोग ॥ प्रियसमदम श्रीकिंरतिभोग ॥ औरोंवस्तजहांलेसार ॥ तेसमस्तमेरेंअधारा ॥ ९ ॥ तातेंजोममशरणेंहिंआवें ॥ उत्तमवस्तसकलकौंपावें॥मौंबिनबहूसाधनहीगहें॥तोहूंकदेंनसुषकोलहें॥१०॥मैंनिरगुणअरिसबगुणसेवों मेंनिरपेक्षसकलचितदेवों॥कछुनचहौंकरौंउपकार॥सबकौंहितसबकौंआधार ॥११॥ सबउपजावोंसबप्र तिपारों॥सबपोषौंसबसंकटटारौं॥तातेंमोहितजैंदुषपावें ॥ तबहींसुपीसरणजबआवें ॥१२॥ सरणांगत कोंविगिउधारौं ॥ आपुमिलाऊंभवभयटारौं ॥ तातेंसबतजीमोकौंभजौं ॥ पावोमोहिजगतभयतजो ॥१३॥ ॥ उद्धवयहमेंज्ञानसुनायौ ॥ सनकादिकनिपरमसुषपायौ ॥ हृदयरहौसंदेहनकाई ॥ मोहमिन्नकोसब विधिपाई ॥ १४ ॥ बहूतभांतिममपूजाकरी ॥ बहूतभांतिअस्तुतिविस्तरी ॥ मेरोभजनहृदयमेंधार्यो ॥

औरसकलततकालनिवार्यौ ॥ ११५ ॥ आपुक्तारथातिनकरिमान्यौ ॥ द्वैतभावताजिब्रह्मपाहिंचान्यौ ॥ तब तिनकैंअसक्तातिकरितेहीं ॥ अरुब्रह्मादेषतआगेंही ॥ ११६ ॥ सवहीनकौंआनंदवढायौ ॥ तबमैंअपनेधामसिधायौ ॥ तातैंउद्धवयहतुमजांनौं ॥ अपनेंपरमभागकरिमांनौ ॥ ११७ ॥ सनकादिकसमानतुमकीयें॥तेईंवचनमैंतुमकोदीयौं ॥ तातैंइहैंज्ञानउरधारौ ॥ ब्रह्मजानिसवद्वैतनिवारौ ॥११८॥ ममआधीनसदहीरहौं ॥ दूजोसकलवासनादहौं ॥ एसैंहैंनिजपदकौंपैहौ ॥ जातैंजगबहूरौनहींएहौं ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसोंकह्योपरमज्ञानानिजसार ॥ जाकौंगहिनिजपदलह्योंछूटैसबसंसार ॥ १२० ॥

॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांहंसगीतायां त्रयोशाध्याय: ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधरचवथैंध्यायमैंभक्तिश्रेयकल्याण ॥ ध्यानयोगहरिकहतहैंसाधनसहितप्रणामा ॥ १ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसोसुनिहरिजीसोंज्ञाना ॥ भक्तिउधारकभ्रमसबहांनां ॥ यहउद्धवदृढकरिउरधरी ॥ परिकच्छुप्रश्णकृष्णसौंकरी ॥ १ ॥

॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमदयालदयानिधिदेवा ॥ मोकौंबडौं वतायोभेवा ॥ भक्तिहूतेंपहियैंतुमचरना ॥ छूटैजगतजन्मअरुमरना ॥ २ ॥परिअबएकप्रश्णसोंकहौं ॥ मेरेयासंदेहहिंदहौं ॥ जेबहुविधिश्रुतिसमरातिजानैं॥तेतौबहूसाधनवषानैं॥३॥ मुक्तिहेतबहूपंथानिकहैं ॥ अरुतेबहुतेंमिलिगहैं ॥ तातेंतेउपंथअसेष ॥ भक्तिसमाकेकह्युविसेष ॥ ४ ॥

नरकहैस्वर्गमैंतोलौं ॥ एकाइहांहिकामनपानैं ॥ आगैंस्वर्गनरकहींजानैं ॥ १७ ॥ जोतनईहांकरैभोग
निकौं ॥ ईहांहिछोडिजाईतातनकौं ॥ आगैंसुपदुषलहैंनकोई ॥ तातैंभोगकरौसबकोई ॥ १८ ॥ ए
सेग्रंथनिकहिभ्रमावैं ॥ धर्मरायकीषबरनपावैं ॥ अेककहैंसमदमअरुसत्य ॥ दूजोसाधनसकलअनित्य
॥ १९ ॥ जोगग्रंथबहूसापबषानैं ॥ तिनतैंमुदमुक्तिकौंजानैं ॥ सामअरुदामदंडबहूभेद ॥ ईनकौंगहैं
एकपढीवेद ॥ २० ॥ न्यायसहितसबउद्यमकरैं ॥ उत्तमधर्मजानिउरधरैं ॥ दानभोगउत्तमकरिभाषैं
॥ ईहमुक्तसाधनकरिराषैं ॥ २१ ॥ एकैंजज्ञदानतपगहैं ॥ एकहींजमनियमसंग्रहैं ॥ एकहिंतीर्थव्रतम
नधरैं ॥ कहूंकहांलौंबहूविधिकरैं ॥ २२ ॥ तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ॥ छिनभयेईहांफिरआवैं ॥ बहु
न्योंनीचजोनीबहुलहैं ॥ नरकनिमैंकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजबरहैंस्वर्गहूमांहिं ॥ तबहूंकछुसुषपावैंना
हीं ॥ कामक्रोधनिंदाअपमाना ॥रागद्वेषइच्छाअभिमाना ॥ २४॥ इत्यादिकनिग्रसैंनिसरहैं ॥ तातैंकौन
भांतिसुषलहैं॥भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं॥कालतहूंतैंउलटढहावैं॥ २५॥तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा॥सुषममचर्ण
निकैंआधारा॥जिनमेरचर्णनिचितधर्‍यौ॥साधनसाधसकलपरिहर्‍यौ॥२६॥तिनकौंउद्धवजोसुषहोई ॥ सो
कहूंनपावेकोई ॥ सोसुषकर्‍यौसुन्यौनहींआवैं॥सोईपैंजानैंजोपावैं॥२७॥सोपावेजोमोसोंमागैं ॥ औरसक
लआसयकौंत्यागैं ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ दूजीसकलकामनादहैं ॥ २८॥ सकलवस्तकौंकी
नौंत्याग ॥ अंतःकरणषरौवैराग ॥ समदरसीनित्यसीतलचित ॥ ममचिंतवनन्हदैहढव्रत ॥२९॥ ताकौं

जाजाप्रभुपंथतुमेंपहियैं ॥ बहुरौंभवसागरनहींएयैं ॥ सोसोपंथकृपाकरिकहौं ॥ मेरीसकलमूढतादह्यौ ॥ ५ ॥ तुमबिनयहदूजोनहींकहैं ॥ ज्ञानलहैंसोतुमसौंलहैं ॥ उद्धवऐसीपूछीवाणी ॥ तबउद्धवकीप्रश्नबषाणीं ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवकल्पसमयजबभयौ ॥ तबयहतत्वलीनव्हैंगयौं ॥ पुनिमैसृष्टिसमययहज्ञाना ॥ ब्रह्मांसौंश्रुतितत्वबषाना ॥ ७ ॥ सोईश्रुतिपुनिब्रह्मपढायौ ॥ भृग्वादिकस्वयंभूपायौ ॥ सप्तमहाऋषिभृगुजनआदी ॥ अरुस्वायंभुमनूमन्वादि ॥ ८ ॥ तिनअष्टनितेंयहाविस्तारा ॥ नानाभांतिकेभेदअपारा ॥ सुरनरअसुरासिद्धगंधर्वं ॥ विद्याधरयक्षादिकसर्वं ॥ ९ ॥ सप्तद्वीपनरबहुतप्रकारा ॥ किंनरकिंपुरुषादिअपारा ॥ सतरजतमतिनकीउतपती ॥ तातैंबहूविधिभईप्रकृति ॥ १० ॥ तिनतेंभयबहूताविधिभेदा ॥ तिनतेंसोईजानेंवेद ॥ वेदतत्वकितहुंरहगयो ॥ आपुसुभावसमतिनकह्यौ ॥ ११ ज्योंज्यौतिनकेभएसुभाव ॥ त्यौंत्योंजान्यौंश्रुतिकोभाव ॥ त्योहिंत्योंआचरणनिकरै ॥ त्योंत्यौं आपुस्मृतिविस्तरैं ॥ १२ ॥ परंपराजेतिनतेंहोवैं ॥ तिनकेश्रुतिसमृतिजोवैं ॥ तिनतैंआपुकरैंबहुग्रंथा ॥ नानाभांतिचलावैंपंथा ॥ १३ ॥ एसीविधिउपजैपाषंडा ॥ ज्ञानधर्महोईसतपंडा ॥ ममसायाकरिमोहितहोवैं ॥ तातेंतत्वपंथनहीजोनैं ॥ १४ ॥ अपनीअपनीरुचिअनुमाना ॥ करेकर्मअरुभाषैज्ञाना ॥ नानाविधसाधनासुनावैं ॥ तिनतिनतैंकल्याणबतावैं ॥ १५ ॥ एकैबहूविधिधर्मनिभाषैं ॥ तिनतैंमुक्तिभुक्तिकौंआषैं ॥ एकैकहैंजसहीविस्तरीयैं ॥ जातैंसकलदुपानैंतैंतरीयैं ॥ १६ ॥ जाकौंजसयाजगमेंजोलौं ॥ सो

नरकहेंस्वर्गमेंतोलौं ॥ एकाइहांहिकामवषानैं ॥ आगेंस्वर्गनरकहींजानैं ॥ १७ ॥ जोतनईहांकरैभोग
निकों ॥ ईहांहिछोडिजाईतातनकौं ॥ आगेंसुषदुषलहैंनकोई ॥ तातैंभोगकरौसबकोई ॥ १८ ॥ ए
सेग्रंथनिकहिभ्रमावैं ॥ धर्मरायऋषिवरनपावैं ॥ अककहेंसमदमअरुसत्य ॥ दूजोसाधनसकलअनित्य
॥ १९ ॥ जोगग्रंथबहुसापबपानैं ॥ तिनतेंमुढमुक्तिकौंजानैं ॥ सामअरुदामदंडबहूभेद ॥ ईनकौंगहें
एकपढीवेद ॥ २० ॥ न्यायसहितसबउद्यमकरैं ॥ उत्तमधर्मजानिउरधरैं ॥ दानभोगउत्तमकरिभाषैं
॥ ईहमुक्तसाधनकरिरापैं ॥ २१ ॥ एकैंजज्ञदानतपगहें ॥ एकहींजमनियमसंग्रहैं ॥ एकहिंतीर्थव्रतम
नधरैं ॥ कहूंकहांलोंबहूविधिकरैं ॥ २२ ॥ तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ॥ छिनभयेईहांफिरआवैं ॥ बहु
य्यौंनीचजोनीवहुलहैं ॥ नरकनिमेंकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजबरहेंस्वर्गहूंमांहिं ॥ तनहूंकछुसुषपावैंना
हीं ॥ कामक्रोधनिंदाअपमाना ॥रागद्वेषइच्छाअभिमाना ॥ २४॥ इत्यादिकनिग्रसेंनिस्तरहैं ॥ तातैंकौन
भांतिसुपलहैं॥भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं॥कालतहूंतैंउलटढहावैं॥ २५॥तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा॥सुषममचर्ण
निकैंआधारा॥जिनमेरचर्णनिचितधर्‍यो॥साधनसाधसकलपरिहर्‍यौ॥२६॥तिनकौंउद्धवजोसुषहोई ॥ सो
कहूंनपावेकोई ॥सोसुषकत्थौसुन्यौनहींआवैं॥सोईपैंजानैंजोपावैं॥२७॥सोपावेजोमोसोंमागैं ॥ औरसक
लआसयकौत्यागैं ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ दूजीसकलकामनादहैं ॥ २८ ॥ सकलवस्तकौंकी
नौत्याग ॥ अंतःकरणषरौवैराग ॥ समदरसीनित्यसीतलचित ॥ ममचिंतवनरहदेहढव्रत ॥२९॥ ताकौं

दसोंदिशासुपरूप ॥ सोसुपजोअतिपरमअनूप ॥ जोजनमेरेंसूषकौंजानें ॥ ताकौंमनकितहूंनाहिमानैं ॥
॥ ३० ॥ ताकेंसबआधीनहिंरहें ॥ परिसोमोविनकछुनगहें ॥ ब्रह्मलोककौंकदेंनलेवें ॥ इंद्रलोकपल
चितनदेवें ॥ ३१ ॥ सबभूराजनेननहींदेपें॥सत्पातालसुषत्रणकारिलेसें ॥ जोगसिधीआणूमादिकअष्ट
॥ जोगीजनहितसाधेकष्ट ॥३२॥ तिनहूंकोंकबहूंनहींलेई॥आपुहूतेंतिनसेंबेतेंई ॥मुक्तिनिकटहिंरहेंसदाई
परिमेरो जनछूवेंनकाई ॥३३॥ मेहोएकसदाप्रीयताकों॥ममचर्णनिचितरातोजाकों॥तांहितेंमेरेप्रियसोई॥
ताबिनऔरप्रियनहींकोई ॥ ३४ ॥ त्यौंमेरोसुतविधिनहींप्यारो ॥ नहींसंकरज्यौंरूपहमारो ॥ नहींप्रिय
त्यौंसंकर्षणभाई ॥ श्रीअर्धंगात्यौंनहीसाई ॥ ३५ ॥ योंनहींप्रियमेरेममदेह ॥ जेसोतुमसोंपरमसनेह ॥
तुमसेंभक्तमहाप्रीयमेरें ॥ ताकौंरहोनिरंतरनेरें ॥ ३६ ॥ इछारहीतअरुसीतलह्रदय ॥ समनिरवैरस
बनिपरिसूह्रदय ॥ ब्रह्मदृष्टिदेषेसबमांहीं ॥ ब्रह्मविचारतजेपलनाहीं ॥ ३७ ॥ मेंताकौंप्रथमयोंकरों ॥
त्रिगुणपासबंधनविस्तरों ॥ परीताकौंएसोबलभारी ॥ काटीमायाशक्तिहमारी ॥ ३८ ॥ एतपरिसब
औगुणतजें ॥ उलटीआईममचर्णनिभजें ॥ अरुसबसुषताकेंवसरहें ॥ सोतजिमोहीकछूनगहें ॥ ३९
॥ बहूतिनकेभवबंधनदहें ॥ नामप्रगटकरिमेरौकहें ॥ तिनतिकौंममचर्णनिल्यावें ॥ सदासबनितेंआपुछि
पावें ॥ ४० ॥ अहंकारममतानहीआनै ॥ मोहिछोडिदूजोनहींजानें ॥ गुणातीतताजनकेंपाछें ॥ यहतन
धारिफिरोमेंआछें ॥ ४१ ॥ सातिकगुणधारीयहदेह ॥ करौंसूधताचर्णनिपेह ॥ निहकंचनतनहूंनाहिंर

क्त ॥ मोहिसोंतिनहींअनुरक्त ॥ ॥ ४२ ॥ सीतलह्रदयाविगतअभिमाना ॥ कृपावंतसबएकसमाना ॥केहूंकामचलैंनहींबुधी॥मोहीसेंईपाइअतिसूधी॥४३॥मुक्तिहुतेंनिस्प्रेहरहैं॥तेजनमेरैंसुषकौलहैं॥तासुष कैं सुषजानेंतेईं॥औरसकलसमझैंनाहिंकेईं॥४४॥निस्पृहजननिस्पृहसुषपावें॥स्पृहावंतकेनिकटनआवे॥ विपयसुपनिकैंवसमानवहोईं ॥ इंद्रियजीतसकैंनाहिंकोईं ॥ ४५ ॥ परिआधीनहोईममजबहीं ॥ विषयकछुनसकैंकरितबहीं ॥ विषयशत्रूमेंसकलनिवारौं ॥ आपमिलाऊंभवभयटारौं ॥ ४६ ॥ पावकप्रगटकर्‍यौलेअस्म ॥ होईप्रचंडकरैंसबभस्म॥यौंममभक्तिप्रगटजोहोई ॥ जारैंपापरहैंनहींकोईं ॥ ४७ ॥ बहूरि पापकोंनिकटनआवे भक्तिप्रतापमोहिसोंपावें ॥ सोधेंसिधजोगअष्टांग ॥ बहुविधिजज्ञहोईजोसांग ॥ ४८ ॥ सांख्यविचारसकलसोजानें ॥ बेदपढैंदेंबेंबहूदानें ॥ तपहिकरेंइंद्रियमनबांधें ॥ औरसकलधर्मानिकोंसाधें ॥ ४९ ॥ तोहूंमोहिंकदेंनहींपावें ॥ भक्तिमोहिततकालमिलावें ॥ एकमोहिभक्तिबसकरैं ॥ दूजेंतेंअतिअंतरपरैं ॥ ५० ॥ श्रद्धासहितकरेममभक्ति ॥ तासोंमेरीअतिआशक्ति ॥ मेंब्रह्मादिकसकलकोईस ॥ मोबिनऔरसकलअनीस ॥ ५१ ॥ सोमेंभक्तनकेआधीन ॥ तोमोसोंज्योंजलसोंमीन ॥ जोचंडालभक्तिमेंआवें ॥ ताहीतननिरमलतापावें ॥ ५२ ॥ वर्णआश्रुमवंदनकरैं ॥ तापदरेणुसीसपरधरें ॥ तीनेंभवनदासबसताकैं ॥ मेंरिभक्तिविराजैंजाकैं ॥ ५३ ॥ विद्यापढैंधर्मबहूकरैं ॥ जीवदयाबहूविधिविस्तरें ॥ सत्यवंतअरुद्दढसंतोष ॥ कबहूंकहुकरैंनहीरोष ॥ ५४ ॥ कष्टसहितपरणतपसाधैं ॥

मनइंद्रियदेहादिकबांधैं ॥ तोरथवृतानिआदेदेजेतैं ॥ सबआचरणंकरैजोततैं ॥ ५५ ॥ परिजोमेरीभक्तिनहोई ॥ तोनिरमलनहींहोवैकोई ॥ बिनरोमिचद्रवैविनचित ॥ आनंदाश्रुकलाविनानित्य ॥ ५६ ॥ ॥ तोतेंसाधभक्तिनहींकहें ॥ भक्तिविनाउरसुधनलहैं ॥ द्रवैप्रेमतोजाकोंचित ॥ कबहूंरोवैमेरेहित ॥ ॥५७॥ कबहुंगदगदवाणीहोई ॥ कबहुंउंचैंगवैसोई ॥ कबहुंमधुरमधुरसुरगावैं ॥ कबहुंप्रेममगनरहिजावैं ॥ ५८ ॥ कबहुंनृत्यप्रेमवसकरैं ॥ कबहुंहसैंगुणनिविस्तरें ॥ लोकवेदकीलाजनजानैं ॥ ज्योंउनमतसकलयोंठानें ॥५९॥ जैएसोमेराजनहोई ॥ त्रिभुवनसुधकरतहैंसोई ॥ सकलभुवनकेपापनिवारैं ॥ सकलभुवनकोंसोजनतारैं ॥ ६० ॥ जैसेंहेममलीनताहोई ॥ बहुजलमाहिधोईजेंसोई ॥ औरहिजतनबहुतविधिकीजैं ॥ हेमहींनहूकसोटीदीजैं ॥ ६१ ॥ परिकेईबिधिशुद्धनहोई ॥ कोटिजतनकरैंजोकोई ॥ सोईहेमआग्निमेंदीजैं ॥ देकरिफुंकतपतअतिकीजैं ॥ ६२ ॥ तातेंकोईमलनहींरहें ॥ अपनेंसुधरूपकोगहें ॥ त्योंहीजतनकरैंबहुकोई ॥ परिआतमानिरमलनहींहोई ॥ ६३ ॥ मेरीभक्तिमांहिजबआवैं ॥ तबसबकर्ममेलिछिटकावैं ॥ निरमलहोईलहैंनिजरूप ॥ पावैंमोहितजेंभवकूप ॥ ६४ ॥ ज्योंज्योंमेरीभक्तिकरैं ॥ मेरेंगुणनित्हृदयमेंधरैं ॥ श्रुवनकीरतनसुमरनठानें ॥ ज्यौंज्यौंऔरवासनाभानैं ॥ ६५ ॥ त्यौंत्योंहृदयप्रकाशेज्ञान ॥ देषैंब्रह्ममिटसबअान ॥ द्वैतभावकतहूंनहींरहैं ॥ निरभयनिजानंदपदलहैं ॥ ॥ ६६ ॥ नेननीमांहींरोगज्योंहोई ॥ तातेंकछुनदेषैंसोई ॥ पुनिज्योंज्योंओषदाहिंलगावैं ॥ त्यौंत्यौंदृष्टि

होतनितआवैं ॥ ६७ ॥ त्यौंत्यौंवस्तसकलकौंदेषें ॥ आपुहिपरमसुषीकरिलेषें ॥ तातैंभक्तिरूपदृढअं
जन ॥ जातैंदेपैंदेवनिरंजन ६८ ॥ जोसंसारसुपनिकौंध्यावें ॥ सोसंसारमाहींवहिजावें ॥ अरुजोध्या
वेंमेरेरचना ॥ पावेंमोहिमिटेभवमरना ॥ ६९ ॥ तातैंसवसाधनभ्रमजांनौं ॥ सुपनसमानद्वैतसवमानों
मनवचक्रमसकलकौंत्यागों ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरागों ॥ ७० ॥ जोयाभवहींचहेंछटिकायौ ॥ आ
रूचाहेममचर्णनिआयो ॥ तेतिनकीसंगतिपरिहरै ॥ जेनरजुवतिसैंवातांहिंकरैं ॥ ७१ ॥ जुवतिसुष
सुननेंहींश्रवनां ॥ नेननदेपेंकरेंनहींगवना ॥ कवहूंभुलित्हदैनहींआनैं ॥मनक्रमवचनानिरंतरभानें ॥७२॥
ऐसेंबंधनकहूंनहोंई॥कोटिसंगकरैंजोकोई॥ज्यौंज्योंषितअरुजोषितसंगी॥बंधनकरैंहोतप्रसंगी॥ ७३ ॥
तातैंतिनकीसंगतितजैं॥सावधानममचर्णनिभजैं॥निरभयठोरकरैंअस्थान॥मोबिनसंगतजैंसवआना ॥७४
॥मेरोध्याननिरंतरकरैं ॥ प्रेमसहितत्हदेमेंधरैं ॥ कृष्णवचनसुणित्हदयेराषें॥ उद्धवऔरप्रश्नकौंभाषें ॥
॥ ७५ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमहिंकोनाविधिध्यावें ॥ कौनरूपमेंचितलगावें ॥
मेतोमुगतसेंईतुवचरना ॥ परिजोचहैंमिटायौमरना ॥ ७६ ॥ कृपासिंधुतुमकरुणाकरौ ॥ ध्यानजोगवा
निविस्तरौ ॥ सुनिउद्धवनिजजनकीबांनि ॥ तवश्रीहरिजीआपुवषानी ॥ ७७ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच
॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोकूंध्यानसुनाऊं ॥ जोगसहितसवअंगवनावूं ॥ जोगसहितजोध्यानांहिंकरैं
तोमनवेगरजतमपरिहरौं ॥ ७८ ॥ समआसनमेंआस्थिरहोई ॥ जघनिपरिरापेंकरदोई ॥ देहसमानच

लैंनहिंदोलैं ॥ नासादृष्टिकछुनहिंबोलैं ॥ ७९ ॥ ईडापूरिकुंभकस्थिरधारैं ॥ पुनिरेचकपिंगुलानिसारैं ॥
बहुरौंपूरिपिंगुलाद्वार ॥ इडानिसारैंवारंवार ॥ ८० ॥ इंद्रियअर्थसकलपरिहरैं ॥ मेरौहेतत्हृदैमेधरैं ॥
उदुवदैविधिजोगकहावैं ॥ तातैभेदसतगुरुतैंपावैं ॥ ८१ ॥ मंत्रसहितसोनामसगर्भ ॥ मंत्रबिनासोकहींये
अगर्भ ॥ तातैंसोसगर्भसैनाम ॥ सोउत्तमहैप्राणायाम ॥ ८२ ॥ पूरैरोषैरैचककरैं ॥ ओंकारमंत्रउरध
रैं ॥ घंटानादतूलउरध्यावैं ॥ तासौंमिलिकरिप्राणचलावैं ॥ ८३ ॥ यौंत्रिकालअभ्यासैकोई ॥ प्राणमा
सहीमेंस्थिरहोई ॥ बहूरौंहृदयकमलकोंध्यावैं ॥ अष्टपाषरीसोंविगसावैं ॥ ८४ ॥ उंधैमुषसौंउर्द्धहींक
रैं ॥ ताकेमध्यसूर्यहींधरैं ॥ सूर्यमैंपूरणससिआनैं ॥ शशिमैंअनलतेजमयजानैं ॥ ८५ ॥ अनलमध्य
ममरूपहींध्यावैं ॥ परमप्रीतसौंमनहींलगावैं ॥ अंगुष्ठसमानचतुर्भुजरूप ॥ अतिसीतलसुषदानअनूप ॥
८६ ॥ नूतनसजलमेघतनस्यांम ॥ तडिततूलअंबररुचिधाम ॥ मंदहाससोभानिधिआनन ॥ मकराक
तकुंडलसुभकानन ॥ ८७ ॥ कंठेकौस्तुभमणिवनमाला ॥ उरभृगुलतालक्ष्मीविशाला ॥ शंखअरुच
क्रगदाअरुपद्म ॥ हस्तचारसोभाअतिसद्म ॥ ८८ ॥ हेममुगुटहीरामनिजर्‍यौ ॥ अतिसोभायमानोसि
रधर्‍यौ ॥ भालतिलकअंबुजवरनेन ॥ भक्तप्रसादसुधाकीअयन ॥ ८९ ॥ करकंकनअंगदमुद्रिका ॥
पगनूपुरकटिमेक्षुद्रिका ॥ अंकुशवज्रध्वजाअरविंद ॥ चिन्हतचरणहरणदुषदंद ॥ ९० ॥ नषमणिग
णकीप्रभाप्रकास ॥ उरअज्ञानअंधतमनास ॥ औरसकलअंगनिसबभूषन ॥ जिनकेध्यानमिटैंसबदूष

न ॥ ९१ ॥ वयकिसोरपरसकुमार ॥ नपासिरवध्यावैंवारंवार ॥ षर्णनितैंप्रतिअंगहींध्यावैं ॥ एकग
हैंएकहींछिटिकावैं ॥ ९२ ॥ यौंलेनपतैंशिपापरजंत ॥ निसदिनत्हदयध्यावैंसंत ॥ औरवासनासबपरिह
रैं ॥ मेरोरूपअडिगमनधरैं ॥ ९३ ॥ याविधिमनजबनिहचलहोई ॥ तबाफिरिअंगनध्यावैंकोई ॥
आतिसुंदरसुपमैंमनधारैं ॥ औरसकलचिंतवननिवारैं ॥ ९४ ॥ याविधिमनअपनेवसहोई ॥ तबविराट
मैधारैंसोई ॥ सकलविराटरूपममजानै ॥ मोतैंभिनकछुनहींमानैं ॥ ९५ ॥ योविराटममरूपहींजा
नीं ॥ निहचलभयोभेदकौंभांनी ॥ तबताहूतैंमनहिनिवारैं ॥ शुद्धनिरंजनब्रह्मविचारैं ॥ ९६ ॥
ब्रह्मविचारनिरंतरकरैं ॥ सबआकारदूरिपरिहरैं ॥ आतमब्रह्मएककरिदेषैं ॥ चैतनरूपअखंडि
तलेपैं ॥ ९७ ॥ निजानंदनिहचलनिरधारा ॥ सत्यस्वरूपवारनहींपारा ॥ एकअजन्माआपैंआपु ॥ सु
षदुषरहीतपुन्यनहींपापु ॥ ९८ ॥ कालनकर्मजविनहींमाया ॥ आपैंआपनिरंजनराया ॥ जैसैंअग्निअ
खंडितहोई ॥ तातैंउठेपतंगासोई ॥ ९९ ॥ बहुरिअग्निमांहींसमावैं ॥ तबाहिपतंगानामगवावैं ॥ ऐसैं
आतमब्रह्मविचारैं ॥ एकजानिकरिद्वैतानिवारैं ॥ १०० ॥ ऐसीभांतिविचारहिंकरतैं ॥ निसिदिनिब्रह्म
विचारमनधरतैं ॥ त्रिगुणाकारसकलभ्रमभागैं ॥ होईब्रह्मसोवतज्यौंजागैं ॥ १ ॥ ज्हैकरिब्रह्मब्रह्मग
लिजावें ॥ जहाहूतैंबहुरिनहींआवैं ॥ ऐसीविधिभवदुषनिदहैं ॥ मेरोनिजानंदपदलहैं ॥ १०२ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ यहपेंडोतोसोंकह्यौंजाकरिहारीरिपुजाई ॥ पारयामैंबहुविघनहैतैंभाष्योसमुराई ॥ १०३

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशास्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥
॥ ॥दोहा॥ ॥कह्योपंदरहीध्यायमैंसिद्धिधारणाधार ॥ परमज्ञानमैंउपजैंअंतरायतिनलार ॥१॥
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवजोगपंथसमुजाउं ॥ तातेंबहुतविघ्नबताउं ॥ जोइंद्रिय मनप्राणाहिंबाधें ॥ सावधानव्हैजोगहिसाधें ॥ १ ॥ मोमेंधरैंआपनोचित ॥ ताकोंसिद्धिविघ्नहेंनित ॥ जो तिनसिद्धिनिकौंपरिहरें ॥ सोममचर्णनिकौंअनुसरें ॥ २ ॥ तिनसौंकबहूंरहेभुलाई ॥ तोश्रमसकलवृथा हिंजाई ॥ ऐसेंकृष्णवचनउरधारें ॥ उद्धवकीनोप्रश्णविचारें ॥ ३ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ केइप्रकारधारणादेव ॥ शिद्धिनकौंकेईविधिभेव ॥ तिनकेनामकृपाकरिकहौं ॥ जोगीनि केविघ्ननिकौंदहौं ॥ ४ ॥ तुमआधीनसिद्धिहेंसकल ॥ तुमरेकृपातेंहोइअकल ॥ उद्धवप्रश्णदढेंधा री ॥ तबबोलेगोपालमुरारी ॥ ५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवसिद्धिअठा रहकहीयें ॥ ममधारणाकरेंतैंलहीयें ॥ तिनमेंअष्टसिद्धिप्रधान ॥ दशमध्यमतैंकरौंबषान ॥ ६ ॥ जातें देहरूपअरुहोई ॥ कतहूंनहींआवरनकोंई ॥ अणुमासिद्धिनामयहजानों ॥ महामोहनीमायामानौं ॥ ७॥ जोतनकरैंमहाविस्तार ॥ जहांतहाकछुवारनपार ॥ महीमानामसिद्धिसौंकहीयें ॥ कबहूताकौंभूलनगहीयें ॥ ८ ॥ चोयहदेहहिंअतिलघुकरैं ॥ मुष्टिनआवेंदष्टिनपरैं ॥ सोयहलघुमासिद्धिकहावें ॥ ममजनयाकेंनि कटनआवें ॥ ९ ॥ जेजेइंद्रियभोगनिकरैं ॥ जहांतहांविषयनिस्तरैं ॥ तिनसबभोगनिजाकारिलहियें ॥

प्राप्तनामसिद्धिसोंकहीयैं ॥ १० ॥ एकठौरनिवैठारहै ॥ देषैसुनैसकलकौकहै।।ताहिअगोचररहैनकाई
॥ सोप्रकासकासिद्धिकहाई ॥ ११ ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ तिहुंलोकजिनकौजुस्थान ॥ तिनकौंसौं
प्रेरेड्योंजानैं ॥ ताहिईसतासिद्धिवषानैं ॥ १२ ॥ विषयसुषनिकौंकदैंनगहैं ॥ जातैंअतिआनंदितरहैं ॥
नामअवसितासिद्धिकहावैं ॥ मेरोभगतनिकटनआवैं ॥ १३ ॥ जोजोइच्छामनमेंल्यावे ॥ सोसोसकल
फलकमेपावें ॥ वसितानामासिद्धिहैसोई ॥ मेरोजनअदरैंनकोई ॥ १४ ॥ अष्टसिद्धिएअतिप्रधान ॥
इनतेंमध्यमभापौआन ॥ तिनकेगुणव्यापैंनहीकोई ॥ नामअनुरमीकहीयैंसोई ॥ १५ ॥ दूरश्रवनसुने
सबवेन ॥ दूरदरसदेषेंसबनेन ॥ मनकेबेगमनोजबध्यावैं ॥ कामरूपबहुरूपबनावैं ॥ १६ ॥ परकेतन
मेंकरेंप्रवेस ॥ सिद्धिछठीप्रकायप्रवेस ॥ निजइच्छातैंतजैशरीर ॥ सोस्वच्छंदमृत्युहैवीर ॥ १७ ॥ मिल
अपसरानिविचरेदेवा ॥ देषैतिन्हैंहिंलहैंसबभेवा ॥ सोस्वरक्रिडादरसनकहीयैं ॥ मिथ्याफलहैंकदैंनगही
यैं ॥ १८ ॥ जोसंकलपकरेसोहोई ॥ जथासंकलपीकहीयैंसोई ॥ जहांगयौंचाहैंतहांजावैं ॥ अप्रतिह
तगतिसिद्धकहावैं ॥ १९ ॥ एदशमिलिअष्टादशकहीयैं ॥ औरेपंचतुछनहींगहीयैं ॥ वरतमानअरुभू
तभाविष्य ॥ सबकछुजानेंलिष्यअलिष्य ॥ २० ॥ यहहैसिद्धित्रिकालज्ञान ॥ आगेंसिद्धिवषानौंआन ॥
सीतऊष्णआदिकजेद्वंद्व ॥ तिनहीजेनिवारैंसोअद्वंद्व ॥ २१ ॥ विषअरुअग्निसूर्यजलथंभा ॥ जातेंहोव
ईसोअचंभा ॥ प्रतिष्टंभसोसिधीकहावै ॥ हरिजनताकौंनिकटनआवै ॥ २२ ॥ वेअष्टादशअरुएपंच ॥

मिलितेंईससकलप्रपंच॥एमेंमूलरूपउचारी ॥ साषाबहुतनहींविस्तारी ॥ २३ ॥ ममधारणाकरैतैंआवैं ॥ जोगिनकौंबहूविधिचलावैं ॥ जोतिनतैंबेचलेनकबहीं ॥ तोममचर्णनिपावैंतबही ॥ २४ ॥ जोधारणा तेंजोआवैं ॥ ऐसैंजोगीकूंविचलावैं ॥ सोसबउद्भवतोंसोंकहौं ॥ जोगपंथकेविघ्ननिदहौं ॥ २५ ॥ सगुण रूपजोकछुविस्तारा ॥ सोनानाविधरूपहमारा ॥ ताहिताहिमांहिंमनलावैं ॥ तैसीतैसीसिद्धिहिपावैं ॥२६॥ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधा ॥ पंचभूतकेसूक्ष्मबंधा ॥ तिनमैंजाजामैंमनलावैं ॥ ताताकेरूपहीमिलि जावैं ॥ २७ ॥ महत्तत्वकेमनहिंलगावैं ॥ पंचभूतसाषाकरिध्यावैं ॥ जाजासाषामैंमनधारैं ॥ ता हिंतासमदेहनधारैं ॥ २८ ॥ पंचभूतकेजेप्रमानु॥तिनमेंजोगीधारेध्यानु ॥ तातासमलघुदेहहींकरैं ॥ कहूं सौंकहूंगह्योंनपरै ॥ २९ ॥ सातिकअहंकारमनधारैं ॥ ताकौंमेरौरूपाविचारैं ॥ तबजेइंद्रियभोगनिकरैं ॥ बहूतभांतिविषयनिस्तरैं ॥ ३० ॥ तेतेसुषएजोगीपावै ॥ सोवहप्रातीसिद्धिकहावै ॥ मेरोसूत्ररूपमनिआ नैं ॥ तातैंत्रिभुवनकीगातिजांनैं ॥ ३१ ॥ ज्यौंकरदीवालेकरदेषैं ॥ यौंत्रिभुवनअचर्णनिपेषैं ॥ मे रेंकालरूपमनधारैं ॥ सबव्यापकसबईसाविचारैं ॥ ३२ ॥ तातैंसिद्धिईसतापावैं ॥ त्रिभुवनजानैंत्यौंवरतावैं जोदीसोंजोईकरवावैं ॥ ताकेअंतरज्यैंाउपजावैं ॥ ३३ ॥ आदिपुरुषजोमेरोरूप ॥ तामैंधारैंचितअनू प ॥ तातैंसिद्धिअवसितापावैं ॥ विषयानिचितआनंदवढावैं ॥ ३४ ॥ निरगुणब्रह्ममाहीमनधारैं ॥ सबक रतासबईसविचारैं ॥ तातैंबसितासिद्धिहिलहैं ॥ सोईसोपावैंजोचहैं ॥ ३५ ॥ शुद्धसत्वमेंमोहिविचारैं

॥ तामैंजोगीमनकोंधारे॥तातैंसुधआपुहिंहोई॥षटउरमींयापैंनहींकोई॥ ३६ ॥गगनाधारप्राणमनधारैं॥
शब्दरूपउरमांहिविचारें ॥ तबजहांलागेपवनआकाश ॥ सुनैंतहांलौंवचनानिवास ॥ ३७ ॥ नैनानिमैंसु
यकोंधारें ॥ असुर्यमेंनैंनाविचारैं॥ अप्रछन्नमोहिकोंलेषैं ॥ तबसोतिहुंलोककूंदेषैं॥ ३८ ॥ पवनसाहि
तमोमेंमनधारैं ॥ जहांतहाममरूपविचारैं ॥ ऐसैंमनकौंजहाचलावें ॥ मनकेवेगतहांउपजावैं ॥ ३९ ॥
सारेमेरेरूपविचारैं ॥ तिनहीतिनमैंमनकौधारैं॥चाहैंभयोरूपतवजोई ॥ वारनलागैंहोवेंसोई ॥ ४० ॥ क
न्योंप्रवेसाहिंचाहेंजामैं ॥ ध्यानआपुनौआनैतामैं ॥ तबतातनमैंजावैंएसैं ॥ भृंगफूलतेफूलहिजैसैं ॥ ४१ ॥
मूलद्वारपगवंधलगावें ॥ प्राणचलाईसीसमेंल्यौंव॥ ब्रह्मरंध्रहैगौनाहिंकरैं॥ जोमनहोईताहिंअनुसरैं॥४२
॥ स्वर्गदेवसुरवानिताध्यावें ॥ मेरोरूपजानिमनल्यावें ॥ तबतेसाहितविमानहिंआवें ॥ तेजोगीकूंसूखउप
जावें ॥ ४३ ॥ जोजोवस्तुदृढदेमैंधारैं ॥ ताताकोंप्रभूमोहीविचारैं ॥ सोईसोपावेततकाल ॥ जवहींचा
हेंकालअकाल ॥ ४४ ॥ सकलानियंतासबकौंईस ॥ नित्यस्वाधीनसकलकेसीस ॥जोगीएसौंमोकौंध्या
व ॥ ताकीआनानिकोईमिटावें ॥ ४५ ॥ ज्ञानरूपसबअंतरजामी, ॥ ध्यावैंमोहिसकलकौंस्वामी ॥ अप
नींजानैजन्ममरनकी ॥ ज्ञानत्रिकालअरुसबकेमनकी ॥ ४६ ॥ प्रकृतिगुणानितैंन्यारौंजानौ ॥ असाति
नकोंस्वामीकरिमानौं ॥ ध्यावैंमोहीसदाअद्वंद्व ॥ तबकोइनहींव्यापैफंद्ध ॥ ४७ ॥ सबमेंव्यापकसकलअ
तीत ॥ लिपैनसरअगिनजलसीत ॥ एसोमोकौंध्यावैंकोई ॥ ऐसोलक्षणपावेंसोई ॥ ४८ ॥ जेमेरेअव

तारानिध्यावैं ॥ आयुधछत्रचामरमनल्यावैं ॥ ताकौंकहौंनपराजय्यहोई ॥ सबहिनमांहिविराजेसोई ॥४९
यैंधारणाकरैंममजोई ॥ सिद्धिनपावैंजोगीसोई ॥ परिहेअंतरायींहैंसारैं ॥ मेरेभक्तिनिदूरनिवारैं ॥
५० ॥ मोतेंएइनतेंमेंनाहीं ॥ तातैममजननिकटनजांहीं ॥ मोहिनलहैंइनहींजेलेवैं ॥ मोहिभजेतिनकौंएसे
वैं ॥ ५१ ॥ मोहितेंउतपतिसबइनकि ॥ प्रेमतिपालकरौंतिनतिनकी ॥ ममआधीनासिद्धिअरुजोग ॥
सांष्यअरुज्ञानधर्मधनभोग ॥ ५२ ॥ सबकौंजनकसकलकौंस्वामी ॥ मेसबइनकौंअंतरजामी ॥सब
मेबाहरभितरएक ॥ मोमेंवरतेंसकलअनेक ॥ ५३ ॥ पंचभूतसबभूतनिमाहीं ॥ बाहिरभिंतरदूजानाहीं
॥ सोंसबमेहीनाहींआन ॥ आनदृष्टिसोईअज्ञान ॥ ५३ ॥ तातैंद्वैतभावनहींआनैं ॥ मेरोरूपसकलक
रीमानैं ॥ साधनासिद्धिसकलभ्रमतजैं ॥ मेरेचर्णनिरंतरभजैं ॥ ५५ ॥ ममप्रसादममचर्णनिपावैं ॥ अ
तिअपारभवदुषामिटावैं ॥ यहमेंतोसोंभाष्यौंज्ञान ॥ यातेंऔरसकलअज्ञान ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ए
कब्रह्मकरिदेषनौयहसुनिदुष्करज्ञान ॥ पूछिविष्णुविभूतितबउद्धवपरमसुजान ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीभा
गवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कहतसोलमैंध्यायमैंप्रगटसूपइहदेस ॥ ज्ञानवीर्यप्रभावसबबर्णनकरीविशेषे ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवा
च॥चौपाई॥तुमहोपरब्रह्मअविनासी॥चिदानंदाविज्ञानप्रकासी॥आदिअंतमध्यनहींजाकौं ॥कोईभेदलहेन
हींताकौं॥१॥तुमहिंसकलजगतउपजावौ॥ तुमप्रतिपालौतुमाविनसावै॥तुमसबबाहिरअरुसबमांही॥ सदाअ

लिालिपीकहुंनाहीं॥२॥ज्हांवहांतुमहोहोएका॥इहसवभ्रमजोद्दष्टिअनेका॥ हेप्रभुयहजगअतिविस्तारा॥
उंचनीचवहूविविधप्रकारा ॥ ३ ॥ अरुयाजीवसतकारिमान्यौं ॥ विषयानिसौंवहूभांतिवुधान्यौ ॥ याकेए
कद्दष्टिक्यौंआवें ॥ केसेंसकलब्रह्मकरिध्यावै ॥ ४ ॥ ज्ञानवंततनजनहेंजेतें ॥ ब्रह्मद्दष्टिदेषतहेंतेतै ॥ ता
तैंअवतुमकरुणाकरौं ॥ निजविभूतिमोसौंविस्तरौं ॥ ५ ॥ तिनमेंदेषिसवनिमेदेषौ ॥ तवअद्वैतब्रह्मकरि
लेषौं ॥ सुनिउद्धवकेउत्तमवेन ॥ वोलहरिजीकरुणानेन ॥ ६ ॥ ॥श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपा
ई ॥ उद्धवप्रश्नभलीतुमकीन्ही ॥ जातेंपरंपरमगतिचीन्ही ॥ यहप्रश्नअर्जुनहीकारि ॥ तासोजामेंविधि
उचारि ॥ ७ ॥ तेहीविधिअवतोहीसुनाऊं ॥ ऐसेब्रह्मद्दष्टिउपजाऊं॥कौरवअरुपांडवकुरुषेत ॥ जबही
जुरेंभारतकैहेत ॥ ८ ॥तवअर्जुनकौंरवहुविषैं ॥ सकलवंधुअपनेकरिलेषैं ॥ इनसवहींनकोजोमेमारौं॥
आपुहिंआपनरकमेंडारौं ॥ ९ ॥ ऐसीविधआन्यौअहंकार ॥ आपुहिंमान्यौमारनहार ॥ तवमेंताहींज्ञा
नसमुडायौ ॥ ताकौंतवअज्ञानमिटायौं ॥ १० ॥ प्रश्नकरीअर्जुनतवएसी ॥ तुममोसोंकीनीहेंजेसी ॥
तातेंउत्तरकौंउचरौं ॥ याविधिब्रह्मद्दष्टिकौंकरौं ॥ ११ ॥ उद्धवमेसवहींनकोस्वामी ॥ अरुसवहीनकों
अंतरजामीं ॥ आपहुंतेंसवकोउपजाऊं ॥ सवपोषेसवकौंवरताऊं ॥ १२ सकलरहैरेआधीन ॥ मोही
मेसवहोवेलीन ॥ तातेंसवमेंदुजानाहीं ॥ यौंविभातिजानोंमनमांहीं ॥ १३ ॥ पारितोसोंविशेषसोंकहौं ॥ ते
रीद्वैतद्दष्टिकौंदहौं ॥ सवरक्षकनिमाहिमेंरक्षक ॥ तिनमेंकालसकलजेधक्षक ॥ १४ ॥ सोमेंप्रकृतिगु

णानिकीआदी ॥ पंचभूतमेंमेंभूतादि ॥ सूत्रसकलबेदनमेंजानों ॥ बडेतुमाहीमहत्तत्वहिंमान्यों ॥ १५॥ सबसूक्ष्मनिमांहिजीवदेषौ ॥ सबदुर्जयनिमांहीमनलेषौ ॥ वेदयज्ञनिमांहिंब्रह्मजानौ ॥ ओंकारमंत्रनिमें मांनों ॥ १६ ॥ छंदनिमांहीगायत्रीछंद ॥ मेंअकारअक्षरमेंवृंद॥ सबदेवनिमेंमघ्यपुरंदर ॥ सकलवसूमैमैंवैसंदर ॥ १७ ॥ नीलकंठएकादशहरमें ॥ विष्णुनामद्वादशदिनकरमैं ॥ तिनमेंभृगुजेसप्तमहाऋषी ॥ तिनमैंमनूजैसबैराजऋषी ॥ १८ ॥ देवऋषिनिमेंनारदजांनौ ॥ कामधेनुधेनुनमेंमानौं ॥ सिधनिमें कपिलस्वरूप ॥ पंक्षीयनिमांहिगुरुडममरूप ॥ १९ ॥ प्रजापतिमेंमेंहोदक्ष ॥ तिनमेंमकरजहांलौंमक्ष ॥ वादनिमांहेंअध्यात्मवाद ॥ सबअसूरनिमेंमेंप्रहलाद ॥ २० ॥ तप्तप्रकासमांहोंदिनेस ॥ जक्षरक्षगणामांहिंधनेस ॥ तिनमेंसोमसकलजेउडगन ॥ सबधातूमेंमेंहींकांचन ॥ २१ ॥ गजनिमामांहिंमेंगजएरावत ॥ मेंअनंगजेसृष्टिउपजावत ॥ तहांवरुणाजेसबजलजंत ॥ नागनिमेंममरूपअनंत ॥ २२ ॥ नरनिमाहींममरूपनरेस ॥ सर्पनिमांहिंवासुकीसर्पेस ॥ उच्चैःश्रवाहयनिमैंजानौं ॥ दंडधरनीतिनमेंजममानौ ॥ २३ ॥ सकलमृगनिमैमैंमृगराज ॥ सरितनमैंगंगासरिताज ॥ सबआश्रमनिमांहिंसन्यास ॥ वर्णनिमांहिविप्रममवास ॥ २४ ॥ सकलसरनमेंरूपसमुद्र ॥ सकलधनुषधारीनमैंरुद्र ॥ मेहोधनुषआयुधनिमाहीं ॥ परमनिवासमेरुमोमांहीं ॥ २५ ॥ तेअतिगहनहिमालयतिनमैं ॥ मेपीपलसबवनस्पतिनमैं ॥ मेपुरोहितनिमांहीवासिष्टः ॥ तहांवृहस्पतिजेत्रब्रह्मिष्टः ॥ २६ ॥ सेनापतिनमांहिंसेनानी ॥ धरमप्रवृत्तकसौब्रह्मा

जानी ॥सकलऔषधीनमैंजवजानौं ॥ पितरनिमांहींअर्यमामानौ ॥ २७ ॥ ब्रह्मयज्ञसबयज्ञनिमांही ॥ वृत
अद्रोहसमाकोंनाहीं ॥ वायूअग्निजलसूर्यवांनीं ॥ अस्मनएपटसोधकजांनी ॥ २८ ॥चतूरदेहआतमा
विचार ॥ ब्रह्मचारीनमेंसनतकुमार ॥ अस्त्रिनुमेंसतरूपारानीं ॥ पुरुषनिमेंस्वायंभूजानी ॥ २९ ॥ साव
धानतिनमेंसंवत्सर ॥ अभयठौरतिनमेंउरअंतर ॥ मेहोधर्मअभयकोंदान ॥ गुह्यनमेंप्रियमोनसमान ॥
३० ॥ त्रीयापुरुषसंजोगीजेतें ॥ ब्रह्माहूतेंउतरेसबतेतें ॥ सकलवानरनिमैंहनुमंत ॥ ऋतुनिमांहिममरूपव
संत ॥ ३१ ॥ मारगशिरमासनिमैंजानैं ॥ नक्षत्रमांहींअभिजितमानौं ॥ देवलअसीतरहितजेदुंदर ॥
कनलकौंससबहिनमैंसुंदर ॥ ३२ ॥ जुगनिमांहीसतजुगसेंनाम ॥ वेदनिमांहिवेदमेंसांम ॥ व्यासनमांही
व्यासद्वैपायन ॥ तिनमेंतुमजेंविष्णुपरायण ॥ ३३ ॥ कविनिमांहींकविशुक्रहिंजानौं ॥ सक्तिवंतमभयहत
नमानौं ॥ विद्याधरतिनमेंसुदरसन ॥ पद्मरागतिनमेंजेमणीगन ॥ ३४ ॥ सबतृणजातिनमैंकुसजांनौं ॥ हो
मवस्तमेंगोघृतमानौं ॥ तिनमैंधनजेसबव्यवसाय ॥ जयमार्गसबतिनमैंन्याय ॥ ३५ ॥ अंगसमाधीजो
गअंगनिमें ॥ मेहोक्षमाक्षमावंतातिनमैं ॥ धीरजमेंधीरजवंत ॥ मैंबलतिनमेंजेबलवंत ॥ ३६ ॥छलहींमां
हींछलमेहोजुप ॥ मेरेहेतकर्ममममरूप ॥ वासुदेवसंकरषणवीर ॥ प्रद्युम्नअरुआनिरुद्धसरीर ॥ ३७ ॥
नारायणहयग्रीवमहीधर ॥ नरहरिअरुजमदग्निपुत्रवर ॥ व्यूहार्चेननवपूजाजांनें ॥ वासुदेवतहामोकौंमानें
॥ ३८ ॥ तिनमेंथिरताजेसबभूधर पूरवचितनामतेअप्सर ॥ मेहोविश्वावसुगंधर्व ॥ धरणीमांहींगंधमेंसर्व

॥ ३९ ॥ रसजलमांहिशब्दआकाश ॥ रविशशितारनिमैंपरकास ॥तेजस्वानिमाहींपाकजानौं ॥ विप्रभक्तितिनिमैंबलीमानौं ४० ॥ वीरतुमांहिंअर्जुनसार ॥ मेसबउतपातिथितीसंसार ॥ इंद्रियमनबुध्यादिकजेतें ॥ मेरीशक्तिप्रवृतेतेतैं ॥ ४१ ॥ सबहेतून्हैंअर्थानिगहौं॥ तेजडातिनमैंचेतनरहौं॥शब्दस्पर्शरूपरसगंध ॥ तिनमैंपंचभूतसंबंध ॥ ४२ ॥ इंद्रियमनमहतत्वअहंकार ॥ त्रिगुणसहितएप्रकृतिविकार ॥ प्रकृतिपुरुषजहांकछुजेतौं ॥ मेरोरूपसकलहेतेतौं ॥ ४३ ॥ मोबिनकछुकछुहैंनाहीं ॥ मेहीप्रगटरहौंसबमांहीं ॥ जोप्रमाणगिणोमैंजबही ॥ तोतिनपारनपामोंतबही ॥४४॥ परिममनिरमितजेब्रह्मांड ॥ तिनकौंगनतपरैंनहींपंड ॥ तातैंकहौंविभूतिकहांलौं ॥ जोकछुमेरोरूपहेतहांलौं ॥ ४५ ॥ औरअबजुगतिविभूतिकहौं॥द्वैतदृष्टिएसीविधिदहौं॥लाजतेजक्षमाधनदान॥सुंदरताऐश्वर्यअरुज्ञान॥४६॥बलसौभाग्यधीरजजहांजहां॥ममविभूतिजानौतहांतहां॥एविभूतितोसोंकछुकहीं।अतिअपारकहिवेकोंरहीं॥४७॥ममथिरकाजकीरयहजानौं ॥ इहअज्ञानकैंढमतिमानौं ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ निश्चलकरिदेषोभगवान ॥४८॥ मनतेंसबआकारउतारौ ॥ चेतनमेंमेरोरूपबिचारौं ॥ एकअखंडितजहांतहांसोई ॥ आपापरदुजानहींकोई ॥ ४९ ॥ ऐसोंज्ञानब्रह्मकौपावौं ॥ ब्रह्महीपाईजगतनहींआवौं ॥ तनमनइंद्रियादिअरुप्राना ॥ थिरकारिजिननधर्योममध्याना ॥ ५० ॥ ताकेबहुतभांतिआचरना ॥ जपतपदानव्रतादिककरना ॥ काचेकलशभर्योजलजैसें ॥ पलपलश्रविजावेंसबतेसैं ॥ ५१ ॥ तातेंवचनकायमनप्राण ॥ सबकौंबंधकरैंममध्या

न ॥ मोहिध्यायिमैंमाहीसमावें ॥ तत्रसंसारमांहीनहींआवै ॥ '५२ ॥ दोहा ॥ ॥जोउद्धवतोसौंक
ह्यौयहविभूतिकौज्ञान ॥ त्यौंहिसूक्ष्मथूलसबदेषोश्रीभगवान ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेए
कादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेविभूतिवर्णनेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हंसउक्त
स्वधर्मपुनिभक्तिलक्षणाप्रीत ॥ कहीसतरमींध्यायमैंवर्णाश्रमकीरीत ॥ १ ॥ श्रीशुकवाच ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ दासनिमैंउद्धवनिजदास ॥ जाकेंहृदयज्ञानप्रकास ॥ जिनजीवनकोहितमनधरी ॥ तातेंप्र
श्नकृष्णसौंकरी ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रभूतुमकलआदिउचार्यौ ॥ भ
क्तिनिमितधर्मविस्तार्यौ ॥ वर्णाश्रमआदिकनरजेते ॥ तिनधर्मनिसौंलागेंतेतें ॥२॥ तिनमैंकोईभगतिहीपा
वें ॥ कोइकरमसिंधुबहिजावें ॥ तातेंतुमकरुणामयदेवा ॥ भाषोनरधरमनिकोभेवा ॥ ३ ॥ धर्मकारतज्यौं
आज्ञेभक्ति ॥ तुमरेंचर्णवाढेंअनुरक्ति ॥ छूटैकालजालभवकूप ॥ लहेतुमारोब्रह्मस्वरूप ॥ ४ ॥ जद्यपि
पुनिविधिसोंविस्तार्यौ ॥ जबप्रभुहंसरूपतुमधार्यौ ॥ परिबहूकालकाहितेंभयौ ॥ तातेंधर्मलीनव्हैंगयौ ॥
५ ॥ हेकछुऔरकरैंकछुऔरें ॥ जातेंजीवनपावेंठोरें ॥ तातेतुमकरुणाकरिभाषौ ॥ वहेंजाततेंजीवनिरा
षौ ॥ ६ ॥ अरुयहतुमहीजानहुंदेवा ॥ तुमबिनदूजोलहेंनभेवा ॥ तुमहीकहौंसुनोउरधरौं ॥ तुमरीराषौतु
महाकरों ॥७॥ ब्रह्महूंकोसभामुझारी ॥ वेदजहानितमूरतिधारी ॥ तहांऊंयहकोईनाहिंजानें ॥ ज्यौंबदे
सोंसबैबपानै ॥ ८ ॥ अरुयहकैसेंकरिंमनआवें ॥ कर्मकरेतिहिंभक्तिपावें ॥ अरुतुमयाहीकौंमनधारौ

॥ जातेनिजधर्मनिविस्तारौ ॥ ९ ॥ जोवैकुंठप्रयाणौकरीहैं ॥यहनिजधर्मनहींउचरीहैं ॥ तापीछैंकोईनहींक
हैं ॥ यहनिजधर्मगुनहीरहैं ॥ १० ॥ तातैंअबतुमकरुणाकरौ ॥ यहनिजधरमबेगिविस्तरौ ॥ ऐसीसुनोउ
द्धवकीबानी ॥ आपजुबोलेसारंगपानी ॥ ११ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ध
न्यधन्यउद्धवजनमेरे ॥ दूजोनाहिंबराबरतेरें ॥ मेरोनिजजनकहियैसोई ॥ हेतपराएवरतेजोई ॥ १२
॥ तातैंतुमपरकारजकऱ्यौ ॥ मोतैंपरमधर्मविस्तऱ्यौ॥उत्धवपरमधरममममभक्ति॥औरसकलतैंकरौविरक्ति
॥ १३ ॥ भक्तिविनाजोईजोधर्म ॥ सोसबजानौंपरमअधर्म ॥ जबमेंकीयोप्रथमसंसार ॥ तबनहींहूतो
कर्मविस्तार ॥ १४ ॥ जेईजेमानवतनधरैं ॥ मोहीसेईतेतेउधरैं ॥ व्हैकृत्यकृत्यलहैंममधाम ॥ तातेंसो
कृतजुगसैंनाम ॥ १५ ॥ उम्कारुरूपतबवेद ॥ ऐसेंकछूनहूतेंभेद ॥ सबइंद्रियमननिहचलकरैं ॥
मेरोध्याननिरंतरधरैं ॥ १६ ॥ ऐसैंसबपापानिपरीहरैं ॥ सबमेरेचर्णनिअनूसरैं ॥ त्रेताविषैंभयमातिमंद
विपयानितेमानैंआनंद ॥ १७ ॥ तिननिमितबहूउद्यमकरैं ॥ राजसतैंपापनिविस्तरैं ॥ तबातिनहेतबेदात्रि
स्तारैं ॥ बहुतभांतिकेकर्मनिवारैं ॥ १८ ॥ वर्णाश्रमभेदउपजाये ॥ न्यारेन्यारेकर्मग्रहाये॥ आपनौधरम
त्यागजोकरैं ॥ सोनरजाईनरकमेंपरैं ॥ १९ ॥ ऐसैंबहूविधिभयदिषायौ ॥ थोरेकर्मनिमेंठहरायौ ॥ ता
मेंषाव्यैउत्तमभजन ॥ मोविनसकलकर्मकौतजन ॥ २० ॥ बहूरोबहूआरंभनिचहैं ॥ राजसतैंनहींनिश्च
लरहैं ॥ तिनकेहेतयज्ञउपजायौ ॥ बिष्णुरूपकहीसबनिसुनायौ ॥ २१ ॥ बिष्णुजजनकीजेतामाहीं ॥ द्वै

तद्वाष्टिअनिजैंनाहिं ॥ मेंमुषहूंतेंविप्रउपजायौ ॥ क्षात्रिबाहुनितैंजनायौ ॥ २२ ॥ जंघनवैस्यपदनतेंसूद्रा ॥
पदानिचैंऔरैंसत्रक्षूद्रा ॥ पुनियहस्तजंघनतेंकीयौ ॥ ब्रह्मचर्यउरसंभवलीयौ ॥ २३ ॥ वक्ष स्थलउपजौव
नत्रास ॥ मस्तकहुतेंरच्यौसन्यास ॥ तातेंपितासकलमेंएक ॥ मोतेंउपज्यौसकलअनेक ॥ २४ ॥ ता
तेंमोंहीमेंटिजोकरैं ॥सोसत्रजाईवंधनमेंपरैं ॥ जाजाअंगहूतेंज्योउपज्यौं ॥ त्योंत्योंताकौंलक्षणनिपज्यौं ॥
॥ २५ ॥ ऊंचेअंगहूतेंसोंऊंचौ ॥ नीचेअंगहूतेंसोनीचौ ॥ तिनकेबहुविधिसयसूभाव ॥ तातेंउपजैंनाना
भाव ॥२६॥ समदमसतक्षमासंतोप ॥ सदादयालनउपजेरोप॥ तपअरुसौचनमूममंमभाक्ति ॥ इनलक्षण
निविप्रअनूराक्ति ॥ २७ ॥ क्षमातेजजलउद्यमधीर ॥ सूरउदारअचलगंभीर ॥ विप्रभक्तमेरोदृढभाव
॥ एक्षात्रिकेभएसूभाव ॥ २८॥ बुधीआस्तिकदानअदंभ ॥ विप्रभक्तउद्यमआरंभ ॥ वैस्यभयोलीने
एलक्षण ॥ मंदबुद्धिपरमहाविचक्षण ॥ २९ ॥ गाईअरुतिहूंवर्णकोसेवैं ॥ तिनतैकछूलहेंसोलेवै ॥ सम
मंतोपकपटतानाहीं ॥ ऐसेंलक्षणशूद्रनिमांहीं ॥ ३० ॥ मिथ्यावादहिंसाअरुचोरी ॥ बुद्धिनास्तिकहृदैक
ठोरी ॥ कामक्रोधअरुलोभविकारा ॥ वर्णनीचकैंयहप्रकारा ॥ ३१ ॥ कामक्रोधमदतृष्णांरहितसत्यपि
गापरस्वारथसहीत ॥ जीवदयाअरुतैंअधर्म ॥ यहसबकौंसाधारणधर्म ॥ ३२ ॥ ब्रह्मचर्यकेधर्मनि
कहीं ॥ जातेभाक्तिउगाईचहीं ॥ विप्रक्षत्रीअरुवैस्यानित्ररना ॥ इनकौंसकलवेदविधिकरनां ॥ ३३ ॥
गर्भाधानादिकसंसकार ॥ तिहूंबरणकौंयहआचार ॥ जबतैंबहूरिजनैंउपजावें ॥ तबतैंगुरुकैंनिकटरहावें

॥ ३४ ॥ बहूविधिगुरुकीसेवाकरैं ॥ वेदपढैंअर्थनिउधरैं ॥ जनेउमेषलाकरजपमाला ॥ दंडकमंडलु
अरुमृगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्रतनमलननिवारैं ॥ सीसजटाहस्तनिकुशधारैं ॥ आसनचंचलकदै

नकरैं ॥ लोकवार्तांत्हदेनहीधरैं ॥ ३६ ॥ मूत्रपुरीषत्यागअसनाना ॥ हामेअरुजपभोजनजलपाना
इनमेंबचननहींउचरैं ॥ नषकेसादिकदूरनकरैं ॥ ३७ ॥ सदानिरंतरदृढव्रतधारैं ॥ कबहूंभूलिबिंदुन
हींडारैं ॥ जोआपहूतैंजावैंकबहीं ॥ बहूतभांतिपछितावैंतबहीं ॥ ३८ ॥ करिअसनानाअरुप्राणायाम ॥ जापक
रैंत्रिपदीसेनाम ॥ अग्निअर्कअरुविप्रगाई ॥ सुरमुनिवृद्धनिनमीनकराई ॥ ३९ ॥ संध्याउपासनकरैत्रि
काल ॥ वचननबोलेहालनचाल ॥ गुरुकौंमेरौरूपहीजानैं ॥ नरकोबुधीकदैनहींआनैं ॥ ४० ॥ सर्व
देवमयगुरुकौंलेषैं ॥ तनकेकछूआचरणनदेषैं ॥ भिक्षाआदिऔराकछुजोई ॥ गुरुकौंआनिसमर्पैसोई
॥ ४१ ॥ जबगुरुताकौंआज्ञादेवैं ॥ तबप्रसादआपुहीलेवैं ॥ बैठैंठाढैंआवतजात ॥ भोजनसयनरातिप्र
भात ॥ ४२ ॥ नीचभांतिगुरुसेवाकरैं ॥ अंजुलीसौंपीछैंअनुसरैं ॥ ऐसेंव्रतअखंडितधारैं ॥ मनहूंमैंन
हिभोगविचारैं ॥ ४३ ॥ ऐसैंकुलगुरुवरतैंसोई ॥ ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई ॥ पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं
॥ तोगृहस्थतहांनहीसंबाहैं ॥ ४४ ॥ गुरुकौंदेहसमर्पणकरैं ॥ वेदविचारहृदेमैंधरैं ॥ गुरुअग्निआप
सबमांही ॥ सेवेमोहीअवरकछूनाहीं ॥ ४५ ॥ जुवतिअरुजुवतिनकेसंगी ॥ इनकौंकदैनहोतप्रसंगी

॥ दरसपरसबानीपरहास ॥ त्यागैंदुरमानिअतित्रास ॥ ४६ ॥ सौचआचमनऔरअसनान ॥ स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपाभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणइक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह
वसकरैं ॥ मेरेचरणत्द्ददेमेंधरैं ॥ अरुममभजनसवनिकौधर्म ॥ भजनविनासवधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे
ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥द्दढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैंतवसोई ॥ ४९
॥ ऐसीविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकोंभजैं ॥ अरुजोकवहींहोईसकाम ॥ तवसोकरैंजुवतिअरु
धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ केअधीकारपाईसंन्यास अरुजोउपजैमेरीभक्ती ॥ तोन
हींकरैंकहूंआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अवगृहस्थकोधर्मसु
नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममैंआवें ॥ गुरु
तेंवेदपढेसवजवहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितवहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तवविधिसोंआश्रम
हीकरैं ॥ तवदेपैंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्यौंदेपैंअपनोअधिकार ॥
त्यौंहिकरेंव्यवहारविचारै॥विप्रविवाहहैंचारौंवरन॥विप्रकोंछोडिछत्रिकोंकरन॥५५॥ वैस्यविविवाहवैस्य
अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकहिकरैं॥वहुतानिकष्टनहींविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ
अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकौंवेदपढावन॥५७॥पारिहैतीनवृत्ति
हैऐसैं ॥ अग्निमध्यजलवरपैजैसैं ॥ ईनतैंब्रह्मतैंजनहींरहैं तातैंइनकोंविप्रनग्रहैं ॥ ५८ ॥
करिकैशिलादेहनिरवाहैं ॥ तातैंआधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

॥ ३४ ॥ बहूविधिगुरुकीसेवाकरैं ॥ वेदपढैंअर्थनिउधरैं ॥ जनेउमेषलाकरजपमाला ॥ दंडकमंडलु
अरुमृगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्रतनमलननिवारैं ॥ सीसजटाहस्तनिकुशधारैं ॥ आसनचंचलकदै
नकरैं ॥ लोकवार्तात्हदेनहीधरैं ॥ ३६ ॥ मूत्रपुरीषत्यागअसनाना ॥ हामेअरुजपभोजनजलपाना
इनमेंबचननहींउचरैं ॥ नषकेसादिकदूरनकरैं ॥ ३७ ॥ सदानिरंतरदृढव्रतधारैं ॥ कबहूंभूलिबिंदुन
हींडारैं ॥ जोआपहूंतैंजावैंकबहीं॥बहूतभांतिपछितावैंतबहीं ॥३८॥ करिअसनानाअरुप्राणायाम॥जापक
रैंत्रिपदीसेनाम ॥ अग्निअर्कअरुविप्रगाई ॥ सुरमुनिवृद्धनिनमीनकराई ॥ ३९ ॥ संध्याउपासनकरैत्रि
काल ॥ वचननबोलेहालनचाल ॥ गुरुकौंमेरौरुपहीजानैं ॥ नरकोबुधीकदैनहींआनैं ॥ ४० ॥ सर्व
देवमयगुरुकौंलेषैं ॥ तनकेकछूआचरणनदेषैं ॥ भिक्षाआदिऔराकछुजोई ॥ गुरुकौंआनिसमर्पैसोई
॥ ४१ ॥ जबगुरुताकौंआज्ञादेवें ॥ तबप्रसादआपुहीलेवैं ॥ बैठेंठाढेंआवतजात ॥ भोजनसयनरातिप्र
भात ॥ ४२ ॥ नीचभांतिगुरुसेवाकरैं ॥ अंजुलीसौंपीछेंअनुसरै ॥ ऐसेव्रतअखंडितधारैं ॥ मनहूंमैंन
हींभोगाविचारैं ॥ ४३ ॥ ऐसैंकुलगुरुवरतेंसोई ॥ ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई ॥ पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं
॥ तोगृहस्थतहांनहींसंबाहैं ॥ ४४ ॥ गुरुकौंदेहसमर्पणकरैं ॥ वेदविचारहृदेमेंधरैं ॥ गुरुअग्निआप
सबमांही ॥ सेवेमोहीअवरकछूनाहीं ॥ ४५ ॥ जुवतिअरुजुवतिनकेसंगी ॥ इनकौंकदैनहोतप्रसंगी
॥ दरसपरसबानीपरहास ॥ त्यागैंदुरमानिअतित्रास ॥ ४६ ॥ सौचआचमनऔरअसनान ॥ स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपाभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणईक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह
वसकरैं ॥ मेरेचर्णत्हृदेमेंधरैं ॥ अरुममभजनसबनिकौंधर्म ॥ भजनविनासबधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे
ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥द्दढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैंतबसोई ॥ ४९
॥ ऐसोविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकौंभजैं ॥ अरुजोकबहीहोईसकाम ॥ तबसोकरैंजुवतिअरु
धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ कैअधीकारपाईसन्यास अरुजोउपजीमेरीभक्ती ॥ तोन
हींकरैंकहूंआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अबगृहस्थकोधर्मसु
नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममैंआवें ॥ गुरु
तेंबेदपढेसबजबहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितबहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तबविधिसोंआश्रम
हीकरैं ॥ तबदेषेंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्योंदेपेंअपनोअधिकार ॥
त्योंहिकरैंव्यवहारविचारे॥विप्रविवाहहैंचारौंवरन॥विप्रकोंछोडोछत्रिकोंकरन॥५५॥ वैस्यविविवाहवैस्य
अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकाहिकरैं॥बहुतानिकष्टनहोंविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ
अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकौंवेदपढावन॥५७॥पारिहेतीनवृत्ति
हैऐसैं ॥ अग्निमध्यजलवरपैजैसैं ॥ ईनतेंब्रह्मतेंजनहीरहैं ताॉतैंइनकोंविप्रनग्रहैं ॥ ५८ ॥
करिकैंशिलादेहनिरबाहैं ॥ तातैंअधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

वईयैं ॥ ५९ ॥ बहूतभांतिकष्टहिंतपकरीयैं ॥ हरिभजीहरिकौंअनुसरीयैं ॥ शिलाव्रतकरिराषैंदेह ॥ न
हींममताजुवतिसुतगेह ॥ ६० ॥ अतिथिपालनौरजतमनाहीं ॥ मोहीकौंदेषैंसबमाही ॥ जीवन्मुक्तहोई
सोविप्र ॥ मेरेचर्णनिपावैक्षिप्र ॥ ६१ ॥ जोकोईममभक्तिकरैं ॥ ताकौंकछूआपदापरै ॥ सोआपदामि
टावैंकोई ॥ सोमेरोहितकारीहोई ॥ ६२ ॥ ताकौंमैंउधारौंएसैं ॥ नावनसौंअंबोनिधजैसें ॥ परिक्षत्री
निजधर्मविचारैं ॥ सकलपालनाहित्द्दैधारैं ॥ ६३ ॥ क्षित्रीसबकेदुषनिहरैं ॥ सकलजीवप्रतिपालनक
रैं ॥ सोक्षित्रीसुरलोकहिजावैं ॥ वासवसहीतमहासुषपावैं ॥ ६४ ॥ जोआपदाविप्रकौंपरैं ॥ तोसोंबनि
जवृत्तिकौंकरैं ॥ जद्यपिषडगवृत्तिहैंउंची ॥ परिसोअतिहिंसातेनीची ॥ ६५ ॥ जोक्षत्रीकौंपरैंविपत्ती ॥
तोसोंगहैंवनिजकीवृत्ति॥किंवाविप्रवृत्तिकौंगहैं ॥अथवामृगयाकरीनिरवहैं॥६६ ॥वैश्यहीपरैंआपदाजबहीं
शूद्रवृत्तिसौंधीरैंतबही ॥ अरुजोविपतिशूद्रकौंपरैं ॥ तोप्रतिलोमजूवृत्तिहिकरैं ॥ ६७ ॥ याविधिजबही
मिटैविपत्ति ॥ तबहीगहैंआपनीवृत्ति ॥ पंचजज्ञएप्रतिदिनकरणें ॥ ग्रहस्थकौनाहीपरिहरणें ॥ ६८ ॥
करिकैंपाठऋषिनकोभजैं ॥ करिकछुहोमदेवनिकौभजैं ॥ भूतनिबलिशुधासौंपितर ॥ जलअन्नादीसकल
देसोनर ॥ ६९ ॥ तिनसबनमोकौंजानैं ॥ औरसबनिपरिकरुणाआनैं ॥ जोकछुएसहजहिंधनपावैं॥
किंवान्यायतैंउपजावै ॥ ७०॥ तासौलोगआपनौंपोषैं ॥ औरयज्ञकरिमोहीसंतोषैं ॥ जेतोलागतघरमेंहो
ई ॥ तेतोइधनराषेसोई ॥ ७१ ॥ औरसकलममहेतलगावैं ॥ भूलिनद्रूजैंमारगजावे ॥ जद्यपिरहैंकुटुं

बहूंमांहीं ॥ तोहूंलिऐंकदेकहूंनाहीं ॥ ७२ ॥ निशदिनत्द्दयकरैंविचार ॥ मिथ्याजानेंसबपरिवार ॥
अरुपुत्रबंधूसबएसैं ॥ जलकेनिकटबटाऊंजेसें ॥ ७३ ॥ एसबयौंहिप्रतिदेहआवें ॥ ज्योंनिद्राप्रातिसु
पनापावै ॥ ज्यौंज्यौंजागेवारंवारा ॥ त्यौंत्यौंमिटैंसूपनव्यवहारा ॥ ७४ ॥ यौंहीप्रतिदेहहिंएआवें ॥ देहत
जैसबतितजावै ॥ अस्यौंहीस्वर्गादिकलोक ॥ पायेहर्षगएअतिसोक ॥ ७५ ॥ तातेंसकलवासनादहैं
अतिथीसमानभवनमैंरहैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ सबमायाबंधनकरिमानैं॥ ७६ ॥ सबकर्मनिमेरें
हेतकरैं ॥ मोविचअंतरायपरिहरैं ॥ प्रेमभावहढउरमैंराषैं ॥ औरसकलह्रदैतैंनाषैं ॥ ७७ ॥ एकपुत्रभ
एवनजावें ॥ किंवाग्रेहहीमाहीरहावें ॥ एसोग्रहीसुगतकरिमानौ ॥ औरकछुत्द्दैनहींआनौ ॥ ७८ ॥
अरुजोहोईभवनआशक्ति ॥ जुवतीसुतादिनुसोंअनुरक्ति ॥ विषयालंपटतृष्णाआतूर ॥ ज्ञानरहीतकरम
नमेंचातूर ॥ ७९ ॥ आपुहिपरमसताहीनजानैं ॥ औरकीचिंताउरआनैं ॥ भाईवृद्धपिताहेमेरौ ॥ मोवि
नदुषलहैंबहूतेरौ ॥ ८० ॥ यहअबलालघुसंततजाकी ॥ मोबिनहोईकहांगतताकी ॥ एअनाथमोबिनस
बवाला ॥ क्यौंकरिजीवैंअतिविहाला ॥ ८१॥ मोबिनईनहींकोनूप्रतिपालैं ॥ कौंनविविधदुपनिकौंटालैं॥
ऐसैंनिशादिनआनैंचिंता ॥ कबहूंनहींहोवैंनिहचिंता ॥ ८२ ॥ कदेंनसुषपावेयालोक ॥ ग्रसोरहेंचिंताभ
यसोक ॥ याविधिचिंताकरतअपारा ॥ नरकहींजावैंवारंवारा ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मच
र्यग्रहचर्यकौंमेंभाष्यैंइहधर्म ॥ जातेंउद्धवअैारकछुसोसबजानअधर्म ॥ ८४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवते

महापुराणएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टादशमीध्यायमेंज्ञानप्रस्थसन्यास ॥ अधिकारविशेषकरतद्गतकरतप्रकास ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥अबमेंकहूंधर्मबनवास ॥ अरुअधिकारसहीतसंन्यास ॥ जातेंमेरीभक्तिपावें ॥ भक्तीपाईममचर्णनिऔवें ॥ १ ॥ बरषपचासहूंतेउपरांत ॥ तबवनजाईरहेंएकांत ॥ नारीसुतनमेंरहनेंदेई ॥ जोविधिबनेंसंगतोलेई ॥ २ ॥ कंदमूलफलवृतहींकरें ॥ वलकलमृगछालातनधरें ॥ त्रणपताकीसिज्यासंवारे ॥ इंद्रियनिकेंसबअर्थनिवारें ॥ ३ ॥ केसरोमनषदूरजनकरें ॥ देहदंतमलनहींपरिहरें ॥ भूमिशयनत्रिकालअस्नान ॥ मलनउतारेंमुसलसमान ॥ ४ ॥ ग्रीषमऋतुपंचाग्निसाधें ॥ वरषामेंछायानहींबाधें ॥ सीससकलजलधारासहें ॥ सीतकालजलसायररहें ॥ ५ ॥ एसीभांतिकरेंतपदुष्कर ॥ द्वंद्वनव्यापेंज्योंजलपुष्कर ॥ अग्निपकऋतुपकफलादी ॥ भोजनलघुपवित्रअनादी ॥ ६ ॥ मुसलउषलकेपाषान ॥ केईदंतनिसोंषोटेंधान ॥ देहजीवकाआपुहींआनें ॥ अधिकनग्रहेंसंचनहींजानें॥ ॥ ७ ॥ तिनहींतिनसोंमोकोंजजें ॥ औरजज्ञवनवासीतजें ॥ अग्निहोत्रअरुपूरणमास ॥ सोहीदरसअरुचातुरमास ॥ ८ ॥ इनसबहीनकोंममहेतकरें ॥ मोबिनऔरत्त्वदेनहींधरें ॥ योंतपकरीमोकोंआराधे ॥ प्राणदेहइंद्रियमनबाधें ॥ ९ ॥ योंव्हेंसुधलहेंममभक्ति ॥ औरात्रिगुणविस्ताराविरक्ति ॥ योंतबहींममचर्णनिवावें ॥ केईक्रमब्रह्मलोकव्हेंआवें ॥ १० ॥ अरुजोएसेंकष्टहकिरें ॥ पारिकामनात्त्वदेमेंधरें ॥

तासममूरषदूजानाहीं ॥ ताकेवृथासकलश्रमजांहीं ॥ ११ ॥ यौंपंचौत्तरवरषनिपाछैं ॥ ग्रहैसुधसन्यास
होय्प्राछैं ॥ सकलक्रियाकौंत्यागहिंकरैं ॥ मनसोममसेवाअनुसरैं ॥ १२ ॥ कर्मरचितसबलोगनिजानैं
॥ तातैंछिनभंगुरकरिमांनैं ॥ तांहींहूंतेंकरैंसबत्याग ॥ मनवचक्रमसौंदृढवैराग ॥ १३ ॥ वेदविहितविधि
मोकौजजैं ॥ ऋत्विजकौंसर्वसदैतजैं ॥ जबकोईसन्यासहींकरैं ॥ तबहींसुरविघ्नविस्तरैं ॥ १४ ॥
परियहविघ्नगणेकछुनाहीं ॥ मेरेचर्णधरैंउरमांहीं ॥ जौंकबहींकछुवस्त्राहिराषैं ॥ तोकोपीनश्रौरस
बनाषैं ॥ १५ ॥ दंडकमंडलकरमैंधारैं ॥ ज्यौंमिलैंत्यौंनहींश्रौरविचारैं ॥ देषिदेषिधरणिपगधरैं॥
वस्त्रछानीजलपानहींकरैं ॥ १६ ॥ संतवंतबानीकौंबोलैं ॥ त्हदयविचारकढैंनहींडोलैं ॥ मौनधारीबानी
कौंदंडे ॥ अरूकायाकेकर्मनिषंडे ॥ १७ ॥ प्राणायाममनहींबसकरैं ॥ सबईद्रियअर्थनिपरिहरैं ॥ अ
रूएचिन्हनहींजामांहीं ॥ भेषधरैंजतीसोंनाहीं ॥ १८ ॥ भिक्षाकरैंसतघरविप्र ॥ श्रौरकहूंगहैंनहिंक्षिप्र
॥ सोउविप्रचतुरविधजेते ॥ जानिरहैंविप्रकौंतितैं ॥ १९ ॥ विप्रकहिंजैंदशप्रकार ॥ तिनकौंतुमसौंकहौं
विचार ॥ देवविप्रऋषीविप्रहींजानौं ॥ विप्रविप्रअरूक्षत्रिसमानौं ॥२०॥ वैश्यशूद्रअरूएकांबिडाल॥पसु
अरूम्लैंछविप्रचंडाल॥ भिक्षानितअरूपढैंपठावैं॥सकलअर्थअरूतत्वबतावैं २१ इंद्रियजीतसूशीलसंतोष
॥ देवविप्रसौंनिर्गतरोष ॥ तपअरूसत्यअहिंसाकरैं ॥ दिनदिनपटकर्मनिअनुसरैं ॥ २२ ॥ काललो
पकबहुंनहींहोई ॥ ऋषिब्राह्मणकहियतूहेंसोई॥बिनाहिंस्याफलफूलानिल्यावैं ॥ तिनहींसौदेहवरतावैं ॥२३॥

वरपासीतउष्णसवसहैं ॥ विप्रविप्रानिस्यशुद्रागहैं ॥ अस्वादिकनिकरैंआरोह ॥ रणमेंसूरतजैंतनमोह ॥
२४ ॥ नीतिसहीतठानैंआरंभ ॥ क्षत्रीविप्रत्वदैनहींदंभ ॥ अरुजोउद्यमबनिजकौंकरैं ॥ पषुराषेषेतीवि
स्तरैं ॥ २५ ॥ सोवहवेस्यब्राह्मणकहीजैं ॥ तातैंलेभिक्षानाहिंगहीजैं ॥ तेललूनघृतदूधअरुलक्षा ॥ ति
लअरुनीलमहीमधूमक्षा ॥ २६ ॥ इनकौंबनिजकरतुहैंजोई ॥ क्षुद्राविप्रकहियतुहैंसोई ॥ सबभूतनिकैं
द्रोहहिंकरैं ॥ सबकैंछिद्रनिदेषतफिरैं ॥ २७ ॥ प्रतिदिनहिंसोसोअधिकार ॥ बिप्रकहावेसोमंजार ॥
भक्षअभक्षअकारजकारज ॥ गम्यअगम्यनलषैंअनारज ॥ २८ ॥ कृतघनसकलपशुनकैंलक्षण ॥
सोपशुब्राह्मणकहेंविचक्षण ॥ वापीकूपतलावफुडावैं ॥ वनबागादिकनासकरावैं ॥ २९ ॥ संध्याअरुअस
नाननजानैं ॥ एसौविप्रमलेछबषानैं ॥ निंदकलोभीपरधनहरैं ॥ निरदयक्रूरापिसनताकरैं ॥ ३० ॥ सो
चंडालविप्रकरिमानैं ॥ ऐसेंदशविधिविप्रनिजानैं ॥ तातैंउत्तमभिक्षाकरैं ॥ औरसकलदूरपरिहरैं ॥ ३१
सातघरनितैंभिक्षालावैं ॥ ताहिकरिसंतोषउपावैं ॥ सोलेजावेनदीतडाग ॥ तातैंकछुकरैंएकविभाग ॥
३२ ॥ कोइमागेताकोंदेई ॥ केजलमांहिंप्रवाहकरैंतेई ॥ विचरैंधरणीहोइनिहसंगा ॥ कदैंकछुनसंवा
रैंअंगा ॥ ३३ ॥ तनमनइंद्रियनिग्रहकरैं ॥ मेरोरूपत्वदैमैंधरैं ॥ निशदिनरहेंआत्माराम ॥ विषयसु
षनिकौंसुनैंननाम ॥ ३४ ॥ समदरसीअरुधीरजवंत ॥ सदारहैंनिर्भयएकांत ॥ मेरोभावभयौअतिसूध
॥ परमविवेकीज्यौंजलदूध ॥ ३५ ॥ आपुहिमोहिविचारैंएक ॥ कदैंनदषेभूलिअनेक ॥ आतमअंसब्रह्मकौंजा

नौं॥बंधमुगतदोउभ्रममानौं॥ ३६॥बंधनजबइंद्रियनिवसहोई॥मुगतइंद्रियनबंधेसोई ॥ऐसैजानीइंद्रियनी जीतैं॥मोहीसुमरीतेकालव्यतीतैं॥ ३७॥दहूंलोकतेंहोइविरक्ति॥तनहूंनहींहोवेआसक्ति॥पुरग्रामादिकआ इजोपरै॥भिक्षाअर्थप्रवेसहिकरै॥ ३८॥देसपवित्रसैलबनसरीता॥वानप्रस्थजहांआचरता ॥ तहांतहांनितहीं चलीजावे॥तिनआश्रमनिभिक्षापावैं॥ ३९॥तिनकौंलहैंसिलाकौंअन्न ॥तातेंहोवेमनप्रसन्न॥ताहींतेंनिरमलता ग्रहैं ॥ उपजैज्ञानसकलमलदहैं ॥ ४०॥ इंद्रियअर्थनिसत्यनदेपैं ॥ छिनभंगुरसबनस्वरलेपैं ॥ तातेंस बतेंग्रहेंविरक्ति ॥ नहींउद्यमनविषैंआसक्ति ॥ ४१ ॥ यहसबअहंकारकृतजानैं ॥ आत्मविपैसुपनसब मानैं ॥ कदैनहींत्हदयचिंतवनकरैं ॥ मनवचक्रमदूरिपरिहरैं ॥ ४२ ॥ ऐसोविधजबउपजैज्ञान ॥ व्है विरक्तजैसबआन ॥ मेरीभक्तित्हदैमेंआवैं ॥ तबसबवर्णाश्रमछिटकावैं ॥ ४३ ॥ विधिनिषेधदोउभ्रम जानैं ॥ वेदस्मृतिकीसंकनमानैं ॥ अतिबुद्धिबालकसमरहैं ॥ विधिनिषेधकछुकहेनगहैं ॥ ४४ ॥ सबज्ञा नेपरिजोउनमंत ॥ चैतनमयादिसेजडवंत ॥ पुष्पीतबानीरतिनहींहोई ॥ कबहूंवादनठानैंसोई ॥ ४५ ॥ बाहरमध्यएकसमरहैं ॥ कबहूंकोईपक्षनहींगहैं ॥ ज्यौंज्यौंकहैंसुनेत्यौंत्यौंही ॥ उत्तमतानहींत्यागेंवयौं ही ॥ ४६ ॥ काहुहूंतेंउदवेगनआनैं ॥ अरुकाहूकेंइंआपुनठानैं ॥ निंदाआदिसुनेदुरवेन ॥ अंतरध रैनिरंतरचैन ॥ ४७ ॥ काहूकौंआपमाननकरैं ॥ मनवचकर्मसमानविस्तरैं ॥ पशुसमानवैरादिकनजानैं ॥ सकलविकारदेहकैंमानौं ॥ ४८ ॥ ज्यौंआत्मअपनेतनमांही ॥ सोईसबमेंदूजानाहीं ॥ ज्यौंनहूघटनि

माहिसत्रिएक ॥ नटनिसंगज्ञानियेंअनेक ॥ ४९ ॥ तातैंइष्टअनिष्टहिंकरैं ॥ सोसबअपुहीकौंविस्तरैं
तातैंआतमबुधहिराषैं॥भेददेहकृतसोसबनाषैं॥५०॥असमेसमेभोजनहींआवैं॥तोहूकछुनहींमनमैल्यावैं॥क
रमरचितसबदेहानिजानैं॥तिनहींतैंसबदुषसुषमानैं॥५१॥तेसबसुषदुषकर्मसरीरा॥योंआतमेंमज्यौंमृगनीरा
॥ केवलअहारहीनहीनाषैं ॥उद्यमहूंकरिप्राणनिराषैं॥ ५२ ॥ प्राणनिराषेंऽहेंविचारा ॥ लहेमोहिछूटैसं
सारा ॥ जोमेरीइच्छातैंआवैं ॥ उत्तममध्यमजोकछूपावैं ॥ ५३ ॥ ज्यौंअसनवस्त्रादिकचहैं ॥ जेसो
आवैतेसोगहैं ॥ प्रियअप्रियकीबुद्धिनआनैं ॥ एदोउमिथ्याकरिमानैं ॥ ५४ ॥ कांइटेकनमनमैंधरैं ॥
मोबिनऔरसकलपरिहरैं ॥ सोचआचमनऔरअसनाना ॥ औरैंकछूआचर्णहिनाना ॥ ५५ ॥ ते
कछूसंकातैंनहिंकरैं ॥ जोकछूसोईइछाआचैरं ॥ ज्यौंमेरेश्रुतिकौंभयनाहीं ॥ दोउभ्रमजानतहोंमाहीं ॥
५६ ॥ परितथापिकर्मनिआचरौं ॥ लोकनिकौंहितमनसैंधरौं ॥ यौंज्ञानीविधिकिंकरनाहीं ॥ विधिनिषेध
भ्रमजानैंमांही ॥ ५७ ॥ पारिइछाआपनीआचरैं ॥ लोकनिकोंहेतत्ददैमैंधरैं ॥ ताकौंभिददृष्टिकहुंना
हीं ॥ ज्ञानदृष्टिदेखतहैंमाही ॥ ५८ ॥ पूर्वसंसकारहेजोलौं ॥ देहमांहीसोबरतेतोलौं ॥ बहूरींभवमेंनहीं
आवैं ॥ मेरौनिजनिर्मलपदपावैं ॥ ५९ ॥ अरुजाकौंउपजैवैराग ॥ कर्योचाहेआभवकोत्याग ॥ पारि
ममभजनजुक्तिनहींपावैं ॥ सोसतगुरकीसरणेआवैं॥६०॥श्रमबिनालैहेंसोजुक्ति ॥पावैंमोहीलहेभवमुक्ति
गुरुकौंब्रह्मरूपकरिदेषैं ॥ मानवबुद्धिकदैंनहिलेषैं ॥ ६१ ॥ श्रद्धासहितअसूयातजैं ॥ मनवचक्रमनिरंत

रभजैं ॥ ज्यौंलगींब्रह्मविचारनपावैं ॥ त्यौंलगीगुरुतजीकहूंनजावैं ॥ ६२ ॥ पीछैंज्योंजानेत्यौंरहैं ॥ परम
हंसकेधर्मनिगहैं ॥ अरिजिनषड्रिपुजीतेनाहीं ॥ इंद्रियअर्थविचारतमांही ॥ ६३ ॥ चंचलबुद्धिनज्ञानवै
राग ॥ ताकौंसकलवृथाहैत्याग ॥ भेषदिषाईजीवकाकरैं ॥ ताकौंदोषकह्यौंनहींपरैं ॥ ६४ ॥ देवपितर
ऋषिभूलिननाषैं ॥ तिनकौंरिणअपनेसिरराषैं ॥ अंतरगतिमैंताहींछिपावैं ॥ आपहिवांचैबंधउपावैं ॥
६५ ॥ सोशुपकौंनलहैयालोक ॥ अरुयौंहिभृष्टहोईपरलोक ॥ एहैंवर्णाश्रमकैधर्म ॥ इनतैंभक्तिलहैंदं
हिकर्म ॥ ६६ ॥ अबचार्यौंकेधर्मप्रधान ॥ न्यारेंन्यारेंकरोंवषान ॥ समअरुअहिंसासंन्यासीकौं ॥
श्रुतिविचारपवनवासीकौं ॥ ६७ ॥ ग्रहमैंदयाजन्ममममकर्म ॥ ब्रह्मचर्यगुरुसेवाधर्म ॥ ब्रह्मचर्यतपसोचसं
तोष ॥ सकलसुत्द्दकतहूंनहींरोष ॥६८॥ मेरोभजनसकलममकारण ॥ एसबहीनकैंधर्मसाधारण॥ग्रेही
देईवनिताऋतुदाना ॥ भूलिनगमनकरैंदिनआंनां ॥६९॥ याविधिअपनेंअपनेंधर्म ॥ मेरेहेतकरैंसबकर्म
सबमेंजानेंमेरोभाव ॥ कांहूपरिनहींधरैंअभाव ॥७०॥ सोपावैंमेरीदृढभक्ति ॥ औरसकलतेंकरैंविरक्ति
तातैंउपजेमेरोज्ञान ॥ देषैंमोहिमिटैसबआना ॥ ७१ ॥ ऐसौव्हैंपावैंममरूप ॥ बहुरिनआवैंयाभवकूप
जैहैंसकलवर्णाश्रम ॥ तिनकेंएसैंभाषेधर्म॥७२॥ भक्तिसहितएमोहिमिलावैं भक्तिविनाभवसिंधूबहावैं ॥
ऐसोतत्वलहैंसोतरैं ॥ औरसकलनितजन्मेंमरैं ॥ ७३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवतोसौंकह्यौवर्णा
श्रमकोधर्म॥यातेंममभक्तिलहैंछुटैंबंधनकर्म ॥ ७४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्री

भगवानुद्धवसंवादेअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूर्बहिआश्रमधर्मतैनिर्णयज्ञानसुभाग
॥ उनबिंशतिअध्यायमैंज्ञानादिकतैंत्याग ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवएव
र्णअरुआश्रमां ॥ तिनकेमैंभाषेसबधर्मा ॥ इनमेंरहीममभक्तिजपावैं तातैंमेरोज्ञानहीपावैं ॥ १ ॥ ज्ञानही
पाइंसकलभ्रमजांनैं ॥ वर्णाश्रममिथ्याकरिमानैं ॥ सबसाधनतजीमोकौंध्यावें ॥ औरकछुत्त्वदैनहींल्यावैं
॥ २ ॥ ज्ञानीकोंमैहिहींसाधन ॥ अरुमेरौंहिकरौनितआराधन ॥ मोहीकरिमोकौंअराधैं ॥ तनमनइंद्रि
यमोसौंसाधैं ॥ ३ ॥ मोबिनस्वर्गादिकनहींलेही ॥ मेरेहींचर्णनिचितदेई ॥ मोबिनमुगतकदैंनहींगहैं ॥
मोबिनसकलवासनादहैं ॥ ४ ॥ मोहिसोहेतमैंताकौंप्रिय ॥ मोबिनऔरसकलअप्रीय ॥ जैहैंसहीतज्ञान
विज्ञान॥तेहीजांनैंमोहीसूजान॥ ५ ॥ज्ञानीतैंमेरेप्रियनाहीं॥सदाबसैंमेरैंमनमांहीं॥मैताकौंमेरौहैंसोई ॥दूजौन
हींपरसपरकोई॥६॥जपतपतीर्थव्रतअरुदाना॥कहौंकहांलौंजेविधिनाना॥जेविधिकरैंनहींफलएसौ ॥ ज्ञान
कलाहोवैजेसौं॥७॥तातैंज्ञानत्त्वदैमैंधारौं ॥ औरैंसाधनसकलनिवारौं ॥सबमैंरूपआपनौजानौं ॥ मोही
जानिप्रभुसेवाठानौं ॥८॥ व्हैकरिसहीतज्ञानविज्ञान ॥देषैंरुकलएकभगवान ॥बहुरिममनिजरूपसमावैं॥
जहांजाइकोईनहीआवैं॥९॥जबहीप्राणीज्ञानहींपावैं ॥ तबहींममनिजरूपसमावैं ॥ ज्ञानविज्ञानहींपावैमो
ही ॥ यहानिजमतोकहतहींतोही ॥ १० ॥ उद्धवतोमैंविविधविकार ॥ जन्ममर्णसुषदुषप्रकार ॥ तेसम
स्तयातनकैंजांनौं ॥ सोतनमायाभ्रमकरिमानौं ॥ ११ ॥ आपुहिसूधनिरंजनदेष्यौं ॥ द्वैतअतीतएकक

रिलेषौ ॥ एजेप्रगटसकलदेहादी ॥ तेआतममेहूतेनआदी ॥ १२ ॥ अरुअंतहूरहैंकछुनाहीं ॥ अ
बअज्ञानहूतेंबरतांई ॥ ज्ञानदृष्टकरवरतेंबबही ॥ त्रिगुणरहीतआपुहैंतबही ॥ १३ ॥ जेसैंरजुमांहीआहि
कहैं ॥ आदिनहुंतौंअंतनाहिरहैं ॥ भर्मतेंमध्यमंदमतिमानौं ॥ हैनाहीपरिहैंसोजानौं ॥ १४ ॥ त्यौंदेहादि
कसकलभ्रमदेषो ॥ आपुहींसदाब्रह्ममयलेषौ ॥ एसोसुनिहरिजीसौंज्ञान ॥ उद्धवजनपूछयौभगवान ॥
१५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुज्ञानकृपाकरिकहौं ॥ मेरेनानाभ्रमकौंदहौं ॥
अरुत्यौंहिभाषोविज्ञान ॥ भक्तिआपनीपरमनिधान ॥ १६ ॥ जाकौंचाहैसकलमहंत ॥ यातेंहोईजगत
कौअंत ॥ याविनज्ञानध्यानकछूनाहीं ॥ साधनसकलवृथाहीजाहीं ॥ १७ ॥ याकौंपाइमुगतिनहीलेवें ॥
औरसूपनिपरिद्दष्टिनदेवैं ॥ एसीभक्तिकृपाकरिकहौं ॥ आपनेंजनहींऔरनिवहौं ॥ १८ ॥यहभवसा
गराविकटअनंत ॥ यामैंभ्रमतनआवैंअंत ॥ तापरितपेंत्रिविधसंताप ॥ तिनमैंपरेंआपहिंआप ॥ १९ ॥
तातैंजीवमहादुषपावें ॥ सुषठानैंसोदुषव्हैंआवें ॥ तातैंदूजोरक्षकनाहीं ॥ मेविचारिदेष्यौमनमांही ॥ २०
॥ तुमरेचर्णछत्रासिरधारैं ॥ सोसमस्तसंतापनिवारैं ॥ ताकौंदशदिशिअमृतवर्षै ॥ ताकदरशऔरसब
हर्षै ॥ २१ ॥ ज्योंकाहूकंगालहीलीजैं ॥ ताकेशिरछत्रधरिदीजैं ॥ सोव्हैंभूपमहासुषपावें ॥ अरुऔर
निकेदुषमिटावें ॥ २२ ॥ त्यौंतुमचर्णछत्रसिरधारैं ॥ सोआपुनैंसबदुषनिवारे ॥ सोभितानौंलोकहिंमाही
॥ तासमऔरकहूंकौनाहीं ॥ २३ ॥ अरुजेताकेसर्णहींआवैं ॥ तेतेसकलपरमसुषपावैं ॥ याभवकूपप

ज्यौविहाला ॥ तापरउन्यौंमाहीअहिकाला ॥ २४ ॥ तातैंविषयविषयीसुषजानै ॥ तिनानीमितबहुउद्यमठानैं ॥ तातैंसदाअमितदुषपावैं॥जाकौंकबहूंअंतनआवैं॥२५॥ताकौंक्रपापीयूषापिवावौ॥काढीकूपतैंमृतकजिवावौ ॥वचनामृतकीबरषाकरौ॥अपनेगुणनिबाधीउद्धरौ ॥२६॥तुमहीजगतपिताजगस्वामी॥जगपालकजगअंतरजामी॥एसैंबचनसुनेभगवान॥तबउद्धवसोंभाष्यौज्ञान ॥२७॥श्रीभगवानुवाच ॥ चौपाई ॥ उद्धवप्रश्नकरीतुमजोई ॥ धर्मपुत्रकीनीतिनसोई ॥ सरसिज्यामैंभीषमपरैं ॥ हमकूंसूनतवचनउचरैं ॥ २८॥ तेईअबमेंतुमहीसुनाउं ॥ भक्तिज्ञानविज्ञानबताउं ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ शब्दादिकजेपंचप्रकारा ॥ २९ ॥ त्रयगुणअरुइंद्रियदशएका ॥ पंचभूतमिलिभएअनेका ॥ थावरजंगमविविधप्रकारा॥ इनअठाईससकौविस्तारा ॥ ३० ॥ इनविनऔरकहूंकछुनाहीं ॥ एकदृष्टिदेषेसबमांही ॥ याकरिसकलएकहिजानैं ॥ ताकौंसाधुज्ञानबपानैं ॥ ३१ ॥ अरुजबईहअठाईसतत्व ॥ मायाजानैंसकलअतत्व आत्मएकब्रह्मकरिजानैं ॥ देहादिकसबमिथ्यामानैं ॥ ३२ ॥ रजुजानिज्यौंसर्पनिवारैं ॥ त्यौंसमस्तममरूपविचारैं ॥ जैसेंदिसामोहमिटजावैं ॥ आठौदिसकीबरषहिंपावैं ॥ ३३ ॥ करतनिरंतरज्ञानविचारा॥ देषेब्रह्ममिटैविस्तारा ॥ ताकौंकहियतुंहेविज्ञान॥तातेलहैंमोहितजीआन ॥ ३४ ॥ आदिहूंतौअरुरहीयेअंत ॥ सोईहैंअबहुंबरतंत ॥ वरणआकारप्रगटहैंचैतैं ॥ आदिअरुअंतनहीहैंतेतैं ॥ ३५ ॥ तातअबहुंमिथ्यादेपें ॥ तिहुंकालमोहीकौंलेषें ॥ जेजेंतिहुंकालमेधरणी ॥ घटनामादिकमिथ्याकरणी॥ ३६ ॥ शु

तिकौमतौल्हृदमैंआंनै ॥ नेतिनेतिश्रुतीसदावषानैं ॥ नामआकारवेदभ्रमभाषै ॥ ब्रह्मसत्यदूजौसबनाषै
॥ ३७ ॥ सकलघठनिमैंएकबतावैं ॥ उंचनीचसबभेदामेटावैं ॥ ऐसीभांतिविचारैवेद ॥ जानैंमोहीमि
टावैभेद ॥ ३८ ॥ अरुयोंहीप्रगटसबलेषैं ॥ सप्तधातुकैंसबतनदेषैं ॥ अरुदेषैंसबउपजतांविनसंत ॥
योंहीप्रत्यक्षविचारैंसंत ॥ ३९॥ सतपुरुषभयेहैजेतैं॥ तिनकैंबचनविचारैंतेतैं ॥ एकमतोसबनिकौदेषैं ॥
जानैंमोहीभेदभ्रमलेषैं ॥ ४० ॥ अरुयौंअनुभवत्हृदयाविचारैं ॥ चेतनराषिअचेतनटारैं ॥ सबदेषैचेत
नआधार ॥ इंद्रियदेहविविधविस्तार ॥४१ ॥ चेतनतेंजडअर्थनिगहैं ॥ चैतनविनाकोईनहींरहैं ॥ यौं
वेदांततथादृष्टांत ॥ अनूभवअरुयोंहीसिद्धांत ॥ ४२ ॥इनचारुहूंकौंमतौंविचारैं ॥ मोहीजानीसबभेद
निवारैं ॥ सकलदृश्यतेंहोईविरक्ति ॥ चेतनब्रह्मसदाअनुरक्ति ॥ ४३ ॥ कर्मरचितसबमिथ्यामानैं ॥
ब्रह्मलोककौंनस्वरजांनैं ॥देष्योसून्यौत्हृदमैंआवैं ॥ सोसबबंधनजानिबहावैं॥४४॥मेरीभक्तित्हृदमैंधरैं॥
जिनतैंभक्तिहोईतेंकरैं॥भक्तअरुभक्तिहेतहैंजतैं॥ तुमसौंपीछेंभापेतेतैं ॥४५ ॥अबहूंबहूरोतबहेतविचारौं ॥
भक्तभक्तिसाधनउचारौं ॥ मेरोकथासुनैंअबकहैं ॥ प्रीतिसहितउरअंतरगहैं ॥ ४६ ॥पूजामैंअतिनेष्ठा
धारैं ॥ बहुतभांतिअस्तुतिविस्तारैं ॥ वंदनकरैंप्रदाक्षिणादेई ॥ अरुअष्टांगप्रणामकरेई ॥ ४७॥ सब
भूतनमैंमोकौंजानैं ॥ परिममजनमेरोतनमानैं ॥ममभक्तिनिकौंबहुविधिसेवैं॥ तनमनधनतिनहिकौंदेवैं ॥४८
॥ मेरेहेतकरैंजोकरैं॥ मोविनसकलपरिहरैं ॥ मेरेंगुणनिकहैंउरधारैं॥ दूजिकामनासकलनिवारैं ॥ ४९

मेरेअर्थअर्थसबत्यागें ॥ सूषअरुभोगानितेंवैरागें ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदाना॥सयनासनभोजनजलपानां॥ ५० ॥ इत्यादिकसबममहितकरैं ॥ यातेंअंतरसबपरिहरैं ॥ सदाआपुकौंमोहिनिवेदैं ॥ प्रेमशास्त्रउरग्रंथहीभेदैं ॥ ५१ ॥ ऐसेंजबममभक्तिलहैं ॥ तबअबसेषकछूनहींरहैं ॥ साधनसिध्यलहैंसोसकल ॥ कालकर्मतेहोवेअकल ५२ ॥ जबमोविषैचितकौधारैं ॥ तबव्हैसातिकरजतमकौंटारैं ॥ धर्मऐश्वर्यज्ञानवैराग ॥ इनकौंसहजलहैंबडभाग ॥ ५३ ॥ अरुजोमेरीमुक्तिनपावें ॥ देहगेहसोंचितलगावें ॥ तबहोवेंरजतमअधिकारा ॥ बंधेअधर्मपरैंसंसारा ॥ ५४ ॥ बंधमुक्तकौंचितहैंकारण ॥ बोरैंचिताचितहैंतारण ॥ मोमेंधारैंमोकौंलहैं ॥ भवमेंधारैंभवमेंवहैं ॥ ५५ ॥ तातेंधर्मज्ञानवैराग ॥ ईस्वरताआदिकजेभाग ॥ तेसमस्तमेरेआधीन ॥ तातेंहोवेंममलौलीन ॥ ५६ ॥ सेवतमोहीसकलएपावें ॥ मोबिनकोईनिकटनआवें ॥ मेरीभगतिकहावैंधर्म ॥ उद्धवदूजोसकलअधर्म ॥ ५७ ॥ एकब्रह्मदरसनसौंज्ञान ॥ याबिनऔरसकलअज्ञान ॥ अरुउद्धवसोंहेवैराग ॥ जोसमसताविषयानिकौत्याग ॥ ५८ ॥अरुऐश्वर्यसिद्धिअणूमादी ॥ ममसेवककीसेवकआदी ॥ तातेंजेममसरणहींआवें ॥ तेईमुक्तिभुक्तिसुषपावें ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ ऐसेंअदभुतबेनजबकहेंकृपाकारिकृष्ण ॥ तबउद्धवजनहसाषिकरीकीनीहारिसौंप्रष्ण॥६० ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूपूरणकृपाकरौ ॥ ज्यौंहेंत्यौंबहुबिधिविस्तरौ ॥ जोतुमधर्मभक्तिकृतभाष्यौ ॥ ब्रह्मदृष्टिकौंज्ञानाहिंराष्यौ ॥ ६१ ॥ अबवैरागादिकसमझायो ॥ मेरेसबसंदेहामि

ढायो ॥ त्यौंहीसकलतत्वसौंभाषौं ॥ होईअतत्वदूरिकरिनाषौं ॥६२॥ जमकहियेसोकेइप्रकारा ॥ अरुत्यौंकहौंनियमबिस्तारा ॥ अरुसमकौनकौनदमदेवा ॥ कोनक्षमाअरुधृतिकौभेवा ॥ ६३ ॥ कोनसूरतातपअरुदानु ॥ कोनसत्यकोनऊठबषान ॥ कोनत्यागकोनधनइष्ट ॥ कोनजज्ञकोनदक्षिणावरिष्ठ ॥ ६४ ॥ बलअरुदयालाभअरुसुष ॥ विद्यालज्जासोभादुष ॥ पंडितमूरपग्रहस्तपंथ ॥ स्वर्गनर्कअरुपंथकुपंथ ॥ ६५ ॥ कोनदारिद्रीकोनधनवंत ॥ कोनकृपनकोनईस्वरवंत ॥ अरुईनेंतउलटीहैंजेती ॥ समअरुदमआदिकहैंतेती ॥ ६६ ॥ मोसोंदेवकृपाकारिभाषौं ॥ राषोंतत्वअतवहींनाषौं ॥ यौंसूनिबहुउद्धवकीप्रश्न ॥ तबकृपाकारिबोलेकृष्ण ॥ ६७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हिंसारहीवसत्यअस्तेय ॥ संगविवर्जितसबकोंहय ॥ लज्जामौनआस्तिकथीरा ॥ ब्रह्मचर्यअरुक्षमागंभीरा ॥ ६८ ॥ एद्वादशयमगहैंनिवर्ती ॥ अरुत्यौंद्वादशानियमप्रवर्ती ॥ सोचअरुकपटराहितधरमादर ॥ जपतपअरुधर्मपूजासादर ॥ ६९ ॥ तीरथअटनअतीतकौपोष ॥ गुरुसेवाअरुदृढसंतोष ॥ परउपकारहोमविस्तारैं ॥ भुक्तिमुक्तिचाहैंसोधारैं ॥ ७० ॥ समजोमोमेंनेष्टबुद्धी ॥ दमइंद्रियनिग्रहमनशुद्धी ॥ जोदूषनिउपजावेंकोई ॥ तिनतैंजाकिंदुषनहोई ॥ ७१ ॥ सकलसहैंकछुमननहिआनैं ॥ ताकौममजनक्षमाबषानैं ॥ जिभ्याइंद्रियचंचलहोई ॥ तिनदोनोकौंत्यागेसोई ॥ ७२ ॥ रसअरुअबलाकौंनहींगहैं ॥ ताकौंमेरोज्ञनधृतिकहैं ॥ भूतद्रोहत्यागसोंदान ॥ भोगतजनसोंतपनहींआन ॥ ७३ ॥

सोईसूरजोजीतेसुभाव ॥ सोईसत्यसकलममभाव ॥ मोकोंलीयेबचनसोंसत्य ॥ मोबिनबोलेसकलअसत्य ॥ ७४ ॥ कर्मनिमेंजोहोईअसंग ॥ सोवहपरमसोचहैंअंग ॥ सोहैंयागतजैफलकर्म ॥ सोधनईष्टपरममधर्म॥७५॥यज्ञरूपमेंहोंनहींआन॥सोदक्षिणादेईसमज्ञान॥प्राणायामपरमबलकहीयैं ॥ जाकरिबडोशत्रुमनगहीयैं॥७६॥भाग्यजोममऐश्वर्यपावैं॥चेतननिजानंदव्हैंआवैं॥मेरीभक्तिएकईहलाभ भक्तिविनासोंसकलअलाभ॥७७॥जातेंभेदमिटैसोविद्या॥उद्धवदूजीसकलअविद्या॥लज्जामानिअकरमनगहैं ॥ ममजनताकौंलज्जाकहैं ॥ ७८ ॥ निहकिंचननिरपेक्षनिरलोभा ॥ इत्यादिकजेगुणतेसोभा ॥ सोसुषजोसुषदुषअनीत ॥ पुन्यनहींपापउष्णनहींसीत ॥ ७९ ॥ विषयनकीइच्छादुषजानौं ॥ गुणसंपन्नआढ्यसोंमानौं ॥ बंधमुक्तकीयुक्तहिंजांनें ॥ ममजनपंडिततांहिंवषानें ॥ ८० ॥ अहंकारजाकेजगआदी ॥ आपनेकहेदेहगेहादी ॥ सोसमस्तमूरुषहींजानौं ॥ यातेंऔरभांतिमतीमानौं ॥८१॥ जाकरिमोहीलहेसोपंथ ॥ जोप्रवृत्तिसोसकलकुपंथ ॥ नितसंतोषीसीतलव्हृदय ॥ सातिकचितसबनिपारिसुव्हृदय ॥ ८२ ॥ यहहैंस्वर्गसुषकौभंडार ॥ नरकनिमैतामसअधिकार ॥ सतगुरुएकबंधुकरिजानौं ॥ औरसकलवैरीकरिमानौं ॥ ८३ ॥ सतगुरुहैसोमेरोरूप ॥ जातेंजीवतजैग्रहकूप॥ सतगुरुबिनाबंधुनहींकोई ॥ सतगुरुविनाजोवैरीहोई॥८४॥ मानवतनसोईग्रहकहीयैं ॥ ताकैंग्रहैंग्रहीव्हैंरहीयैं ॥ सोदाद्रिजोतृष्णावंत ॥ कृपणइंद्रियनिबसचरतंत ॥ ८५ ॥ विषयनिअनासक्तसोईस ॥ विषयनिबसतेसकलअनीस ॥ इतनीप्रश्नकहीमेंतोसौं ॥ जानावि

॥६१॥

धितुमपूछीमोसों ॥ ८६ ॥ विधिनिषेधकैलक्षणजेसें ॥ महापुरुषजानतहेतेसें ॥ विधिनिषेधकौंजोलौंजानैं ॥ उंचनीचभेदनिमानें ॥ ८७ ॥ सोयहसकलनिषेधहिजानौं ॥ भेददृष्टिमेंविधिमतिमानौं ॥ विधिअरुनिषेधनिषेधहिदेष्यौं ॥ दहुंतेंपरैताहींविधिलेषौ ॥ ८८ ॥ विधिनिसेधपशुमानवमानैं ॥ पंडितकहैंहदैंनहींआनें ॥ तातेंविधिनिषेधभ्रमजानौं ॥ मेरोरूपसलकरिमानौं ॥ ८९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विधिनिषेधभ्रमजाननौंज्ञानकह्यौजवकृष्ण ॥ वेदवचनतवसुमरिकरिउद्धवकीनोप्रष्ण ॥ ९० ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांएकोनविंशोध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतबीसमेंध्यायमेंभक्तिक्रियात्मकज्ञान ॥ अधिकारीहुविभागतैंसुलभयोगत्रयजान ॥ १ ॥ ॥उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥हेप्रभूजीतुमकरुणाकरौ॥मेरोयहसंसैपरिहरौ॥तुमरीआज्ञाकहियेवेद॥ तांहीमेंदीसतुहेंभेद ॥१॥विधिनिषेधसोवेदबषानें ॥ नाहींतैंसबकोईमानैं ॥ तुमरीआज्ञाक्यौंभ्रमलेपैं ॥ जातेंविधिनिषेधनहींदेषैं ॥ २ ॥अरुयहप्रगटदीसैदेव ॥ विधिनिषेधकेबहुविधिभेव ॥ प्रगटविधिवर्णाअरुआश्रम ॥ तिनकौंविविधभांतिविविधकर्म ॥ ३ ॥ तिनकौंप्रगटफलस्वर्गादि ॥ अनकोनहींयहपंथअनादि ॥ अरुनिषेधप्रगटप्रातिलोम ॥ अंबष्ठादिकजेंअनुलोम ॥ ४ वर्णनिमेंशंकरहोजेतैं ॥ अरुतिनकेकर्मपुनितेतैं ॥ तिनकैंप्रगटफलनरकादी ॥ कहैंहुतेंफलजाईनबादी ॥ ५ ॥ जाकेफलहिवेदज्यौंकहैं ॥ ताकौंकरीनरत्यौंहिलहैं ॥ अरुत्यौंद्रव्यदेसवयकाल ॥ प्रकटविधिनिषेधगोपाल ॥ ६ ॥अरुजोविधिनिषे

धनहींसत्य ॥ तोसुषदुषअरुफलअसत्य ॥ कोईस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ तोब्रहुश्रमकरिविधिनकरावैं ॥ ७
अरुकहाकहीजैवारंवारा ॥ तुमरैंवचनअनेकप्रकारा ॥ यहतोकह्यौंतुमारेंवेद ॥ जातेंविधिनिषेधकैंभेद
॥ ८ ॥ देवपितरमुनिमानवजेतें ॥ वेदनयनदेषतहैंतेतें ॥ विधिनिषेधतिनकैंफलजांनें ॥ अरुत्यौंहित्यौंतेउ
वषानें ॥ ९ ॥ सकलतुमारीआज्ञामांहीं ॥ ज्यौंज्यौंथपैंत्यौंवरताहीं ॥ सोमिथ्याक्यौंकहियैंवेद ॥ या
कौंमोहीबतावोभेद ॥ १० ॥ द्विविधिवचनवढेंसंदेह ॥ वेहैंसत्यकौधौंप्रभूएह ॥ यहपूरणसंदेहमिटावौ॥
एकभांतिकेवचनसुनावौ ॥११ ॥ याविधिपरमज्ञानविस्तारौं ॥ अपनेरचेजीवनिस्तारौं ॥ सुनीउद्धव
कीऐसीबानी ॥ तबबोलेश्रीसारंगपानी ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवपरम
ज्ञानअबकहौं ॥ तेरेसबसंदेहाहिदहौं ॥ मैंभाषैंहैंतीनउपाई ॥ कर्मअरुभक्तिज्ञानसमुझाईं ॥ १३ ॥ज्यौं
ज्याकौंदेष्योअधिकार ॥ ताकौंतैसोकीयोबिचार ॥ जोभाषौंसबहीनसोज्ञान ॥ तातेंविषईतजैंनहीआन
॥ १४॥तातैंकर्मअकर्महिछोडाऊं॥लेकरिज्ञानमध्यठहराऊं॥तातैंवचनसकलममसत्य॥विधिनिषेधउनहींअ
सत्य ॥ १५ ॥ पारिएसकलज्ञानकेंकारण ॥ ज्ञानलहैंतेंसकलनिवारण ॥ एतुमसेंढीब्रह्मकोज्ञांनौं ॥ ता
तैंकछूसंदेहनआंनौं ॥ १६ ॥ जिनभवसुषज्यौंहित्यौंजान्यौं ॥ ब्रह्मलोकलौंनस्वरमांन्यों ॥ तातैंतिनकैंउ
द्यमदहैं ॥ औरसकलतजीथीरव्हैंरहैं ॥ १७ ॥ तिनकौंज्ञानजोगअधिकार ॥ थीरव्हैंकरनौब्रह्मविचा
र॥अरुजिनविषयसुषनहींजानैं॥अरुतिनकेउद्यमनहींभानैं ॥ १८ ॥पारिममगुणसुनिसुषमानैं॥मेरोभजनभ

लौकरिजानैं ॥ ताकौंभक्तिजोगहितकारी ॥ ऐसैंजानैंतत्वविचारी ॥ १९ ॥ अरुजेविषयनिकेआधीन ॥ तिनकेंउद्यमसौलौलीन ॥ कथासुननकौंनहींअवकास ॥ अरुममप्रीतिनहींअभ्यास ॥ २० ॥ तिनकौंकर्मजोगसुषदाई ॥ ईनतैंऔरनश्रेयउपाई ॥ एतीनौंभाषतहौंतोसौं ॥ निश्चलचितव्हैंसुनियेमोसौं ॥२१॥ प्रथमहीजोगकर्मविस्तारो ॥ विषईजीवनिकौंनिस्तारो॥मेरेवहुविधिगुणाविस्तारा॥कथाप्रसंगीविविध प्रकारा ॥ २२ ॥ तिनमैंप्रीतिनउपजैंतोलौ ॥ ममजनसंगकरैंनहींजोलौं ॥ अरुजोलौंनव्हैंढवैराग ॥ विषयनिकौंनहोवैंत्याग ॥ २३ ॥ तोलौंकर्मजोगनहींतेडा ॥ कर्मनिकरिमाकाभज ॥ अपनेंधर्ममांहोथिरहैं ॥ कबहूंभूलिनिषेधनगहैं ॥ २४ ॥ यज्ञमहोत्सवबहूंविधिकरैं ॥ सकलकर्ममहितविस्तरै ॥ मनतेंईछासकलमिटावैं ॥ सोनरस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ २५ ॥ ऐसैंज्ञानभक्तिकौंलहैं ॥ तातैंकर्मकालमहादहैं ॥ उद्धवयहमानवतनऐसौ ॥ सकलसृष्टीमांहींनहींजैसौ ॥ २६ ॥ स्वर्गनर्ककेईवंछेजाकौं ॥ परिक्यौंहीनहींपावैताकौं ॥ ज्ञानभक्तियातनकरिलहैं ॥ औरसबनिकरिभवजलवहैं ॥ २७ ॥ जोएसोमानवतनपावैं ॥ सोसमस्तकामनामिटावैं ॥ तजैनिषेधएसकलकर्म ॥ अरुकामनाहेतजेधर्म ॥ २८ ॥ अरुफिरिनाहिंवंछैनरदेहा ॥ परमरतननहींपावैंएहा ॥ जद्यपिबहूरौनरतनपावैं ॥ परिज्ञानादिककछुनराहावैं ॥ २९ ॥ मातापिताभाईकुललोग ॥ ज्ञानमिटावैंकारिसंयोग ॥ षानपानआदिकबहुंसाधैं ॥ वालापनसौंताकौंबाधैं ॥ ३० ॥ तातेंज्यौंलागिनाहींमरैं ॥ स्यौंलागिजतननिरंतरकरैं ॥ यातनकौंमिथ्याकरिजांनौं ॥

अरुब्रह्मदानीकरीमांनौं ॥ ३१ ॥ तातेंजनतानिरंतरकरैं ॥ सावधानताहित्ददैंधरैं ॥ यातनेंमेंआशक्ता नहोई ॥ करेंउपायमुगतकोसोई ॥ ३२ ॥ ज्यौंपंषीतरुवासाकरैं ॥ तामैंप्रीतिमानमनधरैं ॥ अरुतावृक्ष हिकांटेकोई ॥ जिनकेंत्ददैंदयानहींहोई ॥ ३३ ॥ वृक्षसंगजोपंषीपरैं ॥ तोतिनकेवसह्वैकरिमरैं ॥ परि सोप्रथमवृक्षहित्यागें ॥ काटतदेषिआपउठिभागौं ॥ ३४ ॥ आपुहीऐसीभांतिविचावें ॥ पीछैंतहांरहैंजहा भावें ॥ त्योंहीनरतनतरुआधारा ॥ आत्मपंषकीयेआगारा ॥ ३५ ॥ ताकौंनिशदिनकरैंप्रहार ॥ स दानिरंतरवारंवार ॥ ऐसोदेषिंधरैतनत्रास ॥ प्रथमहींत्यागैंतरुकौवास ॥ ६६ ॥ मोमेंआईबसेराकरैं ॥ तातेंवहुरिनजन्मेंमरैं ॥ मानवतनभवसागरनावा ॥ मेरिकृपाहुंतैंयहपावा ॥ ३७ ॥ जामेंगुरुषेवटसुषदाई सानकूलमेंपवनसहाई ॥ तोहुंआपुहिजोनहींतारैं ॥ नावछोडीभवसागरडारैं ॥ ३८ ॥ ताकोंआतमघाती मानौं ॥ दूजोआतमघातनजानौं ॥ अरुजोभवतेंहोईविरक्ति ॥ दुषमयजानिहोवैरक्ति ॥ ३९ ॥ सो समस्तइंद्रियवसकरैं ॥ मननिश्चलकरिमोमैंधरैं ॥ जोमनधारतअचलनहोई ॥ तोहूआतुरनहोवेकोई ॥ ४० ॥ एकहीवारनसकलनिवारैं ॥ कर्मसकलउपाधीटारैं ॥ कछूएकआसपूरेमनकी ॥ त्ददैंरापैंमूल सषननकी ॥ ४१ ॥ देवेसोवजवेकेहेत ॥ सावधाननिरंतररहैंसुचेत ॥ आगेंफलकोअवधीबतावें ॥ दुषादिपाइविरक्तिउपारैं ॥ ४२ ॥ ऐसेंक्रमहिक्रममनधारैं ॥ कर्मसकलविकारनिवारैं ॥ इंद्रियगुणत्द दयनहींअन्नैं ॥ स्वासजीतिमनकीगातिभानें ॥ ४३ ॥ मनजीतनकौंपरमउपाई ॥ जातैंमनगतिजानीज.

नीजाई।।जैसैंअवसतुरंगमहोई।।अस्वबारवसनहोयेसोई।।४४।।तबतापरीचढीकरिअस्वबार ।। हठनहींक
रैंएकहीवार ।। कछुहयकोंरूपसहितचलावै ।। पीछैंदेचाबुकदोरावै ।। ४५ ।। ऐसोविधिहयकोवसकरै
।। त्यौंजोगीकर्मकर्ममनधरैं ।। सांख्यविचारानिरंतरकरै।।याविधियहजगजन्मैंमरैं।। ४६ ।। तत्वनकीउत्प
त्तिविचारैं ।। ज्योंज्योंनिंनसेंस्यैंमनधारैं ।। सकलउपाधीउरैंकीदेपैं ।। आगुहिपरैंसकलतैंलेपें ।। ४७ ।।
याविधिजौंलगिमनबसहोई ।। तौंलगिकरैविचारहिंसोई ।। ऐसिविधजबसांख्यविचारैं ।।गुरुकेवचनतहे
देमैधारैं ।। ४८ ।। तबसबहिंतेंहैइविरक्ति ।। मनमेंमेंहोवेंअनुरक्ति ।। जोगपंथजेअष्टप्रकारा ।। अरु
यहआतमादेहविचारा ।। ४९ ।। अरुममश्रवनकीर्तनध्यान ।। मनजीतनकोंपंथनआन ।। जोगअरुभ
क्तिसांख्यएतीन।।सबग्रंथनिमैंलीनैंवीन।। ५० ।।ईनतैंचोथोनहींठपाई ।। ततिमनमेंमेंठहराई ।। ।। तातें
चोथोकछुनकरणौं ।। ईनपंथनिमोकौंअनुरुरणौं ।। ५१ ।। अरुजोकदेंगपहैंआवें ।। सावधानताउरन
रहावें ।। तोहूऔरनकरैंउपाई ।। सोसोपाईहेतेंजाई ।। ५२ ।। औरकरैंनानाविधिजोई ।। सोसोअ
धिकअधिकमलहोई ।। विधिनिषेधसबहीमलजानौं ।। कबहुंकछुउत्तममतिमानौं ।। ५३ ।। विधिनिषे
धएकीनिंदोई ।। जातैंबंधेरहेंसबकोई ।। भयतैंबहुआरंभनिकरैं ।। अपनेअपनेविधिआचरें ।। ५४ ।। ता
पीछेंसबबंधजनाऊं ।। करीअनंधसकलछोडाऊं ।। सकलनत्यागेंएकहीवार ।। तातेंकीनैबहुतप्रकार
५५ ।। तातेंविधिनिषेधनहींकरणा ।। सकलत्यागीमोमेंमनधरणा ।। विधिनिषेधजनमिथ्याजानैं ।। अरु

भवसुषसबदुपकरीमानैं ॥ ५६ ॥ पारिसमरथतजिवेकोनाहीं ॥ प्रबलज्ञानप्रगट्यौनहींमांही ॥ ताकोभक्ति जागअधिकार ॥ सहजैछूटैंसकलविकार ॥ ५७ ॥ मेरीकथानिरंतरसूनैं ॥ त्हृदेमांहिमेरेगुनगुनैं ॥ दृढविश्वासत्हृदैमैंराषैं ॥ मेरेगुणनामानितभाषैं ॥ ५८ ॥ योंजद्यपिविषयनिमैंरहैं ॥ पारिमनवचकर्मत्यागैं चहैं ॥ सोनितभक्तिजोगसोंभजैं ॥ मोविचअंतरायसोंतजैं ॥ ५९ ॥ तंत्रपंथपूजाविस्तरैं ॥ ममहेतजो कछूसोकरैं ॥ याविधिसकलवासनानासैं ॥ मेरोरूपत्हृदयप्रकासैं ॥ ६० ॥ तातैंब्रह्मरूपकरिजानैं ॥ द्वैतभावमिथ्याकरिमानैं ॥ संसयकर्मभर्मसबभागैं ॥ अहंकारतजिसोवतज्यौंजागैं ॥ ६१ ॥ जहांतहांमो हिकोंदेषैं ॥ मोबिनऔरकछुनहींलेषैं ॥ ऐसोऽहैममरूपसमावैं ॥ याहीजन्मऔरनहींपावैं ॥ ६२ ॥ तातैंजाकौमेरीभक्ति ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरक्ति ॥ तातैंजद्यपिनाहींज्ञान ॥ अरुनाहिंवैरागनिदान ॥ ६३ ॥ तोहूसौंमोकौंअनुसरैं ॥ अतिदुस्तरभवसागरतरैं ॥ वर्णाश्रमकेधर्मनिकरैं ॥ बहुतभांतितप कोंअनुसरैं ॥ ६४ ॥ निशदिनसांष्यज्ञानविचारैं ॥ गहीवैरागसकलअघजारैं ॥ साधेजोगअष्टप्र कार ॥ दानव्रतादिकबहुविस्तार ॥ ६५ ॥ असबआपुहिंतेचलीआवैं ॥ ममजनकेआधीनरहावैं ॥ मेरीभक्तिसकलसिरताजा ॥ जैसैंसकलनरोनिमेंराजा ॥ ६६ ॥ भुक्तिमुक्तिपलनहींपरीहरैं ममजनकोनितसेवाकरैं ॥ अरुमैंजद्यपिबहुविधिकहौं ॥ भुक्तिमुक्तिकछुदीनोचहौं ॥ ६७ ॥ परीमेरौनि जजनहींलेवैं ॥ सकलत्यागिममचर्णनिसेवैं ॥ निरपेक्षतापरमहैश्रेय॥ मौंबिनसकलवस्तकौंदेयें ॥६८॥

निस्पृहतायहसुषअपार ॥ जहांनहींकालकर्मअधिकार ॥ मैंनिस्पृहानिस्पृहजोहोई ॥ मेरोभक्तकहींजैसो
ई ॥ ६९ ॥ मेरेशमीलक्षणहेंजामैं ॥ मेरोरूपजानोयौंतामैं ॥ सबतेंनिस्पृहनितममभक्त ॥ मैंनिस्पृहता
सौंअनूरक्त ॥ ७० ॥ तातेंनिस्पृहतासुषऐसौ ॥ सकलविस्वमेंनाहींजेसौ ॥ निस्पृहजनमेरोसुषपावें ॥ स्पृ
हावंतमेंनिकटनआवें ॥ ७१ ॥ जेएकांतभक्तहेमेरें ॥ तिनकेंपुन्यपापनहींनेरें ॥ रागद्वेषवर्जितसमदरसैं
॥ गुणातीतब्रह्मकौंपरसैं ॥ ७२ ॥ जोगभक्तिसांष्यएतीन ॥ तीनौंएकैकहेंप्रवीन ॥ इनकौंपाईमोकौंपा
वें ॥ एबिनपाएनमोमेंआवें ॥ ७३ ॥ असाधनहेंतीन्यौंनीकैं ॥ इनबिनऔरनतारकजीकैं॥ एसाधनहें
मेरोरूप ॥ इनतेंतत्वनऔरअनूप ॥ ७४ ॥ मेरोगोप्यरहस्यहेंजोग ॥ जीवब्रह्मकौंक्षिप्रसंजोग ॥ छूटै
सकलअविद्याभोग ॥ कालज्ञालनहींसंसेरोग ॥ ७५ ॥ एमेंतीनपंथविस्तारें ॥ इनकरीबहुतजीवविस्ता
रें ॥ जेइनजेजनइनमेंआवें ॥ तेइतेंमेरोपदपावें ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेइनपंथनिकौंतजैं ॥
करेंकर्मविकार ॥ तिनपशुजीवनिकौंकहैं ॥ विधिनिषेधविस्तार ॥ ७७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधर
श्रीलक्ष्मीनृसिंहपरानंदसंदोह ॥ तिनकीकृपाकटाक्षतेंदूरहोतमनमोह ॥ १ ॥ ज्ञानक्रियाहरिभक्तिसैंजिन
कौंनहिंसंतोष ॥ तिनकाम्यौंकेहितकह्यौद्रव्यदेशगुणदोष ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई
॥ ॥ ज्ञानभक्तिअरुकर्मउपाई ॥ आपमिलनकौंदिएबताई ॥ परिजेअतिहिपशुअज्ञान ॥ इनकौं

छोडिकरैंकछुआन ॥ १ ॥ बहूतकामनादृढ़देंधरें ॥ तिनहितबहुकर्मनिविस्तरें ॥ तेपशुदुषनिरंतरपावें ॥ भवप्रवाहमांहिबहिजावें ॥ २ ॥ तिनहितविधिनिषेधउचारें ॥ तिनकेंबहुआरंभनिवारें ॥ अपनौहिपनौअधिकारा ॥ तामेंवरतेतजौविस्तार ॥ ३ ॥ ऊंचोनीचोसबगरिहरें ॥ आनेकर्ममांहिअनुसरें ॥ सोसोतिन तिनकौंविधिजानौं ॥ तातैंऔरानिषेधाहिमांनौं ॥ ४ ॥ एकछुवस्तबुद्धिमतिदेषौं ॥ पशुजीवनकौं बंधनलेषौं ॥ उपजीवस्तसमस्तअसुध ॥ परिकहींभावेंसुधअसुध ॥ ५ ॥ कर्मसकलछोडावनकारण ॥ मेंयहकीयोवेदउचारण ॥ पापछोडाईधर्मग्रहवाऊ ॥ याविधिबहुआरंभछूडाऊं ॥ ६ ॥ यहसमस्तजगकौव्यवहार ॥ जातैंजगकौवारनपार ॥ क्षितिजलपवनतेजआकास ॥ सबजगपंचभूतपरकास ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकथावरपरजंत ॥ पंचभूतकरिसबवरतंत ॥ अरुएकैआत्मसबमांही ॥ तातैंभेदकहुंकछुनाहीं ॥ ८ ॥ परितथापिमैभाष्योवेद ॥ ताकरिकीनेनानाभेद ॥ तिनकेस्वार्थसुषकेहेत ॥ विधिउचारीफलनिसमेत ॥ ९ ॥ देशकालगुणद्रव्यसुभाव ॥ इनकौंभाष्योंनानाभाव ॥एकानिषेधएकविधिभाषें ॥ योंसंकोचमाहीसबराषें॥१०॥अरुजिनदेशकृष्णमृगनाहीं॥अरुजहांद्विजसेवानकरांहीं ॥ अरुजो कृष्णमृगजबरहैं ॥ परिमिलेछतहावासागहैं ॥ ११ ॥ अरुजद्यपितुरकऊतहांनाहीं ॥ परिमघहटआदिनकौंमांही ॥ अरुजोमगधादिकपरिहरैं ॥ परिकदरजतादूरनकरें ॥ १२ ॥ अरुकदरजतामेंटीहोई ॥ परिजोउसरहेवेंसोई ॥ सोसोदेसनिषेधकहीजें ॥ तिनमेंवासादिकनहींकीजे ॥ १३ ॥ तिन

तेंऔरदेसरुचोजानें ॥ तिनमांहिंवासादिकठानें ॥ औरजोकालकर्मकौंनाहीं ॥ सूतकआदिभयजामाहीं
॥ १४ ॥ सोसोकालनिषेधकहीजें ॥ उतमसोजामेंविधिकीजे ॥ वस्त्रादिकजलादिकसूध ॥ मुत्रादिक
तेंहोइअसूध ॥ १५ ॥ सूधअसूधवचनतेंयौंहीं ॥ सूंघतेपुष्पादिकयोंहीं ॥ तवहींपावककर्योसोसूध ॥
बहूतकालतैंहोइअसूध ॥ १६ ॥ कहीयेंभूमीमसानअसूध ॥ बहुतकालतेंकहीयेंसूध ॥ भूमीमेंवरपाज
लहोई ॥ बहूतकालतेंशुद्धहीसोई ॥ १७ ॥ ऐसीभांतिऔरउजानों ॥ शुद्धअशुद्धभेदपहीचांनों ॥ वि
नुंगानसुधबालादिक ॥ स्नानादिकतैंशुधजुवादिक ॥ १८ ॥ जीरणवस्त्रअधनकोसूध ॥ द्रववतकौंपरम
असूध ॥ औरैसकलशक्तिउनमान ॥ शुधअशुधाहिकीयोंलषान ॥ १९ ॥ सोसबदेशकालअनुसा
र ॥ विधिनिषेधकौंकत्यौंविचार ॥ धनअरुपात्रवस्त्रगजदंत ॥ तेलअरुघृतहेमादिअनंत ॥ २० ॥ का
लाग्निजलमाटीवाई ॥ जथाजोगहेंसुधकराई ॥ अरुजोकछुलग्योदुर्गंध ॥ ज्योंलगिधोएमीटेनहींगंध ॥
२१ ॥ सोंलगिजानीअसूधनगहीयें ॥ गंधगएतेनिमलकाहियें ॥ शक्तिअवस्थातपअस्नान ॥ संसका
रसुभकर्मअरुदान ॥ २२ ॥ ममसुमरणतेंहोवेसूध ॥ करेअन्यथाहोइअसूध ॥ मेरोमंत्रलीयेंविधिजा
नौं ॥ मंत्रविहीनानिषेधाहेमानौं ॥ २३ ॥ अंपमोहिसुधरुवकर्म ॥ करेविपर्ययहोइअधर्म ॥ देशकाल
कर्मअरकरुता ॥ द्रव्यमंत्रएषटआचरता ॥ २४ ॥ एजोसुधहोईतोसूध ॥ एजअसूधतोहोईअसूध
अरुकहुंहोवेंशुधअशुध ॥ कहुंअशुधयौंहोवेंशुध ॥ २५ ॥ सुधअसुधभेदहैंजाकैं ॥ रागदेषहोवेगो

ताकैं ॥ जोकहीयेउंचेकोधर्म ॥ नीचैंकोहिंउचैंअधर्म ॥ २६ ॥ अरुजोकछुधर्मनीचेकूं ॥ सोईहैंअ
धर्मऊंचेकूं ॥ तांहींतेंदोउभ्रमजानैं ॥ मेरोभक्तकदैंनहिमानैं ॥ २७॥ जोकबहुंविषअमृतलीजैं ॥ ले
ऊंचेनीचेकुंदीजैं ॥ तोतिनमेंभेदनहोई ॥ मरनोअमरएकसमदोई ॥ २८ ॥ योविधिनिषेधउहोवैं ॥ उं
चनीचकीठौरनजावैं ॥ परिएदोउहेकछुनाहीं ॥ आपविचारोंअंतरमांही ॥ २९ ॥ नीचैंनीचकर्मआ
चरैं॥मदिरापानादिकउचरैं॥तोहुंइनकौंदूषणनाहीं॥सोनितहीहैंदूषणमांही ॥३०॥अरुजोग्रहीकरतहैसंग
ऋतुकेसमयजुवतिप्रसंग ॥ तोताकौंकछुदूषणनाहीं ॥ सोनितहींहैदूषणमांही ॥ ३१ ॥ जैसैंपऱ्योधरणीं
परकोई ॥ ताहीनपरनीकोंभयहोई ॥ परिजेकछुचढेहैंऊंचें ॥ संगकारिदहिआवैंनीचैं ॥ ३२ ॥ तातैं
तिनकौंसंगनकरणो ॥ मनवचक्रमसंगपरिहरणो ॥ ज्योंज्योंप्राणीछोडेकर्म ॥ त्योंत्योंछुटैंपावैंमर्म ॥ ३३
॥ क्षेमधर्मसबनिकौंएह ॥ मिटेसोकमोहसंदेह ॥ यानिमितमेंभेदसूनायें ॥ थोरैंथोरैंमेंठहरायें ॥ ३४ ॥
पीछेंभ्रमकहीसकलनिवारैं ॥ ऐसीभांतिजीवनिविस्तारैं ॥ जबनरविषयनिउत्तमजानैं ॥ तबतिनमेंअश
क्तिहिठानैं ॥ ३५ ॥ तातैंत्हृदयउपजैंकाम ॥ तातैंतहांकलहकौधाम ॥ ताहिंहुतैंक्रोधउपजावैं ॥ तब
अविवेकआपुहीआवैं ॥ ३६ ॥ सोअविवेकहरैंसबज्ञान ॥ तातैंप्रानिमृतकसमान ॥ तातैंकाजअकाजन
जानैं ॥ निशदिनबहुविधिचिंताठांनैं ॥ ३७॥ सबपुरुषारथहोवैंछीन ॥ निशदिनरहैंदुषितअरुदीन ॥
तातैंसमुझेआपुनआन ॥ मिथ्याजीवेवृपभसमान ॥ ३८ ॥ ज्योंहोवेलौहारकैषाल ॥ स्वासलेतयोंषोवैंकाल

अरुपुनिकहैंकर्मफलजेतैं ॥ स्वर्गादिकनानाविधितेतैं ॥ ३९ ॥ तेतेकहींकारिरुचीउपजाई ॥ मेटीनिषेध
निबधिकरवाई ॥ जैसैंऔषधकटुकषवावैं ॥ बालककौंलाडूहिंदिपावैं ॥ ४० ॥ औषधकौंफललाडूना
हीं ॥ औषधहूतैंरोगसबजाहीं ॥ स्वर्गहेतजोकर्मनिकरैं ॥ पुनिसुन्तित्वफलहिंपरिहरैं ॥ ४१ ॥ तबअ
नर्थतजिअर्थहिंआवैं ॥मोमांहीनिहकर्मसमावैं॥अरुजबतेंजन्महीपावैं ॥ तबतैंआपुहिविषयकमावैं॥४२ ॥
पुत्रकलत्रकुटंबअरुप्राना ॥ इनकेहेतचहैंसुषनाना ॥ आपुआपुकौंकरैअनर्थ ॥ तिनकौंमूरषजानैंआ
रथ ॥ ४३ ॥ ऐसैयाभवमैंनितभर्मैं ॥ कदेंनजानैंसुषकेमर्मैं ॥ अरुतिनकौंजोभरमतदेषैं ॥ सदानिरंतर
दुषीतलेषैं ॥ ४४ ॥ सोतिनकौंकबहूंनबहावैं ॥ अर्थअरुकामनकदेंदृढावैं ॥ तातैंमेतोसबविधिजांनो॥ कै
सैकामअरुअर्थबषानो ॥ ४५ ॥ परिजेकछुश्रुतिमांहीसुनायें ॥ अर्थधर्मअरुकामबतायें ॥ तेतेसकल
छुडावनकारण ॥ हेतबिचारकीयोउचारण ॥ ४६ ॥ एसोबेदतत्वनहिंजानैं ॥ मूरषपुष्पितबैनबषानें ॥
फलनिहेतआरंभकेकर्म ॥ तिनकौंकदेंनछूटेभर्म ॥ ४७ ॥ कामीकृपणलोभअधिकारी ॥ तृष्णाआकुल
सदाबिकारी ॥ फूलहिंमांहीफलकरीमानैं ॥ कामनिलागतत्वनहींजानैं ॥ ४८ ॥ मैंतिनकेनितहृदैमाही
॥ परितौहूतौंजानैनाहीं ॥ जातैंयहसबजगतपसारा ॥ अरुसमस्तयाकैआधारा ॥ ४९ ॥ जाकीशक्ति
पाइसबवर्त्तैं ॥ चंबकसंगलोहाज्यौंनितैं ॥ जाकीआज्ञासबहींमानैं ॥ कोईमरजादानहींभानैं ॥ ५० ॥ ए
सोंहिसबहीनमेंईस ॥ जैसैंसकलदेहमेंसीस ॥ परितेकांमकर्मतेंअंध ॥ नामोहींदेषैंअर्थनिबंध ॥ ५१ ॥

जैसेंनयनरोगमयहोवें ॥ आगेंहोतिवस्तनजोवें ॥ योंअज्ञानअंधकमिष्ठ ॥ देषेनहींनिकटमेंइष्ट ॥ ५२ ॥ तेमोविनममतोनजांनें ॥ हरिजीवनजज्ञादिकठांनें ॥ तेफिरतिनहींहतेंपरलोक ॥ जन्मजन्मपावेंभयसोक ॥ ५३ ॥ जबयाकैबहुहिंसादेषी ॥ हनिहनिजीवजीवकापेषी ॥ ताकेहेतकहोतु नी ॥ हिंसाजज्ञाहेमांहिवषानी ॥ ५४ ॥ पशुवधएकजज्ञमेंभष्यौ ॥ औरसमस्तदूरकरिनाष्यौ ॥ जबप्राणी तामेंऽहरावें ॥ तबपुनिवेदसकलछुडावें ॥ ५५ ॥ वानिमितपसुहिंसाभाषी ॥ सोमूरषनितत्वकरीराषी ॥ तातैंबहुविधिकर्मनिकरें ॥ बहुकामत्हदैमेंधरैं ॥ ५६ ॥ पशुहिंसाकरिकरेंव्यवहार ॥ जेजे गावेंबहुप्रकार ॥ देवानितरभूतनकोंयजें ॥ डरतेंसुषइच्छानहींतजें ॥ ५७ ॥ सुगनतुलस्वर्गादिकभोग ॥ तिनकौंसुनिउत्समयालोग ॥ तिनकोइच्छात्हदैमेंधरें ॥ द्रव्यपरीचकर्मनिविस्तरें ॥ ५८ ॥ विघ्नहोईबहुकर्मनिमांहीं ॥ स्वर्गादिकउगवेंनाहिं ॥ ज्योंकोईसाधपरहिंजावें ॥ धनहितग्रहकेंधनहींलगावें ॥ ॥ ५९ ॥ पाछेंपरेंविघ्नजोकोई ॥ तादोन्योंतेंजावेंसोई ॥ योंजेबहुविधिकर्मऊपावें ॥ तेपसुदुहूलोकतैं जावें ॥ ६० ॥ सातिकजेतेदेवानिभजैं ॥ जक्षादिकनिराजसजजैं ॥ तामसभूतप्रेतबहूहेवे ॥ तनमनधन तिनतिनकोंदेवें ॥ ६१ ॥ इहांजज्ञबहुतविधिकीजैं ॥ विप्रनिबहूतदक्षिणादीजैं ॥ तातैंस्वर्गादिकसुषपाईयें ॥ तहांबहुतविधभोगभोगईयें ॥ ६२ ॥ पुनिजबहोवेतिनकौअंत ॥ तबहूवेभूवमेंदनरंत ॥ ऐसीभांति कामनाकरें ॥ तिननिमितकर्मनिविस्तरैं ॥ ६३ ॥ तिनकौमेरीवातनभावें ॥ भक्तिकहातैंत्हदेआवें ॥ ज

द्यपिवेदकमंउचारैं ॥ धर्मअर्थकामबिस्तारैं ॥ ६४ ॥ परितथापिब्रह्महींनतावैं ॥ क्रमक्रमदूजौंसकलछो
डावैं ॥ परिश्रुतिकौंआसेनहींजानैं ॥ फिरिकछूऔरेऔरबषानैं ॥ ६५ ॥ शब्दब्रह्ममहांदुर्बोध ॥ पंडि
तहूंनहींपावैंसोध ॥ सुषमरूपथूलव्हैंजाकौं ॥ मोत्विनभेदलहैंकौताकौं ॥ ६६ ॥ प्राणसरूपपरासेनाम ॥ प
स्यंतिकौंमनमैंधाम ॥ तीजीकंठमध्यमामूल ॥ चोथीप्रगटवैषरीथूल ॥ ६७ ॥ भेदतिनकौंकोइनजानैं ॥ ता
तैंऔरेऔरबषानैं ॥ अंतपारकोइनहींपावैं ॥ ज्यौंसायरथाह्यौंनहींजावैं ॥ ६८ ॥ अतिगंभीरअर्थहैंजा
कौं ॥ कोईभेदनजानैंताकौं ॥ मेसबहिनमैंअंतरजांमीं ॥ शक्तिअनंतसकलकोस्वामी ॥ ६९ ॥ सर्वव्या
पकब्रह्मस्वरूप ॥ लिप्तनकबहूंपरमअनूप ॥ सोईव्यापकसबहिनूमांहीं ॥ शब्दरूपदूजाकौंनाहीं ॥ ७० ॥
कमलनालमैंतंतूजैंसें ॥ शब्दरूपसबमैंमेऐसे ॥ सोईप्रगट्यौबहुविस्तार ॥ मनकरित्हृदयहूंतैंमुषत्धार ॥
॥ ७१ ॥ज्यौंमकारितंतुनिबिस्तारैं ॥ करिबिस्तारबहुरिसंहारैं ॥ वेदस्यौंहिममावैस्तार ॥ ओंकारमूलआ
कार ॥७२॥ तातैंअक्षरबहुतप्रकार॥तिनतैंछंदवारनहींपार॥चारचारअक्षरअधिकांहीं॥ छंदहोतएसीवि
धिजांहीं॥७३ ॥ अेकहुंतेंयौंहोईअनेक॥बहुरौसकलएककेएक ॥ गायत्रीअक्षरचौवीस ॥उष्णिकछं
दअष्टअरूवीस ॥ ७४॥ जोबत्तीसअनुष्टुपसोहैं ॥ बृहतिनामतीसषटकोहैं ॥ पंक्तिनामअक्षरचालीस ॥
सौंहोत्रिष्टुपचौवालीस ॥ ७५ ॥जपतिछंदअष्टचालीस॥ कहतपारनहींकोटवरीस ॥ याविधिप्रगट्यौबहुवि
स्तार ॥ जाकौंकछूंवारनहींपार ॥ ७६ ॥ कहांहृदैमैंकहांवतावै ॥ लेकरिअंतकहांठहरावैं ॥ एसोमतो

नजानेंकोई ॥ मोबिनभावेंविधिकिनहोई ॥७७॥ जज्ञरूपकहीमोकौंराषैं ॥ सकलदेवमयमोकौंभाषैं ॥ मेरेहेतकरमंकरवावें ॥ मोतेंउपज्यौंसकलबतावें ॥ ७८ ॥ अंतसकलकौंभाषेनास ॥ मोकौंकहैंनित्यप्रकास ॥ नानारूपनिवृथाजनावैं ॥ एकब्रह्मकहीसकलसुनावैं ॥ ७९ ॥ जेसेंसापजेवरीमांही ॥ यौंसबजगतबतावेंनाहीं ॥ मोकौंनित्यनिरंजनभाषैं ॥ अंजनसकलदूरिकरीनाषैं ॥ ८० ॥ तातैंश्रुतिनितमोहीबतावें ॥ परियहतत्वनकोईपावें ॥ सोपावेंजोममआधीन ॥ होईनिहकामरहैंलौलीन ॥ ८१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यौंसुनिकरिश्रुतितत्वकौंउद्धवलह्यौंआनंद ॥ प्रणकरिपुनिकृष्णसौंजातैंछूटैभवफंद ॥ ८२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेएकाविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ तत्वगणितबावीशमेंकह्यौभेदसबएक ॥ जन्ममृत्युविधिआदिलेमायाब्रह्मविवेक ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥-हेदेवेशतत्वहेंकेतें ॥ कहोकृपाकरिमोसोंतेतें ॥ जिनकौंरचितसकलसंसार ॥ जोदीसेनानाविस्तार ॥ १ ॥ तुमतौंअष्टाविंशतिकहें ॥ तेमेंदृढकरिमनमेंगहें ॥ परिबहूतेंमिलिबहुविधिकहें ॥ अरुतिनतेंसुनियोंहिगहें ॥२॥ कोईकहैतत्वछवीस ॥ अरुत्योंकोईकहेपंचीस ॥ केईषटअरुकेईचार ॥ केईभाषेंशतविचार ॥ ३ ॥ केईनवकौंकरैविवेक ॥ केईभांषेंदशअरुएक ॥ केईतत्वमतविंषोडश ॥ अरुत्योंएकैकहैंत्रयोदश ॥ ४ ॥ केईभाषेंदशअरुसात ॥ अत्रऋषिमतेंस्मृतिविष्यात ॥ कोनप्रयोजनलेलेंभांषें ॥ यौंअपनेअपनेमतराषें॥५॥कृपाकरौनिजबेनसुनावौ ॥ सत्यमतोसोमोहीजनावौ

सुनिउद्धवकैबेनरसाल ॥ कृपासिंधूबोलेगोपाल ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
॥ हेउद्धवज्यौंज्यौंसबभाषैं ॥ जितनेजितनेतत्वनिराषैं॥ तेतैंतुमसबमानोसत्य ॥तत्वविचारैंसबैंअसत्य॥७॥
मायादेपिकहैंजोजेतैं ॥ मायामांहींसत्यहैंततैं ॥ मोहींदेषिजोतिनकौंदषैं ॥ तोसमस्तमिथ्याकरीलेषैं ॥ ८
॥ मायामांहींजुक्तविचारैं॥ आनौआनौमतोउचारैं॥ यहयोंयहयोंयहयोंनांहीं॥ कहैंसबैंमिलिआपुनमांहीं
॥९॥ यहयोंहीहैंजोमैंभाषों॥तेरीकहीसत्यनहींरापौं ॥ याविधिममनायाभरमाए ॥ तिननानाविधिपंथचलाए
॥१०॥ममनायाकीशक्तिअनंत॥तिनकेपंथनिकौंनहींअंत ॥ जबसमदमउरअंतरआवैं॥तबएसकलभेद
छिटकावैं॥११॥जेतेतत्वसकलमायाकैं॥जिनतेंभएसकलताताकैं॥क्रमक्रमतत्वउपजतेगए ॥ त्यौंत्यौंभेदब
हूतविधिभए॥१२॥जैसेएकवृक्षविस्तार ॥ ताकीसंपतिबहुतप्रकार॥कछुसाषावहूतपरेसापा ॥अरुतिनकें
बहूउपसाषा॥१३॥तिनकौंबहुतभांतिविस्तार॥पानफूलफलविविधप्रकार॥अरुतावृक्षहिंवरनेंकोई॥ज्यौंज्यौं
कहैंसत्ययोंहोई॥१४॥ थेरैंहोईकहेसोसाषा ॥ बहुतेंहोईमिलिपरसाषा ॥ उपसाषामिसिबहुतेंधिहोवै ॥
तेसबपंथासत्यसबजोवैं ॥ १५ ॥ यौंसंसारवृक्षविस्तार॥मायामूलसकलप्रकार ॥तत्वसकलसाषापरसाष
अरुतिनकेबहुविधिउपसाषा ॥ १६ ॥ तातेंज्यैंवर्णेंयोंसत्य ॥ पारिसबमायासकलअसत्य ॥ त्योंहित्यौंजि
नकेमनआयौ ॥ त्यौंहित्यौंतिनबरनिसुनायौं ॥ १७ ॥ मायाकरीबंध्योसोआतम ॥ तातैंछोडैसोपरमात
म ॥ एद्वैतअरुजडचोवीस ॥ तिनकौंमिलेसकलछवीस ॥ १८ ॥ अरुजेबंधमुक्तहैदोई ॥ तेभममा

यासत्यनकोई ॥ तातैंजीवब्रह्मदूनाहीं ॥ यौंपचवीसजानौंमाही ॥ १९ ॥ सतरजतमएगुणहैजेतैं ॥ जड
सरूपमायाकेतेतै ॥ रजउतपतिसातिकप्रतिपाल ॥ तामसरूपग्रसतहैकाल ॥ २० ॥ राजसहुतेंकर्मअधि
कार ॥ तामसतेंअविवेकअपार ॥ सातिकगुणतेंउपजेज्ञाना ॥ एहेमायाकेगुणनाना ॥ २१ ॥ इनतेंप
रेआतमामानौं॥तातेंब्रह्मरूपकरिजानौ ॥पंचवीसताहितेकरे ॥ त्यौंहितेंसुनिऔरउगए ॥२२॥सोहेकाल
गुणनिविस्तारे ॥ सोउसभावसोशक्तिपसारे ॥ तातैंकालरूपहरिजानौं ॥ अरुसुभावमहत्तत्वहिमानौं ॥
२३ ॥ तातैंतत्वअधिकनगहीयैं ॥ पंचवीसछवीसहिकहीयैं ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ तनमात्र
एपंचप्रकारा ॥ २४ ॥ कर्णत्वचानयनरसघ्राणा ॥ एपंचौइंद्रियहैज्ञाना ॥ पायुउपस्थचर्णकरवानी ॥
पंचकर्मइंद्रिययहजानी ॥ २५ ॥ मनदशहुंइंद्रियकौराजा ॥ जाकीशक्तिकरैंसबकाजा ॥ क्षितिचलप
वनतेजआकाश ॥ एअठाईसतीनगुणपास ॥ २६ ॥ गतिउत्सर्गकर्मअरुबचना ॥ एपांचौइंद्रियफल
रचनां ॥ तातैंअष्टाविंशतितत्व ॥ अधिकनभाषेंज्ञानसित्व ॥ २७ ॥ सृष्टिआदिथिमायाएक ॥ पु
रुषशक्तितेंभईअनेक ॥ तनमात्रामहतत्वअहंकार ॥ ऐहेकारणनवेप्रकार ॥ २८ ॥ पंचभूतमनइंद्रिय
दश ॥ कारजरूपप्रकृतिषोडश ॥ सत्वरजतमगुणतीनप्रकार ॥ तिनतेंरच्योंसकलविस्तार ॥ २९ ॥का
रणकरणप्रकृतिजानौं॥पुरुषनिर्मितसाक्षीमानौं ॥ इच्छाशक्तिपुरुषतेंगवें ॥ मिलिसमस्ततत्त्वसृष्टिउपावें ॥
३० ॥ सतधातुकौसबविस्तारा ॥ आतमद्रष्टाकैआधारा ॥ सकलतत्वशतमेंआयें ॥ तातेंएकनिशप्तत्र

तायैं ।। ३१ ।। पंचभूतआपाहिउपजायैं ।। तिनकैंबहुविधिदेहबनायें ।। आपुप्रवेसकीयोंहरितिनमें ।। चे
तनदीसतुहैंजिनजिनमैं ।। ३२ ।। ऐसीविधषटकौविस्तार ।। आपुमांहीसबकरैंविचार ।। पृथिवीआपते
जत्रयतत्व ।। अरुआतमानिर्मितसबसत्व ।। ३३ ।। याविधिचारतत्वविस्तार ।। उंचौनीचौसबसंसार
।। पंचभूततनमात्रापंच ।। पचेंद्रियसबपरपंच ।। ३४ ।। मनआतमामिलिदशसात ।। तत्वसतदशज्ञानोत
त ।। मनआतमाएककरिजानैं ।। तेजनषोडशतत्वबषानें ।। ३५ ।। पंचभूतअरुइंद्रियपंच ।। ब्रह्मजीव
मनकोपरपंच ।। एसीविधिकरिपंथचलावैं ।। तेहरकौंसबजगतबतावें ।। ३६ ।। इंद्रियपंचपंचहीभूत ।।
आत्मामिलिसबउद्भूत।।ऐसीविधएकादशकहैं।।जुक्तविचारदृढमैंगहें ।।३७।। पंचभूतमनबुधअहंकार।।
आतमामिलिनवकोविस्तार।।ऐसीबहुविधिमारगकहैं।।जुक्तिविचारदृढमैंगहैं।।३८।।प्रकृतिपुरुषकौलहैंविवे
क।।इनकौंजानिएककौंएक।।एसोसुनितत्वकौंज्ञान।।उद्धवपूछ्योपरमसुजान।।३९।।उद्धवउवाच ।।चौपाई
।।हेप्रभुजीयहज्ञानसुनावौ।।मेरेउरकोअज्ञानामिटावौ।।चैतनज्ञानरूपअविनासी ।।सुधानंदपरमप्रकासी।।४०
।।ऐसेंआतमतुमरोरूप ।। परैंगुणनितेंपरमअनूप ।। जडविनासमयपरमअसुध ।। दुषरूपपलसुषनशुध
४१ ।। ऐसीप्रकृतिपुरुषतेंन्यारी ।। तोहूंभईपरस्परप्यारी ।। प्रकृतिमांहीआत्मामिलिरह्यौं ।। अरुआत
माप्रकृतिकरिगह्यौ ।। ४२ ।। इनमेंभेदनजान्यौंपरैं ।। एकमेकव्हैसबअनुसरें ।। इनमैंप्रकृतिकहालौं
कहीयें ।। कोनआतमाजोदृढगहीयै ।। ४३ ।। करिकरुणाबानीविस्तरौं ।। वचनबानसंशयपारिहरौं ।।

तुममामाबंध्योसंसार ॥ तुमहीहुतैंहोईउधार ॥ ४४ ॥ तुमहीमायाकीगतिजानों ॥ कृपाकरौतबतुमहीभानो ॥ बानीसुनीभक्तअपनेकी ॥ तबबोश्रीकृष्णविवेकी ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेउद्धवयहज्ञानअगाध ॥ कोईएकलहेंममसाध ॥ सोयहज्ञानसुनावोंतोही ॥ तुहैसदाअनुवृतमोही ॥ ४६ ॥ उद्धवप्रकृतिरचेसंसार ॥ सुषमथूलविविधप्रकार ॥ उपजैंबरतैंहोईबिनास॥तामैंआत्मनियप्रकास ॥४७॥ उद्धवयहहेमेरीमाया ॥ तिनसतरजतमगुणउपजाया ॥ तिनकौंसकलत्रिविधविस्तार ॥ जाकोकछुपारनहींपार ॥ ४८ ॥ त्रिविधकहनकौंपरिकहूंभेद ॥ तिनतेंजीवलहेंनेयबेद ॥ अध्यात्मअधिदैवअद्भुत ॥ त्रिविधरूपसबजगउदभूत ॥ ४९ ॥ द्दगअध्यात्मरूपअधिभूत ॥ रविअधिदैवमिलिअदभूत ॥ तीनोंमिलेपरसपरजबही ॥ तिनकौंकार्यसीजैंतबही ॥५० ॥ तीन्यौविनाकछुनहींहोई ॥ तीनिमिलिबरतेसबकोई ॥ त्वचास्पर्शपवनज्योंजानों ॥ कर्णनिशब्ददिगयोंमानों ॥ ५१ ॥ नासागंधअस्वनीसूता ॥ जिव्हारसवर्णजलजूता ॥ चितचेतनाअंतरजामी ॥ बुद्धिबोधनाब्रह्मास्वामी ॥ ५२ ॥ अहंकारअहंकरतारुद्र ॥ मनमानवोदेवताचंद्र ॥ याविधित्रिविधप्रपंचपसार ॥ सकलपरेंआत्मानजसीर ॥ ५३ ॥ इनतीनौविनजगतनहोई ॥ तेआतमाविनरहेंनकोई ॥ आदिसकलकेआतमएक ॥ जातेंचेतनहोईअनेक ॥ ५४ ॥ आत्मस्वप्रकाशअविनासी ॥ चेतनरूपसकलसुषराशी ॥ एसबाआतमेकेबंधाय ॥ अरुआतमांसकलकेपार ॥ ५५ ॥ विनआतमाकछुनहींहोई ॥ अरुआतमानानेंकोई

महत्तत्त्वज्यौंउमज्यौंअहंकार ॥ तिहुंगुणनिकोंत्रिविधप्रकार ॥ ५६ ॥ सोअज्ञानमूलकरिमानौं ॥ जा
कौंकीयोंजगतमयजानौ ॥ सोआतमांआपहिलीयौ ॥ भवभयआपुआपुकौंकीयौं ॥ ५७ ॥ आतमस
दाएकहीरूप ॥ अहंकारतेंपरेंअनूप ॥ सोजनरूपआपनोंजानें ॥ तबहीसकलउपाधीभानैं ॥ ५८ ॥
॥ सोकछूहोइनहींउपाधी ॥ परिआतमालेईकरिव्याधी ॥ समुझेजबहीआपनोंरूप ॥ तबआतमातजेभव
कूप ॥ ५९ ॥ अरुतबरूपआपनौंजानैं ॥ जबममचर्णदृढदेमेंआनें ॥ जद्यपिमिथ्याबसंसार ॥
॥ जोकछूदीजेंविविधप्रकार ॥ ६० ॥ परिजौलौंनहींमोकौंभजें ॥ तोलोंनिजअज्ञाननतजैं ॥
जबहीमेरेसरणहिंआवैं ॥ तबहीआतमज्ञानहिपावैं ॥ ६१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंश्रीमुखबेनसुनिप्र
कृतिपुरुषकोज्ञान ॥ उद्धवकीनोप्रणतबहरिजनपरसुजान ॥ ६२ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ तुमकरिरहितबुधिहैजिनकी ॥ कहियेदेवकौनगतीतिनकी ॥ सकलव्यापिआत्माएक ॥ क्यौंक
रिपावैदेहअनेक ॥ ६३ ॥ अरुशुभअशुभकर्महैंजतें ॥ त्रिगुणरचितकहीयेंसबतेतैं ॥ तिनकर्मनिनिहकर्मबंधा
वैं ॥ क्योंकरिजानीआजोनीपावैं ॥ ६४ ॥ अमरमरेकेसेंकाहिदेवा ॥ जाकौमाहीबतावौभेवा ॥ यहतुमाविनानको
ईजानै ॥ जद्यपिविद्याबेदबषानें ॥ ६५ ॥ जोकछुपढैबंधसोहोई ॥ तातैंतत्वनजानैंकोई ॥ याविधिउद्धव
पूछ्योंज्ञान ॥ तबहंसीबोलेश्रीभगवान ॥ ६६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धव
यहमनपरमविकारी ॥ सबइंद्रियनिमांहीआधिकारी ॥ इंद्रियनिव्हैंमनइंसबकरैं ॥ सुरहितरुहुउद्यमाविस्त

रैं ॥ ६७ ॥ सोतनतजिदूजैंतनजावैं ॥ तहाहीतहाआतमाआवैं ॥ जिनजिनसुषनिसुनेअरुदेषे ॥ तिन तिनकौंउत्तमकरिलेषैं ॥ ६८ ॥ तिनकोसोमननिशिदिनिध्यावैं ॥ यहतनछीनभएतहांजावैं ॥ वहतनपाई बिसारेयाकौं ॥ जन्ममर्णकहियतुहैंताकौं ॥ ६९ ॥ जातनमेंबांधेअभिमान ॥ छोडैपूर्वतनकोआन ॥ जन्ममरणआत्मकौंसोई ॥ दूजोजन्ममरणनहींकोई ॥ ७० ॥ जैसैंसुपनमनोरथजावे ॥ यहतनछोडीऔरहीपावें ॥ तबयातनकीसुधीनरहैं ॥ वाहीतनकोंआपुहींकरैं ॥७१॥ जन्ममरणस्मृतिकोंहोई ॥ आतमजन्ममरणहेसोई ॥ औरकछुआत्मनहीमरैं ॥ अरुकबहुनाहींअवतरैं ॥ ७२ ॥ योंतनमेमनकोअभिमान॥तातैंतनउपजतुहैंनाना॥तेसबआतमकेआधारा॥तनमनबुधिचितअहंकारा ॥७३ ॥जिनसंगतिआत्मकौंदुष॥तिनहिंतजेविनपलनहींसुष॥उद्भवसकलदेहहैंजेतें ॥सदासकलविनशनहैंतेतैं ॥७४॥कालनदीप्रवाहप्रचंडताकरिपलकपरकनहींथंढ॥जैसैंनदीनिरंतरवहैं॥परिदेषनकौंत्यौंहीरहैं॥७५॥औरज्योंअर्चिनिरंतरजावें ॥ परिदीपादीतिमहिंरहावैं ॥ अरुजैसैंसबवृक्षनिकैंफल ॥ दीसैंत्यौंपरिथिरनाहींपल ॥ ७६ ॥ त्यौंहिसबदेहानिकौंजानौं ॥ कालहींग्रसतनिसादिनमानौं ॥ जद्यपिअवस्थाजातिलेषैं ॥ बालकुमारजुवादिकदेपैं ॥ ७७ ॥ परितोहूंमूरषनहींजाने ॥ मैंवहईहौंयौंकरिमानें ॥ यहआत्मासोसदाअजन्म ॥ देहसंगतेंपावेजन्म ॥ ७८ ॥ अरुत्यौंअमरनिरंतरजानौं ॥ देहसंगमरतोसौंमानौं ॥ जैसेंअग्निदारुकेसंग ॥ सदांलहेउतपातिअरुभंग ॥ ७९ ॥ ज्यौंलगितनकीसंगतीरहैं ॥ त्यौंलगिआत्माअतिदुषसहैं ॥ गर्भप्रवेसवू

द्विअवतार ॥ बालकअवस्थातथाकुमार ॥ ८० ॥ जौवनमध्यजराअरुमरनां ॥ नवअवस्थादेहआव
रना ॥ आतमएकरूपसबहिनमैं ॥ कबहुंनहिंलिषैंतिनतिनमैं ॥ ८१ ॥ ऐसेंजानिमुक्तितबहोई ॥
मेरीसरणांगतजेकोई ॥ अपनौंदादौपिताविचारौं ॥ तिनकौंमरणौंउरमैंधारौं ॥ ८२ ॥ भाईज्यौंअबमें
अनुरक्त ॥ सौंहितेहूंहूतेंआशन्क ॥ तेतोप्रगटकालवशभयें ॥ परवशभएछोडिसबगये ॥ ८३ ॥ मे
रीयौंहैहैगतिऐसी ॥ भईबापदादाकेजेते॥अरुमेरेंअबबालकहैजैसैं ॥ हमहुंहुतैंपिताकेतैसै ॥ ८४ ॥ स
कलअवस्थासोममगई ॥ यहतोप्रगटऔराहिभई ॥ याविधिजैसेंसबदेह ॥ सबछूटहैंपुत्रधनगेह ॥ ८५
यौंउरमैंबहुभांतिविचारैं ॥ अपनेंबंधनसकलनिवारैं ॥ देहादिकसबसंगातितजैं ॥ सदानिरंतरमोकौंभजै
॥ ८६ ॥ बीजजन्मपाकेतेंअंत ॥ षेषीषेषमाहीविरतंत ॥ षेतीकरणहारसोन्यारा ॥ यौंतनन्यारौंकरैंवि
चारा ॥ ८७ ॥ कर्मबीजविस्तारैंनाहीं ॥ दग्धकरेजेहीतनमांही ॥ तिनतेंन्यारोआपुहींजानैं ॥ संगकरे
तेंसुषदुषमानैं ॥ ८८ ॥ तातैंतनकौंसंगनिवारैं ॥ याविधिआपुआपुकौंतारैं ॥ जोजनन्यारोआपुनजानैं
॥ तनसुषहेतकर्मसबठानैं ॥ ८९ ॥ तिनतेंनानादेहनिपावैं ॥ तिनहीजन्मीजन्मीमरीजावैं ॥ सातिकतैंसुर
कैंऋषिहोई ॥ राजसनरकौंदानवसोई ॥ ९० ॥ तामसपस्वादिककेभूत ॥ याविधित्रिगुणजगतअदभूत
॥ जद्यपिआत्मसदाअनीह ॥ कबहुंकछुंनकरेसनीह ॥ ९१ ॥ परितनकरतेंकरताहोई ॥ संगदोषबं
धतहैसोई ॥ जैसैंनाचैगावैंकोई ॥ तिनकौंदूजोद्रष्टाहोई ॥ ९२ ॥ सौंयौंआबहुबेठकरैं ॥ तानतालरा

गाहेउरधरैं ॥ त्यौंमायागुणकर्मनिठानैं ॥ आत्मकरैंआपकौंमानौं ॥ ९३ ॥ तिनहींकर्मनिबंधेआपु ॥
जोकछुकरैंहोईसोपापु ॥ तिनकौंतनतजैंनहीजोलौ ॥ जनममरणदुषमिटेनतोलौं ॥ ९४ ॥ जलप्रवाहठि
गठाठौकोई ॥ तबवृक्षनिदेषैंचलतेसोई ॥ नयनभ्रमतजौकोईदेषैं ॥ तबसबभ्रमतिधरातिलेषैं ॥ ९५ ॥
तेसैंयहआत्माथिरजांनौं ॥ औरसकलचंचलकरीमानौं ॥ निश्चलमनकरीदेषैंजबही ॥ निश्चलब्रह्मरूप
हैंतबहीं ॥ ९६ ॥ जेसैंस्वप्नमनोरथमृषा ॥ यौंसबजगतअरुविषयतृषा ॥ परिजद्यपिजगसत्यनकोई ॥
तोहूंकदेंनिवृतनहोई ॥ ९७ ॥ जैसेंसुपनसत्यकछुनाहीं ॥ परिजोलेंहिनिद्रामांहीं ॥ तोलगिसकलसत्यई
जानैं ॥ सुषदुषपावैंउद्यमठानैं ॥ ९८ ॥ त्यौंअज्ञाननिंदसबजोलौं ॥ जनममरणभवमिटेनतोलौं ॥ तातैं
उद्धवसबभ्रमजानौं ॥ महाअनर्थरूपकरिमानौं ॥ ९९ ॥ विषयनिकौउद्यमछाटिकावौ ॥ अरुजेहेतस
कलमिटावौ ॥ ज्यौंलगिआपुहिसमुझैनाहीं ॥ त्यौंलगिहैंनानाभयमाहि ॥ १०० ॥ आपुहिसमुझैनहींतो
लौं ॥ ममआधीननहोईजोलौं ॥ ममआधीननिरंतररहै ॥ जगउपहाससीससबसहैं ॥ १०१ ॥ केई
एककरेअपमानां ॥ केहगिईबांधेअज्ञाना ॥ केईमूतेथुंकेतनमैं ॥ डारैंधूरभीषकेअनमैं ॥ २ ॥ एकै
डहीकैमूढडिगावै ॥ एकेनिंदेचोटलगावैं ॥ ऐसैंबहुविधिदुषउपजावैं ॥ बहुविधिभयकैंबैनसुनावे ॥ ३ ॥
परिजोअपनोश्रेयबिचारैं॥सोएकोमनमैंनहींधारैं॥बहुकष्टनितैंमनानीडिगावैं॥सोभवतजीममचर्णनिआवैं॥४
मेरोपंथपडगकीधारा ॥ जोनहींडिगेसोउतरेपारा ॥ हरिकेवेननिदुष्करजांनीं ॥ उद्धवप्रणकरीभयमानीं

॥ १०५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुतुमएसेंबेनसुनायैं ॥ तेमेरेंमनदुष्करआयें ॥
जोअसाधवेकाजधिकावें ॥ तातेंसहैंकोनविधजावें ॥ १०६ ॥ मेरेंह्वदैज्ञानठहरावौं ॥ सहनउपाईमो
हीसमुझावौं ॥ जेसहनोउत्तमकारिजानैं ॥ अरुत्यौंऔरनिपासबषानौ ॥ १०७ ॥ पारितेंआईपरेनही
सहैं ॥ अंतप्रकृतिकेबसव्हैंरहैं ॥ केवलजेतुमचर्णआधारा ॥ तिनमेंकोईनहींविकारा ॥ १०८ ॥ ते
नितानिश्चलसंतिलरूप ॥ नितआनंदितपरमअनूप ॥ तिनकौंकर्दलिपैंकछुनाहीं ॥ सदाबसेतवचर्णनिमां
ही ॥ १०९ ॥ औरेंसकलप्रकृतिआधीन ॥ सदाबिकारनिआगेदीन ॥ तातेंतुमहीकरुणाकरौ ॥ ज्ञा
नादिकममह्वदयेंधरौ ॥ ११० ॥ दोहा ॥ ॥ एसीकिनीप्रष्णतबउद्धवपरमसुजान ॥ भाष्योंसह
नउपाईतबभवभंजनभगवान ॥ १११ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसं
वादेभाषाटीकायांद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तिरसकारमनसहनतासंयमबुद्धिप्रकार ॥
कहीअध्यायतेवीशमेंभिक्षूगीतमझार ॥ १ ॥ दुष्टवचनशरतेंबुरेभलेशत्रुकेबान ॥ श्रीधरजोनरसहतहैं
तासमसाधुनआन ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेउद्धवएसोनहींकोई ॥ दु
र्जनवचनक्षुभितनहींहोई ॥ दुर्जनचनबानजोसहैं ॥ मनक्रमबचनक्षोभनहींलहैं ॥ १ ॥ जोएंसोसोसाध
कहोवैं ॥ याबिनसाधपदईनहींपावैं ॥ षेंचीकसीसहनेगहीबान ॥ अरुतेंभेदेंपरमअस्थान् ॥ २ ॥ तौति
नतेंदुषहोईनऐसों ॥ दुष्टवचनवाननतेंजैसौं ॥ पारिमेतोहोउपाईसुनावौं ॥ सहनसंलितउरठहराऊं ॥ ३ ॥

मोसोंसुनोएकइतिहास ॥ जातेंहोवेन्हदैप्रकास ॥ भिक्षुकएकज्ञानमयभाषी ॥ ताकीतोऊंसुनाऊंसाषी ॥ ४ ॥ कीयौअसाधुनिन्हूअपमाना ॥ तिरस्कारठान्यौविधिनाना ॥ तबताभिक्षुकगाथाकही ॥ कुमति आपनीसगरीदही ॥ ५ ॥ सोअबसुनौंसुचित्तव्हैमोसौं ॥ निजजनजानीकहतहौंतोसौं ॥ मालवदेशर हेंघरजाकौं ॥ षेतीवणिजजीविकाताकौं ॥ ६ ॥ क्रोधवंतलोभीअरुकामी ॥ विप्रनकैंअपजसकौंनामी ॥ जाकेंहोइद्रव्यअधीकाई ॥ अरुजोनहींदेहींनहींषाई ॥ ७ ॥ आपनकौंपीडाउपजावे ॥ पुत्रादिक षानेंनहींपावें ॥ देवपितरअतिथिनहीपोषें ॥ वैंनहूंकौनकदेंसंतोषें ॥ ८ ॥ सोकदरजएसोद्विजहोई ॥ तातेंनीचौऔरनकोई ॥ तातेंसोकदरजाद्विजभयौ ॥ सबजगमेंजिनअपजसलयौं ॥ ९ ॥ ज्ञातिअति थिबंधवनिजतनकौं ॥ ईनहींहेतनपरचैंधनकौं ॥ पुत्रादिककलपेंदुषलहैं ॥ ज्ञातिभृत्यदुबैंननिकहैं ॥ १०॥ पुत्रकलत्रअरुकन्याभाई ॥ जहांलगेंसबबंधसगाई ॥ तेसबद्रोहानिरंतरकरैं ॥ ताकौंअप्रीयसबआ चरैं॥११ ॥ ऐसोदेषीपापअतिताकौं॥जक्षसमानवितहैंजाकौं॥धर्मकामदूनोकारिहीन॥दुहूंलोककेसुषतेंछीन ॥१२॥जिनहेतपंचजज्ञाननिनकरैं॥सकलग्रस्तदंडकौभरैं॥तिनतवकीयौदेवतिनकोप॥तातेंभयोविप्रधनलोप ॥ १३ ॥ कछुद्रव्यज्ञातिनीहरलयो ॥ चौरीभएहुतैंकछूगयौ ॥ कछूअग्निलगेंतेजऱ्यौं ॥ कछुधरणीमांही बिसऱ्यौ ॥ १४॥ कछुराजाविघ्नतेंगयो ॥ यौंबहुभांतिक्षिनसबभयौ ॥ जबताकौंधनसबहरिलियो ॥ तिर स्कारतबसबहीनकीयौं ॥ १५ ॥ बहुतकष्टकारिधनउपजायौ ॥ सोनहींदीयौनआपुनषायौं ॥ तातेंउपजी

चिताचित ॥ निशादिनबर्यौन्हदेमैंवित ॥ १६ ॥ होवैंततषेदकौपावैं ॥ आसुकंठबहूताविधिध्यावैं ॥ ऐसी
विधिउपज्यैंवैराग ॥ जातैंसकलदुषनिकौत्याग ॥ १७ ॥ तबसोविप्रवचनउचारैं ॥ तबबहुतभांतिआ
पुहिधिकारैं॥अहोवृथामैंकष्टउपायौ॥आपआपकौंदुषउपजायौ॥१८॥बहुतैंश्रमउपजायौद्रव॥सुपनसमान
भयोसोसर्व॥नामैंषरच्यौमामैंषायौ ॥ नामैंएकहुंअगलगायौ ॥ १९ ॥ द्रवकदरजकहैंजेतो ॥ एकहुअ
र्थनआवैंतेनो ॥ नायहलोकनहींपरलोक ॥ केवलदुषवटैंभयसोक ॥ २० ॥ बहुतकष्टसहिंईहांउपायौ ॥
पुनिपरलोकनरकमैंजायौ ॥ परमजसस्विनकोजससुध ॥ अरुजेपंडितज्ञानप्रबुध ॥ २१ ॥ सकलगुण
निकेहैंगुणजेते ॥ लोभलेशतैंनासैतेतैं ॥ जेसैंरूपवंतअतिकोई ॥ केहुअंगनहींनहोई ॥ २२ ॥ सेतकुष्ठ
कोछटीकाएक ॥ मेटैगुणअरुरूपअनेक ॥ यौंथोरोऊजोहोवैंलोभ ॥ मेटैंसकलरूपगुणसोभ ॥ २३ ॥
जबतैंधनकौंसाधनकरैं ॥ द्रव्यहेतउद्यमविस्तरै॥तबतेत्रासशोकभयलहैं ॥ चिंताअग्निनिरंतरदहैं ॥
२४॥सिद्धभयअरुरक्षितभोग॥नाशलगैंनहींसुषसंजोग॥चौरीहिंस्यामिथ्यादंभ॥कामक्रोधदिशमर्णथंभ॥
२५॥ वैरअरुगर्भसपरधाभेद ॥ अप्रतितिचिंताभयषेद ॥ एपंद्रहजबहोईअनर्थ ॥ तबतिनहुतैंहोवैंअर्थ
॥ २६ ॥ तातैंपरमअनर्थकहावैं ॥ भलोचहेसोदूरिबहावै ॥ अर्थनामसुनीभूलेलोक ॥ बिनविचारपावैंभ
यसोक ॥ २७ ॥ पुत्रकलत्रबंधवअरुभाई ॥ मातपितासहीतसजनसहाई ॥ द्रव्यहेतसबकरैंविरुधा ॥
आपुआपुमैंठानैंजुध ॥ २८ ॥ द्रव्यकाजअतिक्रोधहिंकरैं ॥ तिनकौंमारैंआपनमरैं ॥ धनहेतप्रीयमाण

निछटिकावैं ॥ आपुहिंमूढनरकमैंजावैं ॥ २९ ॥ जाकेदेवबहुतविधिध्यावैं ॥ परियानरदेहनहींपावैं ॥
सोनरतनतामैंद्विजदेह ॥ करुणामयहरिजीकोगेह ॥ ३० ॥ ताकौंपाईअर्थनहींसाधैं ॥ सबतजिहरिकौं
नाहींआराधैं ॥ महाअनर्थअर्थकोगहैं ॥ सोभवसिंधुआपुतैंवहैं ॥ ३१ ॥ तातैंदूजोनहींमतिमंद ॥ परै
दुपमैंतजीआनंद॥देवपितरऋषिभूतसहायी॥पुत्रकलत्रआपुहितभाई॥ ३२ ॥धनईपाईजोईनहींपोषैं॥औ
रनहूंकौंजोनहींसंतोषैं॥सोसबत्यागीनरकमैंजावैं॥तहांमूढनानादुषपावैं॥३३॥सोतनधनमैंव्रथागमायौ॥भवदु
षतैंनहींआपबचायौ॥जेहिपाईबधीऐसीकरैं॥तातैंबहुरिनिजनमैंमरैं॥३४॥सोनरतनमैंव्रथागमायौ॥छांड्यौ
अर्थअनर्थउपजायौ॥वयबलआयूसकलममगए॥नषशिखवृद्धअंगसबभए ॥३५॥ अबमैंअर्थकोनावि
धिसाधैं॥दुराराध्यहरिकौंआराधैं॥भाईजेअनर्थसबजानैं॥तेउक्यौंआरंभनिठानैं॥ ३६॥छोडेअर्थअनर्थ
उपावैं ॥ क्यौंसबआपुंआपुंदुषपावैं ॥ परिएकोईनहींस्वतंत्र ॥ सकलदेषीयतूहैपरतंत्र ॥ ३७ ॥ तेजा
कीमायाकरीमोहैं ॥ नटबाजीकेसमसबसोहै ॥ भाईसोप्रभुबडोवरिष्ठ ॥ ब्रह्माआदीसकलकौंइष्ट ॥
३८ ॥ जेधनअरुजेधनकेदाता ॥ जेकामांधअरुकामाविष्याता ॥ अरुबहुधर्मकर्महेजेतें ॥ मातपितासु
षदाईतेतैं ॥ ३९ ॥ कहोकहातेंहेतआचरैं ॥ मृत्युग्रस्ततेंनहींपरिहरैं ॥ कालरूपशत्रुहैंजाकौं ॥ क
हौंकहांकोसुपहैंताकौं ॥ ४० ॥ परीजेदीनबंधुभगवान ॥ करुणासागरपरमनिधान ॥ तिनहींमोकौं
करुणाकरी ॥ जातेंममउरऐसीधरी ॥ ४१ ॥ भवसागरतैंतारैंजाकौं ॥ देहीनामवैरागहीताकौं ॥ ता

तेंमोहिदीयोवैराग ॥ मेरेप्रगटेपूरणभाग ॥ ४२ ॥ अबजोआयूहोईकछुमेरौ ॥ ताकारिमजनकरौंहारि
केरौ ॥ यातनकेगुणसकलनिवारौं ॥ मनतेंसकलकामनाटारौ ॥ ४३ ॥ सकलसाधूअनुमोदनकरैं ॥
तथाअस्तुयौंकहीउचरैं ॥ जद्यपिआयूथोरोहैमेरौ ॥ तोहूंहरिकौपदअतिनेरौ ॥ ४४ ॥ नृपषट्वांगज
बहींहरिध्यायौ ॥ एंकमूर्तिमेंहरीपायौ ॥ तातेंप्रभुसमकोईनाहीं ॥ जनकौंप्रगटहोतफलमांही ॥ ४५ ॥
मनबचकर्मअबताकौंभजौं ॥ दूजीसकलकामनांतजौं ॥ एसोनिश्चयमनमेंधर्‍यौ ॥ भिक्षुकभयोसकलपरि
हर्‍यौ ॥ ४६ ॥ सीतलत्दृदयतृषासबत्यागी ॥ निश्चलभयोविप्रबडभागी ॥ अहंकारममताकछूनाहीं ॥
एकाकीबिचरैंभूवमांही ॥ ४७ ॥ इंद्रियप्राणबचनममगयौ ॥ अंतरबाहारसंगसबदह्यौ ॥ आपुहीकाहु
कौंनलषावैं ॥ भिक्षाहेतग्रहनमेंआवैं ॥ ४८ ॥ संसकारनहींतबकौंजाकौं ॥ जीरणवस्त्रटुकतनताकौं ॥
भिक्षुकवृद्धविप्रकोंजोवैं ॥ तबबहुदुष्टघातकीहोवैं ॥ ४९ ॥ केईताकौंदंडछूडावौं ॥ केईपात्रपोषलेजावैं
॥ केईलहैंकमंडलकरतैं ॥ केईनिकशनदेईनघरतैं ॥ ५० ॥ केईधूरभीषमेंडारैं ॥ केईमूढक्रोधकरि
मारैं ॥ केईआसनकौंलेभागें ॥ उरधकरकेईपगलागै ॥ ५१ ॥ केईकंथाकौंपारिहरैं ॥ मारुमारुबानी
उचरैं ॥ केईषोषलेईजपमाला ॥ केईवस्त्रजाहींलेबाला ॥ ५२ ॥ केईआनिआनिकरिदेवें ॥ केईषो
सीषोंसीपुनिलेवैं ॥ केईभीषअनलेजांही ॥ भोजनकरणेंपावेनाहीं ॥५३॥ केईतनमेंथूंकेमूंते ॥ केईनिंदा
करेंबहुतें ॥ केईकाननिलागींपुकारैं ॥ केईसीसधूलिजलडारै ॥ ५४ ॥ केईमोनछोडाईबोलावैं ॥ के

ईबोलतमोनगहावैं ॥ केईताहींबाधीकरिराषैं ॥ जाननपावैंकेईभाषैं ॥ ५५ ॥ केईकरेबहुतअपमान ॥ निंदेबहुविधिमूढअजान ॥ यहहैचौरज्ञानहींपावैं ॥ विनदेषेनिशिचौरीआवैं ॥५६॥ याकौंछिनभयोहैंबित्त ॥ तातैंयहहैंव्याकुलचित्त ॥ सकलकुटुंबयांहींपरिहर्‍यौ ॥ जीवनकाजभेषयहधर्‍यौ ॥ ५७ ॥ देखोयह केसोहैंमोटो ॥ महाप्रबलअंतरकोषोटो ॥ देषोहमपचीहारेंकेतें ॥ परियाकेभेदेनहींतेतें ॥ ५८ ॥ धीरजवंतअडिगयहएसो ॥ पवनप्रचंडमेरोगिरिजैसो ॥ याकौंजानिनहमकछुकह्यौं ॥ बकज्यौंध्यानमौनगहिरह्यौं ॥ ५९ ॥ योंकरिक्रोधबंधलेडारैं ॥ काटमांहीदेउपरमारैं ॥ हांसीसहीतबिनतीकरैं ॥ हेतसेंविषबेननिउचरैं ॥ ६० ॥ एभोतिकदुषभासेजेसैं ॥ देवआत्मकपावेतेसैं ॥ सीतअरुऊष्णवरषादिदेवक ॥ जरारोगआदीकजेदेहीक ॥ ६१ ॥ ऐसेंबहुविधिपावेदुष ॥ कदेंनआवेंतनकौंशुष ॥ परिसोकदैंनमनमैंआनैं॥अपनेंकरैंकरमसबजानैं ॥६२॥ तबतिनभाषीगाथाएक ॥ ह्रदयधार्‍योपरमाविवेक ॥ भिक्षूककहेंबचनतबजेई ॥ मेतोसोंभाषतहोंतेई ॥ ६३ ॥ ॥ भिक्षूकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुषदुषदाईकलोगणएतें ॥ अरुनहींदेहनहींसुरजेतें ॥ नाग्रहनहींकर्मनकाल ॥ एसमस्तहेमनकेष्याल॥६४॥ जातचक्रमेंमनहींफिरावें ॥ जीवमहादुषमनकैंपावैं ॥ मनहींकरैंविषयनिकौंभोग ॥ तातेंहोइकर्मसंजोग ॥ ६५ ॥ होवेंसतरजतमविस्तार ॥ जातेंजोनिविविधप्रकार ॥ तातैंदुषनिरंतरलहैं ॥ देहसंजोगतेंनिसदिनदहैं ॥ ६६ ॥ तातैंदुषदाईमनएक ॥ संतकहेयहपरमविवेक ॥ अपआतमासदाअनीह ॥ परिसोमनक

रिकरिसनिह ॥ ६७ ॥ मनसौंबंध्यौंअविद्यामांहीं ॥ जातेंबंधनजानेंमाहीं ॥ विषसमानविषयनिकौंआवैं
॥ ताकेंसंगजीवदुषपावैं ॥ ६८ ॥ यहहेंजीवब्रह्मकोअंग ॥ याकौंसुमृतिमनकेंसंग ॥ मनकररिहितब्रह्म
सुषराशी ॥ सदाएकरसपरमप्रकासी ॥ ६९ ॥ तातेंबंधनमनहींकरैं ॥ संगआतमाजनमैंमरैं ॥ जबम
नरहीतजीवयहहोई ॥ तबशिवजीवभेदनहींकोई ॥ ७० ॥ तातेंजिनअपनोमनगह्यौं ॥ ताहींकछुकरणो
नहींरह्यौं ॥ अरुजोमनबशकीनोंनाहीं ॥ तोश्रमसकलवृथाहींजाहीं ॥ ७१ ॥ सुवर्णादिकदेवेंबहुदाना ॥
एकादशीआदीव्रतनाना ॥ अपनेंअपनेंधर्मनिकरैं ॥समदमजमनियमनिविस्तरैं॥ ७२ ॥विद्यावेदपढेंउचरैं
॥ औरसकलधर्मविस्तरैं ॥ परिजोनाहींबशमनएक ॥ तोमिथ्याआचर्णअनेक ॥ ७३ ॥ मनवशकाज
कहेंसबतेतें ॥ विधिआचर्णवेदमेंजेतें ॥ मननिग्रहसौंउत्तमज्ञाना ॥ मननिग्रहाबिनसबअज्ञानां ॥ ७४ ॥
तातेंममजोनिग्रहकरैं ॥ सोविधिकाहेकौबिनिस्तरैं ॥ तातेंविधिहूंतेकछुनाहीं ॥ सबविधिहेमननिग्रहमांहीं
॥ ७५ ॥ अरुजोबसनाहींमनएक ॥ तोविधिकीन्हैवृथाअनेक ॥ सबईनकोफलमनबसकर्णौं ॥ मनवश
काजसकलआचर्णौं ॥ ७६ ॥ मनकौंबसकरेजोकोई ॥ इंद्रियगुणआपेंवसहोई ॥ मनवश
बिनइंद्रियवशनाहीं ॥ करिकरिजतनबहुतमरीजाई ॥ ७७ ॥ मनबशभएसकलबसदेवा ॥ तीनो
भवनकरेतासेवा ॥ सकलबलनुतेंमनबलवंत ॥ मारीकरीसबहीनकौंअंत ॥ ७८ ॥ मनकौंको
ईजितेनाशकें ॥ बहुतानिउपायकरिकरिथकैं ॥ ऐसैंमनकौंजीतेंकोई ॥ सबहीनमांहींप्रबलहैंसोई ॥ ७९

सोदुर्जयवसमननाहिंकरैं ॥ बाहिरक्षुधादिकविस्तरैं ॥ वैरीमित्रबहूतविधिठानैं ॥ अनहेतअरुहेतातिनतैं जानैं ॥८०॥ तेअतिमूढसुषीनहींहोवैं ॥ मनजीतैंबिनुजुगजुगरोवैं ॥ दुषरूपजडमिथ्यातनकौं ॥ आपमानिकरिबांध्यौंमनकौं ॥ ८१ ॥ तबबहुकीएदेहसंमधी ॥ तिनसौंमूरषममताबंधी ॥ यहमेंएहसमस्तैंहमेरें ॥ मित्रशत्रुठानैंबहुतेरैं ॥ ८२ ॥ तातैंमूढमहादुषपावैं ॥ उपजिउपजिपुनिमरिमरजावैं ॥ तातैंदुषकौं मनहीकारण ॥ अतमकैंभवजलमेंडारण ॥ ८३ ॥ अरुजोसुषदुषदाताएतैं ॥ मोकौंदुषदेतहैंतेतैं ॥ तेसबसुषदुषमोकौंनाहीं ॥ देहएकसबआपुनमांही ॥ ८४ ॥ तेसुषदुषदेहहीसबपावैं ॥ अत्मकेकहुंनिकटनआवैं ॥ अरुजद्यपिमनकेसंजोग ॥ करैंजीवएसुषदुषभोग ॥ ८५ ॥ ताहुंमेंदुषदेवौंकहांकौ ॥ रूपसकलममदेषौंजाकौं ॥ आपआपकौंक्यौंदुषदीजैं ॥ अपनौंअनाहितआपक्यौंकीजैं ॥ ८६ ॥ यातनमेंमेहिदुषपावौ ॥ अरुतिनहींमैंक्यौंउपजावौं ॥ दंतनिभूलिजीभकाटीजैं ॥ तौफिरितिनहींकहांदुषदीजैं ॥ ॥ ८७ ॥ दंतानिअरुजिभहिंदुषदेई ॥ सोतोसकलआपकौंलेई ॥ इंद्रियअधिपतिदेवताजेतैं ॥ जोदुषदानीहोईसबतेतैं ॥ ८८ ॥ तोहूंआपकोपक्यौंकीजैं ॥ परकीउपाधीक्यौंसिरलीजैं ॥ करदीजैंमुषमांहीअसनसौं ॥ तोमुषकाटैंकरहिदसनसौं ॥ ८९ ॥ तोपावकअरुवासवजानैं ॥ रागदोषभावैंयौंठानैं ॥ योंसबइंद्रियनिकेसबदेवा ॥ करैंआपमेंदुषअरुसेवा ॥ ९० ॥ तेतेसबजानैंत्यौंकरैं ॥ ज्ञानीअपनेमनहींधरैं ॥ अरुजोसुषदुषदाताआप ॥ दूजैंकौंकछुनाहींपाप ॥ ९१ ॥ तोयहसबआपनौस्वभाव ॥ अ

रुकौनकौंअनीयेंअभाव ॥अरुआतमैंमसुषदुषनाहीं ॥ उपजैंज्ञानसकलमिटजांहीं ॥ ९२॥ आपमूलि
सुषदुषकरिलीनैं ॥ सबमिटिजाईआपकौंचीनैं ॥ तातेंदोषकौनकौंधरीयैं ॥ जोअपनोमनवशहिकरीयैं
॥ ९३ ॥ अरुजोग्रहसुषदुषकेदाता ॥ लोकवेदकहीयेंविष्याता ॥ तोआपनकौंक्रोधहिकीजैं ॥ परकोदु
षआपक्यैंालीजैं ॥ ९४ ॥ ग्रहआकाशमाहीहेजेतें ॥ द्वादशरासीबसेसबतेतें ॥ रागदोषआपनैंमकरैं
॥ तिनकौंसुषदुषनितहींपरैं ॥ ९५ ॥ तातेंरासीजन्मजेपावें ॥ तिनकीसंगतिसुषदुषआवें ॥ तातेंअतम
सदाअजनमा ॥ वारवारदेहनिकौंजनमां ॥ ९६ ॥ तातेंसुषदुषतनहींपावें ॥ निकटआत्माकेनहींआवें
॥ अरुजद्यपिसंगतदुषपरैं ॥ आपुक्रोधतौंकहांसौंकरैं ॥९७॥ करणहारतेंयहहीजानैं ॥ रागदोषभावें
त्यौंठानैं॥अरुदुषदानिहोइजोकर्म॥ तेतोसकलआपहीभर्म॥९८॥यहजडदेहकर्मतामांही ॥आतमनिकट
देहहींनाहीं॥आतमचेतनज्ञानस्वरूप॥परेंसकलतेंपरमअनूप॥९९॥तातैंक्रोधकौनकौकरैं ॥काकौंदोषदृ
देमैंधरैं॥अरुजोदुषकालतेंकहीयैं॥तोआपनमैंकदैंनलहीयें ॥ १००॥ तनहींकालहुतेंदुषपावें ॥ तेआत
मकेनिकटनआवें ॥ कालआतमाब्रह्मस्वरूप ॥ देहविलक्षणसकलअनूप ॥ १०१ ॥ तातेंकालहुतेंदुषना
हीं ॥ कालभयानकदेहिनमांहीं ॥ ज्यौंलेअग्निअग्नमैंडारैं ॥ सोवहअग्निनअग्निजारैं ॥ १०२ ॥ अरु
जौपालाकौंकनलीजैं ॥ लेवहुतेपालामैंदीजै ॥ तौंतापालाकौंभयनाहीं ॥ जद्यपिरहैसदातामांहीं ॥१०३
॥ यौंहीएकआतमाअकाल ॥ सुषदुषादिदेहनकेष्याल ॥ आतमसबतेंसदाअनीत ॥ इच्छारहीतअ

नीहअभीत ॥ १०४ ॥ अरुआतमापरेंतेंपरें ॥ द्वंद्वजहांलौंतेसबउरें ॥ कोईआतमाकौनहीजानें ॥
सुषदुषकौनकौनकौठानें ॥ १०५ ॥ सुषअरुदुषजहांलौंजेतें ॥ एकप्रकृतिकेसबतेतें ॥ सोप्रकृतिआप
जडरूप ॥ चेतनआत्मब्रह्मस्वरूप ॥ १०६ ॥ केवलमानीलीयौसंसार ॥ सुषदुषतनमनसकलअसार
मोहनिशातेंजागेजेतें ॥ निरभयभएसकलहीतेतें ॥ १०७ ॥ तातेंअबमैंभयनहींआनौं ॥ आपहीपरेंसक
लतेंजानौं ॥ हरिचर्णनिकीसेवाकरौं ॥ ऐसीविधभवसागरतरौं ॥ १०८ ॥ जेइजेआएहरिशरणां ॥
तिनहींतिनपाएंहरिचरणा ॥ तातेंमैंहरिचर्णनिभजौं ॥ मनक्रमवचनआनसबतजौं॥१०९॥ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवयौंद्विजभयौंविरक्त ॥ तनहुमेनरह्यौंअनुरक्त ॥बहुतअसाधुनिबहुत
डिगायौं ॥ परिसौकछूनमनेंमल्यायौं ॥ ११० ॥ एभाषेंअष्टादशश्लोक ॥ करिविचारमेंन्यौभयशोक
॥ तातेंउद्धवसुषदुषदाईक ॥ आतमकौंकोईनहीलायक ॥११॥ सुषदुषदातानाहींकोई ॥ जोतोकहूंद्वैत
कछूहोई ॥ सुषदुषभ्रमतेंजानेसकल॥आत्माएकअजन्माअकल ॥ २ ॥ भ्रमछूटेंदूजाकोऊनाहीं ॥
मेरोरूपमिलेमोमांही ॥ जबसुषदुषमिथ्याकरिमानें ॥ मानामानद्वंदैनहींआनें ॥ १३ ॥ धीरजधरीमम
चर्णनिभजें ॥ देहादिककीआसातजें ॥ तबभवसागरकौंतरिजावें॥ मेरोनिजानंदपदपावें ॥ १४ ॥ तातें
उद्धवमनवचकर्म ॥ सकलद्वैतकौंजानेंभर्म ॥ सबतेंमनकौंनिग्रहकरौं ॥ निश्चलकरिममचर्णनिधरौं ॥
१५ ॥ याहीकौंकहीयतुहेंजोग ॥ जाकरिहोवेममसंजोग॥अरुजोयागाथाकौंधारें ॥ सुनेसुनावेंसदाविचा

रैं ॥ १६ ॥ तिनकैंनिकटदूंदूनहींआवैं ॥ अंतकालममचर्णनिपावैं ॥ तातैंयाकौंसदाविचारौं ॥ मेरोव
लअंतरगतिधारौं ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसौंकह्यौंमनसंजमदृढज्ञान ॥ अबभाषत
हौंसांष्यकौंसुनतामिटेज्यौंआन ॥ ११८ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धव
संवादेभाषाटीकायांत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सांष्ययोगकरिकैंकह्यौंमनकोमोह
दहन ॥ चिंतातैंसबयोनिमैंआतमआवागवन ॥ १ ॥ भेदभावजीनकेत्हृदयश्रीधरभेदमिटाय ॥ कृष्णक
ह्योउद्धवप्रतिचौवीशैंअध्याय ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोसौंसाष्य
हिकहौं ॥ द्वैतभ्रमभ्रमाहिविनदहौं ॥ जाहीसुनकिछूटैद्वैत ॥ देषैंएकब्रह्मअद्वैत ॥ १ ॥ प्रथमाहिमहापुरुष
जोभये ॥ तोयहसांष्यप्रकटकरीगयैं ॥मुक्तसांष्यजानतहींहोई ॥ सांष्यविनानहिछूटेकोई ॥ २ ॥ सोई
सांष्यकहैंमितोसौं ॥ निश्चलमनव्हैसूनियोमोसौं ॥ उद्धवप्रथमहुंतोमेएक ॥ मोबिनकछुनहूंतोअनेक ॥
३ ॥ तवमैंप्रकृतिआपतेंकरी ॥ जडचेतनद्वैविधविस्तरी ॥ तिनदोनौंतैंउपज्यौंपुत्र ॥ महातत्वकहीयतुहे
सूत्र ॥ ४ ॥ एकप्रकृतिकेतीनगुणकीनें ॥ लक्षणभिनतिहुंकेदीनै ॥ सूत्रहुतैंत्रिविधअहंकार ॥ भरमाव
नकौंवडोविकार ॥५ ॥ पंचभूतजेंपृथिवीआदि ॥ अरुपंचेतनसूक्ष्मशब्दादी ॥ तामसअहंकारतैंएतैं ॥
राजसतेंइंद्रियसबतेतैं ॥६॥ सातिकतैंमनअरूसबदेवा ॥जिनकौंपाइभयेबहुभेवा ॥तबसबहीनमैंप्रेरीमिला
यौ ॥ तिनसबहीनमिलिअंडउपायौ ॥ ७ ॥ अंडसलीलमांहिथिरकयौ ॥ तातेंमेनिजअंशांहिधर्यौ ॥

आदिपुरुषसोमेरोरूप ॥ त्रिगुणानियंताज्ञानस्वरूप ॥ ८ ॥ तासनाभतेंउपज्यौपद्म ॥ तामेसकलभवनको
सद्म ॥ पद्महूतेंतबब्रह्माभयो ॥ वरलेमोसौंजगनिरमयो ॥ ९ ॥ राजसअधिपतिभयोविरंच ॥ तातैंप्रग
ट्यौसकलप्रपंच ॥ लोकपाललोकनसौंसारैं ॥ तीनोलोकत्रिविधाविस्तारैं ॥ १० ॥ स्वर्गलोकदेवनिकौंदी
यौं ॥ अंतरिक्षभूतानिग्रहकीयौं ॥ भूमीलोकमेंमानवराषैं ॥ असुरअहीनकौंनीचैंभाषैं ॥ ११ ॥ मह
रलोकजनतपसतलोक ॥ चार्यौंमेंशिधनकेंवोक ॥ जोत्रिगुणकर्मनिकौंकरैं ॥ तेतीनोलोकनिमेंफिरैं ॥
१२ ॥तपअरुजोगतथासंन्यास॥इनितेंतिनवारौमेंवास ॥ भक्तिहुतेंजावैवैकुंठ ॥जोसबहीनकरीसदाअकुं
ठ ॥ १३ ॥ प्रबलकालरूपहेंमेरो ॥ जगतसकलभक्षातिहकेरो ॥ सत्यलोकहुमेंजोजावें ॥ कालतहांउ
ताकौंषावें ॥ १४ ॥ कबहुंजाईकष्टकरीउंचै ॥ तबहुंकालढहावतनीचैं ॥ ऐसीविधिसबभरमतरहैं ॥ज
न्मेंमरैंबहुतदुषसहैं ॥ १५ ॥उत्तममध्यमनीचेजेते ॥छोडेबडेबहुतविधिकेतें ॥ जेकछुजहांलगेआका
र ॥ तेसबप्रकृतिपुरुषाविस्तार ॥१६॥ प्रकृतिपुरुषविनऔरनकोई ॥ इंद्रियमनगोचरहैंजोई ॥ प्रथम
हिनिराकारमेंएक ॥ तातेंभएआकारअनेक ॥ १७ ॥ अरुपुनिमेंहीरहोहोअंत ॥ तातेंअबहूमेंवरतंत
॥ जाकीआदीअंतहैंजोई ॥ ताकेमध्यहूमेंपुनिसोई ॥ १८ ॥ ज्यौंमाटीतेंबहुघटभए ॥ अंतरफूटीमा
टीमिलिगए ॥ माटीआदीमाटीहेअंत ॥ तोमाटीमयमध्यवरतंत ॥ १९ ॥ ज्यौंकांचनकेबहुआभरना
॥ आदीअरुअंतएकहीसुवरना ॥ तोमध्यहुंऔरकछुनाहीं ॥ नामरूपमिथ्याहोईजाई ॥ २० ॥ त्यौं

जबदेषैंत्यजिव्यवहार ॥ तबमैंहौंसबविस्तार ॥ आदिअरुअंतमध्यमैंएक ॥ मिथ्यानामरूपअनेक॥
२१ ॥ मायातैंमहत्तत्त्वअहंकार ॥ तिनतैंहोईसकलविस्तार ॥ बहुरौनामसकलकौहोई ॥ महदादि
कौंरहैंनकाई ॥ २२॥प्रकृतिमूलयोपुरुषआधारा॥अरुजोकालसकलकरतार॥ मेरीशक्तितीनयौंजानौं
मोतेंद्वैतकदैमतीमानौं ॥ २३ ॥ याविधिचल्यौंजाइविस्तार ॥ नदीप्रवाहतुल्यसंसार ॥ परमात्माकीइच्छा
ज्यौंलौं ॥ वरतैंसकलनिरंतरतोलौं ॥ २४॥ बहुरौसकलप्रलयकौहोई ॥ सूषमथूलरहैंनाहिकोई ॥ म
हाबलिष्टशक्तिममकाल ॥ ताकौसकलजक्षग्रहष्याल ॥ २५ ॥ कालविनाशैंसकलब्रह्मंड ॥ कितहु
कछुनराषैषंड ॥ अनावृष्टिहोवैशतवर्ष ॥ तातैंदेहनिकौंअकर्ष ॥ २६ ॥ छोटेबडेदेहहैजेतैं ॥ लीनअ
सनमौंहोवैंतेतैं ॥ असनभोमिमैंहोवैंलीन ॥ भूमिगंधामिलिहोवेंछीन ॥ २७ ॥ गंधलीनहोवैंजलमांही ॥
जलसुषमरसमांहीसमांही ॥ रससबतेजमांहीमिलिजाई ॥ तेजरूपमैंजाईसमाई ॥ २८ ॥ रूपपवनमां
हीमिलिरहैं ॥ पवनहींतबस्पर्शगुणगहैं ॥ स्पर्शलीनहोईतबगगन ॥ गगनशब्दमैंहोवैंगमन ॥ २९ ॥
शब्दमिलैंतामसअहंकार ॥ सोअरुइंद्रियदशप्रकार ॥ तेसबमिलिराजसअहंकार ॥ मिलिकरिसक
लहोईसंसार ॥ ३० ॥ अहंकारमहत्तत्वहींमिलैं ॥ प्रकृतितबैंमहत्तत्वहीगलैं ॥ देवमनसातिकअहंकार
॥ मिलिकरीसकलहोईसंघारा ॥ ३१ ॥ प्रकृतिकालमैंहोवैंलीन ॥ कालपुरुषामिलिहोवैंछीन ॥ पुरुषामि
लेपुरुषोत्तममांही ॥ पुरुषोत्तमकाहिजावैंनाहीं ॥ ३२ ॥ भेदाभेदरहिततबएक ॥ नित्यानंदद्वैतवितरेक ॥

चेतननिरमलज्ञानस्वरूप ॥ पूरणअक्षयपरमअनूप ॥ ३३॥ तातेंउद्धवमिथ्याद्वैत ॥ आदिअंतमध्यअद्वैत ॥ जलबुदबुदासमसबआकार ॥ उत्तममध्यमविविधप्रकार ॥ ३४ ॥ एसेंसदाविचारेंकोई ॥ ताकौं कोनभांतिभ्रमहोई ॥ रविउद्योतरहैंतमकेसैं ॥ नदीमध्यदावानलजैसैं ॥ ३५ ॥ यहमैंभाष्योसांख्यप्रकार॥ सकलद्वैतउतपतिसंहार ॥ जाकेज्ञाननसंसेरहैं ॥ अहंकारदृढग्रंथीहिंदहैं ॥ ३६ ॥ छोडेरूपअरूपस मावें ॥ जातेंबहुरिनदुषकौंपावें ॥ तातैंयाकौंसदाविचारौं ॥ मोकौंजानिआपकौंतारौं ॥ ३७ ॥ ॥ दो हा ॥ ॥ उद्धवयहतोसौंकह्यौसांख्यज्ञानविचार ॥ अबगुणवृत्तिनकोकहौभिन्नभिन्नप्रकार ॥ ३८ ॥

॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पंचबीशैंध्यायमैंनिर्गुणतासुविवेक ॥ चितमैंवरतैंतीनगुणगुणकीवृत्तिअनेक ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअबभाषोगुणवृत्ति ॥जिनकौंजानैंलहैंनिवृत्ति ॥ जागु णतेंजोलक्षणहोई ॥ भिन्नभिन्नभाषोंसोसोई ॥ १ ॥ समदमक्षमाविवेकस्वधर्म ॥ लजामाननकरैंविकर्म ॥ सत्यदयानहींभूलैंशुद्ध ॥ उत्तममारगमैंथिरबुध ॥ २ ॥ जसअरूसोभाधीरजवंत ॥ परउपकारसदा वरतंत ॥ बुधिआस्तिकनित्यनिहसंग ॥ संतोषीअरुदानअभंग ॥ ३ ॥ कोमलविनयदीनचतुराई ॥ सी तलहृदयसकलदुषदाई ॥ एसीभांतिवहुतसंपति ॥ सातिकगुणकीजाणोवृत्ति ॥ ४ ॥ आतमइनसबनि तेंन्यारा ॥। चेतनकरीवरतावनहारा ॥ भोगसक्तिहृदैंबहुकाम ॥ धनअभिलाषाजसआराम ॥ ५ ॥

तृष्णाहासगर्वअलबंत ॥ रिपुमंत्रादिकभेदअनंत ॥ करीकामनाभजेसबदेव ॥ परमारथकौलहैंनभेव ॥ ६ ॥ बहुआरंभनिमांहीउत्साह ॥ सदाकठोरसदाअतिचाह ॥ बहुतवृत्तिराजसकीऐसी ॥ तुमसौंभाषी मैंजैसी ॥ ७ ॥ हिंसाक्रोधलोभअधिकाई ॥ जहांतहांदीनअरुदंडऊठाई ॥ श्रमअरुकलहसोकअरु मोह ॥ निद्राआलसभयपरद्रोह ॥ ८ ॥ निशादिनचिंताउद्यमहीन ॥ त्द्दयेंआसासाहसछीन ॥ ऐसी बहुतामसकीवृत्ति ॥ जिनतैंकदैंनलहैंनिवृत्ति ॥ ९ ॥ उपजैंममताअरुअहंकार ॥ तातैंकरैंविविधव्यवहार ॥ तेसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ॥ जिनतैंबहुविधिहोईप्रवृत्ति ॥ १० ॥ धर्मअर्थकामअनूरक्त ॥ श्रद्धालोभतथाआसक्त ॥ धर्मप्रवृतपराइणजैंतैं ॥ बहुतभांतिविस्तारेतैतैं ॥ ११ ॥ वरतेअपनेअपनेधर्म ॥ प्रियग्रहअरुग्रहसुषकर्म ॥ एसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ॥ जिनतैंबहुविधिहोईप्रवृत्ति ॥ १२ ॥ समदमआदिजुक्तनरहोई ॥ सातिकलक्षणकहियैंसोई ॥ राजसकामादिकअधीकार ॥ तामसजहाक्रोधादिविकार ॥ १३ ॥ जबस्वधर्मसोंमोकौंभजैं ॥ दूजोसकलकामनातजैं ॥ त्रियापुरुषभावेंसोहोई ॥ सातिकप्रकृतिकहींजेंसोई ॥ १४ ॥ सबकामनात्द्दैधरीलेवैं ॥ अपनेकर्मनिमोकौंसेवैं ॥ यहस्वभावराजसकौंकहीयैं ॥ मुगतहेतकबहुंनहीगहीयैं ॥ १५ ॥ जबहींसात्द्दैमेंआनै ॥ जिनकर्मनिममसेवाठानै ॥ सोवहतामसप्रकृतिकहावैं ॥ तातैंममसुषकदैंनपावैं ॥ १६ ॥ सतरजतमतिनौंगुणजेहैं ॥ जीवहीकौंबंधनसबतेहैं ॥ तेगुणमेरीआग्याकरैं ॥ तातैंमोहीभजेतेतरैं ॥ १७ ॥ चितहूतैंउपजैंएसकल ॥ ईनकौंतजैंआतमाअकल ॥

इनकौंछोडीरहैंमोमांही ॥ बहुर्योउपजेविनसैंनाहीं ॥ १८ ॥ करिसाधनरजतमपरिहरैं ॥ सातिकगुण
कीवृद्धिहीकरैं ॥ सातिकसुरजौंपरकास ॥ अतिसीतलज्यौंचंदाविगास ॥ १९ ॥ सबकल्याणमूलसुष
कारी ॥ निश्चलकरणसकलदुषहारी ॥ तातैंधर्मज्ञानसुषलहैं ॥ चिंतासोकमोहभयदहैं ॥ २० ॥ जब
सातिकतामसनंहीरहैं ॥ राजसआईबसेरागहैं ॥ राजसरूपसंगबलभेद ॥ तातैंमानकर्मभयषेद ॥ २१
॥ जबसातिकरजछुटैदोई ॥ केवलएकतमोगुणहोई ॥ तमअविवेकनासआवरना ॥ उद्यमरहीतजडता
करना ॥ २२ ॥ तातैंसोकमोहकोवासा ॥ निंद्राआलसनिशादिनआसा ॥ जबछूटैइंद्रियनुकीवृत्ति ॥
रहृदयनहींइहांउतपाति ॥ २३ ॥ चितप्रसंनसकलनिहसंग ॥ सोसातिकममयहहैंअंग ॥ जबइंद्रियतन
मनबुधी ॥ थिरनहींरहैंलहैंनसुधी ॥ २४ ॥ ठानैंविविधकरमविस्तार ॥ सोजानौंराजसअधिकार ॥
जबविकारमनबहुविधिगहैं ॥ आसाबंधनिरंतररहैं ॥ २५ ॥ सोकविषादचेतनाहीन ॥ सोतामसउद्यम
बलछीन ॥ जबउपजैंसातिककौंभाव ॥ तबसबहोवैंदेवसुभाव ॥ २६ ॥ राजसतैंअसुरनकीवृ
त्ति ॥ भूतगणनिकौंतमउतपति ॥ सातिकतैंजागर्णहोई ॥ राजसपावैसुपनासोई ॥ २७ ॥ ता
मसहूतैंसुषपतिलहैं ॥ ब्रह्मतुरीयनिरंतररहैं ॥ सातिकऊर्ध्वलोकनितजावैं ॥ राजसनरआदीकतनपावैं ॥
२८ ॥ तामसनीचैंथावरआदी ॥ याविधिभरमेजीवअनादी ॥ सातिकवृद्धमानजोहोई ॥ तातैंमरणलहैं
नरकोई ॥ २९ ॥ सोदेवनिकेलोहिजावैं ॥ राजसतैंमरीनरतनपावैं ॥ तामसतैंमरीनर्कनीलहैं ॥ तीनो

गुणतजीमोमेंरहैं ॥ ३० ॥ मेरेहेतकर्मजोकरें ॥ तामेंदूजोफलनहींधरैं ॥ सोवहसातिककर्मकहावैं ॥
तातैंजीवमहासुषपावैं ॥ ३१ ॥ फलनिमितममकर्मनिठानैं ॥ ताकौंराजसकर्मबषानैं ॥ हींसाहेतकरेममकर्म ॥ सोतामसहैंबडोअधर्म ॥ ३२ ॥ भेदरहीतवहसातिकज्ञान ॥ देहभेदसौंराजसजांन ॥ बालकमूकतुलजोहोई ॥ तामसज्ञानकहींजैंसोई ॥ ३३ ॥ आतमदेहरहितजोएक ॥ सोहैंमेरोज्ञानविवेक ॥ होईविरक्तवसीएएकंत ॥ सातिकवासकहेंसोसंत ॥ ३४ ॥ ग्रहमेंकहींयेंराजसवास ॥ तामसजहांसुराआवास ॥ थावरचलममभूरतिजहां ॥ निरगुणवासकहजैंतहां ॥ ३५ ॥ सातिककर्ताजोनिहसंगी ॥ सोराजसकर्ताफलप्रसंगी ॥ विधिकारिरहीततामसीकर्ता ॥ आसालागिकर्मनिविस्तरता ॥ ३६ ॥ आपहीमेटीरहैंममशर्णा ॥ ताकौंसबनिरगुणआचरणा ॥ सोजननिरगुणकरताकहीयैं ॥ ताकेंसंगपरमपदलहीयैं ॥ ३७ ॥ जोनिहकर्मंआतमांजानैं ॥ सकलजतनकौश्रद्धाठानैं ॥ सकलत्यागिनिश्चलजोहोई ॥ सातिकश्रद्धाकहीयैंसोई ॥ ३८ ॥ राजसश्रद्धाठानैंकर्म ॥ तामसश्रद्धाकरेंविकर्म ॥ निरगुणश्रद्धामेरीभक्ति ॥ जातेंमिटेसकलआसक्ति ॥ ३९ ॥ पंथपवित्रविनाश्रमआवैं ॥ जामेंआपनोधर्मनजावैं ॥ जातेंउपजेनहींविकार ॥ सोकहींजेसातिकअहार ॥ ४० ॥ षाटामीठातीषाषारा ॥ दुखदायीकराजसअहारा ॥ जोअशुधहिंसातेंआवैं ॥ सोतामसअहारकहावैं ॥ ४१ ॥ ममजनअरुमेरेंउच्छिष्ट ॥ सोनिरगुणभोजनअतिइष्ट ॥ इंद्रियसुषतृष्णादिकदहैं ॥ तजिआरंभनिथीरव्हैंरहैं ॥ ४२ ॥ आतमतेंउपजेसुषजोई ॥

सातिकसुखकहीयतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुषराजसहीगहीयैं ॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥ ४३ ॥ मेरेप्रेम भक्तिसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुखराजसहीगईऐं ॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥ ४४ ॥ मेरेप्रेमभक्तसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ द्रव्यदेशफलकालअरुज्ञांन ॥ करताकर्मअ वस्थादान ॥ ४५ ॥ श्रद्धानिष्ठाअरुआकार ॥ त्रिगुणनिर्मितसबविस्तार ॥ जोकच्छुकहौसुनौअरुदेषौ ॥ मनअरुबुधीजहांलगिपेषौ ॥ ४६ ॥ सोसबप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥ त्रिगुणनिर्मितसकलपसारा ॥ इनतेंजी वलहैंसंसार ॥ त्रिगुणकर्ममयवारंवार ॥ ४७ ॥ जोईनतीनौगुणनिनिवारैं ॥ चितआपनौमोमेंधारैं ॥ सोमेरोनिरगुणपदपावैं ॥ बहुरीयाभवमेंनहीआवैं ॥ ४८ ॥ जातेंयहऐसीनरदेह ॥ जाकरिमिटैसकल संदेह ॥ होवैंप्रगटज्ञानविज्ञान ॥ पावैंमोहिमिटैसबआन ॥ ४९ ॥ तातेंपंडितसकलनिवारैं ॥ मोकोंसिइआ पकौंतारैं ॥ याविनसकलपंडितजांनौं ॥ तेतेआतमघातीमांनौं ॥ ५० ॥ सबहूंतेंहोवेनिहसंग ॥ सावधा नपलपरेंनभंग ॥ इंद्रियदेहप्राणमनजीतें ॥ ममचरचादिनरैंनवितीतें ॥ ५१ ॥ सकलसातिककीसंगति करैं ॥ राजसअरुतामसपरिहरैं ॥ देहादिकतेंनिस्पृहहोई ॥ आगेंईच्छाकरैंनकोई ॥ ५२ ॥ मोमेंधा रैंनिहचलबुधी ॥ तवपावैंअंतरगतिशुधी ॥ याविधिसातिकहुंछटिकावैं ॥ तातेंलिंगशरीरमिटावैं ॥ ५३ ॥ लिंगशरीरमिटेभवतजैं ॥ निरमलरूपआपनौभजैं ॥ ऐसेंहोईमोहिकौंजानैं ॥ बाहिरभितरद्वैतनमानैं ॥ ५४ ॥ मोमेंमिलिमोहिमेंरहैं ॥ बहूरोकालअग्निगहीदहैं ॥ रहैंनिरंतरमेरेसंग ॥ तातेंकदेंनहोवेभंग ॥ ५५

॥दोहा॥ ॥ हेउद्धवतोसौंकहींतीनोगुणकीवृत्ति ॥ अबऔरौंज्ञानहिकहौंजातैंहोइनिवृत्ति ॥ ५६ ॥
॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचविंशोऽध्याय : ॥
२५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योगभ्रंशयोगीनकोहोतकुसंगतिपाय ॥ कहैंसुसंगतीकारणैंछब्बीसैंअध्याय
॥ १ ॥ जाययोसितासंगतैंयोगधारणाध्यान ॥ श्रीधरसदाबिचारियेऐलगीतआख्यान ॥ २ ॥ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहनरतनहैंऐसौं ॥ सकलसृष्टिमेंनाहींजैसौं ॥ यातन
करीममज्ञानहींपावैं ॥ तातैंभवतजीमोमेंआवैं ॥ १ ॥ तातैंऐसैंतनकौंपाई ॥ मोमिलनेकोकरैंउपाई ॥
अंतरमाहीमोहींविचारैं ॥ औरैंसकलवासनाटारैं ॥२॥ ममभक्तनकेंलक्षणजांनैं॥त्यौंत्यौंआपुआपुमेंठानैं
अनायासतवमोकौंपावैं ॥ कालव्यालबहुरोनहीषावैं ॥ ३ ॥ मायागुणतवमिथ्याजानैं ॥ मेरोज्ञानपाइंक
रीभानैं ॥ यौंव्हैरहैदेहहूंमांही ॥ तोहूंफिरिलहैंकहुंनाहीं ॥ ४ ॥ परिजद्यपिहोवैंएसोऊं ॥ करैअसाधूसं
गनहींतोऊं ॥ शिश्नअरुउदरपरायणजेतें ॥ मनक्रमवचनत्यागिएतेतें ॥ ५ ॥ करैंअसाधूएककौसंग
॥ तोहूंज्ञानध्यानकौंभंग ॥ असंतसंगजबनरहीकरैं ॥ ताकेसंगनरकमेंपरैं ॥ ६ ॥ जैसैंअंधअंधकेसं
ग ॥ कूपपरैंहोवैंसुषभंग ॥ याकीगाथाभाषौंऐक ॥ तातैंउपजैंपरमविवेक ॥ ७ ॥ जबउरबसीबिरहतन
दत्यौं ॥ सोकमोहसागरमेंबत्यौ ॥ जबपुरूरवाभाषीजोइं ॥ तोसौंभाषोगाथासोई ॥ ८ ॥ राजापुरूरवा
चक्रवरति ॥ ताकीआनजहांलौधरती ॥ शापहुंतैंउतरीउरबसी ॥ सोमिलिकैंनृपकेउरबसी ॥ ९ ॥

बहूर्‌यौआपभुक्तिजबभई ॥ तबताजिनृपाहिंउरबसीगई ॥ नृपतिविलापकरैबहुरोवैं ॥ परिसोनृपकोंऔरन
जोवैं ॥ १० ॥ राजानग्नदेहसुधनाहीं ॥ बानीबिकलदीनतामाहीं ॥ लजारहीतमंदमतीजैसैं ॥ चल्यौउर
बसीपीछेतैसैं ॥ ११ ॥ अहोप्रियातुमठाढीहोवो ॥ मेरीऔरकृपाकरीजोवो ॥ मोकोंमारकहांतुमजावैं ॥
कृपाकरौमेरेग्रहआवौ ॥ १२ ॥ मिलीउरबसीसंगसुषपायौ ॥ सोसोसकलदुषव्हैआयौ ॥ त्रपतनभयो
भोगवतभोग ॥ पाईउरभसीकोसंजोग ॥ १३ ॥ ताउरबसीज्ञानआकर्ष्यौ॥तातैंमलोमानकेंहर्ष्यौ ॥ तन
मनत्हृदयकछूनहींआन्यौं ॥ निशदिनमासबरषनहींजान्यो ॥ १४ ॥ तबतानृपकेपूरणभाग ॥ जातैंप्रग
टभयोवैराग ॥ तबनृपबचनबषानैंजेई ॥ तोसोंमैंभाषतहोंतेई ॥ १५ ॥ ॥ पुरूरवाउवाच ॥ ॥ चौपाई
॥ अहोएकदेषोममोह ॥ आपुहींकीयोआपनोद्रोह ॥ गहीयोकंठदेवकीमाया ॥ जिनमेरोसबआवग
माया ॥ १६ ॥ ईनमोंकोंडहीक्यौंबहुतेरौ ॥ सर्वसआपुलीयौहरिमेरौ ॥ मैंदिनरातनजान्यौंजात ॥ अ
मृतकरिमान्यौंविषघात ॥ १७ ॥ वरषसमूहगएममवीत ॥ सकलविकारनिलेनोजीत ॥ देषोमेंकेसौडहीं
कायौ ॥ अग्निकेकरआपाविकायौ ॥ १८ ॥ जोमैंराजाचक्रवर्ती ॥ जीतीसमस्तकरीबसधर्ती ॥ सक
लभूपममचर्णनिसेवैं ॥ तनमनधनसबमोकोंदेवें ॥ १९ ॥ सोमैंबिकानोंअग्निहाथ ॥ ज्यौंवानरवाजिगरसा
थ ॥ ज्यौंअग्निमोहिनचायौ ॥ त्यौंत्यौंमैंमुरषसुषपायौं ॥ २० ॥ तापरराजसहीतताजिमोह ॥ त्रिणस
मानकरिचलीबिछोह ॥ नग्नभयोमैंपाछैधायौं ॥ ज्यौंउनमत्तआपबिशरायौं ॥ २१ ॥कौनभांतिताकौंबल

होई ॥ तेजप्रतापरहैनहींकोई ॥ जोहोवैंअग्निआधीन ॥ जेसेंषरीसंगषरदीन ॥ २२ ॥ विद्यामौनतप
स्यात्याग ॥ बनमेंसबवोदृढबैराग ॥ एसमस्तकीनेंकछुनाहीं ॥ ज्यौंलगीत्रियाबसेंमनमाही ॥ २३ ॥
यहउरबसजिबहींतेंपाई ॥ कामअग्निबहुभांतिजगाई ॥ परियहअग्निनसीतलभई ॥ अधिकअधिक
नितबधतिगई ॥ २४ ॥ जैसेंअग्निप्रज्वलितहोई ॥ तामेंइंधनडारेंकोई ॥ सोत्यौंअधिकअधिकप्रजरै
॥ पलकोनहींसीतलताकरै ॥ २५ ॥ मेंअपनोनजान्यौंअर्थ ॥ आपुआपुकौंकीयोअनर्थ ॥ मूरषआ
पुहींपंडितमानैं ॥ परैमृत्युमुपअमृतजानैं ॥ २६ ॥ जोमेंईससकलभुवकेरौ ॥ सोव्हैरह्यौत्रियकौंचेरौ
॥ मेंमूरषताकौंधीकार ॥ जिननकीयोकछुज्ञानविचार ॥ २७ ॥ अग्निकरिजाकोचितहन्यौ ॥ ज्ञानवि
चारसकलपरिहन्यौ ॥ ताकौंहरिबिनकौनछोडावें ॥ दूजोआपनछूटनपावें ॥ २८ ॥ तातेंमेंहरिसर्णनिग
हों ॥ सकलत्यागिहरिकौंव्हैरहौं ॥ जद्यपिदेवीमोहिबुझायौ ॥ त्रियाप्रीतिदुषकहीसमुझायो ॥२९॥ तोहूं
मैंमूरषनहींचान्यौ ॥ कामअंधसुषहीकरिमान्यौ ॥ तातेंताकौंनहींअपराध ॥ यहमेरोमनबुडैंअसाध ॥
३० ॥ ज्योंमेंस्वर्गनरकहीदेष्यौं ॥ दुषहीमांहीसुषकरिलेष्यौ ॥ गुणमेंसापजानदुषपावैं ॥ अग्निपतंगपरैं
मरीजावैं ॥ ३१ ॥ तोतिनकौंअपराधनकोई ॥ आपदुषकारिलेवेंसोई ॥ तातेंतिनकोयहसुभाव ॥ मेंम
नमेंक्यौंधर्‍यौंअभाव ॥ ३२ ॥ जामेंआपअग्निमेंपरौं ॥ तोउरदुषकवनकौंधरौं ॥ देहमलीनमहादुर्ग
ध ॥ सोकरिजानिविमलसुगंध ॥ ३३ ॥ सोअपनीअविद्याकर्‍यौ ॥ निजानंदआतमाविसर्‍यौ ॥

यहतनतोबहूतनकोकहीयैं ॥ तातैंममतागहीक्यौंरहीयैं ॥ ३४ ॥ मातपिताआपुनौंकारिकह्यौं ॥ अग्नि
एकमेकामिलिरहैं ॥ केयहतनकहीयेराजाकौं॥केपावकभक्षनहैंताकौं ॥ ३५ ॥ कैभूकोकेश्वानसृगाल॥
केअपनोमित्रकेकाल ॥ यहतनकीधोकहीयैंकिंनांकिंनकौं ॥प्रगटदीसतुहैंतिनतिनकौं॥ ३६ ॥महाअशुद्धदेह
यहएसी ॥ प्रगटनरकषानहैंजेसी ॥ तहांकौनमनबाधेमतिमंद ॥ अग्निनामकालकौंफंद ॥ ३७ ॥ त्व
चारुधिरमांसअरुअंत ॥ मज्जामेदरोमनषदंत ॥ विष्ठामूत्रऋतुकृमिदाट ॥ अग्निप्रगटनरककीषाड ॥
३८ ॥ तातैंअस्त्रीअरुतासंगी ॥ ताकौंनहींहुजैंप्रसंगी ॥ ताकैंदर्शक्षुभितमनहोई ॥ देषेबिनाबिचरेनको
ई ॥ ३९ ॥ तातैंतिनकौंदर्शनहिकरीयैं ॥ आपहिंआपनरकमेंपरीयैं ॥ जोयहअर्थइंद्रियनिवारैं ॥ मन
क्रमवचनहुंशंगतैंटारैं ॥ ४० ॥ तबयहमनसहजहिंथिरहोई ॥ कदेंविकारनपरसैंकोई ॥ अरुतातैंजेअ
ग्निनिकौंभजैं ॥ अरुआग्नितिनकौंबुधतजैं ॥ ४१ ॥ दर्शपरसअरुश्रवननिवास ॥ सबभावनितैंमानेत्रास
॥ इंद्रियनिकौंविसवासनकरैं ॥ ज्ञानवंतानितहीपारिहरैं ॥ ४२ ॥ महापुरुषजेजीवनमुक्ता ॥ तिनकौंयहस
बसंगअजुक्ता ॥ तोतैंजगतैंछूटैंचहैं॥तेंहमसेंक्यौंसंगतिगहैं ॥ ४३ ॥ तातैंमेंसबसंगतिनिवारौ ॥ श्रीपति
चर्णकमलउरधारौ ॥ दीनबंधूकरुणामयस्वामी ॥ कृपाकरीयहअंतरजामी ॥ ४४ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याविधिबचनकहेंनरराज ॥ तजिलरबसीलोकसबसाज ॥ ज्ञानलह्यौंसब
संशयटारौ ॥ मननिश्चलकरीमोमेंधार्‍यौ ॥ ४५ ॥ तातैंउद्धवयहपुरुषार्थ ॥ नरतनपायौंतबहींस्वार्थ ॥ ज

वसमस्तकोसंगतितजैं ॥ सतसंगतिगहिमोकौंभजैं ॥ ४६ ॥ संतबतावैंहेतउपदेश ॥ जिनतेंसंशेरहेनलेश ॥ मनकौसबआशक्तिनिवारैं ॥ संतमहाभवसागरतारैं ॥ ४७ ॥ निस्प्रहानिरारंभसमदरसैं ॥ संग्रह रहीतद्वंद्वनहींपरसैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ मोहिभजैंदूजौनहीजानैं ॥ ४८ ॥ मेरीकथाश्रवणजेंकरैं ॥ तेसबपापनितेंनिस्तरैं ॥ सुनैकहैंअंतरगतिध्यावैं ॥ अतिआतुरसोप्रीतिदृढावैं ४९ ॥ सोजद्यपिउपदेशनदेवैं ॥ तोहूंमोहिचहेतेसेवैं ॥ तहांकथामेरीनितहोवैं ॥ तेंईअंधसंदेहनिषावैं ॥ ५० ॥ तेसहजहीलहेममभक्ति ॥ सहजहिंहोवेसकलविरक्ति ॥ मेरीभक्तिलहेंनरजबहीं ॥ पूरणकामभयोसोतबही ॥ ५१ ॥ तातेंकछूनकरणोरहैं ॥ ज्ञानानंदरूपममलहैं ॥ सीतनिशाकहुंहोवेकोई ॥ तहाअग्निपरजारैंसोई॥ ५२ ॥ तमतुषारभयसहजहिजावैं ॥ यौंसाधुसबदुषमिटावैं ॥ यहअपारसागरसंसार ॥ जामैंबूडेजीव अपार ॥ ५३ ॥ तिनकोंनामप्रगटएकएह ॥ संतरूपप्रगटममदेह ॥ ज्यौंप्राणनिराषैअहार ॥ मेरीशरणदुषसंहार ॥ ५४ ॥ ज्यौंज्यौंपरलोकधर्मधनजानौं ॥ त्यौंभवतारकसाधूमानौ ॥ जिनकेंह्रदयप्रगटममचर्ण ॥ तिनविनऔरनयाभवशर्ण ॥ ५५ ॥ ज्यौंबाहररिरहैंसूर्यएक ॥यौंउरनयनउद्धारैंअनेक ॥ संतमातपिताहितकारी ॥ संतेंदेवबंधूदुषहारी ॥ ५६ ॥ तातेंसंतसंगनितकरणौ ॥ औरउपायनह्रदयेंधरणौ ॥ तिनतेंअनायासैंभवतरैं ॥ अनायासैमोकोंअनुसरैं ॥ ५७ ॥ तबपुरूरवाएसोकऱ्यौ ॥ सहतउरबसीलोकपरिहऱ्यौ ॥ सबतजीभयौआतमाराम ॥ विचऱ्यौंभूवमैंव्हैंनिःकाम ॥ ५८ ॥ तातैंअसंत

संगातिपरिहरैं ॥ साधुसंगतिनिरंतरकरैं ॥ साधूजनसूषहींभवतारैं ॥ सुषहींममचर्णनिचितधारैं ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसोसाधूअसाधूकौंसुनोहरिजीसोसंग ॥ तबउद्धवजनपूछियौकममंजोगपरसंग ॥ ६० ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांऐलगीतायांषट्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरपूजनविधिसवैंमूरतिअष्टप्रकार ॥ सत्ताविशैंध्यायमैंचित्तशुद्धनिजसार ॥ १ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूकृपाकरौअबऐसी ॥ भाषौंक्रियाजोगविधिजैसी ॥जाके करतहोईसतसंग॥पवैंज्ञानहोईनिहसंग ॥१॥ यहजोतुमप्रतिमाकीपूजा॥तातैंश्रेयकहेनहींदूजा॥याकौंकहैं व्यासअरुनारद॥गुरुबृहस्पतिपरमविशारद॥२॥औरोसकलमुनिस्वरजेतें॥परमश्रेययहभाषेतेतें ॥ कलप आदीतुमविधिसोकत्थौं॥सोद्दढकरीविधित्हृदयगत्थौं ॥३॥ तिनभृग्वादिसुतनिसुनायौ ॥ शंभूहूंतैंभवानीपायौ ॥ जेतेसकलवर्णआश्रम ॥ अस्त्रिशूंद्रहुसबकौधर्म ॥ ४ ॥ याविधिऔरधर्महींजेतैं ॥ याहीकाजकहैंसबतेतैं ॥ याबिनुऔरधर्मजेकरैं ॥ तोतिनतेंफिरिबंधनपरैं ॥ ५ ॥ यहसबधर्मनिकौहैधर्म ॥ याहीहूंतें काटैंसबकर्म ॥ तातेंपूजाविधिविस्तारौ ॥ कृपाकरौजीवनानिस्तारौ ॥ ६ ॥ तुमदयालसबकेहितकारी ॥ सुमरतसकलदुषभयटारी ॥ शुनिकैंपरउपकारीबेन ॥ बोलेहरषिकमलदलनेन ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥चौपई ॥ उद्धवयाकौअंतनपार ॥ ममपूजाविधिविस्तार ॥ पारितोंकूंसंक्षेपसुनाऊं ॥ तामेंतत्व सकलकौंल्याऊं ॥ ८ ॥ पूजाविधिहैतीनप्रकार ॥ वैदकतंत्रमिश्रितसार ॥ वेदमंत्रअरुवैदकअंग ॥ सो

कहीएवैदकपरसंग ॥ ९ ॥ यौंहीतंत्रिकामिश्रितजानैं ॥ भावैतासौंपूजाठानैं ॥ विप्रक्षत्रीवैस्यत्रिवर्नी ॥ इ
नकौंयाविधिपूजाकरनां॥१०॥सोसमस्तविधितुमहींसुनाऊं ॥ जीवनिकौंकल्यानउपाऊं॥प्रतिमाभूमिअगिन
जलवाई ॥ द्विजअरुआपअर्कअरुगाई ॥ ११ ॥ अरुसबहीनमैंमोकौंजानैं ॥ जथाजोगसबपूजाठां
नैं ॥ गुरुअरुमोंमैंभेदनराषें ॥ मानुषबुद्धीदूरिकरिनाषैं ॥ १२ ॥ शुद्धहोईजलमाटीसंग ॥ असनाना
दिसकलईअंग ॥ जेजेप्रगटवेदअरुतंत्र ॥ तेतेसकलपढैममंत्र ॥ १३ ॥ संध्योपासनादिजेकर्म ॥प्रग
टतिहूंवर्णकेंधर्म ॥ तिनतिनसौंनितमोकौंभजैं ॥ होईनिषेधसकलसौंतजैं ॥ १४ ॥ जाहीकरिममसुमिर
णहोई ॥ काटैंसबकर्मनिकौंसोई ॥ सोइसोकहीयेंममधर्म ॥ ममसुमिरणबिनबंधनकर्म ॥ १५॥ अब
भाषौंप्रतिमाकेभेद॥सेवतजिनहींमिटैभवषेद॥एकशिलाकीकहियैंमूरति॥एककाष्ठकीयौंममसूरति॥१६॥
एकलेपचंदनकीकरियें ॥ एकचित्रपुस्तकलिषिधरीयै ॥ प्रतिमाएकसुवर्णसंवारी ॥ एकमनोमयमनमैंधा
री ॥ १७॥ एकमृत्तिकाकौलेकीनीं ॥ एकरतनमणिकीकरिलीनी ॥ एममप्रतिमाअष्टप्रकार ॥ जा
नैंममंदिरनिजसार ॥ १८ ॥ तिनमैंहोवेंनिश्चलजेती ॥ संयनादिकनकरावेतेती ॥ सालिगरामआदिहे
जेती ॥ मरौतनजांनैंनिततेती ॥ १९ ॥ औरसबनिकौंपूजाकाल ॥ किंवाजानैंनितगोपाल ॥ लेपीलिषी
नमाजंनकरैं ॥ औरअस्नानहीविस्तरैं ॥ २० ॥ उत्तमसामग्रीसोंसेवें ॥ तनमनसबमोकौंदेवें ॥ जोनिह
कामनिःकपटहोई ॥ करेभाववसमोंकौंसोई ॥ २१ ॥ उत्तमवस्तुनिमनकरिल्यावैं ॥ प्रेमसहीतसबमो

होचढावैं ॥ उत्तमविधिअस्नानकरावैं ॥ वस्त्रआभरणादिकपहिरावैं ॥ २२ ॥ अग्निघृतादिकहोमही
करैं ॥ धरणिरविअरस्कातिविस्तरैं ॥ जलकौंपूजेजलफलफूल ॥ जानेमोहीसकलकौंमूल ॥ २३ ॥ भ
क्तिसहितजोअर्पेतोई ॥ ताहुमेंमोकोंसुषहोई ॥ तोजेधूपदीपनैवेद ॥ मोकौंबहुविधिकरेंनिवेद ॥ २४ ॥
ताकीमहिमाकहावषानौं ॥ ज्यौंहैंयौंमैंहीपाहिचानौं ॥ तातैंमैंनित्यप्रतीतिआधीन ॥ तोषनमानौंप्रीतिविहीन
॥ २५ ॥ अबभाषौंपूजाविधितोसौं ॥ सावधानव्हैंसुनियोमासौं ॥ होईपवित्रकरैंअस्नान ॥ मनमेंराषैंमे
रोध्यान ॥ २६ ॥ पूजासाजप्रथमसबलेई ॥ फिरिउठबैकौंरहननदेई ॥ बैठेउत्तरकेपूरवमुष ॥ निश्चल
प्रतिमाकेबलसन्मुष ॥ २७ ॥ दर्भनिसौंनिजआसनकरैं ॥ अंगनिकैंन्यासहींबिस्तरैं ॥ न्यासकरैंममम्
रतिअंग ॥ तबठानैंअस्नानप्रसंग ॥ २८ ॥ उत्तमकलसतोयसौंभरैं ॥ दूजेजलकेपात्रहींधरैं ॥ जलमैं
बहूतसुगंधमिलावैं ॥ तासौंमोहीअस्नानकरावैं ॥ २९ ॥ अर्धपादअरुविष्टरकरैं ॥ तीनपात्रतातैंजलभ
रैं॥गंधपुष्पतामेंबहुधरैं॥गायत्रीअभिमंत्रनिकरैं ॥३०॥ तबआपनौंकरैतनशुध॥ कौउद्धारनहोईअशुध॥
ह्रदयमांहीममरूपहिंध्यावैं॥ऊँकारजहांतैंआवैं॥३१॥जैसैंग्रहमेंदीपप्रकास॥यौंध्यावैंतनमांहींउजास ॥पूजी
प्रेमसोतनमयहोई॥पुनिमूरतिमेंथपिसोई ॥३२॥ सांगोपांगकरैंतनपूजा॥कोईभावनउपजेंदूजा॥देवैंअर्घपाद
आचमन॥रचेअष्टदलपंकजभवन॥३३॥तापरअस्थापैंधरमादी ॥सकलशक्तिरविशशिअग्न्यादी॥शंष
चक्रगदाअसिअस्त्र॥धनुषअरुबानमूलहलशस्त्र ॥३४॥ एआठतेआठदिशिआनैं॥वनमाललताउरजा

न॥नंदसूनंदमहाबलचंड॥कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड॥३५॥अष्टदिसापारदससमग्र॥ठाढौगरुडजोरीकर अग्र॥विष्वक्सेनव्यासगुरुदेव॥गणपतिदुर्गाअरुसबदेव॥३६॥करजोरेहरिसन्मुषठाढैं॥हरषतबदनप्रेमअतिबाढैं॥सबहिनकौंपूजैंअर्घादि॥विनयनमृतावंदनआदी ॥३७॥चंदनअरुकपूरउशीर॥कुंकुमअगरसुगंधतनीर॥प्रथमहींकछुमधूपर्कचढावैं॥निरमलजलअचमनकरावैं॥३८॥पुनिसुगंधजलदेइसनांन॥मंत्रवंदनमनक्रमनहींआन॥पुंडरीकलोचनभवभान॥आदिपुरुषसबकेउपजावन ॥३९॥जयजयब्रह्मसकलआधार नमोनमस्तेवारंवार ॥ एसैंमंत्रतंत्रहीउचारैं॥सहस्त्रशीर्षाश्रुतिबिस्तारैं॥४०॥वस्त्रजनेउअरुआभरना॥अंगअंगतिलकादिककरना ॥ उत्तममालाबहुतसुगंधा ॥ प्रेमसहीतमोसैंमनबंधा ॥ ४१ ॥ बालभोगआचमनकरावैं ॥ कुसुमसुगंधधूपबनावैं ॥ बहुतभांतिआरतीउतारैं ॥ नानाविधिनैवेदसंवारैं ॥ ४२ ॥ षीरषांडघृतदधीलापसी ॥ लाडुपुवासुहारसुरसी ॥ विंजनकरैंऔरबहुतरैं ॥ भोगलगावैंबहुहितमेरैं ॥ ४३ ॥ नितदांतुनउवटनौतेल ॥ अन्हापंचामृतमेल ॥ अलंकारदर्शनआदरस ॥ गीतनृत्यवाजिंत्रसुपरस ॥ ४४ ॥बहुतभांतिनैवेदसंवारैं ॥ नितनाहींतोपर्वनटारैं ॥ बहुरिकरैंपावकमेंपूजा ॥ मोबिनताहीनजानेंदूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंडमैंअग्निधरैं ॥ समिधघृतादिकहोमहीकरैं ॥ होमकरैंपठीपढिमममंत्र ॥ जिनकौंकहैंवेदअरुतंत्र ॥ ४६ ॥ करीहोमआचमनकरावैं ॥ ताकोंमेरोरूपहीध्यावैं ॥ तप्तसुवर्णतुल्यछबीअंग ॥चारुचतुर्भुजआयुधसंग ॥ ४७ ॥ पीतवसनकुंडलबनमाला ॥ सीसमुकुटकटीसूत्रविशाला ॥ भृगुलताआरु

लक्ष्मीआदि ॥ बहुविधिध्यावैंरूपअनादी ॥ ४८ ॥ पुनिनंदादिपारषदजेतें ॥ वलीविधानसोंपूजेंतेतें ॥ज
पेंमूलमंत्रबहुवार ॥ जाविधिबांधेप्रेमअधिकार ॥ ४९ ॥ पीछेंतापरसादहिलेवैं ॥ लेकरीममभक्तन
कौंदेवैं ॥ आग्यांपाईआपतबपावैं ॥ प्रीतिसहितजेतोजीयभावैं ॥ ५० ॥ पुनिअर्पेंसुगंधतांबूल ॥ उत्तम
मालाउत्तमफूल॥ मेरेगुणउंचेसुरगावैं॥नामनिभाषैप्रेमबंधावैं॥५१॥ मेरेगुणअरुकर्मसराहैं ॥पूरणप्रेमसि
धूअवगाहैं ॥ कथानितममसुनैंसुनावैं ॥मोबिनकहुंनपलठहरावैं ॥५२॥ चर्णपलोटैंसयनकराई ॥ मुषतें
नामनबूलीजाई ॥ प्राकृतसंसकृतहैंअरुवेद ॥ जेईजेंअस्तुतिकेभेद ॥ ५३ ॥ तिनतिनसौंममअस्तुति
करैं ॥ वारवारचर्णनिमेंपरैं ॥ पीछेंधारजोरकरदोई ॥ करेंदीनव्हैंविनतीसोई ॥ ५४ ॥ हेप्रभूभवसागर
तैंतारौं ॥ कालमृत्युभयशोकनिवारौं ॥ तुमबिनमेरेंऔरनकोई ॥ पाऊंचर्णनिकोजेंसोई ॥ ५५ ॥ त्व
देंजोतिजोतिमेंधारैं ॥ मूरतिकौंसेव्याविस्तारैं ॥ यौंआकारजहांलौंदेषैं ॥ तेसमस्तममूरतिलेषैं ॥ ५६
करैंयथाविधिसबमेंपूजा ॥ मोकौंछांडिनजानेंदूजा ॥ याविधिक्रियाजोगमनलावैं ॥ सोनरभुक्तिमुक्तिफ
लपावैं ॥ ५७ ॥ मेंकौंउत्तमग्रहसंवरावैं ॥ तामेंममप्रतिमापधरावैं ॥ मोकौंकरैंबागफूलवाई ॥ जन्ममहो
त्सवकीअधिकाई ॥ ५८ ॥ ममहितसदाव्रतादिकदेवैं ॥ बहुतभांतिममभक्तिनिसेवैं ॥ ममपूजाप्रवाहकै
हेत ॥ देवेंगामपुरहाटअरुषेत ॥ ५९ ॥ सोममसमईस्वरतापावैं ॥ तिहुंलोककौंईसकहावैं ॥ जोममप्रति
माथापनकरैं ॥ सोसबभूपतिव्हैंअवतरैं ॥ ६० ॥ जोमेरोमंदिरसंवरावैं ॥ तिहूंलोककोप्रभूतापावैं ॥ पूजा

दिकनीब्रह्माकोलोक ॥ जहांनहींनानाभयसोक ॥ ६१ ॥ तीनौंकीएलहैंवैकुंठ ॥कालादिकसबतेंअकुं ठ॥जोयौंसेवेंहैनिहकाम॥सोममभक्तिलहैंसुषधाम ॥६२॥ निहकामीभांवैत्यौंसेवैं॥जोतनमनधनसबमोको देवैं ॥ सोपावेमेरोनिजज्ञान ॥ लहैंमोहिछूटैंसबआन ॥ ६३ ॥ वृत्तिसुरनिअरुविप्रनिकेरी ॥ अरुजो करिहोएकछोमेरी ॥ दईऔरकौंकिंवाआपु ॥ ताकैंहरेक्यौंसबपापु ॥ ६४ ॥ सोहोवेकृमिविष्टा मांहीं ॥ बरषकोटिकहूंनिकसैंनाहीं ॥ करताप्रेरकतथासहाई ॥ अनुमोदकैजिनरुजिउपजाई ॥ ६५ ॥ सबहिनकौंफलहोईसमान ॥ भावेउत्तमभावैंआन ॥ तातेंममहितकर्मनिकरैं ॥ सोबहूतनिलेभवजलतरैं ॥ ६६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याविधिपूजाकौंकरैंताकैंउपजैंज्ञान ॥ जातेंमेरोपदलहैंताकौंकरौंबषान ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टविंशतिध्यायमैंज्ञानयोगपुनिसार ॥ श्रीधरश्रीउद्धवप्रातिवर्णतनंदकुमार ॥ १ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवताकौंभाषौंज्ञान ॥ जातेंलेहमोहितजीआन ॥ उत्त ममध्यमकर्मसुभाव ॥ जेसबजगकेनानाभाव ॥ १ ॥ तिनतिनकीनिंद्यानहींकरैं ॥ अरुकछूनहींअस्तुति विस्तरैं ॥ प्रकृतिपुरुषनिर्मितसबजानैं ॥ एकजानिसबभेदाहिभानैं ॥ २ ॥ ब्रह्माआदिकीटपरिजंत ॥ ए करूपदेषेममसंत ॥ जेजेबहुविधिकर्मसुभाव ॥ तिनकौंआनैंभावअभाव ॥ ३ ॥ तासोंहोईअर्थतेभ्रष्ट ॥ मायामोहचितआकृष्ट ॥ मिथ्यामाहिचितकौंधरैं ॥ तातेंमूरषजनमेंमरैं ॥ ४ ॥ लीनहोईजबइंद्रियदेह ॥

स्वमलहैंतबआतमएह ॥ जहांमनलग्यौंतहांतहांजावैं ॥ बहुतभांतिकेसुषदुषपावैं ॥ ५ ॥ पुनिसुषपतिमेंहोवे लीन ॥ मरणोकहिएअहंममहीन ॥ यौंसुषपतिअरुदेषतमुपना ॥ जन्ममरणबहुसुषदुषउपनां ॥ ६ ॥ ज्यौंलगिसोवेंतोलगिपावैं ॥ जागैंकछुएनहींरहावैं ॥ त्यौंयहसुषपाप्अरुपुन्य ॥ जन्ममरणसबमानौंशून्य ॥ ७ ॥ जापेयहसबद्वैतअसत्य ॥ मोंबिनऔरकछूनहींसत्य ॥ देषनकहनसुननमेंआवैं ॥ मनअरुबुद्धिजहांलगिजावैं ॥ ८ ॥ तेसमस्तजोकछुवैंनाहीं ॥ तोसुभअसुभकहैंकहामांहीं ॥ जद्यपिहेमिथ्यासंसार ॥ तोहूंदुषकौंवारनपार ॥ ९ ॥ ज्यौंलगीदेहबुधीनहिंछूटैं ॥ तोलगीभवभयपलकनटूटैं ॥ जेसैअपनेध्वनिकीझांहीं ॥ अरुप्रतिबिंबसिंहकीनाहीं ॥ १० ॥ सीपरूपजेवरीमेंसाप ॥ अरुमृगतृष्णांमाहींआप ॥ हैंनाहींपरीहेंसोजानैं ॥ तिनतेंसुषदुषबहुविधिमांनैं ॥ ११ ॥ ज्यौंलगिमिथ्याजानैनाहीं ॥ तोलगिसकलअनर्थनजाही ॥ ब्रह्मरूपयहसबसंसार ॥ जहांलगिकछुहैंआकार ॥ १२ ॥ ब्रह्मरूपब्रह्महीउपजावैं ॥ ब्रह्मब्रह्मआधाररहावैं ॥ ब्रह्महिकरैंब्रह्मप्रातपाल ॥ ब्रह्मरूपब्रह्मकौंकाल ॥ १३ ॥ जैसैंजलबुदबुदजलमांहीं ॥ जलकौंछोडिद्वैतकछुनाहीं ॥ त्यौंहीब्रह्मसरूपसबएक ॥ देषेभरमेंतजीवअनेक ॥ १४ ॥ पारियहसबजानौंनिरमूल ॥ ज्यौंमृगवारीगगनमेंफूल ॥ त्रिगुणरचितसबयहजगजानौं॥ तेगुणमायाकेहीमानौं ॥ १५ ॥ जोयाविधिसबमिथ्याजानैं ॥ ब्रह्मभावनात्ददैंआनैं ॥ परिजद्यपिसौंजगमेंरहें ॥ तोराविज्यागुणदोषनगहैं ॥ १६ ॥ याजगमेंशुभअशुभनदेषैं ॥ मिथ्याजानेभरमकरीलेसें ॥ ज्यौंप्रतक्षघटादिकदेषें॥

उपजतविनसतामिथ्यालेषैं ॥ १७ ॥ धरनीआदिकालत्रयसत्य ॥ नामरूपतैंसकलअसत्य ॥ यौं
हीब्रह्मसत्यत्रिहुंकाल ॥ नामरूपामिथ्याजंजाल ॥ १८॥ अरुयौंकरिदेषेअनूमान ॥ भाईयहजडतनमन
प्रान ॥ शक्तिकौनकीचैतनरहैं ॥ अपनेअपनेअर्थनिगहैं ॥ १९ ॥ निराकारतैंचेतनहोई ॥ सबआ
कारजहांजोलोई ॥ तातैंसबमिथ्याआकार ॥ चेतनब्रह्मसकलआधार ॥ २० ॥ अरुश्रुतिकौप्रमाण
विचारैं ॥ नेतिनेतिकहीवेदपुकारैं ॥ अरुयौंदेषैंअनूभवमाही ॥ नामरूपयहकछुहेनाहीं ॥ २१ ॥ अं
तनरहैंहूतेंनहींआदी ॥ आत्मनिश्चलब्रह्मअनादी ॥ ऐसोबहुविधिकौंविस्तार ॥ मिथ्याजानैंवर्णआकार
॥ २२ ॥ मनक्रमवचनहोईनिहसंग ॥ ब्रह्मविचाराहिकरैंअभंग ॥ ऐसेबचनकहेभगवान ॥ तब
उद्धवपूछ्यौंनिजज्ञान ॥ २३ ॥ उद्धवउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुयहआतमअविनासी ॥
चेतनरूपस्वयंप्रकासी ॥ निरगुणनिराकारनितसुध ॥ सदाअनावृतसदाप्रबुध ॥ २४ ॥ ईहार
हितसदाआनंद ॥ सकलप्रकासकलिपैनदुंद ॥ अरुदेहैंशक्तिकरीहीन ॥ जडअसुधव्हैंजावैंलीन
॥ २५ ॥ तातैंतिनकोसंगनकोई ॥ महाविशेषपरसपरहोई ॥ कछूइच्छानहींआतममाही ॥ अरुत
नसोंकछूहोवेनाहीं ॥ २६ ॥ आतमाकौंबंधननंहीकोई ॥ अरुआत्मआवरणनहींहोई ॥ यहसंसारल
हेंसोंकोन ॥ आत्मसूधसदासुषभोन ॥ २७ ॥ यहकरिकृपामोहीसमझावौ ॥ मेरेप्रभुसंदेहामिटावौ ॥ ऐ
सेंउद्धवपूछ्यौज्ञान ॥ तबबोलेंभवपतिभगवान ॥ २८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥आत

मकोनाहींसंसार ॥ अरुतिनकोनाहींआकार ॥ तिनदोनोतेंजोअविवेक ॥ ताहीकौंभवदुषअनेक ॥२९
इंद्रियप्राणदेहमनबंध ॥ इनसोंचोआत्मसनबंध ॥ तातेंआभासेंसंसार ॥ महादुषनानापरकार ॥३०॥
जौंलगिलोंइनींसोंसंबंध ॥ तौंलगिआतमाजानेबंध ॥ सोअज्ञानकर्‍योंसबजानौं ॥ नाहींकछूसकलकरी
मांनौं ॥ ३१ जद्यपिहैंमिथ्यासंसार ॥ परितोहूंकहूंवारनपार ॥ सदाजीवदुषहीमेंरहैं ॥ वारवारतनछोंड
गहैं ॥ ३२ ॥ ज्यौंसुनाकछुहोवैंनाहीं ॥ परिसबसाचौनिद्रामोही ॥ योंज्यौंसुषदुषमनआध्यावैं ॥ सोसो
सकलसुपनमेंआवैं ॥ ३३ ॥ हैंनाहींपरिहैंसोजानैं ॥ नानाविधकेसुषदुषमानैं ॥ जागेहीकछुहीयैंनाहीं ॥
सबव्यवहारवृथाव्हैंजांहीं॥३४॥हरषशोकभयसोचअरुलोभ॥इच्छाक्रोधअसोभअरुसोभ॥जन्मअरुमर
णविकारजहांलौं॥अहंकारकेसकलतहांलौं ॥३५॥ आतमसदाएकरसरहैं ॥ अहंकारसंगतिदुषसहैं ॥
इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ सूत्रअरुमहत्तत्वअभिमान ॥ ३६ ॥ इनिसौंमिलिकरआतमएक ॥ याकैंसुष
दुषगहैंअनेक ॥ तिनतिनकेहितकर्मनिकरैं ॥ कर्मनिकैवशजनमेमरैं ॥ ३७ ॥ लिंगबंध्यौदेहनिमेंजावैं
॥ तिनकैंसंगमहादुषपावैं ॥ बुधवचनमनप्राणसमीर ॥ महत्तत्वइंद्रियकर्मशरीर ॥ ३८ ॥ सुषअरुदुष
ममताअहंकार ॥ तिनकौंनानाविधिसंसार ॥ सोनिरमूलसकलाहिजानैं ॥ ज्यौंजेवरीसापस्यौंमानैं ॥ ३९
॥ ज्ञानषडगभजीमोहीउपावैं ॥ गुरुसेवासौंसाधनधरावैं ॥ तासोकाटीव्हैंनिहसंग॥विचरेंसबदेंषतममअंग
॥ ४० ॥ गुरुकेवचनदृढदेंमैंधारैं ॥ आदीअंतलोश्रुतिविचारैं ॥ जनममरणदेषेप्रतक्ष ॥ तजीअज्ञानही

होवेदक्ष ॥ ४१ ॥ साधनधर्ममांहीथितहोई ॥ आतमदेहविचारोदोई ॥ जोयाजगकीआदीअरुअंत ॥ सोईमध्यविचारैंसंत ॥ ४२ ॥ आदीअरुअंतमध्यमेंएक ॥ नामरूपभ्रमरूपअनेक ॥ हेमएकज्यौं आदीअरुअंत ॥ मध्यकीएआभरणअनंत ॥ ४३ ॥ तोकछुहेमछोडीनहींआन ॥ जोविचारकरीदेषे ज्ञान ॥ मिथ्यासकलनामआकार ॥ हेमकालत्रयकरेविचार ॥ ४४ ॥ यौंजगआदीमधअरुअंत ॥ मोहीअरूपविचारैंसंत ॥ आदीअंतमेंएकअरूप ॥ सोईमध्यवृथासवरूप ॥ ४५ ॥ जाग्रतसुपनसुषति अवस्था ॥ आदीअरुअंतमध्यमास्वस्था ॥ ईनकेनासभएजोरहैं ॥ सकलछोडताकौंबुधगहैं ॥ ४६ ॥ इंद्रियदेहइंद्रियनिकेदेव ॥ इंद्रियविषयनिकेबहुभेव ॥ तेसबजाकेकहींबिननाहीं ॥ सन्यब्रह्मजोषोजोमांही ॥ ४७ ॥ जाहींप्रकासतसकलप्रकासैं ॥ जाकीशक्तिसत्यासिभासैं ॥ मुषकौंमुषकर्णनिकेकर्ण ॥ करा केकरचर्णनिकेचर्ण ॥ ४८ ॥ नाशानासनैनकेनैन ॥ जिभ्याजीभवेनकैंबेन ॥ याविधिसकलप्रकासकए क ॥ ताविनमिथ्यासकलअनेक ॥ ४९ ॥ एजैनामरूपाविस्तार ॥ जिनसौंपूरणसबसंसार ॥ तेसबअ दीहुतेंकछुनाहीं ॥ अरुनहींरहीयैंअंतहूमांही ॥ ५० ॥ तातैंअबहुमिथ्यामानैं ॥ कारणब्रह्मनिरंतरजानैं ॥ नामधर्यौसोसकलविकार ॥ तिहूंकालमैंमाटीसार ॥ ५१ ॥ यहजोकछुसोब्रह्मसमस्त ॥ आदीमध्य अरुसबकैअस्त ॥ ऐसैंबहुविधिवेदबषानैं ॥ ब्रह्मवतायद्वैतसबभानैं ॥ ५२ ॥ आदिसमस्तहूतौंकछुना हीं ॥ अबआभासतएमध्यमांही ॥ यातेंपरब्रह्ममरूप ॥ सकलप्रकासकआपअनुप ॥ ५३ ॥ बहुवि

चित्ततामैंआभासैं ॥ ताकीशक्तिशक्तिप्रकासैं ॥ तातैंसकलब्रह्महीलेषो ॥ ताजिकरीरूपअरूपहीदेषो ॥ ५४ ॥ इनतेंपरेंरूपममजानौ ॥ अरुएसबममरूपहिंमानौ ॥ द्वैतछोडिनिश्चलव्हैरहौं ॥ जानिब्रह्मताब्रह्महींलहौं ॥ ५५ ॥ ऐसोजोनितकरैंविचार ॥ मिथ्याजानैंसबअकार ॥ गुरुसेवाकरीज्ञानबधावैं ॥ चेतनमोहीअखंडितध्यावैं ॥ ५६ ॥ यहजोतनसोआतमनाहीं ॥ तनघटरूपविचारोमांही ॥ अरुइंद्रियतेंदीपसमान ॥ इनहींप्रकासतआत्माज्ञान ॥ ५७ ॥ अरुयौंदेवपवनमनबुद्धी ॥ आतमकोंनहींजानैंशुधी ॥ क्षितिजलतेजपवनआकास ॥ अहंकारगुणचितपरप्रकास ॥ ५८ ॥ श्यामप्रकृतितनमात्रापंच ॥ इनहींसौंसबद्वैतप्रपंच ॥ तेजडआत्मकोंनहींजानैं ॥ आतमशक्तिइहांसोठानैं ॥ ५९ ॥ सकलप्रकाशकआतमएक ॥ एजडजाननसकैंअनेक ॥ याविधिजोममरूपविचारैं ॥ सकलउपाधीउरैंकेटारैं ॥ ६० ॥ सोबनरहैंइंद्रियनिथंभै ॥ किंवापुरुषाविषयानिआरंभैं ॥ तोहुंताकोंनहींगुणदोष ॥ जीवतहींजिनपायौमोक्ष ॥ ६१ ॥ जैसैंघनरविआडेआवे ॥ तोतिनसौंरवीनछिपाए ॥ अरुजोमेघदूरिव्हैगयें ॥ तोकछुरविप्रकाशनभये ॥ ६२ ॥ रविहैंपरैंउरेघनवृंद ॥ जानेलिप्तलोकमतिमंद ॥ जैसैंप्रगटपवनघनतोई ॥ धूमधूलअरुदामनीहोई ॥ ६३ ॥ ऋतुकेगुणसीतउष्णादी ॥ उपजतविनसतरहैंअनादी ॥ परिनहींलिप्तअलितआकास ॥ त्योंआतमापरकास ॥ ६४ ॥ परितोहूंसंगतिनहींकरैं ॥ मायागुणनिदूरिपरिहरैं ॥ न्यालोकारिनमेरीदृढभक्ति ॥ छूटीनहीरजतमआ

शक्ति ॥ ६५ ॥ द्वैतभेदनहींभूलैजोलौं ॥ ममजनसंगकरैंनहींतोलौं ॥ जैसैंरोगहोईतनमाहीं ॥ दृढक
रिमूलउषार्‍यौंनांहीं ॥ ६६ ॥ सोतजीऔषधअपथ्यहींकरैं ॥ तोबहूरोजगमैंअबतरैं ॥ बंधुकुटंबशि
ष्यभहुतेरैं ॥ आवैंसकलसुरनकेप्रेरैं ॥ ६७ ॥ तेतेअंतराईसबकरैं ॥ जोगीकौंकर्मनिविस्तरैं ॥ सोति
नतैंपावेअवतार ॥ बहुर्‍यौकरैभक्तिविस्तार ॥ ६८ ॥ कर्मपंथमैंभूलैंनाहीं ॥ मैंप्रेरकताकेउरमांहीं ॥
याविधिपाईज्ञानविज्ञान ॥ देषैमोहिमिठावैंआन ॥ ६९ ॥ तबताकौंकर्मकरमनीकरैं ॥ लेनदेनभोजनवि
स्तरैं ॥ पूरवसंसकारकरवावै ॥ विधिकौंलिष्यौंमिथ्याजावैं ॥ ७० ॥ सोमुनिमगनब्रह्मसुषमांहि ॥ ता
तैंकरताजानैंनाहीं ॥ जोबैठोअरुठाढोहोई ॥ आवैजाईकहूंजेसोई ॥ ७१ ॥ अनषाईजलपिवैंसोवैं ॥
जोव्यवहारदेवकौंहोवैं ॥ सोसोकछूनजानैंजोगी ॥ निश्चलरहैब्रह्मरसभोगी ॥ ७२ ॥ जोकबहूदेषैसंसा
र ॥ इंद्रियगोचरविविधप्रकार ॥ तेतेकछूसत्यनहींजानैं ॥ सुपनसमानज्यौंजागैंमानैं ॥ ७३ ॥ प्रथम
आतमाहूंतोअबंध ॥ आपहीभयौप्रकृतिसोबंध ॥ बहूर्‍यौमोसोंविद्यापावैं ॥ तबदुषजानिप्रकृतिछिटका
वैं ॥ ७४ ॥ तबबहुर्‍यौताकौंनहींगहैं ॥ मोहीजानिमोहीमेंरहैं ॥ प्रथमहिजबमोकौंनहीज्ञान्यौं ॥ तबमा
यासुषउत्तममान्यौं ॥ ७५ ॥ बहुरौजबममसर्णहीआवैं ॥ ममप्रसादअज्ञानामिटावैं ॥ तबमायाकोंदुषम
यजानैं ॥ परमानंदरूपमोहीमानैं ॥ ७६ ॥ तातैंआपहीगहीउपाधी ॥ ताकौंतैंजानीकरीव्याधी ॥ स
दानिरंतरमोमेंरहैं ॥ बहुर्‍यौभवसागरनहींबहैं ॥ ७७ ॥ ज्यौरबीअंशसकलहीअक्ष ॥ पारिरविबिनान

लषैप्रतक्ष ॥ रविसंजोगबहुरिजबहोई ॥ तबसमस्तदेषैसोसोई ॥ ७८ ॥ रविबिनअंधकारतबहोवै ॥ तातेकोइननहींजोवै ॥ रविसंजोगप्रकासहिपावै ॥ तबसबदेषैतमहींमिटावै ॥ ७९ ॥ परितैनैनात्रिकाल अलेप ॥ अंधकारसोंभयेनलेष ॥ तस्यौंकेत्यौंतमहींमाही ॥ परिरावबिनुकछूदेषैनाहीं ॥ ८० ॥ रवितेउत्तमउपाधीपरिहरैं ॥ पाईप्रकाशप्रकासहीकरैं ॥ त्यौंयहआतममेरोरूप ॥ स्वयंप्रकाशकपरमअनूप ॥ ८१ ॥ जन्ममरणमरजादारहित ॥ कहुंकरीकबहुंनहींगहीत ॥ दूजैरहितआतमाएक ॥ ताहीकरिएदेहअनेक ॥ ८२ ॥ महाअनुभावसकलअनूभाव ॥ जामेंकदैनकर्मस्वभाव ॥ नित्यानंदसदाअतिशुद्ध सदानिरीहसदाप्रबुध॥८३ ॥ जाकरिइंद्रियतनमनप्राना ॥ चेतनह्वैवरतेविधिनाना ॥ जोलोमनअरुवचननजावै ॥ औरकौनाविधिताकोंपावै ॥ ८४ ॥ परिजबमेंतैरहीतोभयौ ॥ तबताकौंसबबलमिटोगयौ ॥ अंधकारआयौअज्ञान ॥ जातेंदूरिभयौमेभान ॥ ८५ ॥ जबबहुरौममशर्णेहिआवैं ॥ तबसोज्ञानप्रकासहींपावें ॥ तातेंछोडिसकलउपाधी ॥ जोमोबिनकरलीनोव्याधी ॥ ८६ ॥ ताकौंअबहूंपरसैंनाहीं ॥ परिमोबिनतजीनहींजाहीं ॥ मोकौंपाइसकलपरिहरैं ॥ मेरेचर्णनिकौंअनुसरैं ॥ ८७ ॥ रविप्रकासमिटैतमजैसे ॥ ममप्रकासद्वैतभ्रमएसैं ॥ सोपुनिमोकौंनहींविसरावैं ॥ मोहीसेईमोमांहींसमावैं ॥ ८८ ॥ मोमेहुतेंनमायाल्यावैं ॥ एसैमायामेंनहींआवैं ॥ तातेंनित्यहींमोमेंरहै ॥ मोमिलिपरमानंदलहैं ॥ ८९ ॥ उद्धवइतनोहीअज्ञाना ॥ जो!केवलमेंजानेंनाना ॥ ब्रह्मविनाकछुदूजोनाहीं ॥ जैसेंसापजेवरिमांहीं ॥ ९० ॥ द्वै

तदेहजडमिथ्याजानैं ॥ चैतनएकब्रह्मथीरमानैं ॥ अरुयहपंचवरनविस्तार ॥ उरजैंविमसैंवारंवार ॥९१
जाकौंमिथ्यावेदबषानैं ॥ अरुत्यौंहीगुरुसाधूमानैं ॥ अरुअनुभवतेंत्यौंहीदेषैं ॥ जागैंसुपनजगतत्यौंलेषैं
॥ ९२ ॥ एसोजगतसत्यतेंजानैं ॥ पुसापितबानीबेदबषानैं ॥ अंतनश्रुतिवचनविचारैं ॥ उरैंकहैंतेंईउ
रधारैं ॥ ९३ ॥ तातैंकर्मकामबहुकहैं ॥ तेमूरषयाभवमेंबहैं ॥ कर्मविषैंहोतेनकीबुधी ॥ तातैंकदैंनपावैं
सुधी ॥ ९४ तातैंतिनकौलगैनज्ञान ॥ मुरुषआपहिजानेजान ॥ तातैंविषईजीवसमस्त ॥ तिनभ्रमायेकरे
तेअस्त ॥ ९५ ॥ तातैंउद्धवएहीज्ञान ॥ ब्रह्मजानीकरिछोडैंआन ॥ मेरोभजननिरंतरकरैं ॥ जामका
सद्वैतपरिहरैं ॥ ९६ ॥ अरुउद्धवजोजोगकहावैं ॥ अष्टअंगकोबेदबतावैं ॥ सोज्यौंऔरविधित्यौंजा
नौं ॥ भवमोचनकबहूंमतीमानौं ॥ ९७ ॥ जबयाकैतनप्रबलविकार ॥ करीनसकैभक्तिअधिकार ॥
तातैंबहुविधिविस्तरैं ॥ ममविसवासपाईपरिहरैं ॥ ९८ ॥ प्रथमाहिंजोगधारणाकरैं ॥ सीतऊष्ण
सोगहीपरिहरैं ॥ एसैंकरितपापनिवारैं ॥ मंत्रमहबाधादिकटारैं ॥ ९९ ॥ भोजनक्षुधाऔषधी
रोग ॥ यौतनजतनएकहैंजोग ॥ कामादिकमानसविकार ॥ जीतैंममसुमिरणआधार ॥ १००
॥ ममभक्तनकीसेवाकरैं ॥ तापरिदंभादिकपरिहरैं ॥ याविधिविघ्नसमस्तनिवारैं ॥ मेरोभजनतदैमैंधा
रैं ॥ १ ॥ अरुएकैमूढकेराजा ॥ साधेजोगदेहकैंकाजा ॥ जोयहदेहमिटाईचहीयैं ॥ देहामि
टमेरौपदलहीयैं ॥ २ ॥ मेरोअंसआतमाएह ॥ याकौंदुषदातायहदेह ॥ तादेहहींजोराप्यौंचहैं ॥

तेआपुहींयाभवमेंवहैं ॥ ३ ॥ तनकोरोगजरादीकटारैं ॥ स्वासजीतीकरिमृत्युनिवारैं ॥ अंतमृत्युहो वैकलपंत ॥ बहुत्यौंपावैंदेहअनंत ॥ ४ ॥ तातेंवृथाकरेश्रममूढ ॥ मेरोभजनपावैंगूढ ॥ तातैंमैंरहौंसंतानि मांही ॥ तिनकौंकबहूंआदरनाहीं ॥ ५ ॥ अरुप्रथमजोजोगहीकरैं ॥ विघनिनिवारीभगतिविस्तरैं ॥ ता कौंतनज्यौंनिश्चलहोई ॥ तोहुंआदरकरैंनकोई ॥ ६ ॥ छोडेंजोगसमाधिसमेत ॥ गहीममचर्णबढावैंहेत ॥ जोगमांहीबढैअहंकार ॥ तातेंनहींछूटैसंसार ॥ ७ ॥ तातैंसबनजोमोकौंभजैं ॥ ममआधीनव्हैआपत जैं ॥ ममप्रसादतैंमोकौंपावैं ॥ बहुरौंभवदुषमेंनहींआवैं ॥ ८ ॥ जोहोवैंमेरेआधीन ॥ आपामानैंसबबल हीन ॥ मैंआधीनहोईताजनकैं ॥ जौंआधीनदेहयामनकैं ॥ ९ ॥ केवलजोममसरणहींआवैं ॥ ताहीकी सबइच्छाजावैं ॥ तातैंविघननआवैंकोई ॥ विघ्नतहांजहांइच्छाहोई ॥१९०॥ ममआनंदरहैंआनंदीत ॥ सबदेवनकेहोवेंबंदीत ॥ तातैंउद्धवएहीकरनौ ॥ मेरोभजनत्हृदैमेंधरनौं ॥ ११ ॥ जगअरुआपब्रह्मम यजानैं ॥ द्वैतभावकबहूंनहींआनैं ॥ ब्रह्मभावतैंब्रह्महीपावें ॥ जन्ममरणकेदुषविसरावैं ॥ ११२ ॥ ब्रह्म भावनहींउपजेजोलौं ॥ जन्ममर्णदुषमिटैनतोलौ ॥ तातैंब्रह्मभावकौंकरैं ॥ दूजौंसकलजतनपरिहरैं ॥ ११३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसोसुनोश्रीकृष्णसौंअतिहींदुष्करज्ञान ॥ पूछ्यौंसुगमउपाईतबउद्धवप रमसुजान ॥ ११४॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांअ ष्टाविंशोध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उनतीसैंअध्यायमैंआगेंकोविस्तार ॥ श्रीधरभक्तियोग

पुनिउद्धवप्रतिनिरधार ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमयहज्ञानवषान्यौं ॥
सोतोमैंअतिदुकरजान्यौं ॥ बशनाहींइंद्रियमनजिनकौं ॥ केसेंकाजहोयेप्रभुतिनकौं ॥ १ ॥ जेहेंपरमहं
सदृढचित ॥ तिनकौंब्रह्मदृष्टिहेंनित ॥ औरोजेयहज्ञानविचारैं ॥ षेंचीषेंचीयामनकौंधारैं ॥ २ ॥ तिन
कौंमनबशहोईनज्यौंज्यौं ॥ महाकलेशलहेंतेंत्यौंत्यौं ॥ तिनकैंमनबशहोईनक्यौंही ॥ श्रमकरिजन्मगमा
वेंयोंही ॥ ३ ॥ तवपदपरमानंदसमुद्र ॥ ताकौंभेदनजानेक्षूद्र ॥ करैंजोगयज्ञादिककर्म ॥ तिनतेंकदेंन
छूटेंभर्म ॥ ४ ॥ यातेंगर्भबंधेजोकरैं ॥ तातेंजुगजुगजनमेंमरैं ॥ केवलभक्ततुमारेजेतें॥ परमानंदलहेंस
बतेतें ॥ ५ ॥ जबहींतेंतवसर्णहींआवें ॥ तबहींतेंतवचर्णनिपावें ॥ तबहींतेंपूरणसुषपावें ॥ मायानिकटन
तिनकौंआवें ॥ ६ ॥तातेंजगतहींसहजामिटावें ॥ तुमचर्णनिमेंसहजसमावें ॥ तुमब्रह्मादिकसकलकेनाय
क ॥ सबइनकौंप्रभूताकेंदायका ॥ ७ ॥ तिनकैंचर्णागहेंजेदीन ॥ तुमतिनकौंहोवोआधीन ॥ अस्य
हकहाअचंभास्वामी ॥ तुमसबकैप्रभुअंतरजामी ॥ ८ ॥ तिनकौंसबतजीसेवेजोई॥करेआपवशतुमको
सोई ॥ सीसमुकुटधारीहेंजेतें ॥ तवपदमुक्तिविचारेतेतें ॥ ९ ॥ रामरूपतुमभएमुरारी ॥ तिनकौनेवा
नरअधिकारी ॥ वानरसकलसषातुमकरे ॥ सबहीनकैसबहितआचरे ॥ १० ॥ तातेंजोतुवकृतहीवि
चारें ॥ सोक्यौंपलतुमभजननिवारैं ॥ तुमहींनषशिषदेहसंवारी ॥ चेतनशक्तितुमहीपुनिधारी ॥ ११ ॥
सदारहेतुमरेआधार ॥ तुमहींतिनप्रतिपालनहार ॥ तोपरिजीवतुमहीनाहिजानें ॥ करताभरताऔरनिमाने

॥ १२ ॥ तोहूंतुमअवगुणनहींआनौं ॥ बहुविधिजहांतहांरक्षाठानौ ॥ पुनिजबहींतवसरणहींआवैं ॥ तब तुमसोंचारौंफलपावैं ॥ १३ ॥ परितथापीसोअतिअज्ञान ॥ तुमकोंशेईलेईजोआन ॥ चारपदार्थसे वकताकैं ॥ तुमरीभक्तिविराजेताकैं ॥ १४ ॥ एकजहांनाहींतुमभजनौ ॥ नरकजानिसोईसोतजनो ॥ तातेंजोहेविसर्वज्ञ ॥ तुमारेउपकारनिकौतज्ञ ॥ १५ ॥ अरुविधिसमआयुर्बलपावे ॥ बहुविधिप्रत्युप कारबतावे ॥ तोहूंतुमहींअनृणनहींहोई ॥ ब्रह्माआदिजहांलोजोई ॥ १६ ॥ तोंतुमबाहरसद्गुरुरूप॥ भितरचेतनशक्तिअनूप ॥ यौंजीवनिकैंपापनिवारौ ॥ आपहिंदेभवसंकटतारौं ॥ १७ ॥ तातेंभाषेभजना नंद ॥ सहजामिलौतवछूटैफंद ॥ एपुनिप्रीयउद्धवकेबेन ॥ बोलेकृष्णकृपांकेअयन ॥ १८ ॥ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ धन्यधन्यउद्धवममभक्त ॥ सबजीवनकेहेतअनुरक्त ॥ तोसोंकहों आपनौंधर्म ॥ जातेंमिटेसहजसबकर्म ॥ १९ ॥ करतेंसुषआगेंसुषपावैं ॥ छोडोभवभयमोमेंआवें॥ उद्धवकर्मकरेंनरजेते ॥ मेरेहेतकरेसबनेतें ॥ २० ॥ कर्मनिमेंभाषेममनाम ॥ मेरेकारिराषेधनधाम ॥ मोमेंअरपेमनकीवृत्ति ॥ तातेंसबआचर्णनिवृत्ति ॥ २१ ॥ मेरीप्रीतिकरेंजोकरें ॥ मेरीप्रीतिरहितपरिह रैं ॥ जिनदेसनिमेंमेरेभक्त ॥ तिनकरीबासहोईअनुरक्त॥२२॥सुरअरुअसुरनानिमेंजेतें ॥ मेरेभक्तभये हेकेतें ॥ तिनातिनकैंआचर्णनिजानैं ॥ त्यौंहीत्यौंआपुनहींठांनें ॥ २३ ॥ मेरेजन्ममहोच्छवकरैं ॥ परव णिमेंमिलापविस्तरैं।।मेरीजहांजातराहोई ॥ तहांतहांचलिजावेंसोई॥२४॥गीतनृत्यवाजंत्रकरावें॥छत्रचमर

आदिकअधिकोवैं।।अतिउदारताकरिसबठानैं।।ममहेतलगैंभलौसोजानैं।।२५।।सबभूतनिमेंमोकौंदेषैं।।अं
तरबाहिरएकहिलेषैं।।आपआदीजगमेंमैंजानैं।।त्यौंआकाशअनावृतमानैं।।२६।। योसबमेंजानैममभाव ।।
त्यागेसकलप्रवृत्तिसुभाव।। सबहिनिकेसतकारहींकरैं ।। ज्ञानदृष्टिभेदहींपरिहरैं ।। २७ ।।एकैविप्रवेदअधि
कारी ।। एकेअंतजमहाविकारी ।। एकेविप्रनिकेधनहरता ।। असएकैधनकैविस्तरता।।२८।। एकैतेजही
नबहुदेषें ।। तेजवंतएकैबहुपेषैं ।। एकेक्रूरसकलदुषदाई।।एकेसातिकसकलसहाई।।२९।। इत्यादिकनाना
विधिदेषें ।। परिजेभेदकहूंनहिंलेषैं ।। मेरीदृष्टसबनिमेंआनैं ।। ममजनपंडितताहिबषानैं।। ३० ।। यावि
धिसबमेंमोकौंजानैं ।। देहभेदकछूयेनहिंआनैं ।। थोरेकालमांहीताजनकैं ।। सबविकारामिटज्ञावैंमनकैं ।।
३१ ।। स्पर्धातिरस्कारअहंकार ।। सकलमिटैकछूलागैनवार ।। तातैंदेहदृष्टिनहिंधरैं ।। लोककुटुंबला
जपरिहरैं ।। ३२ ।। हांसीकरेसकलहीलोक ।। परिसोआनैंहरषनसोक ।। तिनकीकछुमनमेंनहींआनैं
।। सबजीवनमैंमोकौंजानैं ।। ३३ ।। षरषचरचांडालनिअंत ।। जहांलोमेरीसृष्टिअनंत ।। नमसकारति
नतिनकौंकरैं ।। दंडसमानधरनिमैंपरैं ।। ३४ ।। जौंलगिथावरजंगममांही ।। मेरोभावहोईथिरनाहीं।।
त्यौंलगिमनवचकायसमेत ।। योंसबमेंठानैंममहेत ।। ३५ ।। याविधिकरतरहेनरजोई ।। ताकौंसकलब्रह्म
मयहोई ।। मिटेअविद्याविद्यापावैं ।। तातैंबंधनसकलामिटावैं ।। ३६ ।। उद्धवसकलमतैंहेजेतें ।। ममरूप
हिजानैंसबतैतैं ।। उद्धवएसोधर्महैमेरो ।। कथाप्रभावकहोतिनकेरो ।। ३७ ।।मनक्रमवचनजहांलोंजेते ।।

वेदमध्यमैभाषैतेते ॥ तिनमैयहमतोममसार ॥ जातैवेगिमिटैसंसार ॥ ३८ ॥ अनूरूपप्रगटजोहोई ॥ क्यौंहीबहुरिमिटैनहिसोई ॥ जहांलगीगुणनिर्मितवस्त्त ॥ तहांलगिसबहोवैअस्त्त ॥ ३९ ॥ मैंनिरगुण सबगुणप्रकासी ॥ तातेंममधर्मअविनासी ॥ मेरोनासकदैनहींक्यौंही ॥ मेरोधर्मथोरोउत्यौंही ॥ ४० ॥ अरुउद्धवयहकहाकहीजैं॥मेरोधर्मकदैनहींछीजै॥उद्धवजोलौकिकव्यवहारा॥राजसतामसविविधप्रकारा॥ ४१॥जिनतेंकेवलहोईअनर्थ॥प्रवृत्तिहुंकोमीटेनअर्थ ॥ नकंनिमांहीडारनहार॥कामक्रोधद्वेषादिविकार॥ ४२ ॥ जेतोउतेंमोमेंकरे॥तोहूंमोहीलहैंभवतरैं ॥ जेसैंकंसमरणभयकऱ्यौ॥मेरोधर्मनहींआचऱ्यौं ॥४३॥ परिसोभयउकरीमोमांही ॥ ममपदपहुंच्यौंभवमैंनाहीं ॥ अरुगोपीनकिएव्यभिचार ॥ लंघेबेदतजेभरतार ४४ ॥ परिव्यभिचारीमोमैंकऱ्यौं ॥ तोहुंतिनभवसागरतऱ्यौ ॥ अरुजोद्वेषकीयोशिशुपाल ॥ जातेंजीवनि ग्रासैकाल ॥ ४५ ॥ परिसोउमोमैंकरिदोष ॥ भवजलतजीकरीपहुंच्योमोष ॥ यौंविषरूपविकारहिंजेतें ॥ मोमैंआएअमृतभएतेतैं ॥ ४६ ॥ तातैंयहविवेकचतुराई ॥ एहैबुधीदूजीनहींकांई ॥ जोजूठेसोसाचहीं लीजैं ॥ पूरणकाजआपनौंकीजैं ॥ ४७ ॥ यहझूठिक्षिणभंगुरदेह ॥ सकलविकारनिकोग्रेह ॥ ताकरी पहियैंहरिअविनासी ॥ निरविकारपुणसुषराशी ॥ ४८ ॥ यहसबब्रह्मज्ञानकौसार ॥ जातेंमिटेसहजसं सार ॥ मैंसंक्षेपमांहीसबकह्यौ ॥ जातेंसारनकहीवेंरह्यौं ॥ ४९ ॥ यहनरतनअरुयहममज्ञान ॥ देवनिकौं दुर्लभहीजान ॥ यद्यपिजीवलहैंनरदेह ॥ तोहूंज्ञाननपावेंएह ॥ ५० ॥ तातेंमैंभाष्योनिजज्ञान ॥ यातेंमोहील

हेतजिआन॥उद्धवप्रणकरीतुमजेती॥उतरसहीतकहींमैंतेती॥५१॥तेसबतत्वबेदकौजानौं॥ मेरोपरमरूपक
रिमानौ॥यहतुमरौमेरोसंवाद॥ अध्यात्मपरमात्मवाद॥५२॥ताकौंसुनिदृढदेमैंधारैं॥पावेंमोहीआपकौंतारैं॥
जोयहमेरोपूरणज्ञान ॥ मेरेभक्तनिदेवेदांत ॥ ५३ ॥ सोकहीयतुहेमेरोदाता ॥ जहांतहांकहीयतविख्याता
॥ जोजोदेईलहैंसोई ॥ लोकबेदभाषतहैंदोई ॥ ५४ ॥ तातेदानदेईजेमेरौ ॥ मेंआधीनहोईतिहकेरो
मोहिदेइसोसोंकौंपावें ॥ तिनकौंलेमोमांझिसमावे ॥ ५५ ॥ जोजनयाकौंनितहींपढें ॥ ताजनसोमोसोंहित
बढें ॥ सोजनमेरोअतिप्रियहोई ॥ ताकेंसमदूजोनहींकोई ॥ ५६ ॥ जोयहसुनेंनितहींकरीसादर ॥औ
रसकलकौंकरेंअनादर ॥ सोकर्मनिसौंलिप्तनहोई ॥ मेरीभक्तिलहैदृढसोई ॥ ५७ ॥ मेयहपरमज्ञानउ
चार्यौ ॥ उद्धवतुमकछुदृढदैधार्यौ ॥ सोकमोहभयभयोनिवर्त ॥ निश्चलभयोदृढयआवर्त ॥ ५८ ॥ उ
द्धवयहजोमेरोज्ञान ॥ सोमतिजानौंमोतेंआन ॥ तातेंदंभसहीतजोहोई ॥ नास्तिककलहकुवासासोई॥५९
॥ प्रीतिनजानेंनहींममभक्ति ॥ दुर्विनीतविषयनिआसक्ति ॥ तिनकौंज्ञानदनोएह ॥ ज्यौंकलरभूमिबीजअ
रुमेह ॥ ६० ॥ ईनदोषनिकरिहोईविहीन ॥ मेरोभक्तिप्रितिदृढदीन ॥ आह्निसूद्रअरुएसोहोई ॥ तिन
हीसोंअंतरनहींकोई ॥ ६१ ॥ ऐसीविधिसुज्ञानहिकहीयैं ॥ तोतिनसहीतपरमपदलहीयैं ॥ जोयहमेरोजा
नेंज्ञान ॥ ताहिजानवैरहीतआन ॥ ६२ ॥ ज्यौंकोईपीवेपीयूष ॥ ताकेदूजोरहेनभूष ॥ ज्ञानअरुकर्मजोग
अष्टांग ॥ कृषिवाणिज्यनीतिसबअंग ॥ ६३ ॥ धर्मअर्थमोक्षअरुकाम ॥ इनसबहीनकोंमोमेंधाम ॥

तातैंआवेमोमिजोईई ॥ इनसबईनकौंपावेसोई ॥ ६४ ॥ परिमेरोजनकछूनलेवे ॥ सकलत्यागकरीमो कौंसेवें ॥ तातैंसाधअरुसाधनजेतैं ॥ ममजनदेषेमोमेंतेतैं ॥ ६५ ॥ सबतजीजबचर्णममसेवैं ॥ आपानी वेदेकछुनहिलेवैं ॥ ताकैंसमदूजोप्रियनाहीं ॥ सोनितमोमेंमेतोमांहीं ॥ ६६ ॥ जबसुनिएसैंहारिजीकेबैन॥ उद्धवअश्रुकुलाकुलनैंन ॥ आगैंठाढौअंजुलिबंध ॥ प्रेममगनतनमनदृढबंध ॥ ६७ ॥ बेनहुतेंबोल्यौनहिं जावें ॥ कंठहुतेंगदगदसुरआवें ॥ तातैंउद्धवचुपकरीरहैं ॥ कछुवेरकछुवैननकहैं ॥ ६८ ॥ बहुर्यौचित थंभकरिधीरज ॥ पूरणप्रेमभयौअबकीरज ॥ निश्चलआपुकृतार्थमांन्यौं ॥ सबसंदेहत्दृदैतैंभान्यौ ॥ ६९ ॥ हरिकेचरणनिमाथेधान्यौ ॥ उद्धवभक्तवचनउचान्यौ ॥ जिनतेंहरिसौंबाढप्रेम ॥ जिनसौंकहीसुनिउप जैंक्षेम ॥ ७० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाथअजन्माअरुअविनासी ॥ परमानं दपरमप्रकासी ॥ तिनकेसन्निधानजबआयौ ॥ तबहींसबअज्ञानमिटायौ ॥ ७१ ॥ सन्निधानपाककेजावे ॥ सहजेंतमभएसीतगमावें ॥ अरुतापरतुमपरमदयालू ॥ मोनिजधनपरिभयेकृपालु ॥ ७२ ॥ यहविज्ञान दीपमोहिंदीनो ॥ जातैंसकलशुभकीनो ॥ तुमरेंचरणसरणभुवमांहीं ॥ दूजोठौरकदेसुषनाहीं ॥ ७३ ॥ जोकोईतुमकृतकौंजानैं ॥ अरुतोपरिभवकौंदुषमानैं ॥ जोतुमचर्णसर्णनहींआवें ॥ तोदूजैंकहांतेंसुषपावें ॥ ७४ ॥ प्रभूजोतुमअतिकरुणाकरी ॥ मममायाफांसीपारिहरी ॥ सकलजादवनिमैंअस्नेह ॥ अरुजुव तिसुतावितयहदेहा ॥ ७५ ॥ एसबमेरेमनतेंटरैं ॥ अपनेचर्णकमलचितधरैं ॥ तुमविस्तारिआपनीमाया

॥ जिनयहसकलजगतभरमाया ॥ ७६ ॥ सौतुमज्ञानषडगसौंछेदी ॥ होइंकृपालनिजप्रीतिनिवेदी ॥ न
मोनमस्तेज्ञानप्रकासी ॥ जोगेस्वरईस्वरअविनासी ॥ ७७ ॥ दीजैमोहीएकवरदेवा ॥ निश्चलह्रदयतुमा
रीसेवा ॥ तुमहिछोडिदूजोनहींजानौं ॥ परिसेवकव्हैसेवाठानौं ॥ ७८ ॥ मोहिप्रसाददीजियेएह ॥ तुम
सौंनिश्चलबढेसनेह ॥ करीविनंतीउद्धवभक्त ॥ बोलैहरिजीव्हैअनुरक्त ॥ ७९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवा
च ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तथाअस्तुउद्धवममभक्त ॥ ममचर्णनिनिश्चलआसक्त ॥ अबतुमउद्धव
एसीकरौ ॥ लोकनिकौंशिक्षाविस्तरौं ॥ ८० ॥ बदरिषंडआश्रमहैमेरौ ॥ अतिपुनीतदरसनतिहकेरौ
॥ तहांतीर्थममचर्णनिकौंजल ॥ दरसंपरअस्नानहरेमल ॥ ८१ ॥ नामअलकनंदासोगंगा ॥ निरमल
करैंदरससबअंगा ॥ तहांजाइतुमवासाकरौ ॥ फलभछनतरुबलकलधरौ ॥ ८२ ॥ द्वंद्वसीतउष्णादिक
सहौ ॥ विनयादिकसुभलक्षणगहौं ॥ इंद्रियनिकेअर्थनिपरिहरौं ॥ यहविज्ञानज्ञानउरधरौं ॥ ८३ ॥ मो
तेंसीष्यौज्ञानतुमजोई ॥ बैठेएकांताविचारोसोई ॥ बचनचितसबमोमेंधऱ्यौ ॥ मेरोधर्मसदाविस्तरौ ॥ ८४
॥ तवगुणतीनोकोपरिहरींहौं ॥ ममनिरगुणपदकौंअनुसरींहौ ॥ यहउद्धवप्रातिज्ञाहेमेरी ॥ फिरिउत्पत्तीनव्है
हैतेरी ॥ ८५ ॥याविधिकृष्णवचनउचारैं ॥ तेउद्धवलेमस्तकधारैं ॥ चर्णनिपरप्रदक्षिणादीनि ॥ तवच
लवेकीइच्छाकीनी ॥ ८६ ॥ जद्यपिद्वंद्वह्रदैनहींआवें ॥ तोहूंहरिजतिजेनजावें ॥ अश्रूकंठआतिआतुरबु
धी ॥ तनमनभयौनतनकीसुधी ॥ ८७ ॥ कृष्णवियोगानिक्यौंकारिसहैं ॥ बारबारचलिफिरिफिरिरहैं ॥

निकटबुलाईमिलेदेअंग ॥ ज्ञानरूपकीनोसर्वंग
तबअंतरजामीगोपाल ॥ जनकौंजानैंप्रेमविहाल ॥८८॥ तौहूंप्रथमहिकृष्णपधारैं ॥ जादवलेप्रभाससंहारैं
तबअपनीपावरीदीनी ॥ तेउद्धवजनमाथैंलीनी ॥ ८९ ॥ पुनिमैत्रेयपधारेतहां ॥ कृष्णदेवबैठेहैंजहां ॥
तबहींतहांउद्धचलीआए ॥ कृष्णएकहीबैठेपाये ॥ ९० ॥ ठाढेभएजोरिकरदोई ॥ प्रेममगनक
दहुंकीयौहरिकौंपरनाम ॥ दरसनपायौअतिअभिराम ॥ ९१ ॥ मैत्रेयकौंदीनौंआदेस ॥
छूकहैनकोई ॥ तबतिनकौंहरिभाष्यौज्ञान ॥ जैसैंअंधकारकौंभान ॥ ९२ ॥ तबउद्धवह
विदुरहीकहीयौउपदेस ॥ आग्यादीतीउद्धवजनकौं ॥ अपनिशक्तिकियोथिरमनकौं ॥९३॥ नरनारायणप्रगटेंजहां ॥ ९४ ॥
रिचर्णनिपरै ॥ हरिहृदयनिश्चलकारिधरैं ॥ पुनिउद्धवजनपहुंचेतहां ॥ प्रेममगननितब्रह्मविचार॥
तहाजाईकीनौआचर्ण ॥ जेजेहरिभाषेतेकर्ण ॥ बलकलअंबरफलआहार ॥ हरिजीकोहैपरमप्रसाद ॥
९५॥तबात्रिगुणविस्तारामिटायौ॥उद्धवब्रह्मनिरंजनपायौ॥यहहरिउद्धवकोसंवाद॥ प्रेमसहितहृदेमैंगुनैं॥
९६ ॥ जाकैंकृपाकरैंसोपावैं ॥ तजिभवसिंधुब्रह्ममैंजावैं ॥ तबतैंयाकौंभाषैंसुनैं ॥ जामैंकछूसंदेहनरह्यौ
९७ ॥ तबतैंपावैपरमानंद ॥ श्रमहीविनामिटैंदुषद्वंद्व ॥ यहस्वयमेवआपहरिकह्यौ ॥ भक्तिनिपाईसक
९८ ॥ यामैंएसोकृष्णप्रभाव ॥ मिटैंजगतउपजेहरिभाव॥ जिनहरिप्रगटअमृतदूकरैं ॥ जरारोगआदिकदुषहरैं॥
लदुषहरैं ॥ ९९ ॥ एकजलधितैंअमृतउपायौ ॥ निजाधीनदेवानिकौंपायौं ॥ सोअपनेजनन
बलउपजाईविगतभयकरैं ॥ १०० ॥ अरुदूजोयहअमृतएक ॥ वेदसिंधुतैंब्रह्मविवेक ॥

कौंपायौं ॥ जनममरणभवयहिमिटायौ ॥ १ ॥ ऐसैंआदिपुरुषअविनासी ॥ सुनतमिटेजिनहिभवफासी ॥ कृ
ष्णरामलीनौअवतार ॥ तिनकौंवंदनवारंवार ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंसुनिशुकदेवसौंपरमतत्व
उपदेश ॥ कृष्णकथाकेप्रेमसौंकीनौप्रष्णनरेस ॥ १०३ ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे
श्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांउद्धवमुक्तिनिरूपणंनामैकोनात्रिंशोध्यायः ॥ २९ ॥ ॥इतिभगवतउद्ध
वसंवादसंपूर्णः ॥ ॥सकलचौपाईदोहाः ॥ ॥दोहा ॥ ॥ इच्छाहेनिजधामकीमौशलछलकौंवार॥
कहततीसिवैंध्यायमैंयदुकुलकोसंहार ॥ १ ॥प्रथमसुणीसंक्षेपजोअवपूछोविस्तार॥ श्रीधरकथावसानमैंनृ
पप्रतीश्रीशुकसार ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुहरिकीकथासुनावौ ॥ क
र्णपुटीनअमृतयहपावौ ॥ हरिउपदेशउद्धवयहदीनौ ॥ पीछेंआपकहातिनकीनौ॥१॥जादवकुलकौंप्रगट्यौ
श्राप ॥ हरिजीकहाकन्यौतवआप ॥ ईश्वरकौंवाधानहींकोई ॥ अरुद्विजश्रापनमिथ्याहोई ॥ २ ॥ स
वकेतनमनमोहनदेह ॥ परमानंदसुधाकोगेह ॥ जोनारीहरिदरसनपावैं ॥ तिनसोनैंननषैंचैंजावैं ॥ ३ ॥
अरुजेहरिकेरूपाहिंगावैं ॥ वानीशहितमानतेंपावैं ॥ अरुजेसुनिकरित्द्दयेंधरैं ॥ तेपलकोनहींछोडपरैं
॥ ४ ॥ भारतमेंअर्जुनरथमांहीं ॥ वैठेंदरसनलहैंजाजाहीं ॥ तिनतिहरिकीसमतापाई ॥ सवसंसृतितत
कालगमाई ॥ ५ ॥ ऐसोतनहरित्याग्यौंकेसें ॥ कोईहरैंनागमणिजैसैं ॥ ऐसैंवचनकहैंनरदेव ॥ उत्त
रदीनौश्रीसुकदेव ॥ ६ ॥ ॥ श्रीशुकदेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ द्वारावतिउठैंउतपात ॥

तिनकौंदेषकहींहरिवात ॥ उग्रसेनआदिकसबलोक ॥ सभासबधर्मांहरषनसोक ॥ ७ ॥ तिनसौंकृष्ण वचनउचारैं ॥ हरिकौममनलषैंविचारैं ॥ निजमायासौंमोहितकरैं ॥ ज्ञानविवेकसबनिकेहरैं ॥ ८ ॥

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेजादवैंसुनोममवात ॥ द्वारावतीबहुतउतपात ॥ एउ तपातैंमृत्युनिसांना ॥ तातैंत्याजियेयहअस्थांना ॥९॥ जुवतीबालवृधसबजेतें ॥ संषोद्धारपैठएतैतैं ॥औ रोसकलप्रभासहींजैयें ॥ तहांपश्चिमसरस्वतीअन्हैयें ॥ १० ॥ करीस्नानतननिरमलकरीयें ॥ सुध रहृदयतीरथवृतधरीयें ॥ जेजेबहुतपितृअरुदेवा ॥ तिनकीकरियेपूजासेवा ॥ ११ ॥ अरुवि प्रनकीपुजाकीजैं ॥ करीसनमानदानबहुदीजैं ॥ गाईभूमिसोनोवस्त्रादी ॥ हयहाथीरथअन्नगृहा दी ॥ १२ ॥ आसिरवादाद्विजनकोलीजैं ॥ जातेंविघ्नसकलहूंछीजैं ॥ देवअरुविप्रगाइकीपूजा ॥ पाप हरणविधिधर्मनदूजा ॥ १३ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबानी ॥ सबजादवनिभलीकरिमांनी ॥ नांवनिबैठि सिंधुतैंउतरैं ॥ चढीकरिरथनिप्रयाणौकरैं ॥ १४ ॥ ज्यौंहरितिनकौंआग्यादीनि ॥ त्यौंत्यौंसबनिसबैंवि धिकीनी ॥ करिअस्नानधर्मबहुठानैं ॥ मध्यप्रभासआपबहुमांनैं ॥ १५ ॥ तबतिनकीयौंमदिरापान ॥ जातेंभूलिगएसबज्ञान ॥ तबतेमत्तसकलईभए ॥ हरिमायाविवेकहरिलयें ॥१६॥ तिनमैंकलहभयौउत पन्न ॥ सबमेंप्रेरकहरिप्रछन्न ॥ तबतिनकीतांसभामझारी ॥ सात्यकीवीरागिराउचारी ॥ १७ ॥ कृतब्र ह्माकौंकरीअपमान ॥ सातिकछोडेबाणीवांन ॥ भाईजोछत्रीतनधारी ॥ अरुबहुमेंकहीयैंअधिकारी ॥

१८ ॥ सोऐसीकौंकरैं ॥ सोवतबालनिकैसिरहरैं ॥ यहप्रद्युम्नवचनसतकार्यौ ॥ कृतब्रह्मांकौअंतधी कार्यौ ॥ १९ ॥ तबकृतवर्मांकीनौक्रुध ॥ बाणिबाणप्रकास्यौजुध ॥ अरेकरेछत्रीकोऐसी ॥ व्याधक्रूरतुंकीनीजैसी ॥ २० ॥ भूरिश्रवानिरायुधभयौ ॥ जाकौंबाहुजुगलकटीगयौ ॥ ताकैंबंधतेकीनौऐसैं ॥ व्याधकसाईकरैंनहींजैसैं ॥ २१ ॥ तबसातिकउठीबोलेबानी ॥सुनोसुनोहेसारंगपांनी ॥ इनकौंजसअरुआपसरायौ ॥ तातैंएसौमतोव्हैंआयौ ॥ २२ ॥ एकहींवचनषडगतिनकाढ्यौ ॥ कृतवर्मांकौमस्तकबाढ्यौ ॥ जद्यपिसबमिलिबहुतनिवार्यौ ॥ तोहूंसातिकक्रोधनटार्यौ ॥ २३ ॥ तातैंसकलभएतेक्रुध ॥ सातिकहींसौंठान्योयुध ॥ तातैंसकलभएद्वैऔर ॥ जुधरच्यौसायरतटघोर ॥ २४ ॥ कोईधनुषबानसौंलरैं ॥ केईषडगगहेसहरैं ॥ केईफरसीगदाकुठार ॥ केईलेहसिहाथप्रहार ॥ २५ ॥ केईगुरजगोफनाकोई ॥ वृक्षादिकनिलरैंतेतेई ॥ हरषितसबैंकरैंसंग्राम ॥ बैठेदेषैंकृष्णअरुराम ॥२६॥ हयसौंहयहाथीसोंहाथी॥रथसोंरथसाथीसोंसाथी ॥ परसौपरउठेउटनिसौं ॥ महिषरुमहींषबैलबैलनिसौं ॥२७॥ षचरसौंषचरमिलिलरैं ॥ नरसौंनरमिलिजुद्धहींकरै ॥ महामतकछूलषैनऐसैं ॥ जुधकरैंबनमैंगजजैसैं ॥२८॥ सांवप्रद्युम्नठान्योजुध ॥ त्यौंअक्रूरभोजअतिक्रुध ॥ तहांसंग्रामजीतअरुसुभद्र ॥ करैंजुधवीरनकौंभद्र ॥ २९ ॥ गदसेनामकृष्णकोभ्राता ॥ नामसुचारुपुत्रविष्याता ॥ त्यौंसातिकसौंमिलिअनिरुध ॥सुरथसुमित्रकरैंमिलिजूध ॥ ३० ॥ उल्मुकनिसठसहस्रसतजीत ॥ भानुआदीजोधाअपरिमीत ॥ आपूत्रा

पुमैंजुधहींठानैं॥हरीकरीमोहीकछुनहीजानैं॥३१॥वृष्णिवंसदासारहवंस॥सातवअंधकभोजवतंस ॥अरुबु दसूरसेनअरुमाथुर॥देशविसर्जनकौंतिरकुरकुर॥३२॥आपुआपुमिलिजुधहिठान्यौं॥सबनिपरस्परसुह्द दभांन्यौं ॥ पुत्रापिताभाईअरुभाई ॥ मामाअरुभानेंजलराई ॥३३॥ककाभतीजेनातीनाना ॥ मित्रमित्रमि लिजुधहीठाना॥सुह्ददसुह्ददज्ञातिनसौंज्ञाती॥सबमिलिभएपरसपरधाती॥३४॥तबसरक्षीणभएसबतिनकैं ॥टूटैधनूषतथाजिनजिनकैं॥आयुधसकलक्षीणजबभए॥तबतिनकरानिएरकालए॥३५॥भएमूसलचूरणते जेतैं ॥ वज्रसमानासिंभूतटतेतैं ॥ तेतेसकलकरनिकरलीनैं ॥ हरिसौंजुधक्रोधहिंकीनैं ॥ ३६ ॥ रामकृ ष्णबहूभांतिनिवारैं ॥ परतेंमूर्खकछूनविचारैं ॥ रामकृष्णकौंरिपुकरीजानैं ॥ युधबुधिअंतरगतिआनैं ॥ ३७ ॥तबआपहूंकीयोतिनकोप ॥ कर्यौचहैंसबहींनकोलोप ॥ तबएरकाकरनिकरलीए ॥ थोरेमांहिप्र लयसबकीए ॥ ३८ ॥ विप्रश्रापआच्छादितकैरैं ॥ हरिमायाविचारसबहरैं ॥ पावकक्रोधप्रगटतहांभ यौ ॥ वंसविपनिकुलजरिमरिगयौ ॥ ३९ ॥ तबकुलसकलनष्टहरिदेर्ष्यौ ॥ भूकोभारउतार्यौलषौ॥ जा कारणलीनौअवतार ॥ सोपरिहर्‍योधरणिकोभार ॥ ४० ॥ तबसमूद्रतटमैंवलिभद्र ॥ कीनोब्रह्मध्यानअ तिभद्र ॥ आपुहींब्रह्ममाहीलेराष्यौ ॥ मानवदेहदूरिकरिनाष्यौ ॥ ४१ ॥ रामप्रयाणलष्यौहरिजबहीं ॥ लघूपीपलतलिबैठेंतबहीं ॥ निरमलरूपचतुरभुजधार्‍यौ ॥ दशहुंदिशिकोतिमरनिवार्‍यौ ॥ ४२ ॥ ज्यौं विनुधूमपावकप्रकासा ॥ ऐसोप्रगटभयोउजासा ॥ पीतवसननीतनघनस्याम ॥ तप्तसुवर्णसोभाअभिराम॥

४३ ॥ सुंदरहाससहीतमुखपद्म ॥ कमलनयनसोभाकेसद्म ॥ कर्णनिकुंडलमकराकार ॥ सीस
मुकुटसोभाअधिकार ॥ ४४ ॥ रुचिरनीलशिरकेशविसाल ॥ उरभृगुलतामणिवनमाल ॥ कंठकौस्तु
भकटिसूत्रविराजै ॥ क्षुद्रघंटिकानूपुरराजै ॥ ४५ ॥ बहूआभूषणभूषितअंग ॥ देषतमोहैंअमितअनंग ॥
आयुधमूरतिवंतसमस्त ॥ सुमरीजिनहीहोईभयअस्त ॥ ४६ ।.उत्तमचर्णकमलआरक्त ॥ जिनकौउर
ध्यावैंनितभक्त।।दक्षिणजंघानीचैंकर्‍यौं।।वामचर्णताउपरधर्‍यौं।।४७।। यौंनिश्चलव्हैबैठेकृष्ण ॥ सुमिरताजि
नहींमिटेभवतृष्ण ॥ अतिलघुमूशलषंडजोरल्यौं ॥ जलमेडार्‍योमछहिगल्यौं ॥ ४८ ॥ सोवहमछजालमैं
आयौ ॥ ताकैंउदरलोहसोपायौ ॥ जराव्याधभलकासोकीनौ ॥ लेकरीशरकेआगेदीनौं ॥ ४९ ॥सो
वहव्याधहूतोवनमाहीं।।हरिकौपदातिनजान्यौनाहीं।।हरिकौचर्णदृष्टजबपर्‍यो ॥ मृगमुषजानिघाततिनकर्‍यो।।
५०।।सोईबाणलगायोचर्ण ॥ विप्रवचननहींमिथ्याकरण।।सोवहवधिकनिकटचलीआयौ।।रूपचतुरभुजद
रसनपायौ॥५१॥ चरणलग्यौतबदेष्यौबान।।जराभयोतबमृतकसमान।।चर्णनिपरिबोलैंभयभीत।।कंपतअं
गलग्यौंज्यौंसीत।।५२। हेप्रभूमैंकीनौअपराध।।तुमहींनजान्यौमूरषव्याध।।यहमैंकीयौसकलअयानैं॥ बान
चलायोमृगमुषजानैं ॥ ५३ ॥ यहअपराधतुमहिंप्रभुटारौ ॥ जैंतुमनामलियैंतैंतारौ ॥ तुमसुमिरणसबपा
पविनासैं ॥ मिटैंअज्ञानज्ञानप्रकासैं ॥५४॥ ब्रह्माआदिकरैंआराध।।तिनकोमैंकीनोंअपराध।।तातैंप्रभुजी
विलंबनकर्‍यौ ॥ मोपापीकेप्राणनिहरौ ॥ ५५ ॥ जातैंबहुरौंकरौंनऐसो ॥ यहअपराधकर्‍योमैंजै

सौ ॥ जिनकीमायाकौविस्तार ॥ ब्रह्माशिवसनकादीकुमार ॥५६॥ औरौश्रुतिदृष्टांतहैजेतैं ॥ क्यौंहिजा
नीसकैनहींतेतैं ॥ मोहीतसकलतुमारीमाया ॥ तातैंतिनहुंपारनपाया ॥ ५७ ॥ तिनकौपापजोनीहमजेतैं ॥
कोनभांतिकरिजानैंतेतैं ॥ तातैंअबदूजानाविचाऱ्यौ ॥ वेगिमोपापनिकौमारौ ॥५८॥ ऐसीजराबधिककी
बानि ॥ सुनीनिहकपटसारंगपानी ॥ तबप्रभूआपवचनउचाऱ्यौं ॥ ताकौंसकलसोकभयटाऱ्यौं ॥ ५९
॥ ॥श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उठउठजराभयमतोआनैं ॥ अपनेंकर्यौंपापमातजा
नैं ॥ यहसमस्तलीलाहैमेरी ॥ यामेंकहाशक्तिहैतेरी ॥ ६० ॥ मेरीकृपाजाईतूंस्वर्ग ॥ जहांमहासुषन
हीउपवर्ग ॥ ऐसैवचनकैहेहरिजबहीं ॥ ढ्यौविमानस्वर्गतैंतबही ॥ ६१ ॥ तीनपरीक्रमाअरुपरनाम ॥
करिकैबधिकगयौसुरधाम ॥ चढविमानस्वरलोकहिंगयौ ॥ जयजयशब्दजहांतहांभयौ ॥ ६२ ॥ तबर
थलीयेसारथीदेषैं ॥ परिहरिजोकौंकहुंनपेषैं ॥ तुलसीगंधपवनजबपायौ ॥ ताकेषोजकृष्णपैंआयौ ॥ ६३
॥ पींपलमूलकीयेंहेआसन ॥ प्रभामानौंशशिसूरहुताशन ॥ आयुधआगैंमूरतिवंत ॥ योंदेषेनिजपातिभग
वंत ॥ ६४ ॥ तबदारुकधीरसनहिंकऱ्यौ ॥ रथतजीविहवलचर्णनिपऱ्यौ ॥ उमग्यौत्हृदयनैनजलछायौ
प्रेममगनमुषबैननआयौ ॥ ६५ ॥ तबकरिधीरजअसुनिवारै ॥ करुणासहितवचनउचारैं ॥ हेप्रभुमेतुम
चर्णनिनदेषैं ॥ तेपलपलककलपकरिलेषैं ॥ ६६ ॥ जबतेंनष्टदृष्टमेंभयौ ॥ सबदुषएकवारअनुभयौ॥ भू
लिदिशानकहुंसुषपायौ ॥ ज्यौंउडुपतिनिसामाहिछिपायौ ॥ ६७ ॥ तुमबिनमेंज्यौंतनबिनप्रान ॥ जैसेंनैन

अंधबिनभान ॥ एसेंवचनकहतहिसूत ॥ देष्योएकचरितअदभूत ॥ ६८ ॥ गगनहुतेंउत्तमरथआयौ हयनिसहितअरुगरुडसुहायौ ॥ मुरतीवंतहरिआयुधजेतें ॥ रथमेंजाइचढेसबंतेतें ॥ ६९ ॥ यहचरीत्र दारुकजबदेष्यौ ॥ विस्मयभयौअंचभालेष्यौ ॥ तबहरिसूतहिबचनसुनाए ॥ करिसनमानदुषविसराए ॥ ७० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सूतद्वारकाकौतुमजावौ ॥ समाचारसबजाईसुनावौं ॥ सबकौंमरणरामनिर्याण ॥ अरुमैंहूंअबकरतप्रयान ॥ ७१ ॥ द्वारामतीरहामतिकोई ॥ तनकौंधारैंजहांलौजाई ॥ यहनरलोकतजौंमेंजबहीं ॥ सिंधूद्वारिकाबोरैंतबहीं ॥ ७२ ॥ हमारेंमातपितादिकजेई ॥ लेअपनैलोकनितैंतेई ॥ दिलीजईयौअर्जुनसंगा ॥ रहैंद्वारिकाऽहैहौंभंगा ॥ ७३ ॥ तिनकौंयहसंदेशसुनावौं ॥ अरुतुमममधर्मनिमनलावौं ॥ ममनायारचनायहजांनौं ॥ नामरूपयहमिथ्यामानौ ॥ ७४ ॥ क्षिणभंगुरसबनानारूप ॥ निश्चलजानौमोहिअनूप ॥ जहांतहांव्यापकमोकौंजानौं ॥ नामरूपसबमायामानौं ॥ ७५ ॥ मेरेचर्णनिरंतरभजौ ॥ दूजीसकलवासनातजौ ॥ ऐसेंव्हेआवोमोमांही ॥ जातेफिरिदुपपावौनाही ॥७६॥ यहसुनिसूत कृष्णसोज्ञान ॥ छोड्यौसोकमोहभयआन ॥ नमस्कारकरिवारंवार ॥ प्रदक्षिणादेईविविधप्रकार ॥ ७७ ॥ हरिबिजोगतेंअतिदुषपायौ ॥ ज्ञानविचारचितठहरायौ ॥ हरिकेचर्णकमलचितधारैं ॥ तवदारुकद्वारिकापधारैं ॥ ७८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहनृपमैंतोसोंकह्यौंजदुकुलकौसंहार ॥ अबभाषौंहरिकौंगवनअरुहरिजनउद्धार ॥ ७९ ॥

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादस्कंधेश्रीशुकपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांबलदेवनिर्याणोनामात्रिंशो
ऽध्यायः ॥३०॥ ॥दोहा॥ ॥ कृष्णगधारेधामकौंएकतीसवैंध्याय ॥ तिनकेपाछैप्रीतितैंवसुदेवा
दिकजाय ॥१॥ हरिभक्तकेहेतकोलीलाविग्रहरूप ॥ श्रीधरभजैंसुभावतैंतेजैंअधभवकूप ॥२॥ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ ॥चौपाई॥ तबब्रह्मासनकादिनुलीयैं ॥ भृग्वादिकनितथासंगकीयैं ॥ सहितभवानी
शंकरदेव ॥ इंद्रादिकअरुसुरउपदेव ॥१॥ विद्याधरकिन्नरगंधर्व ॥ पितरमहोरगचारणसर्व ॥ गरुड
लोकपंक्षीअरुसिद्ध ॥ हरिकैदरसकामनाबिध ॥२॥ सबमिलिहरिदरसनकौंआए ॥ सबमिलिहरि
केदरसनपाए ॥ हरिकेंजनमकरमगुणगावैं ॥ सबमिलिजयजयशब्दसुनावैं॥३॥सकलविमानानिछायोग
गन ॥ वरषेपुष्पप्रेमकरिमगन ॥ वारंवारकरैंपरनाम ॥ मुषतैंभाषैंहरिकोनाम ॥ ब्रह्मादिकसबकृष्णाविभ
ती ॥ कृष्णहीकरीतिनकीउदभूति ॥ तेसमस्तदेषैंभगवान ॥ नैनमुदीतबठान्योंध्यान ॥५ ब्रह्मआपएक
करिध्यायौ ॥ द्वैतभावसबदूरिबहायौ॥ निजतनलोकानिकौंआभिराम॥ध्यानधारणामंगलधाम॥६॥ताकौं
आग्निधारणाकरी ॥ आग्निउपायभस्मसोकरी ॥ तबहरिजीवैकुंठेसिधारे ॥ याविधिसबकैकारजसारे
॥७॥ तबदुंदुभिवाजैसुरलोक॥उपज्जौंहरषामिटेभयशोक ॥ सत्यअरुकीर्तिधीरजधर्म ॥सोभाअरुजेउ
तमकर्म ॥८॥ तेसबगणसंजगदीस ॥ जातैंहरिसबहीनकेईस ॥ तातैंजहांकथाहरिजीकी ॥ पूजाध्यान
धारणानीकी ॥९॥ तहांसमस्तरहैतेईतैं ॥ इत्यादिकसबविधिजेईतैं ॥ ब्रह्माआदिसकलसुरजेतैं ॥ ह

रिकीगतिनजानैंततैं ॥ १० ॥ हरिवैकुंठप्रयाणोकर्यौ ॥ सोकिनहुंकौंजाननपर्यौ ॥ कहुंनहींतिनहरिकौ
दष्यौं ॥ बडौअचंभासबहींनलेष्यौं ॥ ११ ॥ जैसैंमेघहुंहोआकाश ॥अरुदामनीगगटघनपास ॥ वे
करीप्रगटगुपतव्हैजावैं ॥ ताकौंषोजनकोईपावें ॥ १२ ॥ त्योंहरिकीयोप्रयाणीजबही ॥ काहुतिनहींनदे
ष्योंतबही ॥ भुमेप्रगटहुतैंतबदेषें ॥ गुप्तभएकीनहुनहींपेषें ॥ १३ ॥ हेनृपयहअचंभानाहीं ॥ शक्तिअ
नंतसदाहरिमांही ॥ जदुकुलमैंहरिकौअवतार ॥ अरुकरीवोनानाव्यवहार ॥१४॥ सोसमस्तमायाकरी
जानौं ॥ हरिकीशक्तिहोतसबमानौं ॥ हरिजीसदाएकरसरहैं ॥ कर्मनकरेंजनमनहींगहैं ॥१५ ॥ औ
रैंकरमकरतसबजानैं ॥ जनमलीयोहरिजीकौंमानैं ॥ एसबदेहनिकेंव्यवहार ॥ हरिजीइनसबहीनकेपार
॥ १६ ॥ जैसैंनटबाजीविस्तारें ॥ बहुर्योंआपहिसकलनिवार्यौ ॥ बाजीगरसकलतैंन्यारा ॥ यौंहरि
कैकर्मअरुअवतार ॥ १७॥ जिनहरिरच्यौत्रिगुणसंसारा ॥ नानांभांतिप्रगटआकारा ॥आपप्रवेशकी
यौतिनतिनमैं ॥ सबवरताईविनासेछिनमैं ॥ १८ ॥अंतआपकैंआपहींरहैं ॥ सोंहिइनअवतारनिगहैं ॥
गुरुकेमृतकपुत्रजिनिआन्यौं ॥ कालमृत्युकौंगर्वहीभान्यौं ॥ १९ ॥ ब्रह्मशस्त्रनैंतुमहींविचार्यौ॥ वधीकहीं
स्वर्गसंदेहपठायौ ॥ तेजौआपनीरक्षाकरतै ॥ तौतिनकौंकाहेपरिहरतें ॥ २० ॥ सबजगकौउतपतीप्रति
पाल ॥ नासकरैंजिनैंकेवलकाल ॥ एसैंसकलशक्तिमयदेवा ॥ ब्रह्माआदिकरैंजासेवा ॥ २१ ॥ह
रिवेकौभरनीकौभार ॥ धर्योंहुतैंमानुषअवतार ॥ तामैंभूकौंभारउतार्यौ ॥ पीछैंदेहदूरिकरिआर्यौ ॥

२२ ॥ ज्यौंकांटोलागेपगमांही ॥ सोकांटाबिननिकसेनाहीं ॥ कांटेकाटोकाढ्यौजबहीं ॥ वहऊडारिदो
नोंपुनितबहीं ॥ २३ ॥ त्योंहारिमृतकदेहक्योंराषे ॥ निजानंदपदसोंक्योंनाषें ॥ अरुएकहीअतिहिअ
ज्ञान ॥ तिनकौप्रगटदिषायौज्ञान ॥ २४ ॥ जोगसाधनकरिराषेदेह ॥ पुरुषार्थकरिमानेंएह॥
सकलविकारनिकोआगार ॥ ताकौंराषितजैंसुषसार ॥ २५ ॥ तातैंतिनकोमोहमिटायौ ॥ दे
हतजेतेंब्रह्मबतायौ ॥ ऐसैतनकौंकीयौअनादर ॥ तातैंकोईकरैंनहींआदर ॥ २६ ॥ तातैंहरिवैकुंठपधारैं
॥ बाजीज्यौंदेहादिनिवारैं ॥ ब्रह्मारुद्रइंद्रादिकजेतें ॥ देषिप्रयाणौंहरिकोंतेतैं ॥२७॥ विस्मयभएकृष्णगु
णगावैं ॥ अपनेअपनेलोकनिजावैं ॥ जोहरिचरितपढैंउठिप्रात ॥ कृष्णदेवकीनिरमलबात ॥ २८ ॥ सो
दृढभक्तिकृष्णकीपावैं ॥ जातैंकृष्णलोकमैंजावैं ॥ हरिदारुकद्वारकांपठायौ ॥ सोवसुदेवनृपतिपैंआयौ ॥
२९ ॥ कृष्णवियोगविकलअतिचित ॥ जैसैंकृपणगएतेंवित ॥ तिनदूनोकैचर्णनिपरैं ॥ तबसारथीबचनउ
चरैं ॥ ३० ॥ आंसुप्रवाहालैनैननितैं ॥ अतिव्याकुलअटपटैबैननितैं ॥ सबजदुकुलकौनाससुनायौ ॥
अरुबलकौनिर्याणजनायौ ॥ ३१ ॥ यौंसुनिलोकतप्तसबभयैं ॥ करतविलापप्रभासहींगयैं ॥ तहांजाई
हरिजीनहींदेषैं ॥ तबवैकुंठगएकरिलेषैं ॥ ३२ ॥ तबरोहणीदेवकीवसुदेव ॥ उग्रसेनराजानरदेव ॥ ह
रिवियोगतैंउपज्यौंसोक ॥ तातैंचहूंतजौंनरलोक ॥ ३३ ॥ रामकृष्णकोएसोविजोग ॥ जातैंमिथ्योदेहसं
जोग ॥ बलजुवातैसबलैबलदेह ॥ अगनिप्रवेशकीयौअतिनेह ॥३४॥ वसुदेवहींलेषोडशनारी ॥ की

यौसहगवनाचितासंवारी ॥ प्रद्युम्नादीजहांलौजेतौं ॥ तिनकीत्रियनिलीयेंसवतेतैं ॥ ३५ ॥ रानहीनकेंभ्र
तोकृष्णविजोग ॥ तातेंकर्यौअग्निसंजोग ॥ हरिकीवधूजहांलौजेती ॥ रुकमनिआदिसकलमिलितेती
॥ ३६ ॥ हरिकौंरूपहृदेमेंधर्यौं ॥ अग्निप्रवेशसकलमिलिकर्यौ ॥ अर्जुनपरमसपाहरिजीकौं ॥ कृ
ष्णविजोगप्रहारकजीकौं ॥ ३७ ॥ तातेंअर्जुनअतिदुपपार्यौं ॥ कृष्णज्ञानतबाहिंहृदेंआयौं ॥ गीतामा
हिकह्यौहरिज्ञान ॥ मिथ्यादेहसत्यभगवान ॥ ३८ ॥ ऐसौबहुविधिज्ञानविचार्यौ ॥ कृष्णवियोगशोक
सबटार्यौ ॥ आपआपमैंमारेजेतैं ॥ अपनेंबंधुज्ञातिप्रीयतेतैं ॥ ३९ ॥ तिनकौंजोपिंडादिकदाना
॥ मृतकक्रियाजेतीविधिनाना ॥ सोईसोअर्जुनसबकरी ॥ कृष्णप्रीतिनेंनहोंपरिहरी ॥ ४० ॥ तब
द्वारिकाकृष्णविनुभई ॥ सायरबौरिपलमेंलई ॥ केवलहरिजिकेयहनेंतें ॥ त्योंहारहैमकालहीने
॥ ४१ ॥ नितविहारजहांहरिजीकौं ॥ सुमरतसुनतउधारणजीकौं ॥ मंगलसकलमंगलनिकारौ ॥
त्रिभुवनहोवैंनितचेरौ ॥ ४२ ॥ अखिबालवृधसबजेतें ॥ मरनमरतउबरेतेकौंतें ॥ तेअर्जुनादिलीलआ
ए ॥ समाचारपांडवनिसुनाए ॥ ४३ ॥ तुमरेसकलपितामहजेतें ॥ कृष्णप्रयाणहोसुनकानेंतें ॥ तुमहीं
वंशधरराजाकीयौ ॥ मथुरातिलकवज्रकोदीयौ ॥ ४४ ॥ तेसबतानेंउत्तरदिशिगए ॥ कृष्णहीमेंसं
कृष्णमयभए ॥ जोयहहरिजीकोअवनार ॥ जोमैंकसमुणाविस्तार ॥ ४५ ॥ तिनकौंकहैंसुनैंअपनोंद
॥ सबपापनितैंछूटैंसोई ॥ यावैंभिहरिजीकैअवनार ॥ बालापननैंकमंअपार ॥ ४६ ॥ लोकअस्वेदपे

प्रगटजेते ॥ गावैंसुनैंविचारैंतेतैं ॥ तबतैंलहैंपरमआनंद ॥ मिलैंकृष्णछूटैंदुषदंद ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा
यहहरिकोअवतारमैंतुमसौंकह्यौसूनाई ॥ याकौंकहिसुनिसुमरननरनारायणमेंजाई ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई
ब्रह्मनिरीहनिरंजनस्वामी ॥ सकललोककेअंतरजामी ॥ भक्तिनिहितधरैंअवतार।।नानाभांतिकरैंउद्धार॥
४९ ॥ तिनमैंकृष्णस्वयंभगवान ॥ ज्ञानक्रियासबशक्तिप्रधान ॥ जिनकैंगुणनिकहैंशुकदेव ॥ सुनताहित
न्यौपारिक्षतदेव ॥ ५० ॥ जिनकोनामलियेभवनाहीं ॥ लेकरिराषैनिजपदमांहीं ॥ असैंकृष्णसंतनिकौवि
त्त ॥ नमस्कारतिनप्रभुकौंनित ॥ ५१ ॥ तेअबसंनदासकेराम ॥ देहधरीजीवनकेकाम ॥ क्रपानिधान
भक्तिकरवावैं ॥ अपनिशक्तिल्हदैमैंल्यावैं ॥ ५२ ॥ ऐसीविधभवदुषामिटावैं ॥ अपनेपरमपदपहुचावैं॥
कृष्णरूपतिनज्ञानसुनायौ ॥ उद्धवजननिजपदपहुचायौ ॥ ५३ ॥ सोलेकह्यौसंस्कृतव्यास ॥ तातेंहोइअ
नर्थप्रकास ॥ जोपंडितजानेपैंसोई ॥ दूजोकदैंनजानेकोई ॥ ५४ ॥ तातैंतिनअबकरुणाकीनी ॥ मोसेव
कक्यौंआग्यादीनि ॥ सबलोकनिकीहितमनधारी ॥ ममउरल्हैंभाषाविस्तारी॥ ५५॥याकौंवाचेसुनैंसुना
वैं ॥ ध्यानकरैंउंचेंसुरगावैं ॥ तेतैंलहैंज्ञानवैराग ॥ प्रेमभक्तिहरिकौअनुराग ॥ ५६ ॥ प्रेमप्रवाहमगन
नितरहैं ॥ भवदावाग्निकदैंनहींदहैं ॥ ऐसेल्हैंकरिब्रह्मसमावैं ॥ ताजिआनंदजक्तनहींआवैं ॥ ५७ ॥ क
बहुंकौरकमनाकोई ॥ यातैंलहैंसकलसोसोई ॥ तातैंजेजेहोइसहकाम ॥ अबजेबडभागीनिहकाम॥
५८ ॥ तिनसबनिकौंभाषाएह ॥ भक्तिअरुमुक्तिकोगेह ॥ तातैंयासौंकीजैंप्रीति ॥ यहहैसकलसंतन

करीरीति ॥ ५९ ॥ संवतसोलसहबाणवा ॥ ज्येष्ठसुक्लसष्टीकुजादिवा ॥ संतदासगुरुआज्ञादीनि ॥ चतुरदासयहभाषाकीनी ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमज्ञानपरगटाकियोममघटव्हैनिजदेव ॥ तेमेरेउरनितवसेंसंतदासगुरुदेव ॥ ६१ ॥ विद्वज्जनतैंविनतीश्रीधरकरतप्रवीन॥ एकादशएकतीसपेंदोहाकियानवीन ॥ ६२ ॥ पुष्करछायामध्यहैंपरशुरामसुषग्राम ॥ श्लेमबादजाकौंकहैंश्रीधरकवितानाम ॥ ६३ ॥ श्रीधरपुनिशोधनकीयोसंवतविक्रमाधीश ॥ माधवसितप्रतिपदशनीचवधोत्तरएकुणीस ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीशुकदेवपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांश्रीकृष्णप्रयाणोनामएकात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हें पुस्तक भाषाएकादशस्कंध मुंबईंत बापूसदाशिवशेटहेगिष्टेशेध्येयांणीं आपलेछापखान्यांत छापिलें ठिकाण हनुमानगल्ली शके १७८८ क्षयनामसंवत्सरे ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदिगुरुवासरेसमाप्तं श्रीगजाननार्पणमस्तु
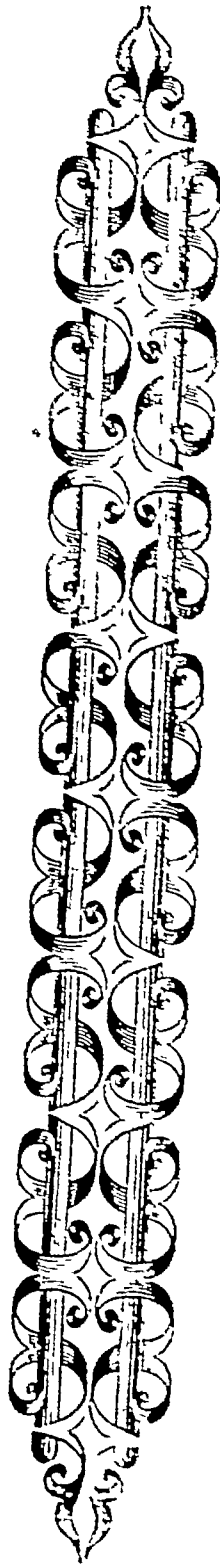
इतिश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधःसमाप्तः